चंगाई और छुटकारे की सेवा करना

प्रत्येक विश्वासी यह कर सकता है!

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करणः 2023

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

अन्यथा जबतक इंगित न किया हो धर्म शास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल के पुनःसंपादित पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित है।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन

उपदेशः apcwo.org/sermons | **पुस्तकेंः** apcwo.org/books | **चर्च ऐपः** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेजः apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंगः** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्शः chrysalislife.org | **संगीतः** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिपः pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंसः** apcworldmissions.org

(Hindi - Ministering Healing and Deliverance)

चंगाई और छुटकारे की सेवा करना

प्रत्येक विश्वासी यह कर सकता है!

विषयसूची

परिचय

1. बुनियाद डालना 1

2. चंगाई पर परमेश्वर का वचन 54

3. पिता के काम 108

4. यीशु से चंगाई और छुटकारा प्रदान 126

5. सेवकाई का रहस्य यीशु द्वारा जैसे 141

6. रोग और चंगाई के सम्बंध में सामान्य 147

7. चंगाई की सेवा करने व्यवहारिक दिशा-निर्देश 166

8. चंगाई की सेवा करने का एक सरल नमूना 193

9. चंगाई और छुटकारे की सेवा प्रदान करने हेतु आत्मा के वरदान 200

10. दुष्टात्माओं की सामर्थ से छुटकारा 209

11. छुटकारे की सेवा प्रदान करने हेतु व्यवहारिक दिशा-निर्देश 237

12. भावनात्मक चंगाई और स्वास्थ्य प्रदान करना 255

13. चंगाई और छुटकारा देने वाले समाज के 279

14. यीशु के चंगाई और छुटकारे के आश्चर्यकर्म 287

15. आप यह कर सकते हैं 292

परिचय

आत्माओं को जीतने का और चेले बनाने का सर्वाधिक प्रभावी तरीका क्या है? प्रभु यीशु ने जब अपने चेलों को संसार पर प्रभाव डालने हेतु बाहर भेजा, तब उसने उन्हें क्या निर्देश दिए? हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार से हमारे समाज, शहरों, और राष्ट्रों पर कैसे प्रभाव डालना है? जिस संदेश को हम प्रचार करते हैं उसका हम कैसे समर्थन करते हैं? प्रभु यीशु ने यह कैसे किया, और प्रेरितों ने यह कैसे किया?

सुसमाचार प्रचार–यीशु के तरीके से

सुसमाचार की पुस्तकें बार-बार यह कहते हुए यीशु की सेवकाई का वर्णन करती हैं कि वह *"यीशु ... फिरता हुआ ... सभाओं में उपदेश करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा"* (मत्ती 4:23)। जब प्रभु यीशु ने बारह चेलों को और उसके बाद सत्तर चेलों को भेजा, तब उन्हें आज्ञा दी *"चलते-चलते प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। बीमारों को चंगा करो; कोढ़ियों को शुद्ध करो; दुष्टात्माओं को निकालो; तुमने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो"* (मत्ती 10:7,8; लूका 10:1,9)। यीशु के पुनरुत्थान के बाद दी गई महान आज्ञा में प्रचार करने, चंगा करने और अद्‌भुत कार्य करने, चमत्कार और आश्चर्यकर्म करने का वही आदेश था (मरकुस 16:15-20)। बारह चेलों ने इसका अनुसरण किया, और प्रेरित पौलुस ने और उन्होंने भी जिसने उन्हें प्रशिक्षित किया था। यीशु ने जिस प्रकार सुसमाचार प्रचार किया, उसमें चिन्हों, अद्‌भुत कार्यों और चमत्कारों के साथ सुसमाचार प्रचार करना शामिल था। हमें उस सुसमाचार की ओर फिरना है, जैसे यीशु ने किया!

यह पुस्तक मुख्य रूप से प्रशिक्षण पुस्तिका है और इस आशा से तैयार की गई है कि पासबान/अगुवों को उनकी मण्डलियों को और सेवा टीमों को प्रशिक्षण देने हेतु वह उपयुक्त सामग्री साबित हो और वे उन्हें

चिन्हों, अद्भुत कार्यों और चमत्कारों के साथ, हर स्थान में सुसमाचार की सामर्थ ले जाने हेतु मुक्त करे! मसीह की सम्पूर्ण मण्डली के लिए समय आ गया है कि वह यीशु के तरीके से सुसमाचार प्रचार में लग जाएं! हम हमारे समाजों, शहरों, और राष्ट्रों को ऐसे प्रभावित करें जैसा हमने पहले कभी नहीं किया था!

अलौकिक चंगाई उसके व्यक्तित्व में है, जिस प्रक्रिया का हम उपयोग करते हैं उसमें नहीं!

ईश्वरीय चंगाई परमेश्वर की उपस्थिति में है, उस विशिष्ट प्रणाली में नहीं जिसका उपयोग किया जा रहा है!

हमें यह समझना है कि हमारा परमेश्वर चंगाईकर्ता है। हमारा परमेश्वर सामर्थी छुटकारा देने वाला है।

चंगाई और छुटकारा विशिष्टप्रक्रिया में नहीं है, परंतु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में है।

चंगाई और छुटकारा विशिष्ट प्रक्रिया में नहीं है, परंतु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में है। हमारा विश्वास और हमारा ध्यान उस पर होना चाहिए। उसकी अलौकिक चंगाई कई तरह से दी जा सकती है और पाई जा सकती है। हम चंगाई और छुटकारा देने के कुछ सामान्य तरीकों या विधियों को प्रस्तुत करते हैं, उसी समय हमें निरंतर यह स्मरण रखना है कि चंगाई और छुटकारा उसकी उपस्थिति की वजह से आते हैं, उन विधियों के कारण नहीं जिनका हम उपयोग करते हैं। हमारा "विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परंतु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो" (1 कुरिन्थियों 2:5)।

प्रत्येक विश्वासी यह कर सकता है!

प्रभु यीशु उसमें विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह उद्देश्य रखता था कि वह उन कामों को करे जो उसने किए थे और उससे भी बड़े काम (यूहन्ना 14:12)। परमेश्वर ने मसीह की देह में सेवकाई के कार्य के साथ विशिष्ट व्यक्तियों को विशिष्ट वरदान, बुलाहट और अभिषेक दिया

है, परंतु चंगाई और छुटकारा प्रदान करने की सामर्थ और अधिकार प्रत्येक विश्वासी को दिया गया है। मुझे याद है कि चौदह वर्ष की उम्र में मैंने मेरे स्कूल में बीमारों के लिए प्रार्थना की और उन स्कूलों में भी जहां मैं जाता था, मैंने यीशु के विषय में प्रचार भी किया। प्रभु विश्वासयोग्य था और उसने मेरे संगी छात्रों को चंगा किया और आशीष दी। मेरे पास ईश्वर-विज्ञान की कोई शिक्षा नहीं थी, न ही मैंने कभी पूरी बाइबल पढ़ी थी। मैं परमेश्वर के वचन से जो कुछ भी सीख रहा था उसके अनुसार मैंने मात्र काम किया, और परमेश्वर ने विश्वासयोग्य रहकर अपने वचन की पुष्टि की। मुझे दृढ़ विश्वास है कि प्रभु चाहता है कि उसकी प्रत्येक संतान, जवान हो या बूढ़े, उसके आत्मा की सामर्थ में, यीशु के नाम के अधिकार में, पिता के कामों को करे, ताकि लोग जीवित यीशु को उनके जीवनों में जानेंगे और अनुभव करेंगे!

हमें विश्वास है कि यह पुस्तक ऐसा करने हेतु सुसज्जित होने में आपकी सहायता करेगी।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
बुनियाद डालना

हम बुनियाद डालने से आरम्भ करते हैं जहां हम अलौकिक चंगाई और छुटकारे की सेवा प्रदान करने से सम्बंधित कुछ मूलभूत प्रश्नों को सम्बोधित करेंगे। शब्दों और संज्ञाओं के विषय में हम कठोर नियमों का पालन नहीं करते, परंतु यह सुनिश्चित करने हेतु कि जो कुछ हम बता रहे हैं, उसमें स्पष्टता हो, इसलिए इस पुस्तक में उपयोग किए गए कुछ शब्दों (या संज्ञाओं) के साथ हम पहचान स्थापित करेंगे।

हम आत्मा की चंगाई (या मनुष्य के हृदय) का उल्लेख करने हेतु

- ***"नया जन्म"*** इस शब्द का उपयोग करते हैं। यह तब होता है जब रोमियों 10:9,10 के अनुसार व्यक्ति प्रभु यीशु में और उसने अपनी मृत्यु एवं पुनरुत्थान के द्वारा जो कुछ किया है उसमें विश्वास करने के द्वारा नया जन्म पाता है।
- हम ***"चंगाई"*** इस शब्द का उपयोग किसी भी प्रकार की बीमारी या रोग से शरीर की किसी भी प्रकार की अलौकिक चंगाई का उल्लेख करने हेतु करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में जहां शरीर के अंग अस्तित्व में नहीं है वहां उस अंग या हिस्से की रचना करने हेतु, या शरीर में रोपे गए (इम्प्लांट) अंगों को हटाकर उस अंग के परिपूर्ण कार्य को फिर से स्थापित करने हेतु, और ऐसी अन्य बातों की चंगाई के लिए, सृजनात्मक आश्चर्यकर्म की ज़रूरत होती है,
- वहां हम ***"आश्चर्यकर्म या चमत्कार"*** इस शब्द का उपयोग करते हैं।
- हम ***"छुटकारा"*** इस शब्द का उपयोग ऐसे व्यक्ति का उल्लेख करने हेतु करते हैं जो किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत व्यसन या दुष्टात्मा

के बंधनों, दुष्टात्मा के दबाव या दुष्टात्मा से ग्रसित होने से छुटकारा पाता है। जब हम भावनाओं की चंगाई के साथ व्यवहार करते हैं,

- तब हम ***"भावनात्मक चंगाई"*** या "आंतरिक स्वास्थ्य" इन वाक्यांशों का उपयोग करते हैं।
- जब हम ***"चिन्हों और चमत्कारों"*** के विषय में बोलते हैं, तब हम सम्पूर्ण अलौकिक सेवकाई (चंगाई, छुटकारा, आश्चर्यकर्म) का उल्लेख करते हैं। उदाहरण के तौर पर, हमारा परमेश्वर मात्र चंगाई और छुट कारे के अतिरिक्त कई और बातें करता है। उदाहरण के तौर पर, बाइबल में हम कई चिन्ह, अद्‌भुत कार्य और आश्चर्यकर्म देखते हैं, जैसे तेल, रोटी, मछली का बढ़ना, और बहुत कुछ। इस पुस्तक में हम अलौकिक चंगाई के चमत्कार, छुटकारा और भावनात्मक चंगाई पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

यद्यपि इस पुस्तक में हमने भौतिक चंगाई, छुटकारा और भावनात्मक चंगाई के विषय में अलग अध्यायों में प्रस्तुत किया है और स्वतंत्र रूप से उनकी चर्चा की है, फिर भी व्यवहार में, ये सारी बातें आपस में संलग्न हैं। अक्सर, भौतिक चंगाई, भावनात्मक चंगाई और छुटकारा एक ही समय में या सभी एक के बाद एक प्रवाहित होते हैं।

आश्चर्यकर्म, चंगाइयां, और छुटकारा क्यों?

आश्चर्यकर्म, चंगाइयों, और छुटकारे का इतना महत्व क्यों है? विशेषकर आज के संसार में जहां पर विज्ञान और तकनीकी ज्ञान ने भारी उन्नति की है, हमारे पास चिकित्सीय सुविधाएं सहज उपलब्ध हैं, विशेषकर हमारे शहरों में। क्या लोग फिर भी अलौकिक चंगाई और छुटकारे पर ध्यान देंगे और क्या उन्हें इन बातों की ज़रूरत होगी? क्या हमें सुसमाचार की और अधिक "बुद्धिमानीपूर्ण" और परिष्कृत माध्यमों से नहीं देखना चाहिए?

हम चिकित्सा विज्ञान की प्रगति की बहुत सराहना करते हैं और उस सहायता को स्वीकार करते हैं जो हमें डॉक्टरों और अस्पतालों से प्राप्त होती है। हम उनकी भूमिका के महत्व को किसी भी रीति से कम नहीं कर रहे हैं। चिकित्सीय सहायता प्राप्त करने में कुछ भी गलत नहीं है।

परंतु, हम यह जानते हैं कि ऐसी परिस्थितियां या हालात होते हैं जहां पर चिकित्सीय सहायता उपलब्ध नहीं होती या किसी की सहायता करने में असमर्थ होती है। हमें परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ के द्वारा चंगाई और छुटकारा प्राप्त करने हेतु लोगों की सहायता करने की ज़रूरत है। ऐसा समय हो सकता है जहां पर चिकित्सीय उपचार उपलब्ध होते हैं, वहां पर परमेश्वर के प्रेम, सामर्थ और सच्चाई को प्रदर्शित करने हेतु हम परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ के माध्यम से चंगाई और छुटकारे की सेवा प्रदान करते हैं।

यहां पर कुछ बाइबल आधारित कारण हैं कि हमें क्यों अलौकिक चंगाई और छुटकारे की सेवा करना चाहिएः

1) आश्चर्यकर्म, चंगाइयां, और छुटकारा परमेश्वर की वास्तविकता और स्वभाव को प्रगट करते हैं।
2) आश्चर्यकर्म परमेश्वर की महानता को प्रगट करते हैं।
3) आश्चर्यकर्म परमेश्वर की करूणा को दिखाते हैं।
4) आश्चर्यकर्म लोगों पर सामर्थी प्रभाव डालते हैं, विशेषकर जो विश्वास नहीं करते उन पर।
5) जो महत्व जो यीशु ने आश्चर्यकर्मों को दिया।
6) राज्य सामर्थ के साथ आता है।
7) सुसमाचार चिन्हों के साथ प्रचार किया जाना चाहिए।
8) आश्चर्यकर्म लोगों को प्रोत्साहन देते हैं कि वे और अलौकिक बातों के लिए विश्वास करें।

हम निम्नलिखित वचनों के साथ इनमें से प्रत्येक का विस्तार करेंगे।

आश्चर्यकर्म, चंगाइयां, और छुटकारा परमेश्वर की वास्तविकता और स्वभाव को प्रगट करते हैं

बाइबल का परमेश्वर सच्चा है, और लोगों को रोगों से चंगा करना और हमें दुष्टात्मा के काम के सभी स्वरूपों से मुक्त करना उसका स्वभाव है।

निर्गमन 15:26 में उसने घोषणा की, *"मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं"* और इस प्रकार उसने वाचा के नाम **यहोवा राफा**, प्रभु हमारा चंगाईकर्ता, के द्वारा खुद को प्रगट किया है।

निर्गमन 15:26
कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधिओं को माने, तो जितने रोग मैंने मिस्त्रियों पर भेजे हैं उनमें से एक भी तुझ पर न भेजूंगा; क्योकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूं।

उसने मूसा के द्वारा बार-बार इस बात को दोहराया कि वह उसके लोगों से बीमारी को दूर करने वाला परमेश्वर है और उसने उन्हें स्वास्थ्य और बल देकर आशीषित किया।

निर्गमन 23:25,26 (व्यवस्थाविवरण 7:14,15 भी देखें)
25 और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा।
26 तेरे देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न कोई बांझ होगी; और तेरी आयु मैं पूरी करूंगा।

राष्ट्र के रूप में इस्राएल के सम्पूर्ण इतिहास में, उसने अपने लोगों को चंगा करने, छुड़ाने और उनकी रक्षा करने हेतु सामर्थ और इच्छा प्रगट की। जब वह मिस्त्र से अपने लोगों को बाहर निकाल ले आया, तब उसने अलौकिक रीति से यह सुनिश्चित किया कि अनुमानित तीस लाख लोगों के सम्पूर्ण राष्ट्र का भौतिक रूप से निर्वाह हो। यहां पर पवित्र शास्त्र के वचन कहते हैं:

भजन संहिता 105:37
तब वह अपने गोत्रियों को सोना चांदी दिला कर निकाल लाया, और उनमें से कोई निर्बल न था।

नहेम्याह 9:21
चालीस वर्ष तक तू जंगल में उनका ऐसा पालन पोषण करता रहा, कि उनको कुछ घटी न हुई; न तो उनके वस्त्र पुराने हुए और न उनके पांव में सूजन हुई।

चंगाईकर्ता और छुड़ाने वाले के रूप में परमेश्वर के विषय की समझ लोग जो विश्वास करते थे उसका एक अभिभाज्य अंग थी। वह परमेश्वर है जो हमारे सारे पापों को क्षमा करता है, हमारे सारे रोगों को चंगा करता है, और हमें विनाश से छुड़ाता है। वह अपने लोगों को ये लाभ प्रदान करता है।

भजन संहिता 103:1-5
1 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बान्धता है,
5 वही तो तेरी लालसा को उत्तम *पदार्थों* से तृप्त करता है, *जिस से* तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है।

यीशु इसलिए आया कि परमेश्वर को हम पर पूर्ण रूप से प्रगट करे और सिद्ध रूप से दिखाए। वह परमेश्वर का मूर्त रूप था। *"वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है"* (कुलुस्सियों 1:15; 2 कुरिन्थियों 4:4)। यीशु *"उसके तत्व की छाप"* था (इब्रानियों 1:3), अर्थात, परमेश्वर का निश्चित प्रतिनिधित्व। यीशु ने पिता को हम पर प्रगट किया। जो कुछ उसने किया वह परमेश्वर की इच्छा की अभिव्यक्ति थी (इब्रानियों 10:7)। यीशु ने उसकी संसारिक सेवकाई के दौरान जो कुछ किया उसका बड़ा हिस्सा था चंगाई करना, छुटकारा देना और अद्‌भुत कार्य करना, यह प्रगट करते हुए कि परमेश्वर ऐसा ही है और वह यही करता है।

बाइबल स्पष्ट रूप से यह प्रमाणित करती है कि चंगा करना, छुटकारा देना, और अद्‌भुत कार्य करना परमेश्वर का स्वभाव है। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोगों में और उसके लोगों के द्वारा वह प्रगट हो, ताकि लोग जानें कि वह अस्तित्व में है और वह वास्तव में कौन है। अतः, हम अपने विश्वास का विस्तार करते हैं और प्रार्थना करते हैं, चंगाई, छुटकारा और आश्चर्यकर्म प्रदान करते हैं इसका कारण है हमारे परमेश्वर की सच्चाई और स्वभाव को प्रगट करना।

आश्चर्यकर्म परमेश्वर की महानता को प्रगट करते हैं।

प्रभु यीशु ने जो आश्चर्यकर्म किए उनके द्वारा उसने अपनी महिमा प्रगट की।

यूहन्ना 2:11
यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।

हम एक महान परमेश्वर की सेवा करते हैं जो सर्वशक्तिमान और अनंत है। परमेश्वर किसी भी रोग या बीमारी, दुष्टात्मा के कार्य या हमारे मनों या शरीरों को प्रताड़ित करने वाली भावनात्मक समस्या से असीम रूप से निश्चित ही अधिक सामर्थी है। अलौकिक चंगाई, छुटकारा और आश्चर्यकर्म परमेश्वर की महानता को प्रगट करते हैं, विशेषकर, जब हम इन बातों को उन लोगों के जीवनों में होते हुए देखते हैं जो किसी भी चिकित्सीय सहायता से ठीक नहीं हो सकते। *"हे प्रभु यहोवा, तूने बड़े सामर्थ और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है तेरे लिए कोई काम कठीन नहीं है"* (यिर्मयाह 32:17)।

आश्चर्यकर्म परमेश्वर की करूणा को दिखाते हैं

लोग घायल हैं और पीड़ा में हैं, और कइयों को ईश्वरीय हस्तक्षेप की ज़रूरत है। परमेश्वर प्रत्येक पर तरस खाता है। *"यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से क्रोध करने वाला और अति करूणामय है। यहोवा सभों के लिए भला है और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है"* (भजन संहिता 145:8,9)।

प्रभु यीशु ने जब लोगों की बड़ी भीड़ देखी, तब उसने उन पर तरस खाया। उस तरस से भरकर उसने राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया, उन्हें कई बातें सिखाई और चंगाई और छुटकारा प्रदान किया।

मत्ती 14:14
उसने निकलकर बड़ी भीड़ देखी, और उन पर तरस खाया; और उसने उनके बीमारों को चंगा किया।

मत्ती 15:32
यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा, "मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास कुछ खाने को नहीं, और मैं उन्हें भूखा विदा करना नहीं चाहता, कहीं ऐसा न हो कि वे मार्ग में थककर मूर्च्छित हो जाएं।"

मत्ती 20:34
यीशु ने तरस खाकर उनकी आंखों को स्पर्श किया। वे तुरन्त देखने लगे और उसके पीछे हो लिए।

मरकुस 1:41
तब यीशु ने उस पर तरस खाकर अपना हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, "मैं चाहता हूं; तू शुद्ध हो जा।"

मरकुस 5:18,19
18 और जब वह नाव पर चढ़ने लगा, तो वह जिसमें पहले दुष्टात्माएं थीं, उससे बिनती करने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे।
19 परन्तु उसने उसे अनुमति न दी, और उससे कहा, "अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।"

मरकुस 6:34
उसने निकलकर बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस खाया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे जिनका कोई रखवाला न हो; और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा।

लूका 7:13-15
13 उसे देखकर प्रभु को तरस आया, और उसने उससे कहा, "मत रो।"
14 तब उसने पास आकर अर्थी को छूआ, और उठाने वाले ठहर गए। तब उसने कहा, "हे जवान, मैं तुझसे कहता हूं, उठ।"
15 तब वह मृत व्यक्ति उठ बैठा, और बोलने लगा; और उसने उसे उसकी मां को सौंप दिया।

परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा के द्वारा उण्डेला गया है (रोमियों 5:5)। मसीह का प्रेम ही है जो हमें प्रेरणा प्रदान करता है (2 कुरिन्थियों 5:14)। यही हमें करूणा में चलने की सामर्थ प्रदान करता है।

जब हमारा हृदय परमेश्वर के तरस या करूणा से पसीजता है, तब हम लोगों को चंगाई और छुटकारा पाते हुए देखने के उसी उद्देश्य के लिए कार्य करते हैं।

आश्चर्यकर्म लोगों पर सामर्थी प्रभाव डालते हैं, विशेषकर उन पर जो विश्वास नहीं करते

आश्चर्यकर्म लोगों का ध्यान आकर्षित करते हैं

जब चंगाइयां, आश्चर्यकर्म और छुटकारा होता है, तब लोगों का ध्यान संदेशदाता की ओर और उसके द्वारा लाए गए संदेश की ओर आकर्षित होता है।

हम हमारे प्रभु यीशु मसीह की सेवकाई में इस बात को देखते हैं।

लूका 5:15 (लूका 6:17 भी देखें)
परन्तु उसकी चर्चा और भी फैलती गई, और भीड़ की भीड़ उसकी सुनने के लिए और अपनी बीमारियों से चंगे होने के लिए इकट्ठी हुई।

हम प्रारम्भिक कलीसिया में भी यह देखते हैं। फिलिप्पुस डिकन, जो सुसमाचार प्रचारक बना, मात्र ऐसा एक ही उदाहरण हैः

प्रेरितों के काम 8:6
और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर, और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।

आश्चर्यकर्म "संकेत स्तम्भों" (साईन–पोस्ट) का काम करते हैं और लोगों को परमेश्वर की महिमा करने हेतु प्रेरित करते हैं

हम हमारे प्रभु यीशु मसीह की सेवकाई में बार-बार देखते हैं कि जब लोगों ने आश्चर्यकर्म और चंगाइयां देखी, तब उनके विचार परमेश्वर की ओर फिर गए और उन्होंने परमेश्वर की महिमा की (या उसकी प्रशंसा की)।

लकवे से पीड़ित व्यक्ति के चंगा होने पर, जिन लोगों ने यह देखा, वे अचम्भित हुए और उन्होंने परमेश्वर की प्रशंसा कीः

मत्ती 9:8
लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे, जिसने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है।

जब लोग चंगे हुए, तब उन्होंने परमेश्वर की महिमा कीः

मत्ती 15:30,31

30 और भीड़ पर भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गूगों, टुंडों और बहुत से अन्य रोगियों को लेकर उसके पास आई, और उन्हें यीशु के पांवों पर डाल दिया, और उसने उन्हें चंगा किया।

31 और जब लोगों ने देखा कि गूंगे बोलते हैं और टुण्डे चंगे होते हैं और लंगड़े चलते हैं और अन्धे देखते हैं, तो उन्होंने अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की।

जब जवान व्यक्ति मुर्दों में से जी उठा, तब लोग अचम्भित हुए और उन्होंने परमेश्वर की महिमा कीः

लूका 7:15,16

15 तब वह मृत व्यक्ति उठ बैठा, और बोलने लगा; और उसने उसे उसकी मां को सौंप दिया।

16 इससे सब पर भय छा गया; और वे परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यद्वक्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि की है।

कुबड़ी स्त्री ने चंगी होने पर परमेश्वर की स्तुति कीः

लूका 13:13

तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरंत सीधी हो गई, और परमेश्वर की बढ़ाई करने लगी।

लाजर के मुर्दो में से जिलाए जाने पर परमेश्वर की महिमा हुईः

यूहन्ना 11:4

यह सुनकर यीशु ने कहा, "यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है, ताकि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।"

कभी-कभी, लोगों को अलौकिक बातों का "डर" लगता है, मानो वह खतरनाक क्षेत्र हो और हमें परमेश्वर से दूर ले जाएगा। जी हां, वहां दुष्टात्मा की शक्तियां और धोखा देने वाली आत्माएं होती हैं, जो झूठे चिन्ह और चमत्कार करती हैं, जो हमें पहचानती हैं। परंतु, हमें लोगों के जीवनों पर परमेश्वर की सामर्थ के वास्तविक प्रगटन के सामर्थी प्रभाव को देखने

की भी ज़रूरत है। जब लोगों का सामना व्यक्तिगत तौर पर परमेश्वर की आश्चर्यकर्म करने वाली, चंगाई प्रदान करने वाली और छुटकारा देने वाली सामर्थ से होता है, तो प्रायः हर बार, उनके हृदय जीवित परमेश्वर की स्तुति करने हेतु उसकी ओर फिरते हैं।

पाप की कायलियत ले आते हैं

जब लोग आत्मा के वरदानों, ज्ञान के वचनों, भविष्यद्वाणी, आदि के माध्यम से परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ को प्रगट होते हुए देखते हैं, तो हम उन्हें पश्चाताप करते हुए और परमेश्वर की ओर फिरते हुए देखने की अपेक्षा करते हैं।

1 कुरिन्थियों 14:24,25
24 परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या अनपढ़ा मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे।
25 और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है।

जब यूहन्ना 4 में प्रभु यीशु ने कुंए के पास उस स्त्री से बातें की, तब जो कुछ भी हुआ, वह एक उत्तम उदाहरण है। उसने विश्वास किया, और परिणामस्वरूप पूरे शहर ने आकर देखा, सुना और विश्वास किया।

पतरस और उसके साथी सारी रात मछली पकड़ने की कोशिश करते रहे और उन्होंने कुछ नहीं पकड़ा। जब प्रभु यीशु ने उन्हें बाहर जाकर फिर से उनके जाल डालने के लिए कहा, जब पतरस ने आश्चर्यजनक रूप से मछलियों को जाल में फंसते हुए देखा, तब उसकी प्रतिक्रिया थी, पाप के विषय में कायलियत को दिखानाः

लूका 5:8
यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पांवों पर गिरा, और बोला, हे प्रभु, मेरे पास से जाइए, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं।

लोगों को निर्णय की ओर ले आता है

प्रेरित पौलुस लोगों को यीशु मसीह का अनुसरण करने हेतु प्रेरित करने के उसके प्राथमिक तरीके को स्पष्ट रूप से पहचानता है। उसने कहा, कि परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से किए गए सामर्थी चिन्ह और चमत्कारों द्वारा सुसमाचार के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया प्राप्त करने हेतु उसने यह वचन और कर्म से किया।

रोमियों 15:18,19

18 क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का हियाव नहीं, जो मसीह ने अन्यजातियों की अधीनता के लिए वचन, और कर्म,
19 और चिन्हों और अद्‌भुत कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए, यहां तक कि मैंने यरूषलेम से लेकर चारों और इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार किया।

आश्चर्यकर्म जगत के पापमय शहरों के परिवर्तन को देखने के लिए आवश्यक हैं

मत्ती 11:20-26

20 तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिनमें उसने बहुतेरे सामर्थ के काम किए थे, क्योंकि उन्होंने अपना मन नहीं फिराया था।
21 "हाय, खुराजीन! हाय, बैतसैदा! जो सामर्थ के काम तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते।
22 परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि न्याय के दिन तुम्हारी दषा से सूर और सैदा की दषा अधिक सहने योग्य होगी।
23 और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा; जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए हैं, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता।
24 परंतु मैं तुमसे कहता हूं कि न्याय के दिन तेरी दषा से सदोम के देष की दषा से अधिक सहने योग्य होगी।"
25 उसी समय यीशु ने कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं आपका धन्यवाद करता हूं, कि आपने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा और बालकों पर प्रगट किया है।
26 हां, हे पिता, क्योंकि आपको यही अच्छा लगा।"

उपर्युक्त अनुच्छेद में, हमारे पास अत्यंत दिलचस्प विरोधाभास है। यीशु बताता है कि पुराने नियम के पापमय नगर, सूर, सैदा और सदोम ने यदि प्रभु यीशु मसीह द्वारा किए जा रहे चंगाइयों और छुटकारे के आश्चर्यकर्मों को देखा होता, तो उन्होंने पश्चाताप किया होता। परमेश्वर के अलौकिक सामर्थ के प्रगटन के द्वारा आत्मिक अंधकार और पाप में पड़े नगर को कायल कर पश्चाताप की ओर लाया जा सकता है। अतः, जब हम आश्चर्यकर्म, चिन्ह और अद्‌भुत कार्य करने हेतु सुसज्जित होते हैं, तब हम हमारे शहरों के अत्यंत अंधकारमय स्थान में हियाव के साथ जाकर लोगों को प्रभु की ओर फिरते हुए देखने की अपेक्षा करते हैं, क्योंकि वे पाते हैं कि परमेश्वर की सामर्थ उनके जीवनों को छू रही है।

दूसरी ओर, खूराजीन, बैतसैदा और कफरनहूम आदि नगर प्रभु यीशु मसीह द्वारा दिए गए सामर्थपूर्ण आश्चर्यकर्मों, चंगाइयों और छुटकारों द्वारा अविचलित रहते प्रतीत होते हैं। इस संदर्भ में, प्रभु यीशु दो बातों का उल्लेख करता है। वह उल्लेख करता है कि कफरनहूम क्या *"स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा, जो एक इब्रानी रूपक है, जो अत्याधिक सम्पन्नता, अधिकतम विशेषाधिकारों के आनंदोपभोग को दर्शाने वाला शब्द है"* (बाइबल पर ऍडम क्लार्क की टीका)। वह यह भी बताता है कि *"ज्ञानी और समझदार"* लोग जो अपनी ही दृष्टि में बुद्धिमान हैं सत्य को देखने से इन्कार करते हैं। ये बातें बुद्धिमान और समझदार लोगों से छिपी हैं, इसलिए नहीं क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि वे उसे देखें, परंतु क्योंकि स्वाभाविक मनुष्य आत्मा की बातों को समझ नहीं सकता (1 कुरिन्थियों 2:14) और मनुष्य अपनी बुद्धि से परमेश्वर को और उसके मार्गों को नहीं जान सकता (1 कुरिन्थियों 1:21)। बल्कि, बुद्धिहीन (बालक) जो कि सरलता से विश्वास कर सकते हैं, वे देख पाते हैं। जो लोग अपनी सम्पन्नता (धन, सफलता, ऐश्वर्य) या उनकी अपनी बुद्धिमत्ता (बुद्धिवाद, युक्तिवाद) में खोए रहते हैं; सामान्य तौर पर चिन्हों, अद्‌भुत कार्यों और आश्चर्यकर्मों द्वारा प्रगट परमेश्वर की वास्तविकता को देखने से इन्कार करते हैं। परमेश्वर उनकी ओर टकटकी लगाकर देखता है, और वे उसे देखने से इन्कार करते हैं कि वह कौन है। परंतु, एक बार जब ये (धन-दौलत, बुद्धिमत्ता) अपनी सीमा पार कर लेती है या छीन ली जाती है, तब मनुष्य के पास यह अंगीकार करने के बजाए कि

परमेश्वर सच्चा है और वह कार्य करता है, पीछे छुपाने के लिए कुछ नहीं बचता। इसलिए प्रभु यीशु के समान, हम भी परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करना जारी रखें और परमेश्वर को यह मौका दें कि वे प्रत्येक व्यक्ति को उस स्थान पर लाए जहां पर वे खुद के अंत तक पहुंचते हैं, और परमेश्वर की सामर्थ पहचानने लगते हैं।

महत्व जो यीशु ने आश्चर्यकर्मों को दिया

उसकी संसारिक सेवकाई में प्रभु यीशु ने जितना समय प्रचार करने और शिक्षा देने में बिताया, उतना ही समय, शायद अधिक समय चंगाई, छुटकारा प्रदान करने और आश्चर्यकर्म करने में बिताया। सुसमाचार की पुस्तकें कई व्यक्तिगत चंगाइयों और आश्चर्यकर्मों के विषय में लिखती हैं, उन समयों के साथ जब हमने अभी उल्लेख किया कि कईयों ने चंगाई पाई। वस्तुतः, यूहन्ना इस वाक्य से अपने सुसमाचार का अंत करता हैः

यूहन्ना 20:30,31
30 यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए।
31 परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

यूहन्ना 21:25
और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।

यहां पर कुछ महत्वपूर्ण बयान हैं जो यीशु ने उस समय किए जब वह उस अलौकिक सेवकाई के विषय में बोल रहा था जो वह प्रगट कर रहा था।

1) जो आश्चर्यकर्म वह कर रहा था, वे यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले की गवाही से अधिक महत्वपूर्ण थे (यूहन्ना 5:31-36)।

2) जब यहूदियों ने मसीह होने के विषय में उसे सवाल पूछा, तब उसने उन आश्चर्यकर्मों की ओर संकेत किया जिन्हें वह प्रमाणीकरण के रूप में कर रहा था और उसने उन्हें चुनौती दी कि उसके द्वारा किए जाने वाले आश्चर्यकर्मों की वजह से वे विश्वास करें (यूहन्ना 10:24,25,37,38)।

3) जब यूहन्ना बपतिस्मा करने वाला, जो कैद में था, यह संदेह कर रहा था कि क्या यीशु सचमुच मसीह है, तब प्रभु यीशु मसीह ने इस बात के प्रमाण के रूप में अपनी अलौकिक सेवकाई की ओर निर्देश किया कि वह सचमुच मसीह है (मत्ती 11:1-6)।

4) जब उसके अपने शिष्यों ने पिता के विषय में उससे सवाल किया, तब प्रभु यीशु ने, इस प्रमाण के रूप में कि वह और पिता एक थे, उन अलौकिक कामों की ओर संकेत किया जो वह कर रहा था (यूहन्ना 14:8-11)।

हम "पिता के काम" नामक अध्याय 3 में इस विषय में और अधिक परीक्षण करेंगे। यहां इतना बताना काफी है कि आश्चर्यकर्म, चंगाइयां और छुटकारा यीशु की सेवकाई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थे। उसने ये बातें महान आदेश में अपने चेलों को दी, और उसके बाद हमें सौंपी। इसका कोई कारण नहीं है कि हमें क्यों अलौकिक सेवकाई को उतना अधिक महत्व नहीं देना चाहिए जितना यीशु ने दिया।

राज्य सामर्थ के साथ आता है

दो राज्य आपस में संघर्षरत हैं - परमेश्वर का राज्य और अंधकार का राज्य। परमेश्वर का राज्य सब पर राज करता है (भजन संहिता 103:19)। जैसे जैसे परमेश्वर का राज्य उन्नति पाता है - वह उस प्रत्येक बात का पराजय करता है जो उसकी सच्ची अभिव्यक्ति का विरोध करती है। इसमें रोग, बीमारी, और दुष्टात्मा से छुटकारा प्रदान करना शामिल है।

प्रभु यीशु हमारे क्षेत्र में परमेश्वर के राज्य का परिचय कराने आया। वह राज्य के संदेश के साथ यह बताते आया कि स्वर्ग का राज्य निकट है (मत्ती 4:17)। उसने राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया और ऐसा करते समय, उसने बीमारों को चंगा किया, दुष्टात्माओं को निकाला और आश्चर्यकर्म किए (मत्ती 4:23,24)। यीशु परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करने के द्वारा पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य ले आया।

मत्ती 9:35
और यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा और उनकी सभाओं में उपदेष करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

मत्ती 12:28
परंतु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।

जब प्रभु यीशु ने उसके चेलों को, पहले बारहों को और उसके बाद दूसरे सत्तर लोगों को परमेश्वर के राज्य की घोषणा करने हेतु जाने की आज्ञा दी—तब उसने उन्हें यह कई विभिन्न तरीकों से करने के लिए कहा होता। उसने कहा होता, 'कलीसिया शुरू करो, कुछ शिक्षा दो, और उनसे कहो कि परमेश्वर का राज्य आया है।' उसने कहा होता, 'भूखों को खिलाओ, नंगों को वस्त्र पहनाओ और उनसे कहो कि परमेश्वर का राज्य निकट है।' ये सारी बातें अच्छी हैं और हम उन्हें करते हैं, परंतु जो आज्ञा यीशु ने बार-बार दी वह थी, बीमारों को चंगा करो, दुष्टात्माओं को निकालो, और उन्हें बताओ कि परमेश्वर का राज्य आ पहुंचा है। इस प्रकार प्रभु यीशु चाहता था कि हमारे क्षेत्र में राज्य का परिचय किया जाए!

मत्ती 10:7,8
7 और चलते चलते प्रचार कर कहो, 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।'
8 बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। तुमने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।

लूका 9:1, 2, 6
1 फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं को और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया,
2 और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने, और बीमारों को अच्छा करने के लिए भेजा।
6 तब वे निकलकर गांव गांव सुसमाचार सुनाते, और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए फिरते रहे।

लूका 10:1, 8, 9
[1] और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा।
[8] "और जिस नगर में जाओ, और वहां के लोग तुम्हें ग्रहण करें, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ।
[9] वहां के बीमारों को चंगा करो; और उनसे कहो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।"

हमें प्रार्थना करना सिखाया गया है, *"तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसे पृथ्वी पर, वैसे स्वर्ग में पूरी हो"* (मत्ती 6:10)। हमारी इच्छा और कार्य यहां पृथ्वी पर लोगों के हृदयों और जीवनों में उसका राज्य स्थापित होते हुए देखना है। जो उसके राज्य में नहीं है, उसकी यहां पृथ्वी पर अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। कलीसिया राज्य का हिस्सा है और उसे यहां पृथ्वी पर राज्य का अधिकार दिया गया है ताकि इसे अमल में लाए। ऐसा करने हेतु, हमें *"नरक के फाटकों"* के विरुद्ध जाने का और अंधकार के कामों को दूर करने का अधिकार दिया गया है क्योंकि ये परमेश्वर के राज्य के विरोध में हैं।

मत्ती 16:18,19
[18] और मैं तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
[19] मैं तुझे स्वर्ग राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।

नए नियम की कलीसिया राज्य के अधिकार में चलती थी और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाते हुए राज्य की सामर्थ प्रगट करती थी।

प्रेरितों के काम 8:5-8,12
[5] और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।
[6] और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर, और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।
[7] क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए।
[8] और उस नगर में बड़ा आनंद हुआ।

12 परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था, तो लोग क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।

1 कुरिन्थियों 4:20
क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, परन्तु सामर्थ में है।

राज्य में हम में से प्रत्येक को परमेश्वर के राज्य का अधिकार सौंपा गया है और हमें अधिकार दिया गया है कि हम परमेश्वर के राज्य की सामर्थ का प्रतिनिधित्व करें, उसे घोषित करें और प्रगट करें।

यीशु के द्वारा, उसके चेलों के द्वारा और प्रारम्भिक कलीसिया द्वारा परमेश्वर के जिस राज्य की घोषणा की गई, जिसे प्रगट किया गया, वह ऐसा राज्य था जो सामर्थ के साथ आया। परमेश्वर के राज्य की सामर्थ ने अंधकार की ताकतों का सामना किया और उन्हें पराजित किया। हम इस राज्य का भाग हैं और हमें भी यही करते रहना है। हम परमेश्वर के इसी राज्य के प्रतिनिधि हैं। हमारा कर्तव्य परमेश्वर के राज्य को यहां हमारे क्षेत्र में लाना है। हमें *"तेरा राज्य आवे, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे पृथ्वी पर पूरी हो"* के अनुसार प्रार्थना करना है और सेवा करना है। राज्य सामर्थ के साथ आता है जो चंगाई और छुटकारे के द्वारा प्रगट होता है। **राज्य में हम में से प्रत्येक को परमेश्वर के राज्य का अधिकार सौंपा गया है और हमें अधिकार दिया गया है कि हम परमेश्वर के राज्य की सामर्थ का प्रतिनिधित्व करें, उसे घोषित करें और प्रगट करें।**

सुसमाचार का प्रचार चिन्हों के साथ किया जाना चाहिए

जैसा कि हमने पहले बताया है, यीशु सुसमाचार प्रचार करता फिरा और उसकी शिक्षा और प्रचार के साथ आश्चर्यकर्म, चिन्ह, अद्भुत कार्य, चंगाइयां और छुटकारा होता था।

फरीसी सामान्य तौर पर यीशु के विरोधी थे और अधिकतर लोग उसमें दोष ढूंढ़ने का प्रयास करते थे। परंतु नीकुदेमूस नामक फरीसी की सोच भिन्न थी। उसका तर्काधार यह था कि यीशु जिन अलौकिक आश्चर्यकर्मों

को कर रहा था, उनके कारण वह परमेश्वर की ओर से आया हुआ शिक्षक होना चाहिए।

यूहन्ना 3:1,2

[1] फरीसियों में से नीकुदेमुस नामक एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।
[2] उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, "हे रब्बी, हम जानते हैं कि आप परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आए हैं; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो आप दिखाते हैं, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता।"

आश्चर्यकर्म संदेश को और संदेशदाता को श्रोताओं के सामने प्रमाणित करते हैं। सुसमाचार की घोषणा करने के अलावा, हमें हमारे संदेश को प्रमाणित करने हेतु चंगाइयों, आश्चर्यकर्मों और छुटकारों को प्रगट करना चाहिए। प्रभु यीशु ने इसे हमारे लिए अनुसरण करने योग्य नमूने के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्रेरितों के काम 2:22

"हे इस्राएलियो, ये बातें सुनोः कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आष्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए, जिसे तुम आप ही जानते हो।

इब्रानियों 2:3,4

[3] तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निष्चिंत रहकर कैसे बच सकते हैं, जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें निष्चय हुआ?
[4] और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।

फिर उसने अपने चेलों को जब वे सुसमाचार प्रचार करने जाते थे, तब वही करने की आज्ञा दी। उसके पुनरूत्थान के बाद दिए गए महान आदेश में, उसके अनुयायियों के लिए वह चाहता था कि वे ऐसा करना जारी रखें। हमें उस प्रत्येक बात का निरीक्षण (अनुसरण) करना है जिसकी आज्ञा प्रभु ने अपने चेलों को दी है (मत्ती 28:20) जिसमें वह तरीका शामिल है जिससे वे सेवकाई करते थे। प्रभु ने अपने चेलों के साथ काम करना बंद नहीं किया है और उसने चिन्हों के साथ अपने वचन की पुष्टि करना बंद

नहीं किया है। जब कभी हम उसके वचन का प्रचार करते हैं, तब जो कुछ हम प्रचार करते हैं, उसे प्रमाणित करने हेतु हमें साथ में चिन्हों की अपेक्षा करना चाहिए।

मरकुस 16:15-20
15 और उसने उनसे कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।
16 जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।
17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे,
18 और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।
19 निदान प्रभु यीशु उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।
20 और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन।

प्रारंभिक कलीसिया का सुसमाचार की घोषणा में दृढ़ विश्वास था और वह अपेक्षा करती थी कि इसके साथ चंगाइयां, चिन्ह और अद्‌भुत कार्य हों। वे प्रार्थना करते थे ऐसी बातें हों। प्रेरितों के कामों की पुस्तकों में कुछ आश्चर्यकर्मों और चंगाइयों के विषयों में लिखा गया है जो प्रारंभिक कलीसिया के द्वारा देखे गए थे।

प्रेरितों के काम 4:29 ,30
29 अब, हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं।
30 और चंगा करने के लिए तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्‌भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएं।

जैसा कि हमने पहले देखा है, प्रेरित पौलुस इसी तरह से सेवा किया करता था। उसे अपेक्षा थी कि सामर्थी चिन्ह और अद्‌भुत कार्य हों, इस उद्‌देश्य से कि लोग यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रति उत्तर दें।

रोमियों 15:18,19

[18] क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का हियाव नहीं, जो मसीह ने अन्यजातियों की अधीनता के लिए वचन, और कर्म,
[19] और चिन्हों और अद्भुत कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए, यहां तक कि मैंने यरूषलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार किया।

आश्चर्यकर्म लोगों को प्रोत्साहन देते हैं कि वे और अलौकिक बातों के लिए विश्वास करें

हम यीशु की सेवकाई में देखते हैं कि लोगों की बड़ी भीड़ उसके पास आती थी, केवल इसलिए क्योंकि जो कुछ वह कर रहा था उसके विषय में उन्होंने सुना था और वे स्वयं यह पाना चाहते थे। उन्होने अन्य लोगों के विषय में सुना था जो बीमार, विकलांग, दुष्टात्मा से पीड़ित, और किसी न किसी रीति से रोगी थे और जब वे यीशु के पास आए तब वे चंगे हो गए। इससे उनके हृदयों में विश्वास और प्रत्याशा ने जन्म लिया और भीड़ की भीड़ वहां इकट्ठा होती थी जहां कहीं यीशु होता, क्योंकि उनकी ज़रूरत थी और वे स्वयं पाना चाहते थे। हम कभी नहीं देखते कि लोग पाने की इच्छा करते थे इसलिए यीशु ने कभी उन्हें वापस किया हो। वह हमेशा लोगों के विश्वास का उत्तर देता था और उनकी सेवा करता था। यहां पर इस बात की पुष्टि करने हेतु कुछ वचन दिए गए हैं:

मत्ती 12:15

यह जानकर यीशु वहां से चला गया; और बहुत लोग उसके पीछे हो लिए, और उसने सबको चंगा किया।

मत्ती 15:30

और भीड़ पर भीड़ लंगडों, अन्धों, गूगों, टुंडों और बहुत से अन्य रोगियों को लेकर उसके पास आई, और उन्हें यीशु के पांवों पर डाल दिया, और उसने उन्हें चंगा किया।

मत्ती 19:2

और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली और उसने उन्हें वहां चंगा किया।

लूका 5:15
परन्तु उसकी चर्चा और भी फैलती गई, और भीड़ की भीड़ उसकी सुनने के लिए और अपनी बीमारियों से चंगे होने के लिए इकट्ठी हुई।

लूका 9:11
यह जानकर भीड़ उसके पीछे हो ली; और वह आनन्द के साथ उनसे मिला, और उनसे परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगाः और जो चंगे होना चाहते थे, उन्हें चंगा किया।

"यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक जैसा है" (इब्रानियों 13:8)। हम जानते हैं कि वह आज हमारे साथ उपस्थित होता, तो वह यही करता।

यदि यही यीशु आज हमारी कलीसियाओं में और मसीही समुदायों में उसी तरह उपस्थित होता, जैसा वह उसकी संसारिक सेवकाई के दौरान होता था, तो क्या होता? यह अत्यंत सम्भव है कि बड़ी भीड़ हमारे गिरजाघरों में चंगाई, छुटकारा और आश्चर्यकर्म पाने हेतु ठीक उसी तरह आती, जिस तरह नए नियम के समयों में होता था। प्रभु यीशु ने प्रतिज्ञा की है और वह चाहता है कि वह इसी तरह हमारे मध्य में हो (मत्ती 18:20)। अब यह हमारे हाथों में है कि हम अपेक्षा करें कि प्रभु यीशु हमारे मध्य बिल्कुल वही हो जैसा वह वास्तव में है। जब लोग आश्चर्यकर्मों को अनुभव करेंगे, तब वे प्रोत्साहित होंगे और अधिकाई से अलौकिक बातों पर, यीशु वास्तव में कौन है इस पर और अधिकाई से विश्वास करने हेतु प्रेरित होंगे!

परमेश्वर की इच्छाः प्रत्येक विश्वासी के द्वारा अलौकिक कार्य

प्रभु यीशु ने बताया कि जो कोई उसमें विश्वास करेंगे वे उसी प्रकार अलौकिक कामों को करेंगे जैसे उसने किए।

यूहन्ना 14:12
मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

मरकुस 16:17,18
17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे,

[18] और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।

प्रभु यीशु ने यह स्पष्ट किया, चेले होने के नाते हमें हमारे स्वामी के समान बनना है। यदि हमारा स्वामी अलौकिक चिन्ह और अद्‌भुत कार्य करता था, तो उसके चेलों के रूप में हमें भी ऐसा ही करना है।

मत्ती 10:25
चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है। जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालों को और क्या न कहेंगे!

लूका 6:40
चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।

परमेश्वर ने यह योजना बनाई है कि हम सभी जो यीशु मसीह को अपनाते हैं, वे उसके स्वरूप के अनुरूप बनें। *"क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है, उन्हें पहले से ठहराया भी कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे"* (रोमियों 8:29)। यीशु भाइयों में पहिलौठा है। बाकी भाइयों को यीशु मसीह के स्वरूप में, उसके समान होना है। हमें वैसे ही चलने के लिए बुलाया गया है जैसे मसीह चला। *"जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था"* (1 यूहन्ना 2:6)। यदि मसीह आत्मा की सामर्थ में चला और उसने चंगाइयां, छुटकारे और आश्चर्यकर्म किए, तो हमें भी इनमें वैसे ही चलने का प्रयास करना है जैसे वह चला।

अगले अध्याय में हम विस्तार के साथ चंगाई और छुटकारा प्रदान करने की सेवकाई के विषय में विस्तार के साथ बताएंगे। हम दो महत्वपूर्ण सच्चाइयों पर ज़ोर देना चाहेंगे जो प्रत्येक विश्वासी को सामर्थ प्रदान करती हैं कि वे परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करें:

अ. पवित्र आत्मा सभी विश्वासियों को दिया गया था
ब. पुत्र होने की महिमा सभी विश्वासियों को दी गई

पवित्र आत्मा की सामर्थ सभी विश्वासियों को दी गई थी: यीशु ने पवित्र आत्मा की सामर्थ और अभिषेक से अलौकिक कार्य किए।

जब वह पृथ्वी पर था, तब वह सम्पूर्ण परमेश्वर और सम्पूर्ण मानव था। ईश्वरत्व और मानवता का एक साथ मेल था। वह मूल रूप से परमेश्वर था और वह उसकी पहचान थी। परंतु उसने परमेश्वरत्व की सारी सामर्थ को हटाकर रखा (सर्वविद्यमानता, सर्वशक्तिमानता, सर्वज्ञता की सनातन महिमा), क्योंकि यह सामर्थ लहू और मांस के मानव शरीर में समा नहीं सकती थी। फिलिप्पियों 2:7 में, उसने *''अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया"*, यूनानी शब्द *कैनो´* से आता है, जिसका अर्थ है "खुद को खाली करना" या "रिक्त कर देना"। जब वह मानव शरीर में था, तब उसने ईश्वरत्व की सामर्थ से खुद को खाली कर दिया। मानव शरीर में रहते हुए वह सर्वविद्यमान, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी नहीं था।

मानव देह में, वह सर्वशक्तिमान नहीं था। कभी-कभी वह थक जाता था, उसे विश्राम की, भोजन आदि की आवश्यकता होती थी। उसे बेड़ियों से जकड़ा गया, कोड़े मारे गए और क्रूस पर कीलों से ठोक दिया गया। मानव शरीर में, वह सर्वविद्यमान नहीं था। वह पैदल चलता था, नाव में और गधे पर सवार होता था। मानव देह में वह सर्वज्ञानी नहीं था। वह बुद्धि में बढ़ता गया (लूका 2:46, 52)। पिता ने उसे सिखाया था (यूहन्ना 8:28)। वह प्रभु का दिन नहीं जानता था (मरकुस 13:32)।

इस प्रकार जो सेवकाई प्रभु यीशु ने की, वह उसने परमेश्वरत्व की सामर्थ से नहीं की (सर्वविद्यमानता, सर्वशक्तिमानता, सर्वज्ञान की सामर्थ से नहीं), परंतु ऐसा उसने पवित्र आत्मा की सामर्थ से किया।

लूका 4:18,19
[18] प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं;
[19] और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।

मत्ती 12:28
परंतु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।

प्रेरितों के काम 10:38
कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया। वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।

जिन आश्चर्यकर्मों को यीशु ने किया, उसने उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ से किया।

प्रभु यीशु ने उसके बाद पवित्र आत्मा के इसी सामर्थ की सभी विश्वासियों को प्रतिज्ञा दी जब वे आत्मा में बपतिस्मा पाते हैं।

प्रेरितों के काम 1:5,8
क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूषलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।

पिन्तेकुस्त की सामर्थ, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा आज के लिए है (प्रेरितों के काम 2:38,39)। अतः, सभी विश्वासी उन कामों को कर सकते हैं जिन्हें यीशु ने, पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा किया।

पुत्र होने की महिमा सभी विश्वासियों को दी गई है: हमने पहले ही बताया कि जब प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर रहता था, तब वह परमेश्वर के रूप में अपनी सामर्थ में नहीं चलता था। वह परमेश्वर के पुत्र के रूप में चलता था और उसके पास वह महिमा थी, जिसे हम पुत्र होने की महिमा कहते हैं।

यूहन्ना 1:14
और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर उसने हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

यूहन्ना 2:11
यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।

"महिमा" यह शब्द ग्रीक भाषा के *'दोक्सा'* से आता है जो एक मूल शब्द से आता है जिसका अर्थ है अत्यंत स्पष्ट करना। नए नियम में जिस यूनानी *'दोक्सा'* शब्द का उपयोग किया गया है, उसका अर्थ है इस बात का प्रगटीकरण कि परमेश्वर कौन है और वह क्या करता है। यह पुत्र होने की महिमा जिसमें प्रभु यीशु मसीह चला, आश्चर्यकर्मों, अनुग्रह, और सत्य के द्वारा प्रगट हुई।

यूहन्ना 17:5,22

5 "और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहले, मेरी तेरे साथ थी।

22 और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं।"

पृथ्वी पर रहते हुए यीशु के पास वह महिमा नहीं थी जो उसके पास तब थी जब वह पिता के पास भूतकाल में अनंतकाल में थी। उसने इसे हटाकर रख दिया और पुत्र की महिमा में पृथ्वी पर चला। अर्थात, हम जानते हैं कि उसके स्वर्गारोहण के बाद, जिस महिमा को उसने हटाकर रखा था, उसे वापस दे दी गई। वह सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर है, पिता और पवित्र आत्मा की बराबरी में है।

यीशु ने जो महिमा हमें दी, वह पुत्र की महिमा है। हमें पुत्र की महिमा के साथ बुलाया गया है, धर्मी ठहराया गया है और महिमान्वित किया गया है (रोमियों 8:30)। प्रत्येक विश्वासी के पास यह पुत्र की महिमा है - परमेश्वर की संतान के रूप में महिमा। इसलिए हमारे पास यह प्रगट करने की योग्यता है कि परमेश्वर कौन है और वह क्या करता है।

प्रत्येक विश्वासी के पास यह पुत्र की महिमा है - परमेश्वर की संतान के रूप में महिमा। इसलिए हमारे पास यह प्रगट करने की योग्यता है कि परमेश्वर कौन है और वह क्या करता है।

सामर्थ और महिमा में चलना

प्रभु यीशु के पास बेपरिमाण आत्मा था (यूहन्ना 3:34) और वह पुत्र की महिमा में चलता था, क्योंकि वह पिता के कामों को करता था - चंगाई करना, छुटकारा देना और सामर्थी चिन्ह और अद्‌भुत कार्य करना। हम सभी विश्वासी, जिन्होंने पवित्र आत्मा की वर्षा पाई है, उनके पास आत्मा की सामर्थ के उसी असीम भंडार का अधिकार है। हमें पुत्र की वही महिमा दी गई है। अभी हमें आत्मा की उस सामर्थ और महिमा में चलना सीखना है और प्रशिक्षण पाना है जो हम में वास करती है। हमें यह बदलाव करने की ज़रूरत है। हमारी प्राकृतिक समझ की सीमाओं के अनुसार चलने और खुद को हमारी प्राकृतिक योग्यताओं तक सीमित करने के बजाए, हमें सी-खना है कि आत्मा के क्षेत्र में कैसे कदम रखें, और कैसे सेवा करें जिससे परमेश्वर की सामर्थ और महिमा प्रगट हो। हम अब तक वहां नहीं पहुंचे हैं, परंतु हमें यह सफर करने की ज़रूरत है क्योंकि हम उन कामों को करना सीखते हैं और उनसे भी बड़े कामों को।

हम परमेश्वर की और सामर्थ क्यों प्रगट नहीं कर पा रहे हैं?

यहां पर कुछ कारण हैं कि हम चंगाइयों, आश्चर्यकर्मों और छुटकारे के कामों में परमेश्वर की सामर्थ को और अधिकाई से प्रगट होते हुए क्यों नहीं देख रहे हैं।

ज्ञान का अभाव

यशायाह 5:13अ
इसलिये अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बंधुआई में जाती है,

होशे 4:6अ
मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई।

कभी-कभी परमेश्वर ने हमें क्या दिया है और उसने अपने वचन में क्या घोषणा की है इसका ज्ञान हमें नहीं होता, इस कारण हम बंधुवाई में, कैद में रहते हैं और हमें इस बात का अहसास तक नहीं होता। परमेश्वर ने बेहतर बातों को प्रदान किया है यह न समझते हुए, यह सोचकर कि यही मानक है, हम बातों को वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसे वे होती हैं। अतः,

सत्य सिखाने की ज़रूरत है और परमेश्वर ने अपने वचन में जो घोषणा की है उसकी समझ तक लोगों को लाने की हमें ज़रूरत है। जब हम उसके वचन में आगे बढ़ेंगे, तब हम सत्य को जानेंगे और सत्य हमें स्वतंत्र करेगा।

अलौकिक के सम्बंध में गलत शिक्षा

कभी-कभी हमें गलत शिक्षा दी जाती हैं जो हमें अलौकिक बातों को अनुभव करने से रोकती हैं या चंगाइयों, छुटकारे के कामों और आश्चर्यकर्मों में परमेश्वर की सामर्थ के प्रगटीकरण के लिए परमेश्वर पर विश्वास करने हेतु आगे कदम बढ़ाने से रोकती हैं। जब हमें परमेश्वर के वचन के सत्य के बजाए, मनुष्य की परम्पराएं और कल्पनाएं सिखाई जाती हैं, तब हमें उन बातों से वंचित रखा जाता है जो परमेश्वर ने हमारे लिए नियोजित की हैं।

मरकुस 7:8,9,13
8 "क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो।
9 और उसने उनसे कहा, "तुम अपनी रीतियों को मानने के लिए परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो!
13 इस प्रकार तुम अपनी रीतियों से, जिन्हें तुमने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो; और इस तरह के बहुत से काम करते हो।"

यहां पर कुछ गलत कल्पनाएं दी गई हैं जो अलौकिक चंगाई और छुटकारे के विषय में हमें सिखाई गई होगी:

- वह केवल बाइबल के समयों के लिए था, यह आज हमारे लिए नहीं है। उन दिनों में, उनके पास आज के समान डॉक्टरों की सहायता नहीं थी और इस कारण उन्हें सहायता पाने के लिए परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ की आवश्यकता थी।
- वह केवल परमेश्वर की सार्वभौम इच्छा के अनुसार होता है - इसलिए हम अपने विश्वास से बहुत कुछ नहीं कर सकते।
- अलौकिक बातें आपको डराएंगी, यदि आप सामान्य बने रहना चाहते हैं, तो उनसे दूर रहें।

हमारे पास हमेशा एक चुनाव होता है - परमेश्वर ने अपने वचन में जो प्रगट किया है उसे ढूंढ़ने का और उस पर विश्वास करने का।

आश्चर्यकर्म की सेवकाई गिने-चुने विशिष्ट वर्ग के हाथ में छोड़ना

यह सच है कि प्रभु यीशु ने कुछ लोगों को मसीह की देह में सुसमाचार प्रचारक नियुक्त किया है (इफिसियों 4:11) जो चंगाइयों के वरदानों के साथ आश्चर्यकर्म करते हैं (1 कुरिन्थियों 12:28)। जिन्हें चंगाई के सुसमाचार प्रचारक कहा जाता है, उन्हें और मसीह की मण्डली में पाए जाने वाले पांच प्रकार के सेवा पदों में जो अन्य सेवक हैं, उन्हें हम मान्यता देते हैं, परंतु हम यह भी समझते हैं कि सभी विश्वासियों के लिए परमेश्वर की योजना है कि वे यीशु के नाम के अधिकार के द्वारा प्रार्थना करें, बीमारों को चंगा करें, और दुष्टात्माओं को निकालें (मरकुस 16:17,18)। पवित्र आत्मा की सामर्थ सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध है और सभी विश्वासी पवित्र आत्मा के वरदानों के प्रगटीकरणों की इच्छा रखते हैं, जिसमें चंगाइयों के वरदान और अद्भुत कार्य समाविष्ट हैं। सभी विश्वासियों को चंगाई और छुटकारे की सेवा करने का प्रशिक्षण पाने और उसके लिए सुसज्जित होने की ज़रूरत है।

अलौकिक के स्थान पर आधुनिक बातों को रखना

आज हम हमारी कलीसियाओं में परमेश्वर की सामर्थ के और प्रगटीकरण क्यों नहीं देखते उसका एक कारण यह है कि हमने परमेश्वर की सामर्थ के स्थान पर अन्य बातों को रखा है। इनमें से कुछ में इनका समावेश हैः

- उत्तम संगीत, उत्तम कार्यक्रम, कलीसिया के संचालन के लिए नई तकनीकें - परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ के प्रकाशन की अपेक्षा करने के बजाए इन बातों पर अधिक ज़ोर दिया जाता है।
- बिना सामर्थ के पक्ष समर्थन (अपोलोजेटिक्स)। हम परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ के प्रगटीकरण के बजाए उत्तम वादविवाद और बौद्धिक प्रस्तुति पर ध्यान देते हैं। प्रेरित पौलुस ने अलौकिक बातों के प्रगटीकरण से पक्ष समर्थन को संतुलित किया था। इस विषय में अधिक चर्चा आने वाले भाग में की गई है।

हम तकनीक, उत्तम संगीत, और अन्य समकालीन साधनों का उपयोग कर सत्य को निवेदन करने के विरोध में नहीं हैं, परंतु हमें परमेश्वर की

उपस्थिति पर और अलौकिक चिन्हों, अद्भुत कार्यों और आश्चर्यकर्मों के द्वारा उसकी उपस्थिति के प्रगटीकरण पर ज़ोर देना और ध्यान केंद्रित करना जारी रखना चाहिए, जैसा कि प्रभु यीशु द्वारा संस्थापित प्रारम्भिक कलीसिया में था।

जब तक हम उसकी और सामर्थ को प्रगट होते हुए नहीं देखते, तब तक आगे बढ़ने के लिए अनिच्छुक

मत्ती 11:12

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य पर ज़ोर होता रहा है, और बलवान उसे बलपूर्वक छीन लेते हैं।

परमेश्वर अनुग्रह के कार्य के रूप में उसकी सामर्थ को मुक्त करता है, परंतु उसे प्राप्त करने हेतु हमारी ओर से विश्वास और अथक खोज की आवश्यकता है। हमें उसकी ओर दृढ़ता के साथ बढ़ना है। परमेश्वर का राज्य हमारे क्षेत्र में हमारी पहुंच के अंदर आया है, परंतु हमें उसे बलपूर्वक ले लेना है।

परमेश्वर उन लोगों को उत्तर देता है जो उसे अधिकाई के साथ पाने की इच्छा रखते हैं। वह हमारे हृदयों को खोजता है जो उसकी और अधिकाई के लिए भूखे और लालायित हैं। जो प्यासे हैं उन पर वह जल उण्डेलता है। हमें उसकी अधिकाई को और हमारे मध्य में उसकी सामर्थ के कार्य को पाने के लिए आगे बढ़ने की ज़रूरत है।

अलौकिक के मार्ग में बाधाएं

परमेश्वर की सामर्थ के प्रगटीकरण को अनुभव करने से हमें रोकने वाली अन्य कुछ बाधाएं इस प्रकार सूचीबद्ध की गई हैं:

- **विश्वास में कदम न बढ़ाना।** जैसा कि हम अगले अध्याय में देखेंगे, हमें चंगाई पाने और चंगाई प्रदान करने हेतु विश्वास का उपयोग करना है। स्वाभाविक दृष्टिकोण से, विश्वास एक जोखिम है, और कभी-कभी हम आवश्यक खतरा मोल लेने से डरते हैं और यह बात हमें अलौकिक का अनुभव करने से रोकती है।

- **उसकी उपस्थिति के बजाए पद्धतियों पर निर्भर रहना।** चंगाई और छुटकारा प्रदान करने की विभिन्न पद्धतियों का हमें ज्ञान रखना है, परंतु यदि हम चंगाई और छुटकारा प्रदान करने की किसी विशिष्ट पद्धती (या प्रक्रिया) पर स्थिर हो गए, तो हम परमेश्वर के कार्य को अत्यंत सीमित कर देते हैं। परमेश्वर अपनी अलौकिक सामर्थ विभिन्न प्रकार से प्रगट कर सकता है। अतः हमें उन पद्धतियों पर जिनके हम अभ्यस्त हो चुके हैं, निर्भर रहने के बजाए, परमेश्वर की उपस्थिति पर और किसी क्षण जो वह कर रहा है उस पर निर्भर रहें।
- **पिछली असफलताओं से निराशा।** (मैंने बीमारों के लिए प्रार्थना की और कुछ नहीं हुआ)। हममें से सभी लोग जिन्होंने अलौकिक की सेवा प्रदान करना सीखने और उसमें प्रवेश करने का प्रयास किया है, उन्होंने असफलता का अनुभव किया है। हमने प्रत्येक बीमार को चंगा होते हुए नहीं देखा और छुटकारा पाते हुए नहीं देखा। परंतु कोई भी असफलता इस कारण नहीं है कि परमेश्वर ने अपना मन बदल दिया है या वह चंगाई करने हेतु अनिच्छुक है, बल्कि इसका कारण हमारी ओर से असफलता है, क्योंकि हम आज भी यह सीखने का और समझने का प्रयास कर रहे हैं कि परमेश्वर के कार्यों को करने हेतु उसके साथ मिलकर कैसे परिश्रम करें। इसलिए जब हमें असफलता हाथ आती है, तो हमें दृढ़तापूर्वक परमेश्वर की ओर बढ़ना है, हमें उस समझ के लिए उसकी खोज करना है जिसकी हमें ज़रूरत है ताकि हम अति प्रभावी रूप से उसके साथ परिश्रम कर सकें।

प्रतिदिन के जीवन में, हम असफलता का अनुभव करते हैं, परंतु हम अपने लक्ष्य की ओर कार्य करना जारी रखते हैं। जब बालक उसका पहला कदम बढ़ाने का प्रयास करता है, तब सामान्य तौर पर वह लड़खड़ाकर गिर पड़ता है। कभी-कभी, बालक को चलने के प्रयास में कुछ खरोचें भी आती हैं। तब क्या हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि बालक कभी नहीं चलेगा क्योंकि जब उसने कुछ पहले कदम बढ़ाए, तब वह लड़खड़ाकर गिर गया? नहीं! बल्कि, हम बालक को प्रयास करते रहने के लिए प्रोत्साहन देते हैं। जब बालक प्रयास करना जारी रखता है, तब वह जल्द ही चलना आरम्भ

करता है। यह बात, चंगाई और छुटकारा प्रदान करना सीखने के क्षेत्र में भी है। जितनी बार हम सेवा करते हैं उतनी बार अपेक्षित परिणाम नहीं देखते, इसलिए हम निराश होकर सबकुछ छोड़ नहीं देते। हम आगे बढ़ते रहते हैं। यीशु हमारा आदर्श है। उसने हमें दिखाया है कि सचमुच क्या सम्भव है और उसने हमें अपने कामों को करने हेतु, तथा और भी बड़े कामों को करने हेतु निमंत्रित भी किया है।

जब हम प्रार्थना में, और चंगाई और छुटकारा प्रदान करने में असफलता को अनुभव करते हैं, तब हमारी असफलता को समायोजित करने के लिए अपने धर्म-सिद्धांत को बदलना गलत है। सही तरीका है अपने अनुभव से सीखना और अपने अनुभव को परमेश्वर के वचन के स्तर पर उठाने हेतु प्रयास करना। परमेश्वर अपने वचन को नहीं बदलेगा।

- **गलत इरादे।** यदि हमारे व्यक्तिगत लाभ के लिए, कोई विशेष व्यक्ति के रूप में ख्याति पाने के लिए, मान्यता और बड़ा नाम पाने के लिए हम अलौकिक सेवकाई की खोज करते हैं, तो हमारा हृदय सही नहीं है और हम बहुत अधिक उन्नति नहीं कर पाएंगे। परमेश्वर हमारे हृदयों को देखता है और सही इरादे बनाए रखना महत्वपूर्ण है। हमारी इच्छा ईमानदार और शुद्ध होनी चाहिए - दुखी लोगों की सहायता करने की और परमेश्वर को महिमा प्रदान करने की।

क्या दुष्टात्माएं भी अलौकिक का प्रदर्शन नहीं करतीं?

चंगाइयों, छुटकारे, चिन्ह और चमत्कारों पर ज़ोर देने वाले हम विश्वासियों के विरोध में एक आम तकरार की जाती है कि दुष्टात्माओं की शक्तियां भी झूठे शिक्षकों, जादूटोना करने वालों के द्वारा अद्भुत चिन्ह प्रगट करती हैं। जी हां, यह सच है। बाइबल बताती है कि शैतान झूठे या मायावी चिन्ह या चमत्कार करता है।

2 थिस्सलुनीकियों 2:9
उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ, और चिन्ह, और अद्भुत काम के साथ होगा।

जिस प्रकार हम विश्वासी होने के नाते, आश्चर्यकर्मों को होते हुए देखने के लिए परमेश्वर के राज्य से सामर्थ और पवित्र आत्मा का अभिषेक प्राप्त कर सकते हैं, उसी प्रकार लोग भी मायावी चिन्ह और चमत्कार करने हेतु दुष्टात्मा से सामर्थ प्राप्त कर सकते हैं। परंतु, यह कारण नहीं है कि इस वजह से हम चिन्ह और अद्‌भुत कामों को करना बंद कर दें। वस्तुतः, यह बात हमें और आगे बढ़ने हेतु, परमेश्वर की सामर्थ के अधिकाई को प्रगट रूप से देखने हेतु प्रेरित करने पाए।

नकली असली का मूल्य कम नहीं कर सकता; बल्कि वह असली के मूल्य को बढ़ाने में सहायक होता है। हजार रूपये के नकली नोट पाए जाते हैं, इसलिए हम हमारे सारे असली हजार रूपये के नोटों को फेंक नहीं देते! हम असली को सुरक्षित बचाकर रखते हैं और नकली पर ध्यान देते हैं, और उनसे बचते हैं। वस्तुतः, जो नकली नोटो का निर्माण करते हैं वे पकड़े जाते हैं और उन्हें दण्ड दिया जाता है। उसी प्रकार, अंधकार की शक्तियों द्वारा नकली चिन्हों का निर्माण किया जाता है इस कारण चंगाई, छुटकारा और आश्चर्यकर्म ले आने वाले परमेश्वर के सच्चे कामों को हमें छोड़ नहीं देना है।

सम्पूर्ण बाइबल में हम परमेश्वर के सेवकों को, भविष्यद्वक्ताओं को देखते हैं, जिन्हें ऐसे वातावरणों में परमेश्वर की सच्ची सामर्थ प्रगट करना पड़ा जहां पर अन्य लोग दुष्टात्मा की शक्तियों की सामर्थ से वैसे ही चिन्ह और चमत्कार कर रहे थे। जादूटोने की शक्तियां समान चिन्ह और चमत्कार करती हैं, इसलिए परमेश्वर ने अपने सेवकों को अलौकिक चिन्ह और आश्चर्यकर्म करने से रोका नहीं। बल्कि, परमेश्वर ने बार-बार यह दिखा दिया कि उसके सेवकों के द्वारा कार्य करने वाली उसकी सामर्थ अंधकार के कामों से कई अधिक श्रेष्ठ है।

नकली असली का मूल्य कम नहीं कर सकता; बल्कि वह असली के मूल्य को बढ़ाने में सहायक होता है।

मूसा और मिस्त्र के जादूगर

मूसा का लालन-पालन मिस्त्र के राजमहल में हुआ था, अतः, वह उन शक्तियों से परिचित होगा जिन्हें मिस्त्र के जादूगरों ने प्रगट किया। जब परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि वह फिरौन के आगे जाए, तब प्रभु ने मूसा को तैयार किया कि वह अपनी लाठी से अलौकिक का प्रदर्शन करे।

निर्गमन 7:8-12

8 फिर यहोवा ने, मूसा और हारून से इस प्रकार कहा,

9 कि जब फ़िरौन तुमसे कहे, कि अपने प्रमाण का कोई चमत्कार दिखाओ, तब तू हारून से कहना, कि अपनी लाठी को लेकर फ़िरौन के सामने डाल दे कि वह अजगर बन जाए।

10 तब मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया; और जब हारून ने अपनी लाठी को फ़िरौन और उसके कर्मचारियों के सामने डाल दिया तब वह अजगर बन गई।

11 तब फ़िरौन ने पण्डितों और टोनहा करनेवालों को बुलवाया; और मिस्त्र के जादूगरों ने आकर अपने अपने तंत्र मंत्र से वैसा ही किया।

12 उन्होंने भी अपनी अपनी लाठी को डाल दिया, और वे भी अजगर बन गए। परंतु हारून की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई।

सबसे पहला आश्चर्यकर्म जो मूसा ने किया, उसे मिस्त्र के जादूगर अपनी दुष्टात्माओं की शक्ति के द्वारा नकल कर सके। शायद मूसा इस बात के लिए तैयार नहीं था, परमेश्वर अचम्भित नहीं हुआ। परमेश्वर के पास पहले से ही एक योजना थी कि यह दिखाए कि मूसा के साथ 'जो सामर्थ' है, वह उन शक्तियों से अधिक श्रेष्ठ है जिसका उपयोग जादूगरों ने किया था। मूसा की लाठी ने अन्य लाठियों को निगल लिया।

मिस्त्र के जादूगर अगले दो चमत्कारों को कर सके जो मूसा ने किए थे—नदी के जल को लहू में बदलना (निर्गमन 7:22) और नदी से मेंढकों का बाहर निकलकर पूरे देश में छा जाना (निर्गमन 8:7)। गौर करें, कि परमेश्वर इस बात से भयभीत नहीं हुआ कि जादूगर भी उन्हीं चमत्कारों को कर रहे थे। परमेश्वर ने मूसा को उसकी रणनीति बदलने के लिए या कोई और तरीका या तकनीक अपनाने के लिए नहीं कहा। परमेश्वर ने केवल

अगले आश्चर्यकर्म की ओर मूसा की अगुवाई की। जादूगर उन पहले तीन आश्चर्यकर्मों की नकल कर पाए थे जो मूसा ने किए, परंतु उनके पास जो दुष्टात्मा की शक्ति थी उसी हद तक वे उसे कर पाए। इससे परे, वे मात्र दर्शक बनकर रह गए और उन्हें यह कबूल करना पड़ा कि परमेश्वर का हाथ मूसा पर है। परमेश्वर की सामर्थ शैतान के कार्यों से कई गुना श्रेष्ठ थी।

निर्गमन 8:18-19

18 तब जादूगरों ने चाहा कि अपने तंत्र मंत्रों के बल से हम भी कुटकियां ले आएं, परंतु यह उनसे न हो सका। और मनुष्यों और पशुओं दोनों पर कुटकियां बनी ही रही।
19 तब जादूगरों ने फ़िरौन से कहा, यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है। तौभी यहोवा के कहने के अनुसार फ़िरौन का मन कठोर होता गया, और उसने मूसा और हारून की बात न मानी।

यहां पर हमारे लिए एक सबक है। केवल इसलिए कि नकली काम किए जा रहे हैं, हम यीशु के नाम में चंगाइयां करना, छुटकारा देना, चिन्ह और चमत्कार करना बंद नहीं करते। हमें संसार को यह दिखाने की ज़रूरत है कि परमेश्वर की सामर्थ अंधकार की शक्तियों से कई गुना श्रेष्ठ है।

एलिय्याह और बाल के भविष्यद्वक्ता

एलिय्याह ऐसे समय में जीवित था जब बाल के भविष्यद्वक्ताओं और अश्शेरा के भविष्यद्वक्ताओं को राजा अहाब और उसकी पत्नी ईज़बेल का सहारा था। देश मूर्तिपूजा और जादूटोने से भर गया था जिसे रानी ईज़बेल बढ़ावा दे रही थी। प्रभु की अगुवाई में एलिय्याह ने कर्मेल पहाड़ पर इन भविष्यद्वक्ताओं को चुनौती दी (1 राजा 18)। दिन के अंत में, एलिय्याह की सरल प्रार्थना के उत्तर में, स्वर्ग से आग उतर आयी और उसने बलिदान और वेदी को भस्म कर दिया। यह झूठे भविष्यद्वक्ता नहीं कर पाए। लोगों ने अब झुककर यह कबूल किया कि प्रभु ही सचमुच परमेश्वर है।

1 राजा 18:37-39

37 हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।
38 तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सूखा दिया।

[39] यह देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है।

हम सचमुच ऐसे समय में जी रहे हैं जब परमेश्वर कलीसिया पर अपना पवित्र आत्मा उण्डेल रहा है। यह सच है कि कई झूठे मसीही हैं, झूठे भविष्यद्वक्ता और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं से देश भर गया है, यह भी सच है कि परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करने की ज़रूरत इससे पहले इतनी अधिक नहीं थी। ज़रूरत है कि लोग प्रभु को और उसकी महिमा को प्रगट होते हुए देखें ताकि वे जानें कि निःसंदेह जिस प्रभु यीशु मसीह का हम प्रचार करते हैं, वह सचमुच परमेश्वर है!

यीशु की सेवकाई

यीशु पर भी दुष्टात्माओं के अधिपति, बालज़बूब की सामर्थ से उसके कार्य करने का झूठा आरोप लगाया गया था। इससे हमें यह बताया जाता है कि यीशु के समय में भी, टोना-टोटका करने वाले, जादूगर आदि देश में थे और वे चंगाई एवं चमत्कार करते थे। परंतु, प्रभु यीशु ने अपनी सेवकाई की रणनीति नहीं बदली और आश्चर्यकर्मों को, चिन्ह और चमत्कारों को करना नहीं बदला। वह अब भी यह बताते हुए परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट कर रहा था कि आत्मा की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालना यह दर्शाता है कि आत्मा की सामर्थ शैतान की सामर्थ से श्रेष्ठ है। उसने उन अलौकिक कार्यों की ओर संकेत किया जिन्हें वह अपने मसीह होने के प्रमाण के रूप में करता था।

मत्ती 12:24-29

[24] परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।
[25] उसने उनके मन की बात जानकर उनसे कहा, जिस राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा।
[26] और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य कैसे बना रहेगा?
[27] भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंष किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे।

28 परंतु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।
29 या कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल कैसे लूट सकता है जब तक कि पहले उस बलवन्त को न बान्ध ले? और तब वह उसका घर लूट लेगा।

अन्य कई उदाहरण

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक का समीक्षण करते हैं, तब हम कई घटनाएं पाते हैं जहां प्रभु यीशु के सेवकों को उन लोगों का सामना करना पड़ा जो शैतान की सामर्थ से अलौकिक कार्य करते थे।

- फिलिप्पुस और शिमोन जादूगर (प्रेरितों के काम 8:5-24)
- पाफुस टापू पर पौलुस और इलीमास जादूगर (प्रेरितों के काम 13:6-12)
- फिलिप्पी में पौलुस और भावी कहने वाली दुष्टात्मा से पीड़ित लड़की (प्रेरितों के काम 16:12-18)
- इफिसुस में पौलुस (प्रेरितों के काम 19:11-21)

हमारा परमेश्वर और महान है! उसकी सामर्थ अंधकार की शक्तियों से अधिक बढ़कर है!

कभी-कभी जो लोग पहले से जादूटोना और अन्य दुष्ट शक्तियों के कामों में लिप्त होते हैं उन्हें यकीन दिलाने का तरीका यह दिखाना है कि प्रभु यीशु की सामर्थ अंधकार की सामर्थ से ज्यादा बड़ी और श्रेष्ठ है।

क्या "चिन्हों" की मांग करना गलत है

कुछ लोग महसूस कर सकते हैं कि परमेश्वर से "चिन्हों" को मांगना अर्थात उसकी सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शन की मांग करना गलत है, चाहे चंगाई के लिए, छुटकारे के लिए, या अन्य आश्चर्यकर्मों के लिए हो। उसके बाद वे पवित्र शास्त्र के कुछ वचनों की ओर संकेत कर सकते हैं जहां पर लोग यीशु के पास चिन्ह मांगते हुए आए और प्रभु यीशु ने उन्हें उलाहना दी।

सम्पूर्णता और सूक्ष्म परीक्षण के उद्देश्य से, हम निम्नलिखित में से कुछ अनुच्छेदों को समीक्षा के लिए यहां प्रस्तुत करते हैं।

मत्ती 12:38-42

38 इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने उससे कहा, हे गुरु, हम आपके द्वारा एक चिन्ह देखना चाहते हैं।
39 उसने उन्हें उत्तर दिया, इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं, परन्तु योना भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उनको न दिया जाएगा।
40 योना तीन रात तीन दिन मछली के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।
41 नीनवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर मन फिराया और देखो, यहां वह है जो योना से भी बड़ा है।
42 दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिए पृथ्वी की छोर से आई थी; और देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।

मत्ती 16:1-4

1 और फरीसियों और सदूकियों ने पास आकर उसे परखने के लिए उससे कहा, हमें आकाष से कोई चिन्ह दिखाइए।
2 उसने उनको उत्तर दिया, जब सांझ होती है तब तुम कहते हो कि मौसम अच्छा रहेगा क्योंकि आकाष लाल है।
3 और भोर को कहते हो कि आज आन्धी आएगी क्योंकि आकाष लाल और भयानक है। हे पाखण्डियों! तुम आकाष का लक्षण देखकर मौसम का भेद बता सकते हो, परंतु समयों के चिन्हों को समझ नहीं सकते?
4 दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी चिन्ह ढूंढ़ती है, परंतु योना भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उसे न दिया जाएगा। और वह उन्हें छोड़कर चला गया।

मरकुस 8:11-13

11 फिर फरीसी निकलकर उससे वाद-विवाद करने लगे और उसे जांचने के लिए उससे कोई स्वर्गीय चिन्ह मांगा।
12 उसने अपनी आत्मा में आह भर कर कहा, इस समय के लोग क्यों चिन्ह ढूंढते हैं? मैं तुमसे सच कहता हूं, कि इस समय के लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।
13 और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ गया और पार चला गया।

लूका 11:16, 29-32
16 औरों ने उसकी परीक्षा करने के लिए उससे स्वर्ग से एक चिन्ह मांगा।
29 जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई तो वह कहने लगा, इस युग के लोग बुरे हैं, वे चिन्ह ढूंढ़ते
है; परंतु योना के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा।
30 जैसा योना नीनवे के लोगों के लिए चिन्ह ठहरा, वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी इस
युग के लोगों के लिए ठहरेगा।
31 दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस समय के मनुष्यों के साथ उठकर उन्हें दोषी
ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथ्वी की छोर से आयी; और देखो,
यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।
32 नीनवे के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगों के साथ खड़े होकर, उन्हें दोषी
ठहराएंगे; क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर मन फिराया और देखो, यहां वह
है, जो योना से भी बड़ा है।

यूहन्ना 2:18-22
18 इस पर यहूदियों ने उससे कहा, आप जो यह करते हैं, तो हमें कौन सा चिन्ह
दिखाते हैं?
19 यीशु ने उनको उत्तर दिया, इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा
कर दूंगा।
20 यहूदियों ने कहा, इस मन्दिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या आप
उसे तीन दिन में खड़ा कर देंगे?
21 परन्तु उसने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था।
22 इसलिए जब वह मुर्दों में से जी उठा तो उसके चेलों को स्मरण आया, कि उसने यह
कहा था; और उन्होंने पवित्र शास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा था, प्रतीति की।

यूहन्ना 6:30-35
30 तब उन्होंने उससे कहा, फिर आप कौन सा चिन्ह दिखाते हैं कि हम उसे देखकर
आपकी प्रतीति करें, आप कौन सा काम दिखाते हैं?
31 हमारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया; जैसा लिखा है कि उसने उन्हें खाने के
लिए स्वर्ग से रोटी दी।
32 यीशु ने उनसे कहा, मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग
से न दी, परंतु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है।
33 क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।
34 तब उन्होंने उससे कहा, हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया करो।
35 यीशु ने उनसे कहा, जीवन की रोटी मैं हूं; जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न
होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।

इन सारी घटनाओं में ये सामान्य बातें हैं जहां पर लोग चिन्ह की मांग करते हुए आए।

1) वे उसे परखने के लिए आए या उसके साथ बहस करने के उद्देश्य से आए। उसने उन्हें उस हृदय की वजह से जिसके साथ वे आए थे, 'दुष्ट और व्यभिचारी' कहा।

2) जो कुछ उन्होंने पहले ही देखा था और उसके विषय में सुना था, उसे स्वीकार करने से इन्कार करते हुए वे आए। उसने पहले ही देश भर में असंख्य चंगाइयां और चमत्कार किए थे, परंतु उन्होंने उन्हें कबूल करने से इन्कार किया। जो कुछ उसने पहले से किया था उसे स्वीकार करने से उन्होंने इन्कार किया और किसी और बात की वे मांग कर रहे थे।

3) सभी मामलों में, यीशु ने ऐसे लोगों को दिए जाने वाले अंतिम चिन्ह के रूप में खुद की ओर, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान की ओर संकेत किया।

इसलिए हम समझते हैं कि जब लोग उसे परखने, उसके साथ वादविवाद करने और उसे चुनौती देने के लिए चिन्ह की मांग करते हुए आए, तब प्रभु ने उनके लिए कुछ करने से इन्कार किया और जो चिन्ह वे पाने वाले थे मात्र उसके रूप में अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की ओर संकेत किया।

परंतु, बाकी सुसमाचारों में, हम जानते हैं कि लोगों की भीड़ की भीड़ उसकी सामर्थ को खोजती हुई आयी कि उनके जीवनों को छू ले—चंगाइयों, आश्चर्यकर्मों, और छुटकारों में। ये लोग विश्वास के साथ और व्यक्तिगत रीति से उनके लिए उसकी सामर्थ को कार्य करते हुए अनुभव करने की अपेक्षा के साथ आए थे। ऐसे लोगों को, प्रभु यीशु ने बड़ी करूणा के साथ प्रत्युत्तर दिया और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने हेतु बड़े चिन्ह और चमत्कार किए। उसने उन्हें डांटा नहीं, या उनका इन्कार नहीं किया।

कपरनहूम के सूबेदार के जीवन की एक घटना लिखी गई है जो प्रभु यीशु मसीह से यह बिनती करता हुआ आया कि वह उसके बेटे को चंगा

करे जो मृत्यु के मार्ग पर था। हमारे लिए यह यूहन्ना 4:46-54 में लिखा गया है, जिसे नीचे उद्धृत किया गया है। इस सूबेदार से यीशु ने कहा, *"जब तक तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे, तब तक कदापि विश्वास न करोगे।"* (यूहन्ना 4:48) इसे चिन्ह और अद्भुत कार्यों के प्रति नकारात्मक नहीं लेना चाहिए, परंतु एक सत्य बयान के रूप में ग्रहण करना है, कि कभी-कभी ईमानदार लोग भी जब निर्णय लेने के क्षण में होते हैं, तब उन्हें स्वयं आश्चर्यकर्म का अनुभव करने की ज़रूरत होती है, इससे पहले कि उन्हें यीशु मसीह में विश्वास हो जाए और वे उसके विश्वास के प्रति समर्पित हों। यीशु ने आगे बढ़कर इस व्यक्ति के लिए आश्चर्यकर्म को मुक्त किया और उसे विश्वास करने की चुनौती दी। यूहन्ना कहता है कि *"उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की, और चला गया।"* (यूहन्ना 4:50) आश्चर्यकर्म को अनुभव करने के बाद, उसने और उसके पूरे घराने ने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया, जो कि इच्छित परिणाम है।

यूहन्ना 4:46-54

46 तब वह फिर गलील के काना में आया, जहां उसने पानी को दाखरस बनाया था; और राजा का एक कर्मचारी था जिसका पुत्र कफरनहूम में बीमार था।

47 वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उससे बिनती करने लगा, चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर दीजिए। क्योंकि वह मरने पर था।

48 यीशु ने उससे कहा, जब तक तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे, तब तक कदापि विश्वास न करोगे।

49 राजा के कर्मचारी ने उससे कहा, हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से पहले चल।

50 यीशु ने उससे कहा, जा, तेरा पुत्र जीवित है। उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की, और चला गया।

51 वह मार्ग से जा रहा था, कि उसके दास उससे आ मिले और कहने लगे कि तेरा लड़का जीवित है।

52 उसने उनसे पूछा, किस घड़ी वह अच्छा होने लगा? उन्होंने उससे कहा, कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर उतर गया।

53 तब पिता जान गया कि वह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उससे कहा, तेरा पुत्र जीवित है, और उसने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।

54 यह दूसरा आष्चर्यकर्म था, जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।

भेड़ों के भेष में आने वाले झूठे भविष्यद्वक्ताओं का क्या

मत्ती 7:15-27

15 झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु
अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िए हैं।
16 उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या झाड़ियों से अंगूर, वा ऊंटकटारों से
अंजीर तोड़ते हैं?
17 इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है, और बुरा पेड़ बुरा फल लाता है।
18 अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न बुरा पेड़ अच्छा फल ला सकता है।
19 जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटकर आग में डाला जाता है।
20 इस तरह उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।
21 जो मुझ से, 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेष न
करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।
22 उस दिन कई मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने आपके नाम से भविष्यद्वाणी
नहीं की, और आपके नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और आपके नाम से बहुत
आश्चर्यकर्म नहीं किए?'
23 तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो,
मेरे पास से चले जाओ।
24 इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य के
समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।
25 और मेंह बरसा और बाढ़ें आयीं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें
लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नेव चट्टान पर डाली गई थी।
26 परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस निर्बुद्धि
मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया।
27 और मेंह बरसा, और बाढ़ें आयीं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें
लगी और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।

2 कुरिन्थियों 11:12-15

12 परन्तु जो मैं करता हूं, वही करता रहूंगा, कि जो लोग दांव ढूंढ़ते हैं, उन्हें मैं दांव
पाने दूं, ताकि जिस बात से वे घमण्ड करते हैं, उसमें वे हमारे ही समान ठहरें।
13 क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों
का रूप धरनेवाले हैं।
14 और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का
रूप धारण करता है।
15 इसलिए यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात
नहीं, परन्तु उन का अन्त उनके कामों के अनुसार होगा।

प्रभु यीशु ने हमें झूठे भविष्यद्वक्ताओं के विरोध में अवश्य ही चेतावनी दी जो भेड़ों के भेष में आते हैं। प्रेरित पौलुस ने भी शैतान के सेवकों के विरोध में चेतावनी दी जो मसीह के प्रेरित होने का बहाना करते हैं। प्रभु यीशु ने यह दर्शाया कि अंत के दिनों में *"कई झूठे भविष्यद्वक्ता खड़े होंगे और कइयों को भरमाएंगे"* (मत्ती 24:11)। इनमें से कुछ झूठे भविष्यद्वक्ता यीशु के नाम में आएंगे मानो वे उसके द्वारा भेजे गए हो और उसके नाम में कई चिन्ह और चमत्कार करेंगे। वे भविष्यद्वाणी करेंगे, दुष्टात्माओं को निकालेंगे और उसके नाम में अन्य आश्यर्चकर्म करेंगे। जैसा कि हमने पहले ही बताया है, केवल इसलिए कि झूठ मौजूद है, हम असली को हटाकर नहीं रखते। नकली सच्चे को हटाने का कारण नहीं बन सकता। उसके बजाए, हम दृढ़तापूर्वक उस बात को थामे रहते हैं जो सच है और जो झूठ है उसे पहचानने के लिए खुद को प्रशिक्षित करते हैं। इसलिए हम चंगाई और छुटकारे की, चिन्ह और चमत्कारों की असली सेवकाई को नहीं छोड़ते, केवल इसलिए कि झूठे प्रेरित और झूठे भविष्यद्वक्ता उन्हीं कामों को करेंगे।

यीशु ने हमें सिखाया कि कौन असली है और कौन नहीं है यह कैसे पहचाने।

- सबसे पहले, उसने कहा कि उनके फलों से तुम्हें उन्हें पहचानोगे। कोई असली है या नहीं यह निश्चित करने के लिए हम उनके कामों के फलों या परिणामों को देखते हैं जो वे कर रहे हैं। उनके जीवन और सेवकाई का परिणाम क्या है? क्या प्रभु यीशु की महिमा होती है? क्या लोग प्रभु यीशु मसीह के निकट आते हैं? क्या जीवन बदल गए और मसीह की समानता में लाए गए? क्या लोग अपने जीवनों में परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए प्रेरित हुए?
- दूसरी बात, वे कौन से काम करते हैं? क्या वे पिता की इच्छा पूरी करते हैं या अधर्म के काम करते हैं? क्या वे स्वयं उन कामों को करते हैं जो यीशु ने सिखाए या वे मात्र उसके नाम से आए हुए प्रचारक हैं?

इस पुस्तक में, हमारा लक्ष्य लोगों को चंगाई और सेवा करने हेतु सुसज्जित करना है। हम पिता के साथ निकटता में और उसकी आज्ञा मानते

हुए चलने पर ज़ोर देते हैं (अध्याय 3)। जब हम चंगाई और छुटकारे की सेवा करने हेतु खुद को सुसज्जित करते हैं, तब प्रभु की महिमा करने का प्रयास करना और हमारे जीवनों के लिए उसकी इच्छा के प्रति आज्ञाकारी होना इसका मुख्य महत्व होता है।

क्या अनंत जीवन में प्रवेश करना चंगाई या छुटकारा पाने से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है?

बिल्कुल है! हम किसी भी रीति से व्यक्ति के सार्वकालिक उद्धार के महत्व के विषय में विवाद नहीं करते, जो निश्चित रूप से किसी भी शारीरिक या भावनात्मक ज़रूरत से जिसे यहां पृथ्वी पर पूरा करने की आवश्यक है, अधिक महत्वपूर्ण है। प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं मरकुस 8:36,37 में कहा, *"यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?"* यद्यपि प्रभु यीशु पाप से छुटकारा पाने के सम्बंध में रूपकात्मक तौर पर बोल रहा था, फिर भी उसने मत्ती 5:29-30 में कहा, *"यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। और तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिए यही भला है, कि तेरे अंगों में एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।"* इसलिए हम समझते हैं और इस बात पर अत्यंत महत्व देते हैं कि व्यक्ति नया जन्म प्राप्त कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करे। उसी तरह, हम समझते हैं कि हमारे भौतिक शरीर "थकान और निर्बलता" की प्रक्रिया से होकर गुज़रते हैं। प्रेरित पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 4:16 में कहा है, *"इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।*

परंतु जिस कारण से हम इस पृथ्वी पर हैं, वह है लोगों को उद्धार पाते हुए, अंधकार से बाहर निकलते हुए देखना और परमेश्वर के राज्य को और प्रभुता को लोगों के हृदयों और जीवनों में स्थापित होते हुए देखना

है। ऐसा करने हेतु, हमें परमेश्वर की सामर्थ से सेवा करना होगा। इसलिए इस संदर्भ में चंगाई और छुटकारे की सेवा महत्वपूर्ण है। हमने कम से कम आठ महत्वपूर्ण कारण बताए कि क्यों हमें आश्चर्यकर्म, चंगाई और छुटकारा देखने हेतु परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ में सेवा करने हेतु सुसज्जित होने की ज़रूरत है।

क्या भले काम करना आश्चर्यकर्म करने से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है?

विश्वासी के लिए, भले काम करना (सामाजिक और दया के कार्य) और आश्चर्यकर्म करना दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। हमें एक को अनदेखा कर दूसरे पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए। दोनों हमारे हृदयों में काम करने वाले परमेश्वर के प्रेम से प्रवाहित होते हैं। परमेश्वर की करूणा हमें अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करती है और परमेश्वर की वही करूणा हमें चंगाई और छुटकारा करने हेतु, और चिन्ह एवं चमत्कार करने हेतु आगे प्रेरित करती है।

भले काम मसीही जीवन का भाग हैं। प्रभु यीशु मसीह ने हमें यह कहते हुए सिखाया, *"उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बढ़ाई करे"* (मत्ती 5:16)। उसने हमें सिखाया कि जब हम भूखों को खिलाते हैं, प्यासों को जल देते हैं, अजनबियों का अतिथ्य करते हैं, नंगों को कपड़े पहनाते हैं, बीमारों को और कैद में पड़े लोगों को भेंट देते हैं, जब हम इन छोटे से छोटों के लिए ऐसा करते हैं, तो मेरे भाइयों, हम वह यीशु के लिए करते हैं (मत्ती 25:35,36,40)। हम पहचानते हैं कि उद्धार न पाए हुए या विश्वास न करने वाले भी कई भले काम करते हैं। कुछ लोग सद्इच्छा से, या धार्मिक विश्वास से, या अपने गुनाहों का प्रायश्चित करने के लिए, या वापस समाज को लौटाने के लिए, या सामाजिक ज़िम्मेदारी की भावना से ऐसा करने हेतु प्रेरित होते हैं। विश्वासियों के नाते, हम लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम से जीवनों को आशिषित करने हेतु प्रेरित होते हैं और चाहते हैं कि वे स्वर्गीय पिता की महिमा करे। हम हमारे लिए कोई लाभ पाने के लिए भले काम नहीं करते।

हम जानते हैं कि प्रेम में चलना महत्वपूर्ण है। किसी भी बात में और जो कुछ भी हम करते हैं, उन सबमें हमें प्रेम के साथ चलना है। यीशु ने हमें सिखाया, *"यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो"* (यूहन्ना 13:35)। हम भले काम करते हों, या आश्चर्य के काम करते हों, हमें यह हमारे हृदयों में प्रेम और विश्वास से प्रेरित होकर करना है (याकूब 2:14-18)। विश्वास प्रेम के माध्यम से कार्य करता है (गलातियों 5:6)। जहां प्रेम नहीं होता, वहां कोई मज़बूत विश्वास नहीं होता।

इस पुस्तक में, हमारा उद्देश्य आश्चर्य के कामों को, चंगाई और छुटकारे की सेवा करने हेतु विश्वासियों को सुसज्जित करना है।

पक्ष-समर्थन (अपोलोजेटिक्स) की सेवकाई

अपोलोजेटिक्स की सेवकाई नए नियम में *'अपोलोजिया'* नामक शब्द से उत्पन्न होती है। हम में मसीहियों की अत्यंत प्रतिभावान बुद्धि और अनोखी वक्तृत्व कुशलता की सराहना करते हैं, जो आज मसीही पक्ष-समर्थन की सेवकाई में जुटे हैं। हमें यह समझना है कि नए नियम की *अपोलोजिया* "मजबूत बहस और तर्कवितर्क" तक सीमित या प्रतिबंधित नहीं है, परंतु उसके साथ परमेश्वर की सामर्थ का प्रदर्शन होना चाहिए। जो कुछ हम विश्वास करते हैं उसे सच माना जाए इसके कारणों को पेश करके अपने धर्म का समर्थन या बचाव करना काफी नहीं है, परंतु जो विश्वास हम करते हैं उसके प्रमाण के रूप में हमें परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करना है।

पतरस का अपोलोजिया

1 पतरस 3:15

परंतु मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुमसे तुम्हारी आषा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर (यूनानी *अपोलोजिया*) **देने के लिए सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ।**

समकालीन पक्ष समर्थन से सम्बंधित बुनियादी वचन पतरस की पहली पत्री से है। पतरस हमें उपदेश देता है कि हमारे पास जो आशा है उसका कारण पूछने पर हमें आरोपों और सतावों के मध्य अपना समर्थन करने की

योग्यता होनी चाहिए। समर्थन देने या अपने सिद्धांत के पक्ष में बोलने के लिए ग्रीक भाषा में अपोलोजिया शब्द है।

पतरस का पक्ष समर्थन वास्तव में कैसे दिख रहा होगा? जब पतरस ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से हमें इस विषय में शिक्षा दी, तब उसके मन में वास्तव में क्या था?

प्रेरितों के काम 4:13,14
[13] **जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।**
[14] **और उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था, उनके साथ खड़े देखकर, वे विरोध में कुछ न कह सके।**

जिसने 1 पतरस 3:15 लिखने वाला पतरस, मुख्य रूप से अशिक्षित और अनपढ़ व्यक्ति था। उसने यह कबूल भी किया है कि पौलुस के लिखान कभी-कभी बौद्धिक रीति से समझना उसके लिए मुश्किल होते हैं (2 पतरस 3:15,16)। यह सम्भव है कि 1 पतरस 3:15 में अपना उपदेश देते समय पतरस ने अत्यंत बुद्धिमत्तापूर्ण, अत्यंत तर्कपूर्ण, पूर्णतया संशोधित, विश्वास के वैज्ञानिक बचाव की कल्पना नहीं की होगी। पतरस की पृष्ठभूमि और सेवकाई का अनुभव देखते हुए, हम ये सोचने के लिए प्रेरित होते हैं कि जिस बचाव या समर्थन को देने के लिए व्यक्ति पेरित था, वह मुख्य रूप से चमत्कारपूर्ण और अलौकिक कहानियां थीं जो उस आशा का कारण थी जो हमारे पास थीं।

पौलुस का अपोलोजिया

प्रेरितों के काम 22:1
[1] **हे भाइयो, और पितरो, मेरा प्रत्युत्तर** (यूनानी *अपोलोजिया*) **सुनो, जो मैं अब तुम्हारे सामने कहता हूं।**

प्रेरितों के काम 26:24
[24] **जब वह इस रीति से उत्तर** (यूनानी *अपोलोगेओमै*) **दे रहा था तो फेस्तुस ने ऊंचे शब्द से कहा, हे पौलुस, तू पागल है। बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है।**

प्रेरित पौलुस मसीह में उसके विश्वास का समर्थन करने या प्रत्युत्तर देने के लिए अधिकारियों, राजाओं और अपने दिनों के प्रबुद्ध लोगों के समक्ष खड़ा था। जैसा कि बार-बार देखा जा सकता है, उसके प्रत्युत्तर में हमेशा प्रभु यीशु मसीह के साथ उसकी व्यक्तिगत अलौकिक मुलाकात शामिल थी। उसका पक्ष समर्थन उस ज्योति का बयान था जो स्वर्ग से चमकी और एक ऊंची आवाज ने उसे नाम लेकर पुकारा, उसका अस्थायी रूप से अंधा होना, पूर्ण रूप से बदल जाना और स्वर्गीय आदेश प्राप्त करना था। उसके *अपोलोजिया* ने उसके श्रोताओं पर अनन्य रूप से उसके बौद्धिक तेज या वक्तृत्व कुशलता का प्रभाव नहीं डाला, बल्कि क्योंकि उसमें अलौकिक का समावेश था; उसके परिणामस्वरूप पौलुस को पागल कहा गया। तब तो यह नए नियम की सच्ची *अपोलोजिया* है।

पौलुस ने वादविवाद किया और प्रात्यक्षिक दिखाया

जीवन और सेवकाई में, जिसे करने के लिए हम सभों को बुलाया गया है, प्रभु यीशु के समान खुद को बनाने की तीव्र इच्छा के बावजूद; हममें से कइयों के लिए पौलुस प्रेरित, नए नियम के सच्चे सेवक को कैसे दिखना चाहिए इसका आदर्श है। सुसमाचार के सेवकों की हैसियत से, हम पौलुस के जीवन और सेवकाई से सबक सीखने हेतु और उसका अनुसरण करने का प्रयास करने हेतु अत्यंत सुरक्षित हैं (1 कुरिन्थियों 11:1)।

यदि हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक में कुछ मुख्य घटनाओं और स्थानों के द्वारा पौलुस की सेवकाई की कार्यप्रणाली का पता लगाते हैं, और सेवकाई की कार्य पद्धति के सम्बंध में उसकी पत्रियों में उसके आगामी वृत्तांत से उसका सम्बंध जोड़ेंगे, तो हमें एक दिलचस्प नमूना उभरता हुआ दिखाई देगा।

पाफुस में

प्रेरितों के काम 13:6-12

6 और उस सारे टापू में होते हुए पाफुस तक पहुंचे। वहां उन्हें बार-यीशु नामक एक यहूदी टोन्हा और झूठा भविष्यद्वक्ता मिला।

7 वह सिरगियुस पौलुस सूबे के साथ था, जो बुद्धिमान पुरुष था। उसने बरनबास और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा।
8 परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है, उनका सामना करके सूबे को विश्वास करने से रोकना चाहा।
9 तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा,
10 हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गो को टेढ़ा करना न छोड़ेगा?
11 अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है, और तू कुछ समय तक अन्धा रहेगा और सूर्य को न देखेगा। तब तुरन्त धुन्धलाई और अन्धेरा उस पर छा गया, और वह इधर उधर टटोलने लगा, ताकि कोई उसका हाथ पकड़कर ले चले।
12 तब सूबे ने जो हुआ था, देखकर और प्रभु के उपदेष से चकित होकर विश्वास किया।

पहली मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस उसकी प्रेरितों की छोटी टीम के साथ, सबसे पहले जिस स्थान में रुका था, उसे पाफुस टापु कहा जाता है। यहां पर हमारी इलीमास के साथ "सामर्थी मुठभेड" होती है, जो जादूटोना करने वाला यहूदी व्यक्ति था। ऐसा प्रतीत होता है कि उस टापु के रोमी सुबेदार, सिरगियुस पौलुस पर इलीमास का गहरा प्रभाव था। यह देखना दिलचस्प होगा कि सिरगियुस एक बुद्धिमान व्यक्ति था, फिर भी अत्यंत आध्यात्मिक प्रतीत होता है, सम्भवतः इसी कारण इलीमास का उस पर इतना अधिक प्रभाव था। शायद, हम बुद्धिमान लोगों के विषय में एक गलत सोच रखते हैं कि वे आत्मिक बातों में दिलचस्पी नहीं रखते और इसीलिए हमें उनके निकट पूर्णतया बौद्धिक स्तर पर जाने की ज़रूरत होती है। यह निश्चित रूप से सच नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति भले ही बाहरी रूप से कितना ही बौद्धिक और कठोर क्यों न दिखाई देता हो, उसके अंदर एक गहरा अंतर्भाग होता है जो सच्ची आत्मिकता से गूंजता है। सनातन काल उनके हृदय में होता है और परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ का प्रात्यक्षिक उसके अंतर्भाग को छू लेता है (1 कुरिन्थियों 12:7)।

पौलुस ने सर्गियस पौलुस के सामने परमेश्वर की सामर्थ को प्रदर्शित किया, और जादू टोना और जादू की छद्म शक्ति को उखाड़ फेंका जिसका इलीमास जादूगर ने दावा किया था। सर्गियस पौलुस एक बुद्धिमान व्यक्ति

था और उसने जो देखा और सुना, तथा पौलुस द्वारा दिखाई गई सामर्थ और प्रभु की शिक्षा आदि बातों ने उसे छू लिया। उसने यीशु मसीह को प्रभु के रूप ग्रहण किया।

थिस्सलुनीका में

प्रेरितों के काम 17:1-4

1 फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहां यहूदियों का एक आराधनालय था।
2 और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उनके साथ विवाद किया।
3 और उनका अर्थ खोल खोलकर समझाता था, कि मसीह को दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, अवष्य था; और यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूं, मसीह है।
4 उनमें से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतेरों ने और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए।

लूका लिखता है कि थिस्सलुनिके में, पौलुस ने पवित्र शास्त्र का आधार के रूप में उपयोग करते हुए लोगों को यह समझाने और दिखाने के लिए बहस की कि यीशु ही मसीह है। थिस्सलुनिके के बाद वाले पड़ाव बेरिया में भी उसने यही तरीका अपनाया, जहां बेरिया के लोगों ने पौलुस उनके साथ जो तर्क कर रहा था उसे प्रमाणित करने के लिए पवित्र शास्त्र की पूरी छान-बीन की। पौलुस के अत्यंत विवकेपूर्ण तरीके का फल जो यहां दिखाई देता है, वह वस्तुतः यह है कि "बहुत सी कुलीन स्त्रियां" (प्रेरितों के काम 17:12) और समाज में प्रभाव रखने वाले प्रमुख पुरुष और स्त्रियां विश्वासी बन गईं।

प्रेरितों के काम 17:10-12

10 भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया में भेज दिया, और वे वहां पहुंचकर यहूदियों के आराधनालय में गए।
11 ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें इस प्रकार हैं, या नहीं।
12 तब उनमें से बहुतों ने, और युनानी कुलीन स्त्रियों में से और पुरुषों में से बहुतेरों ने विश्वास किया।

बेरिया से, पौलुस एथेन्स को आया और यहां फिर से एक बार वह उन लोगों के साथ तर्क करता रहा जिन्हें वह सुसमाचार सुना रहा था।

प्रेरितों के काम 17:16-17

16 जब पौलुस अथेने में उनकी बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया।

17 इसलिए वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे, उनसे हर दिन वाद-विवाद किया करता था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पौलुस लोगों को सुसमाचार की घोषणा करते हुए उनके साथ बुद्धिमानीपूर्ण वादविवाद करता था। फिर भी यह शायद अधूरा चित्र ही है। बाद में, पौलुस जब थिस्सलुनीका के विश्वासियों को लिखता है, तब वह न "केवल शब्दों में" बल्कि पवित्र आत्मा की सामर्थ में बहुत कायलियत के साथ सुसमाचार सुनाने का उल्लेख करता है।

1 थिस्सलुनीकियों 1:5

5 क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में वरन् सामर्थ और पवित्र आत्मा और बड़े निष्चय के साथ पहुंचा है; जैसा तुम जानते हो कि हम तुम्हारे लिए तुममें कैसे बन गए थे।

कुरिन्थुस में

प्रेरितों के काम 18:4

4 और वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था।

1 कुरिन्थियों 2:1-5

1 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।

2 और एकाएक आकाष से बड़ी आन्धी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया।

3 और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दी; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं।

4 और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।

5 और आकाष के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूषलेम में रहते थे।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका लिखता है कि उन्होंने कुरिन्थुस के मंदिर में “वादविवाद किया,” और पौलुस अपनी पत्री में लिखते हुए कुरिन्थुस की कलीसिया को स्मरण दिलाता है कि वह उत्तम व्याख्यान और ज्ञान की बातों पर निर्भर रहता हुआ नहीं आया, परंतु आत्मा और सामर्थ के प्रात्यक्षिक के साथ आया। फिर से, यह स्पष्ट है कि यद्यपि पौलुस ने लोगों के साथ बड़ी बुद्धिमानी के साथ वादविवाद किया, फिर भी साथ में **परमेश्वर की सामर्थ प्रगट की**।

इफिसुस में

प्रेरितों के काम 18:19

19 और उसने इफिसुस में पहुंचकर उनको वहां छोड़ा, और आप ही आराधनालय में जाकर यहूदियों से विवाद करने लगा।

प्रेरितों के काम 19:8-12

8 और वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा।
9 परन्तु जब कितनों ने कठोर होकर उसकी नहीं मानी, वरन् लोगों के सामने उस मार्ग को बुरा कहने लगे, तो उसने उनको छोड़कर चेलों को अलग कर लिया, और प्रतिदिन तुरन्नुस की पाठषाला में विवाद किया करता था।
10 दो वर्ष तक यही होता रहा, यहां तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी, क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।
11 और परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ के अनोखे काम दिखाता था।
12 यहां तक कि रुमाल और अंगोछे उसकी देह से छुवाकर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियां जाती रहती थीं; और दुष्टात्माएं उनमें से निकल जाया करती थीं।

इफिसुस में पौलुस ने बुद्धियुक्त वादविवाद द्वारा और आराधनालयों में यहूदियों को समझाकर आरंभ किया। उसने तुरन्नुस की पाठशाला की यह पद्धति जारी रखी। हम यह भी देखते हैं कि जब उसने प्रचार किया, तब परमेश्वर की सामर्थ से अद्भुत चमत्कार भी हो रहे थे। बुद्धियुक्त तर्क और समझाने, प्रचार और वचन की शिक्षा के साथ ही साथ, चंगाइयां और छुटकारा भी मिल रहा था।

वस्तुतः, जैसा कि बाद में प्रेरितों के काम 19 में लिखा गया है, जब यहूदी महायाजक स्क्किवा के सात पुत्रों की घटना हुई, तब तुरंत लोगों को यीशु मसीह की सामर्थ का एहसास हो गया। फलतः, लोग बड़े पैमाने पर जादूटोना और तंत्र-मंत्र आदि बातों से प्रभु यीशु मसीह की ओर फिरे। यह इसलिए हुआ क्योंकि अलौकिक सामर्थ प्रगट हुई थी।

प्रेरितों के काम 19:17-20
17 और यह बात इफिसुस के रहने वाले यहूदी और यूनानी भी सब जान गए, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई।
18 और जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से बहुतेरों ने आकर अपने अपने कामों को मान लिया और प्रगट किया।
19 और जादू करनेवालों में से बहुतों ने अपनी अपनी पोथियां इकट्ठी करके सबके सामने जला दीं, और जब उनका दाम जोड़ा गया, तो पचास हजार रुपये की निकलीं।
20 इस तरह प्रभु का वचन बलपूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया।

सच्चाई और बुद्धि की बातें

प्रेरितों के काम 24:24,25
24 कई दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी दुसिल्ला को, जो यहूदिनी थी, साथ लेकर आया; और पौलुस को बुलवाकर उस विश्वास के विषय में जो मसीह यीशु पर है, उससे सुना।
25 और जब वह धर्म और संयम और आनेवाले न्याय की चर्चा करता था, तो फेलिक्स ने भयमान होकर उत्तर दिया कि अभी तो जा; अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊंगा।

प्रेरितों के काम 26:24,25
24 जब वह इस रीति से उत्तर दे रहा था तो फेस्तुस ने ऊंचे शब्द से कहा, "हे पौलुस, तू पागल है। बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है।"
25 परन्तु उसने कहा, "हे महाप्रतापी फेस्तुस, मैं पागल नहीं, परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूं।

पौलुस जब उसके समय के अगुवों के सामने खड़ा था, तब वह उनके साथ बहस कर रहा था और जो कुछ उसने अनुभव किया था और जो वह विश्वास करता था, उसके पक्ष में वह बचाव कर रहा था। उसने अलौकिक बातों के विषय में स्वतंत्रतापूर्वक कहा—अर्थात यीशु मसीह के साथ उसकी व्यक्तिगत मुलाकात और मृतकों में से मसीह के जी उठने के विषय में।

मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार

रोमियों 15:18,19

18 क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का हियाव नहीं, जो मसीह ने अन्यजातियों की अधीनता के लिए वचन, और कर्म,

19 और चिन्हों और अद्भुत कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए, यहां तक कि मैंने यरूषलेम से लेकर चारों और इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार किया।

प्रेरित पौलुस उपर्युक्त दो वचनों में अन्यजातियों के प्रति उसकी सेवकाई सारांश बताता है। उसने वचन और कर्म में सेवा की। प्रेरित **पौलुस** ने सेवा करते समय, **तर्कपूर्ण बुद्धि और परमेश्वर की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों का उपयोग किया**, चाहे अत्यंत बुद्धिमानों के बीच हो या दिन-प्रतिदिन के आम लोगों लोगों के बीच। **आज हमें भी ऐसा ही करना है।**

2
चंगाई पर परमेश्वर का वचन

बीमारी, रोग और पीड़ाओं का स्त्रोत

परमेश्वर ने ऐसे जगत को बनाया जो सिद्ध था। परंतु, मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, परिणामस्वरूप, पतन के बाद जब शैतान और उसकी दुष्ट सेना को पृथ्वी पर प्रवेश मिल गया, उसके बाद बीमारी और रोग, हर प्रकार के दुष्टात्मा का दबाव आया और उसने मानवजाति को अपने वश में कर लिया। पाप और मृत्यु जो कि पतन का परिणाम है, उसने प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित किया (रोमियों 5:12)।

हम निम्नलिखित कारणों में से किसी एक की वजह से या अनेक कारणों से रोग, बीमारी और पीड़ा का सामना करते हैं।

मनुष्य की अनाज्ञाकारिता–पतन के बाद से आरम्भ हुई सड़ाहट और भष्टता की स्वाभाविक प्रक्रिया

पतन के कारण सारी सृष्टि सड़ाहट और भष्टता की प्रक्रिया के अधीन हो गई। भष्टता और सड़ाहट की इस प्रक्रिया के कारण, हम में कई दोष आ गए, जैसे जन्म के समय अपंगता और दोष आदि। हमारा मानव शरीर सामान्य तौर पर क्षय की प्रक्रिया से गुज़रता है (2 कुरिन्थियों 4:16)। ये परमेश्वर की योजना या परमेश्वर का मूल उद्देश नहीं था, परंतु पाप के फलस्वरूप, सड़ाहट और भष्टता समस्त सृष्टि पर छायी हुई है। नया आकाश और नई पृथ्वी होगी।

रोमियों 8:19-23

19 क्योंकि सृष्टि बड़ी आषाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है।

20 क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं, पर आधीन करनेवाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आषा से की गई,

[21] कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर के सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी।
[22] क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।
[23] और केवल वही नहीं, पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।

शैतान की गतिविधियां और दुष्टात्माओं का प्रत्यक्ष सहभाग

बाइबल अत्यंत स्पष्ट शब्दों में बताती है कि दुष्टात्माएं सब प्रकार के भौतिक रोग, अपंगता, और बीमारियों को उत्पन्न कर सकती हैं। प्रेरितों के काम 10:38 हमें बताता है कि यीशु ने उन सभों को चंगा किया जो *''शैतान के सताए हुए थे,''* जो हमें सिखाता है कि कुछ मामलों में, रोग शैतान के उत्पीड़न से आता है, अर्थात् यह दुष्टात्मा का कार्य है।

प्रेरितों के काम 10:38
कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया। वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।

हम सब जानते हैं कि सभी प्रकार की बीमारियां दुष्टात्माओं के कारण नहीं आती, विशिष्ट तौर पर, निम्नलिखित बीमारियों का कारण दुष्टात्माओं का कार्य माना जाता है:

- असाध्य रोग
- जन्म दोष/अपंगताएं
- ऐसे रोग जिन्हें समझाया नहीं जा सकता (लक्षण होते हैं कारण पहचाना नहीं जा सकता)
- प्रार्थना और सेवकाई के बाद लक्षण बढ़ते जाते हैं
- प्रार्थना और सेवकाई के दौरान जो लक्षण शरीर के विभिन्न हिस्से में 'जाते' दिखाई देते हैं।

बाद वाले अध्याय में हम बीमारियों और रोगों के कुछ विशिष्ट उदाहरण देखेंगे जो दुष्टात्माओं से उत्पन्न होते हैं।

स्वाभाविक कारण

व्यक्ति की भौतिक समस्याएं अन्य स्वाभाविक कारणों की वजह से हो सकती हैं जैसे शरीर की उपेक्षा, शरीर या मन का उचित ध्यान न रखना, अनुचित खानपान, शराब, ड्रग्ज़, धूम्रपान जैसी चीज़ों का उपयोग या दुर्घट ना की वजह से।

जैसा कि उल्लेख किया गया है, कभी-कभी इन तीन कारणों में कुछ कारणों का संयोग हो सकता है।

सुसमाचार यह है कि प्रभु यीशु पतन, पाप के लिए पूर्ण उपाय के रूप में आया। वह हमें दुष्टात्मा के दबाव से मुक्ति दिलाने आया और अपनी दया और सामर्थ से स्वाभाविक कारणों के प्रभावों को उलट देता है। प्रभु यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्ता, चंगाईदाता, मुक्तिदाता, और छुड़ाने वाला बनकर आया!

क्या परमेश्वर रोग भेजता है?

परमेश्वर रोग और बीमारी का कर्ता नहीं है। यह लोगों के लिए उसकी योजना या उद्देश्य नहीं है।)

क्या परमेश्वर रोगों को भेजता है? इस प्रश्न के उत्तर के रूप में, रोग और बीमारी के स्रोत को समझने के बाद, उत्तर निश्चित रूप से नहीं है। परमेश्वर रोग और बीमारी का कर्ता नहीं है। परमेश्वर ने रोगों को उत्पन्न नहीं किया और उसे संसार में नहीं लाया। पाप और शैतान जो मूल रूप से सिद्ध था, उसके जगत में प्रवेश करने के परिणामस्वरूप रोग आणि बीमारियां जगत में आयी। इसलिए जो पाप का परिणाम और शैतान का कार्य है उसे परमेश्वर का कार्य कहना हमारे लिए गलत है।

मुश्किल अनुच्छेदों को समझना

परमेश्वर की इच्छा, परमेश्वर का वचन और परमेश्वर के कार्य हमेशा ही उसके स्वभाव से सुसंगत रहेंगे। जैसा कि हमने पहले देखा, उसका स्वभाव उसके नाम में यहोवा राफा प्रभु हमारा सहायक करके वर्णन किया गया है।

परमेश्वर ज्योति है, उसमें कोई अंधकार नहीं (1 यूहन्ना 1:5; याकूब 1:17)। उसके बाद पवित्र शास्त्र के इस कथन का क्या अर्थ है, *"और वह स्वर्ग को नीचे झुकाकार उतर आया; और उसके पांवों तले घोर अन्धकार था। उसने अन्धियारे को अपने छिपने का स्थान और अपने चारों और मेघों के अन्धकार और आकाष की काली घटाओं का मण्डप बनाया"* (भजन संहिता 18:9-11)। परमेश्वर यहां अंधकार का उपयोग क्यों करता है?

परमेश्वर सत्य है, और वह झूठ नहीं बोल सकता (तीतुस 1:2)। तब पवित्र शास्त्र इस वचन से क्या कहना चाहता है कि "झूठ बोलने वाली आत्मा" परमेश्वर की ओर से आई (1 राजा 22:22-23; 2 इतिहास 18:21-22)?

परमेश्वर शांति है और वह गड़बड़ी का कर्ता नहीं है (1 कुरिन्थियों 14:33)। इसलिए जब परमेश्वर इन बातों को कहता है, तो उसका क्या अर्थ है? *"मैं उन्हें व्याकुल कर दूंगा," "मैं उन्हें भयातुर करूंगा," "परमेश्वर ने ... एक बुरी आत्मा भेज दी," "परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर बल से उतरा"* (निर्गमन 23:27; व्यवस्थाविवरण 28:20, 28; जकर्याह 12:4; न्यायियों 9:23; 1 शमुएल 18:10, 19:9)?

परमेश्वर यहोवा राफा, हमारा चंगाई करने वाला प्रभु है और इस कारण उसके पास कोई रोग नहीं है और न ही वह किसी रोग का कर्ता है। फिर, जब परमेश्वर इन बातों को कहता है तब इन वचनों का क्या अर्थ होता है, *"यहोवा ने उससे कहा, मनुष्य का मुंह किसने बनाया है? और मनुष्य को गूंगा वा बहरा, वा देखनेवाला, अन्धा, मुझ यहोवा को छोड़ कौन बना सकता है?"* (निर्गमन 4:11)। या *"...जितने रोग ...उनमें से एक भी तुझ पर न भेजूंगा"* (निर्गमन 15:26)। या जब पवित्र शास्त्र लिखता है कि परमेश्वर ने सारे पहिलौठों को मारा और वे मर गए (निर्गमन 12:29), तब यहोवा का हाथ...पर भारी पड़ा और लोगों के गिलटियां निकली (1 शमुएल 5:6)। परमेश्वर ने इन लोगों को ऐसा मारा कि वे मर गए (नाबाल - 1 शमुएल 25:38; उज्जाह - 2 शमुएल 6:7, इत्यादि), या गेहजी को कोढ़ हो गया (2 राजा 5:27)?

हम नए नियम की इन घटनाओं को कैसे समझते हैं जब परमेश्वर ने जकर्याह को उसके अविश्वास के कारण कुछ समय के लिए गूंगा कर दिया (लूका 1:20); पवित्र आत्मा के साथ झूठ बोलने के कारण हनन्याह और सफीरा मारे गए (प्रेरितों के काम 5:5, 10); मसीहियों के विरोध में अत्याचार करने के कारण शाऊल को तीन दिनों तक अन्धा कर दिया गया (प्रेरितों के काम 9:8, 9); परमेश्वर को महिमा न देने के कारण प्रभु के दूत ने हेरोदेस को ऐसा मारा कि उसके शरीर में कीड़े पड़ गए (प्रेरितों के काम 12:21-24), और इसी के समान अन्य अनुच्छेद।

विचार करने योग्य कई महत्वपूर्ण बातें हैं:

1) यीशु में हमारे लिए परमेश्वर की उत्तम बातें प्रगट हुई हैं

परमेश्वर कौन है, यह हमारे लिए यीशु मसीह के व्यक्तित्व में सिद्ध रूप से प्रगट हुआ है। यीशु ने उन सभों को चंगा किया जो विश्वास के साथ उसके पास आए।

परमेश्वर कौन है, यह हमारे लिए यीशु मसीह के व्यक्तित्व में सिद्ध रूप से प्रगट हुआ है। वह देहधारी वचन है, वचन जिसने शरीर धारण किया। जैसा कि बेथेल चर्च, कैलिफोर्निया, (सी ए, यू एस ए) के पासवान बिल जॉनसन अक्सर कहते हैं, यीशु मसीह सिद्ध ईश्वर विज्ञान है। परमेश्वर के विषय में हमारी समझ सिद्ध रूप से यीशु कौन है, उसने क्या कहा और उसने क्या किया इसके अनुरूप होनी चाहिए - क्योंकि वह सिद्धता है। बाकी पवित्र शास्त्र के मुश्किल परिच्छेदों की यीशु मसीह के व्यक्तित्व के प्रकाश में व्याख्या की जानी चाहिए। जो गूढ़ है उसकी व्याख्या जो अत्यंत स्पष्ट है, जो मसीह के व्यक्तित्व में अत्यंत स्पष्ट रूप से देखा जाता है उसके प्रकाश में की जानी चाहिए। एक बात अत्यंत स्पष्ट है, कि उसकी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान, यीशु ने उन सभों को चंगा किया जो विश्वास के साथ उसके पास आए। जो कोई उसके निकट विश्वास से आए, उनमें से प्रत्येक को उसने हर प्रकार की बीमारी और रोग से चंगा किया, और लोगों को शैतान के सारे कामों से मुक्त किया। यही सिद्ध मानक है।

2) परमेश्वर ने एक समय के लिए, पाप के परिणामों और शैतान के कार्यों को पृथ्वी पर जारी रहने की अनुमति दी

पृथ्वी मनुष्य को सौंपी गई थी (भजन संहिता 115:16) और मनुष्य ने वह शैतान के हाथों में सौंप दी (लूका 4:6-7)। इस बार शैतान को अनुमति दी गई है कि वह अपने दुष्ट कामों को पूरा करे। यह पतन के परिणामों में से एक है। जैसा कि हमने पहले इस बात पर ज़ोर दिया है, जो कुछ शैतान कर रहा है, उसका दोष हम परमेश्वर को न दें।

ज़मीन का मालिक और किराएदार

एक सरल उदाहरण पर गौर करें जिसमें एक किराएदार ज़मीन के मालिक की ज़मीन किराए पर लेता है। ज़मीन का मालिक लीज़ पर हस्ताक्षर करता है जिसके द्वारा वह कुछ समय के लिए अपनी ज़मीन रखने की अनुमति उसे देता है, और कुछ शर्तों पर भी वह हस्ताक्षर करता है कि उस ज़मीन पर क्या किया जा सकता है/क्या नहीं किया जा सकता। किराएदार के वहां आने पर, उस ज़मीन पर क्या होता है यह मालिक द्वारा नहीं, परंतु किराएदार द्वारा निश्चित किया जाता है। यदि उस जगह पर गन्दगी है, चीज़ें अव्यवस्थित और असुरक्षित हैं, तो यह उस मालिक का काम नहीं है। यदि किराएदार उस स्थान को बंद नहीं करता और असुरक्षित छोड़ देता है, और चोर आकर उस जगह को बरबाद कर देते हैं, तो यह मालिक का काम नहीं है। सामान्य परिस्थितियों में, मालिक लीज़ के समय के दौरान उस स्थान पर नहीं आएगा। यदि हस्ताक्षर किए गए समझौते के आधार पर, सचमुच ज़रूरत है, तो किराएदार उस ज़मीन पर मालिक का स्वागत करेगा ताकि समस्याओं का हल किया जा सके। इसी रीति से, पृथ्वी मनुष्य के हाथों में सौंपी गई है और जो कुछ यहां हो रहा है उसमें से अधिकतर बातों के लिए हम ज़िम्मेदार हैं।

3) कई लोग केवल उनके पापमय कार्यों या लापरवाही के कामों के कारण दुख उठाते हैं

हम अपने कामों के परिणामों का दोष परमेश्वर पर न लादें।

4) दैवीय न्याय के उपयोग में

परमेश्वर या तो (अ) व्यक्ति पर से या लोगों पर से अपनी सुरक्षा हटा लेता है या (ब) लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए इस संसार के तत्वों का उपयोग करता है, (**उदाहरणः** के तौर पर बहरापन, अन्धापन, गूंगापन, रोग, मृत्यु, प्रद्भति)।

सारांश

दुष्टात्ओं के काम और मनुष्य के कार्य

जो परमेश्वर के पास नहीं है उसे देकर परमेश्वर लोगों को आशीष प्रदान नहीं कर सकता। हम जानते हैं कि स्वर्ग में कोई रोग या दुष्टात्मा की शक्ति नहीं है, इसलिए जब कहा जाता है कि रोग या दुष्टात्माएं परमेश्वर की ओर से आती हैं या भेजी जाती है, तो हमें इस बात को उपर्युक्त रु2 और रु3 के प्रकाश में समझना चाहिए। परमेश्वर ने यहां कुछ समय के लिए उनकी अनुमति दी है। परंतु, प्रभु यीशु मसीह पतन या पाप के लिए पूर्ण उपाय बनकर आया, और सामान्य तौर पर, विश्वासियों के नाते, शैतान लोगों को पृथ्वी पर जो कुछ करता है उस पर जय पाने हेतु यह हमारे लिए आधार बन जाता है।

दैवीय न्याय

जब प्रत्यक्ष पाप होता है और बार-बार चेतावनियां देने के बावजूद पश्चाताप नहीं होता, तब परमेश्वर सामान्य तौर पर रक्षा करने वाला उसका सुरक्षा का हाथ हटा देता है। ऐसे मामलों में, लोगों का ध्यान आकर्षित करने हेतु, परमेश्वर प्राद्भतिक तत्वों की अनुमति देता है या उन्हें काम में लाता है। मूसा ने मिस्त्र में पीड़ा लाई, शाऊल कुछ दिनों तक अन्धा हो गया, हेरोदेस के कीड़े पड़ गए, प्रेरितों के काम 13 में इलीमास कुछ समय तक अन्धा हो गया, इसके कुछ उदाहरण हैं। परंतु, पश्चाताप लोगों को न्याय के स्थान से बाहर निकालता है और परमेश्वर की दया में लाता है। दया हमेशा न्याय पर जय पाती है (याकूब 2:13)।

बड़ी महिमा के समय

इसके अतिरिक्त, हम यह देखते हैं कि उन समयों/ऋृतुओं में जब परमेश्वर की महिमा प्रगट होती है महान होती है, तब पाप के प्रति कम सहिष्णुता होती है (अविश्वास भी इसमें शामिल है)। बड़ी बेदारी के समयों में, अधिक महिमा, अधिक अनुग्रह होता है, परंतु पाप को कम सहा जाता है। हनन्याह और सफीरा यरूशलेम की कलीसिया में थे जहां परमेश्वर की महिमा बड़ी थी, और पवित्र आत्मा से झूठ बोलने के उनके पाप को सहा नहीं गया। जकर्याह की भेंट परमेश्वर के दूत जिब्राईल से हुई, परंतु वह अविश्वास प्रगट कर रहा था, और कुछ समय के लिए वह गूंगा कर दिया गया क्योंकि तूने मेरी बातों की प्रतीति नहीं की (लूका 1:20)।

सारांश के रूप में, परमेश्वर रोग या बीमारी का कर्ता नहीं है। यह लोगों के लिए उसकी योजना या उद्देश्य का भाग नहीं है। परमेश्वर की इच्छा, परमेश्वर का वचन और परमेश्वर के कार्य हमेशा उसके स्वभाव से सुसंगत रहेंगे।

अब हम चंगाई और छुटकारा प्राप्त करने और उनकी सेवा प्रदान करने के आधार का परीक्षण करेंगे।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करने का आधार : परमेश्वर का स्वभाव

परमेश्वर जो है उसके कारण हम विश्वास के साथ प्रार्थना कर सकते हैं और चंगाई और छुटकारे की अपेक्षा कर सकते हैं। हमारा प्रभु हमारा चंगाईकर्ता है। हमारा प्रभु हमारा छुड़ाने वाला है। उसने हमें यहोवा राफा हमारा चंगाई करने वाला प्रभु यह अपनी वाचा का नाम देकर, वह कौन है यह जाहीर किया (निर्गमन 15:26)। वह प्रभु है वह हमारे सारे अधर्मों को क्षमा करता है और सारे रोगों को चंगा करता है (भजन संहिता 103:3)। इस सत्य से सम्बंधित पवित्र शास्त्र के वचनों की चर्चा पहले ही अध्याय 1 में की गई है, और इसलिए उन्हें यहां दोहराया नहीं जा रहा है।

परमेश्वर जो इच्छा रखता है, कहता है और करता है वह हमेशा वह कौन है इससे सुसंगत रहेगा। उसकी इच्छा, उसके शब्द, और उसके कार्य

हमेशा उसके स्वभाव से सुसंगत रहेंगे। परमेश्वर खुद को चंगाईकर्ता कहकर "बीमारी देने वाला" नहीं बनेगा।

बीमारी, रोग और दुष्टात्माओं के सताव से सम्बंधित हमारा दृष्टिकोण इस समझ से हो कि परमेश्वर चंगाईकर्ता और छुड़ानेवाला है।

बीमारी, रोग और दुष्टात्माओं के सताव से सम्बंधित हमारा दृष्टि कोण इस समझ से हो कि परमेश्वर चंगाईकर्ता और छुड़ानेवाला है। क्योंकि हम परमेश्वर को चंगाई करनेवाले के रूप में जानते हैं, अतः हम आगे बढ़कर उससे बिनती कर सकते हैं कि वह हमें चंगा करे और छुड़ाए। प्रत्येक रोग और बीमारी का सामना करते समय, हम उसकी इच्छा जानते हैं। रोग और बीमारी को हटाना उसकी इच्छा है। लोगों के लिए उसकी इच्छा है कि वे दुष्टात्माओं के सताव से और बंधन से छुड़ाए जाएं।

जब हम चाहते हैं कि बीमार व्यक्ति चंगा हो, और परमेश्वर ने चंगाई देने हेतु जो कुछ हमें दिया है उसका जब हम उपयोग करते हैं, तब हम परमेश्वर से बिनती करते हैं कि वह उस कार्य को करे जिसे करने का उसने पहले ही हमें वचन दिया है।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करने का आधारः क्रूस

परमेश्वर का क्रूस पतन का उपाय है। अदन की वाटिका में पतन के द्वारा जो कुछ खो गया था वह क्रूस पर मसीह के द्वारा किए गए कार्य से प्राप्त किया गया। क्रूस पर, यीशु ने न केवल हमारे पापों को उठा लिया, और हमारे लिए क्षमा प्राप्त करना सम्भव बना दिया, बल्कि उसने हमारे सारे बीमारियों और रोगों को उठा लिया ताकि हमारे शरीरों को चंगाई, हमारे आंतरिक मनुष्यत्व को (प्राण) स्वास्थ्य और दुष्टात्माओं की शक्ति से छुटकारा प्रदान कर सके। चंगाई, स्वास्थ्य और छुटकारा क्रूस के द्वारा प्रदान किए गए।

मसीह के 760 वर्षों पहले, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने विस्तृत भविष्यद्वाणी की कि मसीह क्रूस पर क्या हासिल करेगा। यशायाह 52:13 से आरम्भ करते हुए सम्पूर्ण 53वे अध्याय में, यशायाह क्रूस का उद्देश्य प्रगट करता है।

यशायाह 53:4,5
4 निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा।
5 परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं।

"निश्चय उसने हमारे रोगों (क्लेश) को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया..." इब्रानी शब्द और अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। "रोग" के लिए दिया गया इब्रानी शब्द है *'चोली'* जिसका अर्थ है "बीमारी, रोग, व्याधि।" "दुख" के लिए दिया गया इब्रानी शब्द है *'मकोब'* जिसका अर्थ है "पीड़ा, दुख, क्लेश।" उसके घावों से हम "चंगे हो गए," "चंगे हो गए" के लिए इब्रानी शब्द है 'राफा' इसी शब्द का उपयोग परमेश्वर ने अपने वाचा के नाम में हमारा चंगाईकर्ता प्रभु के रूप में किया है।

यशायाह यह भी कहता है कि *"हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी"* (यशायाह 53:5)। "शान्ति" यह शब्द इब्रानी भाषा में "शालोम" है, जिसका अर्थ है पूर्ण कल्याण, जिसमें शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक स्वास्थ्य शामिल है। मेसेज बाइबल में इसका अनुवाद इस प्रकार हैः *"उसने हमारी सजा सह ली, और इससे हमें स्वस्थ हो गए।"*

हमारे लिए यह जानना और समझना महत्वपूर्ण है कि शारीरिक और भावनात्मक चंगाई, और स्वास्थ्य हमें क्रूस पर यीशु द्वारा किए गए कार्य के माध्यम से प्रदान किया गया। चंगाई प्रायश्चित में है।

सुसमाचार का लेखक मत्ती, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यशायाह 53:4 को मत्ती 8:17 में इस प्रकार लिखता हैः

मत्ती 8:17
ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, 'उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया'।

क्रूस पर प्रभु यीशु ने हमारे सारी बीमारियों और रोगों को उठा लिया। जिस प्रकार उसने हमारे पापों को उठा लिया ताकि हमें क्षमा प्राप्त हो सके, उसी प्रकार उसने हमारे रोगों को सह लिया ताकि हम चंगे हो सकें।

1 पतरस 2:24
वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मर करके धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं; उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।

क्रूस पर यीशु ने अंधकार की समस्त शक्तियों पर विजय प्राप्त की और हमारे जीवनों में शैतान के किसी भी कार्य का इन्कार करने के लिए हमें आधार प्रदान किया।

कुलुस्सियों 2:14,15
14 और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।
15 और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुल्लम-खुल्ला तमाषा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई।

इब्रानियों 2:14
इसलिए जबकि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।

यशायाह 53:12
इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा।

यशायाह ने यशायाह 53:12 में भविष्यद्वाणी की कि वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा। मसीह हमें विजय बांट देता है। वह अपनी विजय हमारे साथ बांटता है। क्रूस पर उसकी विजय हमारी विजय है। हम उसकी विजय में चलते हैं। हम उसकी जय में चलते हैं। क्रूस हमारे लिए वह आधार बन जाता है कि व्यक्तिगत रीति से या जब हम दूसरों की सेवा करते हैं, तब हमारे विरोध में उठने वाले प्रत्येक दुष्टात्मा के कार्य का हम इन्कार कर सकते हैं, उसे रद्द कर सकते हैं और नाश कर सकते हैं। हम विजय के इस स्थान से सेवा करते हैं।

काम पूरा हो चुका है! अब हम हमारी चंगाई, छुटकारे और स्वास्थ्य के लिए क्रूस द्वारा सम्पादित कार्य पर खड़े हैं। क्रूस पर उसके सम्पादित कार्य से और कार्य के आधार पर हम कार्य करते हैं ताकि चंगाई और छुट कारा प्राप्त करें और प्रदान करें!

विश्वासियों के नाते, हमारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व - आत्मा, प्राण और शरीर - परमेश्वर द्वारा छुड़ाया गया है और उसी का है।

1 कुरिन्थियों 6:19-20
19 क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है, जो तुममें बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?
20 क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।

हम जानते हैं कि हमारे शरीर का पूर्ण छुटकारा पुनरुत्थान के समय होगा। इस समय, जब हम पृथ्वी पर जीते हैं, तब हम शैतान को हमारे शरीरों में प्रवेश की अनुमति नहीं देते। हम मोल लेकर खरीदे गए हैं। हम परमेश्वर के हैं। शैतान पर हमारे जीवनों का कोई दावा नहीं है। हम अंधकार की शक्तियों से छुड़ाए गए हैं और परमेश्वर के अपने प्रिय पुत्र के राज्य में पहुंचाए गए हैं। हमें अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व में परमेश्वर की महिमा करना है - आत्मा, प्राण और शरीर। जिस प्रकार हम पाप का इन्कार करते हैं, उसी प्रकार हम हमारे पूर्ण व्यक्तित्व में रोग और अन्य शैतानी कार्य का इन्कार करते हैं।

यीशु का लहू

क्रूस पर बहाया गया यीशु का लहू अंधकार की सारी शक्तियों से मेरा छुटकारा है। क्रूस पर उण्डेला गया लहू हमारे छुटकारे की घोषणा करता है।

कुलुस्सियों 1:13,14
13 उसी ने हमें अन्धकार के वष से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेष कराया,
14 जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

इब्रानियों 9:12
और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेष किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।

लहू सामर्थी है, क्योंकि परमेश्वर के निष्पाप मेम्ने का यही लहू स्वर्ग में चढ़ाया गया, जिसने हमारे लिए सनातन छुटकारा प्राप्त किया। लहू परमेश्वर के साथ हमारी वाचा पर मुहर लगाता है। यह लहू अब हमें परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थिति में प्रवेश दिलाता है।

क्रूस पर मसीह द्वारा सम्पादित कार्य की हमारी घोषणा और लहू ने हमारे लिए जो कुछ किया है उसकी घोषणा शत्रु के विरोध में एक सामर्थी हथियार है। वह शत्रु को निर्बल कर देता है। यीशु के लहू ने हमारे लिए जो कुछ किया है उसकी जब हम गवाही देते हैं, तब हम शैतान पर जय पाते हैं।

प्रकाशितवाक्य 12:11
और वे मेम्ने के लोहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली।

वाचा का लहू

जो लोग परमेश्वर के साथ वाचा में हैं उनके लिए वह अपने सर्वस्व को उपलब्ध करता है। वाचा गंभीर प्रतिज्ञा, बंधनकारक शपथ या अनुबंध है जिसमें दो पक्ष सहभागी होते हैं। विशिष्ट तौर पर आज, किसी अनुबंध या कानूनी दस्तावेज को हस्ताक्षर करने के द्वारा वाचाएं स्थापित की जाती हैं। परमेश्वर लहू के द्वारा उसकी वाचा स्थापित करता है (लैव्यव्यवस्था 17:11)। परमेश्वर की वाचा जीवन के लिए जीवन है। उसकी वाचा में परमेश्वर अपने सर्वस्व को हमारे लिए उपलब्ध करता है। बदले में, वह हमसे हमारा सबकुछ मांगता है। हम अपने सर्वस्व को उसे समर्पित करते हैं क्योंकि हम उसके साथ वाचा के रिश्ते में हैं। वह सब जो परमेश्वर है, जो कुछ उसने अपने वाचा के नामों के द्वारा खुद के विषय में प्रगट किया, वह सब हमारे लिए जो उसके साथ वाचा में हैं, उसने उपलब्ध किया है।

चंगाई और स्वास्थ्य परमेश्वर की वाचा का भाग हैं, क्योंकि वह यहोवा राफा है। जो उसके साथ वाचा के रिश्ते में हैं, वे चंगाई, स्वास्थ्य, और सम्पूर्णता प्राप्त करते हैं जो उसकी ओर से आती है।

अब्राहम की वाचा और अब्राहम की बेटी

परमेश्वर ने अब्राहम के साथ लहू की वाचा स्थापित की (उत्पत्ति 15:9-21)। उस वाचा में, परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से यह नहीं बताया कि चंगाई और छुटकारा प्रदान किया जाएगा। परंतु यह सच्चाई परमेश्वर द्वारा की गई प्रत्येक वाचा में स्पष्ट है। जो कुछ भी वह है, वह सबकुछ उन लोगों के लिए उपलब्ध करता है जो उसके साथ वाचा के रिश्ते में हैं। वह खुद के साथ वाचा को प्रमाणित करता है (स्थापित करता है, उसका आश्वासन देता है) (इब्रानियों 6:13-18)। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह अब्राहम के बाद उसकी संतानों के साथ वाचा कायम करेगा (उत्पत्ति 17:7)।

सदियों बाद, जब प्रभु यीशु सेवा कर रहा था, तब इस प्रकार हुआ :

लूका 13:10-17

10 सब्त के दिन वह आराधनालय में उपदेष कर रहा था।

11 और देखो, एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी, और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी।

12 यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और कहा, हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से मुक्त हो गई।

13 तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।

14 इसलिए कि यीशु ने सब्त के दिन उसे अच्छा किया था, आराधनालय का सरदार रिसियाकर लोगों से कहने लगा, छः दिन हैं, जिनमें काम करना चाहिए, इसलिए उन ही दिनों में आकर चंगे होओ; सब्त के दिन में नहीं।

15 यह सुन कर प्रभु ने उत्तर देकर कहा, हे पाखण्डियो, क्या सब्त के दिन तुममें से हर एक अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता?

16 और क्या उचित न था कि यह स्त्री जो अब्राहम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाए?

17 जब उसने ये बातें कही, तो उसके सब विरोधी लज्जित हो गए, और सारी भीड़ उन महिमा के कामों से जो वह करता था, आनन्दित हुई।

क्रूस पर उसके पूरे हुए कार्य से और कार्य के आधार पर हम कार्य करते हैं ताकि चंगाई और छुटकारा प्राप्त करें और प्रदान करें!

मंदिर में एक स्त्री थी जो पीठ में झुकी थी और वह इस स्थिति में 18 वर्षों से थी। यह निर्बलता की आत्मा द्वारा किया गया था। प्रभु यीशु ने उसकी दुर्बलता से उसे छुटकारा दिया और वह तुरंत चंगी हो गई। जब कुछ लोगों ने प्रभु यीशु ने जो कुछ किया था उस पर आपत्ति ली, क्योंकि वह सब्त का दिन था, तब प्रभु ने यह दिखा दिया कि यह स्त्री "अब्राहम की बेटी" थी जिसे शैतान ने पीड़ित किया था। प्रभु यीशु इस सच्चाई की ओर संकेत कर रहा था कि अब्राहम की संतान होने के नाते, वह परमेश्वर के साथ वाचा के रिश्ते में थी। उस वाचा का भाग स्वस्थ होने का उसका अधिकार था। शैतान ने उसे निर्बलता की आत्मा में बांधकर उस वाचा का उल्लंघन किया था, जिससे वह कुबड़ी हो गई थी। परमेश्वर के साथ वाचा के द्वारा अधिकार से जो कुछ उसका था उसे देने के लिए प्रभु यीशु आया।

हमें यह समझना है कि यीशु द्वारा बहाए गए लहू के द्वारा, हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ नई वाचा में हैं। चंगाई, छुटकारा, सम्पूर्णता और स्वास्थ्य इस वाचा का भाग हैं, क्योंकि परमेश्वर जो कुछ है वह हमें वाचा के द्वारा उपलब्ध कराया गया है। शैतान इस वाचा का उल्लंघन करने की कोशिश करेगा, परंतु हमें अपने स्थान में डटे रहना है। प्रभु यीशु मसीह इस नई वाचा का कर्ता और मध्यस्थ (उसे अमल में लाने वाला) दोनों है। वह जीवित है और हमारे जीवनों में उसकी वाचा को अमल में लाने के लिए पूर्णतया तत्पर है।

पुरानी वाचा की आशीषें और अति उत्तम वाचा

बाइबल में लहू की वाचाओं के हमारे अवलोकन को जारी रखते हुए, पुरानी वाचा, जो मूसा की वाचा का उल्लेख करती है (यह वाचा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा उसके लोगों के साथ बांधी थी), उसमें भी स्वास्थ्य और चंगाई की आशीषें थीं। व्यवस्थाविवरण 28:1-14 ये वचन आशीषों का उच्चारण करते हैं। व्यवस्थाविवरण 28:15-68 में उस वाचा का उल्लंघन करने के लिए शापों का विवरण है। हम पाते हैं कि आशीषें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के

लिए हैं, शरीर के लिए भी। बीमारी और रोग को शापों के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है। वस्तुतः, कई बातों का विवरण किया गया है : रोग, निर्बलता और बुखार और फुंसी और दौरा और पानी की कमी और अंगमारी और पीलिया, मिस्र के फोड़े, बवासीर, खुजली, और असाध्य खुजली, पागलपन और अंधापन और बुढ़ापा, आपके घुटनों पर और पांव पर दर्दनाक फोड़े, हर कल्पित रोग और विपदा (यह सूची मेसेज बाइबल से ली गई है)।

बात यह है कि, पुरानी वाचा के अंतर्गत भी, चंगाई, स्वास्थ्य और सम्पूर्णता उन आशीषों का भाग थी जो उन लोगों को प्राप्त होते थे जो आज्ञाकारिता में और उस वाचा के अनुरूप चलते थे जो परमेश्वर ने उनके साथ बांधी थी। बीमारी और रोग उनके लिए परमेश्वर के उद्‌देश्य का हिस्सा नहीं थे और इस कारण उन्हें शापों के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है।

नए नियम के विश्वासी होने के नाते, बाइबल हमें सिखाती है कि प्रभु यीशु ने उसके लहू के द्वारा एक बेहतर वाचा स्थापित की। तो हमें इस वाचा के भाग के रूप में स्वास्थ्य और सम्पूर्णता की आशीषों का कितना अधिक आनंद लेना चाहिए।

इब्रानियों 7:22
इसलिए यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा।

इब्रानियों 8:6
परंतु उसको उनकी सेवकाई से बढ़कर मिली, क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है।

इब्रानियों 12:24
और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लोहू के पास आए हो, जो हाबील के लोहू से उत्तम बातें कहता है।

चंगाई "बालकों'की रोटी"

जो परमेश्वर के साथ वाचा के रिश्ते में थे उनका उल्लेख पुत्रों के रूप में या वाचा की संतानों के रूप में किया जाता था।

प्रेरितों के काम 3:25
तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हों, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बापदादों से बान्धी, जब उसने अब्राहम से कहा कि तेरे वंष के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आषीष पाएंगे।

हम मत्ती 15 अध्याय में कनानी स्त्री के साथ यीशु के वार्तालाप में वाचा की संतानों की आशीषों के विषय में दूसरा अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य देखते हैं।

मत्ती 15:21-28
21 यीशु वहां से निकलकर सूर और सैदा के देषों की और चला गया।
22 और देखो, उस देष से एक कनानी स्त्री निकली और चिल्लाकर कहने लगी, हे प्रभु दाऊद के सन्तान, मुझ पर दया कीजिए, मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है।
23 परंतु यीशु ने उसे कुछ उत्तर न दिया, और उसके चेलों ने आकर उससे बिनती कर कहा, इसे भेज दीजिए, क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती आती है।
24 यीशु ने उत्तर दिया, इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया।
25 परंतु वह स्त्री आयी, और उसे दण्डवत करके कहने लगी, हे प्रभु, मेरी सहायता कीजिए।
26 उसने उत्तर दिया, बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं।
27 उस स्त्री ने कहा, सच है प्रभु, परंतु कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं जो उनके स्वामियों की मेज से गिरते हैं।
28 इस पर यीशु ने उसको उत्तर देकर कहा, हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है! जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो। और उसकी बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई।

परमेश्वर की वाचा के लोग "इस्राएल के घराने" को बच्चों के रूप में उल्लेख किया गया है। इस परिच्छेद में प्रभु यीशु चंगाई और छुटकारे का उल्लेख "बच्चों की रोटी" के रूप में करता है। चंगाई और छुटकारा उन सभों के लिए परमेश्वर का प्रयोजन है जो उसके साथ वाचा में हैं। इसमें सभी हिस्सा ले सकते हैं। हम किसी भी समय उसे मांग सकते हैं! दिलचस्पी की बात यह है कि कनानी स्त्री भले ही वाचा के लिए बाहरी थी, फिर भी उसने केवल रोटी का एक चूर मांगकर चंगाई और छुटकारे की आशीष को पाया! कुंजी है, उसने विश्वास से मांगा। हम जो परमेश्वर के साथ वाचा में हैं, जब बालक के समान सरल विश्वास से मांगेंगे तो चंगाई और

छुटकारे के परमेश्वर के भरपूर प्रयोजन का कितना अधिक लाभ पा सकते हैं? चंगाई बच्चों की रोटी है! हम उसे लें और उसका आनंद उठाएं। हम उसे दूसरों को बांटें, उन्हें भी जो वाचा के बाहर हैं, ताकि वे भीतर आएं और नई वाचा का भाग बनें जो उस प्रत्येक के लिए खुली है जो विश्वास करेंगे!

चंगाई, छुटकारा, सम्पूर्णता और स्वास्थ्य इस वाचा का भाग हैं, क्योंकि परमेश्वर जो कुछ है वह हमें वाचा के द्वारा उपलब्ध कराया गया है।

चंगाई और छुटकारा प्रदान करने का आधारः वचन

हमारे सम्पूर्ण हृदयों से हमें एक महत्वपूर्ण सत्य को अपनाने की आवश्यकता है, वह है परमेश्वर के वचन की सामर्थ। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा कार्य करता है। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा सृष्टि करता है। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा अपने कार्य को पूरा करता है।

भजन संहिता 33:6,9
6 आकाषमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुंह की श्वास से बने।
9 क्योंकि जब उस ने कहा, तब हो गया; जब उस ने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया।

इब्रानियों 11:3
विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।

परमेश्वर की सामर्थ उसके वचन में वास करती है। जैसा कि इब्रानियों 4:12 में लिखा है: *"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।"* परमेश्वर की चंगाई और छुड़ाने वाली सामर्थ उसके वचन के द्वारा प्रदान की जाती है।

परमेश्वर के वचन में परमेश्वर की चंगाई की सामर्थ है। जब परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाना चाहता था और उन्हें चंगा करना चाहता था, तब

उसने अपना वचन भेजा। उसने प्रतिज्ञा का उसका वचन कहा। उसने उन्हें उसका वाचा का वचन दिया। यह वचन उनकी चंगाई और छुटकारा ले आया।

भजन संहिता 107:20
वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है।

वचन हमारे समस्त शरीर के लिए चंगाई या औषधी है।

नीतिवचन 4:20-22
20 हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान करके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा।
21 इनको अपनी आंखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर।
22 क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।

नीतिवचन 4:22 में दिया गया "चंगे रहने" यह शब्द इब्रानी भाषा में *'मर्पे'* है जिसका अर्थ है "चंगाई, इलाज, औषधी, छुटकारा, उपचार।" परमेश्वर का वचन हमारे सम्पूर्ण शरीर को प्रभावित करता है, और उसके लिए चंगाई और स्वास्थ्य ले आता है।

हमारे अपने व्यक्तिगत जीवनों के लिए, हमें परमेश्वर के वचन के माध्यम से उसकी चंगाई की सामर्थ प्राप्त करना सीखना है। जब हम विश्वास के साथ उसके वचन को ग्रहण करते हैं, तब वचन हमारे जीवनों में कार्य करता है। प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीका के विश्वासियों की प्रशंसा की कि उन्हें प्रचार किए गए वचन को उन्होंने ग्रहण किया। उसने 1 थिस्सलुनीकियों 2:13 में लिखा, *"इसलिए हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा, तो तुमने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया; और वह तुममें जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है।"* जब हम परमेश्वर के वचन को

परमेश्वर की सामर्थ उसके वचन में वास करती है। परमेश्वर के वचन में परमेश्वर की चंगाई की सामर्थ है। वचन हमारे सम्पूर्ण शरीरों के लिए चंगाई है।

ग्रहण करते हैं, तब वह प्रभावी रूप से हममें जो विश्वास करते हैं, कार्य करेगा। फल लाने हेतु वचन को हमारे हृदयों में विश्वास के साथ मिलना होगा (इब्रानियों 4:2)। नीतिवचन 4:20-22 में परमेश्वर हमें जो सिखाता है उसे पढ़ने, उस पर मनन करने और उसे व्यवहार में लाने के द्वारा, हम परमेश्वर के वचन के द्वारा अपने शरीरों के लिए चंगाई और स्वास्थ्य पाते हैं।

उसी तरह, दूसरों को चंगाई और छुटकारे की सेवा प्रदान करते समय, हमें वचन देना जरूरी है जो चंगाई और छुटकारा पाने हेतु उनके हृदय में विश्वास उत्पन्न करेगा। विश्वास वचन का प्रचार सुनने से आता है (रोमियों 10:17)। हमें विश्वास के वचन का प्रचार करना है। लुस्त्रा में सेवकाई करते समय, पौलुस ने इस प्रकार वचन का प्रचार किया कि उसे सुनने वाले लंगड़े व्यक्ति के हृदय में विश्वास जाग उठा। पौलुस ने इस बात को जान लिया और उसे उठने की आज्ञा दी। तुरंत, वह उछलकर चलने लगा।

प्रेरितों के काम 14:8-10
8 लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पांवों का निर्बल था। वह जन्म ही से लंगड़ा था, और कभी न चला था।
9 वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था और इसने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा कि इसको चंगा हो जाने का विश्वास है।
10 और ऊंचे शब्द से कहा, अपने पांवों के बल सीधा खड़ा हो। तब वह उछलकर चलने फिरने लगा।

परमेश्वर का वचन आत्मा की तलवार भी है, जिसे हमें शत्रु के विरोध में हथियार के रूप में उपयोग करना है। इफिसियों 6:17 हमें शिक्षा देता है, *"और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।"* जब हम परमेश्वर के वचन को, जो कुछ उसने हमारे स्वास्थ्य, चंगाई, छुटकारे, स्वतंत्रता, अधिकार और बीमारी, रोग और दुष्टात्माओं पर विजय के सम्बंध में कहा है, उसे बोलेंगे, और घोषणा करेंगे, तब परमेश्वर की सामर्थ हमारी ओर से मुक्त होगी।

नवीनीद्भत बल और दीर्घायु की प्रतिज्ञा

जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया है उसके भण्डारी होने के नाते, हमें अपने भौतिक शरीरों का और स्वास्थ्य का सही भोजन, व्यायाम और विश्राम के

द्वारा ध्यान रखना है। परमेश्वर ने हमारे शरीरों की उचित देखभाल के लिए जिन प्राद्भतिक नियमों को निर्धारित किया है उनका हमें पालन करना है। परमेश्वर के वचन में, हम परमेश्वर के हृदय को प्रगट होते हुए देखते हैं। वह हमारे बल और क्षमता को नया बनाने की प्रतिज्ञा करता है। वह हमें दीर्घायु की प्रतिज्ञा करता है। अर्थात, यह इस बात पर निर्भर है कि हम प्राद्भतिक नियमों के अनुसार चलें और जो कुछ उसने हमें उसके वचन के द्वारा दिया है उसमें विश्वास से चलें।

उत्पत्ति 6:3
और यहोवा ने कहा, मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लो विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही हैः उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी।

निर्गमन 23:25,26
25 और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा।
26 तेरे देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न कोई बांझ होगी; और तेरी आयु मैं पूरी करूंगा।

व्यवस्थाविवरण 33:25
तेरे जूते लोहे और पीतल के होंगे, और जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति हो।

भजन संहिता 103:5
वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है।

अय्यूब 33:25
तब उस मनुष्य की देह बालक की देह से अधिक स्वस्थ और कोमल हो जाएगी; उसकी जवानी के दिन फिर लौट आएंगे।

अय्यूब 5:26
जैसे पूलियों का ढेर समय पर खलिहान में रखा जाता है, वैसे ही तू पूरी अवस्था का होकर कब्र को पहुंचेगा

भजन संहिता 90:10
हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएं, तौभी उनका घमण्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है; क्योंकि वह जल्दी कट जाती है, और हम जाते रहते हैं।

भजन संहिता 91:16
मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूंगा और अपने किए हुए उद्धार का दर्षन दिखाऊंगा।

भजन संहिता 92:13,14
13 वे यहोवा के भवन में रोपे जाकर, हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले फलेंगे।
14 वे पुराने होने पर फलते रहेंगे, और रस भरे और लहलहाते रहेंगे।

भजन संहिता 118:17
मैं न मरूंगा वरन् जीवित रहूंगा, और परमेश्वर के कामों का वर्णन करता रहूंगा।

इफिसियों 6:2,3
2 अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहली आज्ञा है, जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है),
3 कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।

1 पतरस 3:10
क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे।

चंगाई और छुटकारा प्रदान करने का आधार: आत्मा की सामर्थ

जैसा कि हमने पहले चर्चा की है, प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा की सामर्थ से चंगाइयां, छुटकारा और आश्चर्यकर्म प्रदान किए। वह चंगाई करने और छुड़ाने के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ से अभिषिक्त था। हम इसे “चंगाई का अभिषेक” कहते हैं—चंगाई की सामर्थ और पवित्र आत्मा की उपस्थिति। जब वह वचन की सेवकाई करता था, तब भी आत्मा की सामर्थ (चंगाई अभिषेक) लोगों को चंगाई देने और छुड़ाने के लिए उस स्थान को भर देती थी। प्रभु यीशु चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ सेवा करता था।

लूका 4:17-19
17 यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उसने पुस्तक खोलकर वह जगह निकाली जहां यह लिखा था,
18 “प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्धुओं को छुटकारे का

और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं;
19 और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।"

लूका 5:17

और एक दिन ऐसा हुआ कि वह उपदेष दे रहा था, और फरीसी और व्यवस्थापक वहां बैठे हुए थे, जो गलील और यहूदिया के हर एक गांव से, और यरूषलेम से आए थे; और चंगा करने के लिए प्रभु की सामर्थ उसके साथ थी।

प्रेरितों के काम 10:38

कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया। वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।

इब्रानियों 2:3,4

3 तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निष्चिंत रहकर कैसे बच सकते हैं, जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें निष्चय हुआ?
4 और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।

हम सुसमाचारों में देखते हैं कि परमेश्वर की सामर्थ यीशु में से बह निकली और उसने लोगों को चंगा किया। लोगों ने यीशु को छूआ या विश्वास से उसके वस्त्रों को छूआ और वे परमेश्वर की सामर्थ के सम्पर्क में आए।

मरकुस 5:30

यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया कि मुझ में से सामर्थ निकली है, और उसने भीड़ में पीछे फिरकर पूछा, मेरा वस्त्र किसने छूआ?

मरकुस 6:56

और जहां कहीं वह गांवों, नगरों, या बस्तियों में जाता था, तो लोग बीमारों को बाजारों में रखकर उससे बिनती करते थे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छू लेने दे। और जितने उसे छूते थे, सब चंगे हो जाते थे।

लूका 6:19

और सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उसमें से सामर्थ निकलकर सब को चंगा करती थी।

प्रभु यीशु ने उसमें स्थित पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा दुष्टात्माओं का सामना किया और उन्हें निकाला।

मत्ती 12:28
परंतु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।

पवित्र आत्मा की सामर्थ अंधकार की सामर्थ से कहीं अधिक महान है। अभिषेक है जो अत्याचार के जुए को नष्ट करता है और बोझ को हटाकर लोगों को स्वतंत्र करता है। यशायाह 10:27 *"उस समय ऐसा होगा कि उसका बोझ तेरे कंधे पर से, उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा, और अभिषेक के कारण वह जूआ तोड़ डाला जाएगा।"* परमेश्वर के आत्मा की उपस्थिति दुष्टात्मा के कार्यों को रोकती है। यशायाह 59:19 बताता है, *"तब पश्चिम की ओर लोग यहोवा के नाम का, और पूर्व की ओर उसकी महिमा का भय मानेंगे; क्योंकि जब शत्रु महानद की नाईं चढ़ाई करेंगे तब यहोवा का आत्मा उसके विरुद्ध झण्डा खड़ा करेगा।"*

हम यीशु के समान सेवा करने के लिए अभिषेक किए गए हैं

प्रभु यीशु ने प्रतिज्ञा की कि हम उन कामों को करेंगे जो उसने किए और उससे भी बड़े काम *"क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं"* (यूहन्ना 14:12)। यीशु पिता के पास जाता है इसके महत्वपूर्ण परिणामों से एक यह था कि उसने पिता की प्रतिज्ञा को हमारे लिए भेज दिया, ताकि हम स्वर्गीय सामर्थ से आवृत्त हों। जिस पवित्र आत्मा ने यीशु को अभिषेक किया था, वही हमें अब अभिषेक करता है और आज विश्वासी होने के नाते हमारे द्वारा कार्य करता है। पवित्र आत्मा की वह सामर्थ जो यीशु के द्वारा प्रवाहित हुई, अब हम में से बहती है, ताकि हम उसका सबूत लाने वाले, सामर्थ प्रदर्शित करने वाले, आश्चर्यकर्म करने वाले गवाह हों! जब हम बीमारों, दबे हुओं और दुष्टात्मा से पीड़ितों की सेवा करते हैं, तब उन्हें स्वस्थ करने हेतु हम आत्मा

पवित्र आत्मा की वह सामर्थ जो यीशु के द्वारा प्रवाहित हुई, अब हम में से बहती है, ताकि हम उसका सबूत लाने वाले, सामर्थ प्रदर्शित करने वाले, आश्चर्यकर्म करने वाले गवाह हों!

की सामर्थ पर निर्भर रहते हैं। आत्मा के वही वरदान जो यीशु से प्रगट होते थे, अब प्रत्येक विश्वास के लिए उपलब्ध हैं कि उन्हें प्रगट करें (1 कुरिन्थियों 12:7-11)।

लूका 24:49
और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उण्डेलूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।

प्रेरितों के काम 1:8
परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूषलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।

प्रेरितों के काम 2:33
इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो।

1 कुरिन्थियों 12:7
किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाष दिया जाता है।

व्यक्तिगत स्तर पर

पवित्र आत्मा जीवन का दाता है। वह जीवन का आत्मा है (रोमियों 8:2)। हमें विश्वासी होने के नाते, हमारे अंदर जो आत्मा है उसके कार्य पर विश्वास करना है, उसे स्वीकार करना है और उसमें चलना है। विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य के कई पहलू हैं, और हम जानते हैं कि परमेश्वर का आत्मा हमारे मरणहार शरीरों को जीवन प्रदान करता है।

रोमियों 8:11
और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुममें बसा हुआ है, तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा, जो तुममें बसा हुआ है जिलाएगा।

हमारे भौतिक शरीर मरणहार हैं। वे मिटते जा रहे हैं। शरीर सड़ रहा है (वृद्ध होता जा रहा है) और धीरे-धीरे कब्र की ओर बढ़ रहा है। परंतु,

क्योंकि परमेश्वर का आत्मा हममें वास करता है, इस कारण वह हमारे मरणहार शरीरों को जीवन देता है। वह हमारे मरणहार शरीरों को चंगा करता है, सम्हालता है, बल देता है और ऊर्जा प्रदान करता है। हमें इसके लिए उस पर भरोसा रखना है। हम परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए अपने शरीरों को समर्पण करने में और उसकी देखभाल करने में अपनी भूमिका निभाते हैं, परंतु हमारे मरणहार शरीरों को जीवन देने हेतु हम पवित्र आत्मा पर निर्भर भी रहते हैं, ताकि हम अपने जीवनों की पूरी दौड़ जी सकें और यहां पृथ्वी पर परमेश्वर ने जो कुछ हमें सौंपा है उसे पूरा कर सकें।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करने का आधारः यीशु का नाम

परमेश्वर के राज्य में, परमेश्वर दैवीय अधिकार या प्रतिनिधित्व के माध्यम से कार्य करता है। प्रभु यीशु पिता के नाम में आया। उसकी संसारिक सेवकाई के दौरान, प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को अधिकार दिया और अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजा कि वे उसके नाम में जाएं और उसकी ओर से सेवा करें। शिष्य उस सामर्थ को समझ गए थे जो प्रतिनिधान के द्वारा उसमें वास करती थी और वे हियाव के साथ लोगों को चंगा करने और छुड़ाने के लिए निकल पड़े। आधुनिक समयों में हम इसे पावर ऑफ अटर्नी या मुख्तारनामा कहेंगे।

लूका 10:1,17-19
17 वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु, आपके नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं।
18 उसने उनसे कहा, मैंने शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरता हुआ देखा।
19 देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।

यूहन्ना 14:13
और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।

तब प्रभु यीशु ने सभी विश्वासियों को मुख्तारनामा देने की प्रतिज्ञा की। उसने कहा कि सभी विश्वासी प्रार्थना करने, चंगा करने, दुष्टात्माओं को निकालने, और आश्चर्यकर्मों को करने हेतु उसके नाम का उपयोग करेंगे।

मरकुस 16:17,18
17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे,
18 और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।

याकूब 5:14,15
14 यदि तुममें कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाएं, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिए प्रार्थना करें।
15 और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप भी किए हों, तो उनकी भी क्षमा हो जाएगी।

जब हम बीमारों और दबे हुओं की सेवा करते हैं, तब हम *"प्रभु के नाम में"* उसकी सेवा करते हैं। उसने हमसे कहा है कि हम *"मेरे नाम में '* बीमारों को चंगा करें और दुष्टात्माओं को निकालें। इन्हें *"मेरे नाम में करने का अर्थ मेरे नाम में, मेरा प्रतिनिधित्व करना"* और मेरी ओर से कार्य करना है। जब हम यीशु के नाम का उपयोग करते हैं, तब हम उसके स्थान में खड़े रहते हैं, उसका प्रतिनिधित्व करते हैं और उसकी ओर से कार्य करते हैं। वह जो है और उसका सारा अधिकार अब हमारे द्वारा व्यक्त हो रहा है। यदि हम उचित रीति से प्रतिनिधित्व करते हैं, तो हम उन्हीं परिणामों की अपेक्षा कर सकते हैं, यदि वह स्वयं उपस्थित होता तो वही परिणाम होते।

> ***जब हम यीशु के नाम का उपयोग करते हैं, तब हम उसके स्थान में खड़े रहते हैं, उसका प्रतिनिधित्व करते हैं और उसकी ओर से कार्य करते हैं।***

प्रभु यीशु के पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार है (मत्ती 28:18)। प्रभु ने हमें उसके नाम का उपयोग करने का अधिकार दिया है।

फिलिप्पियों 2:9-11
9 इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है,
10 कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।

[11] और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

जब हम यीशु के नाम का उपयोग करते हैं, तब हम उपलब्ध सर्वोच्च अधिकार में काम करते हैं। हम उस नाम में काम करते हैं जो अन्य किसी भी नाम से बड़ा है। उस सामर्थी नाम के अधिकार में हम अपेक्षा कर सकते हैं कि बीमारी झुक जाए, दुष्टात्मा भाग निकले और लोग चंगे हों और छुड़ाए जाएं।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करने का आधारः विश्वास

चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय परमेश्वर में विश्वास आवश्यक होता है। जब यीशु के शिष्य जवान लड़के को दुष्टात्मा से छुड़ा नहीं पाए, तो प्रभु यीशु के ऐसा करने के बाद, शिष्यों ने यीशु से यह स्पष्ट प्रश्न पूछा, हम इसे क्यों नहीं निकाल सके? मत्ती में लिखा हैः

मत्ती 17:19-21
[19] तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?
[20] उसने उनसे कहा, तुम्हारे अविश्वास के कारण; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कहोगे कि 'यहां से सरक कर वहां चला जा', तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए असम्भव न होगी।
[21] परंतु यह जाति प्रार्थना और उपवास के बिना नहीं निकलती।

उस लड़के को छुड़ा न पाने के कारण के रूप में प्रभु यीशु ने उनके अविश्वास की ओर संकेत किया। फिर उसने उन्हें विश्वास की सामर्थ के विषय में सिखाया, कि राई के दाने के बराबर के विश्वास से कुछ भी असम्भव न होगा।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करने हेतु विश्वास

हमारे हृदय का विश्वास हमें प्रेरित करता है कि हम कदम बढ़ाएं और लोगों को चंगा करने और छुड़ाने की सेवकाई करें। हम विश्वास से सेवा करते हैं यह अपेक्षा करते हुए कि लोग चंगे होंगे और छुटकारा प्राप्त करेंगे।

जब वह व्यक्ति जो चालीस वर्षों से उसके जन्म से लंगड़ा था, मंदिर के फाटक के पास चंगा हो गया, तब पतरस ने इस तथ्य की ओर संकेत किया कि वे मात्र साधारण लोग थे, जिनके पास प्रभु यीशु में और उसके नाम में विश्वास था।

प्रेरितों के काम 3:16
और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो, सामर्थ दी है; और निष्चय उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है।

गलातियों की पत्री में, प्रेरित पौलुस ने एक प्रश्न पूछा जिसका उत्तर अन्तर्निहित था? आत्मा का कार्य विश्वास की प्रतिक्रिया स्वरूप होता है और आश्चर्यकर्म विश्वास की प्रतिक्रिया के रूप में घटित होते हैं।

गलातियों 3:5
इसलिए जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के सुसमाचार से ऐसा करता है?

जैसा कि हमने याकूब 5:14,15 में पहले देखा, प्रभु के नाम में की गई विश्वास की प्रार्थना बीमार को चंगा करेगी।

व्यक्तिगत चंगाई और छुटकारे के लिए विश्वास

उसी तरह, व्यक्तिगत स्तर पर, हमें चंगाई और छुटकारा प्राप्त करने हेतु, और दैवीय स्वास्थ्य में चलते रहने हेतु परमेश्वर के वचन में विश्वास होना चाहिए। हम उन लोगों के कई उदाहरण देखते हैं जिन्होंने विश्वास के द्वारा चंगाई और छुटकारा पाया। रोमी सुबेदार ने विश्वास के द्वारा अपने सेवकों में से एक के लिए चंगाई प्राप्त की। वस्तुतः, यीशु ने कहा कि इस रोमी सुबेदार का विश्वास बड़ा था (मत्ती 8:10,13)। चंगाई पाने की आशा से यीशु के वस्त्र को छूने वाली लहू बहने वाली स्त्री से यीशु ने कहा,, *''पुत्री! ढाढ़स बान्ध, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। और वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई"* (मत्ती 9:22)। दृष्टि पाने के लिए खोजते हुए आए अन्धे लोगों से यीशु ने कहा, *"तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो"* (मत्ती 9:29)। अपनी बेटी के छुटकारे की खोज में आई कनानी स्त्री से यीशु ने

कहा, *"हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है! जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो"* (मत्ती 15:28)।

परमेश्वर में हमारा विश्वास उसकी अलौकिक सामर्थ ले आता है कि वह हमारे शरीरों में कार्य करे, जिसके परिणामस्वरूप जो कुछ उसने कहा वह पूरा होता है। बाइबल सारा के विषय में क्या कहती है उस पर विचार करें।

इब्रानियों 11:11
विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ पायी; क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा जाना था।

विश्वास एक आत्मिक योग्यता है जो परमेश्वर ने हमें दी है जो हमें इस योग्य बनाती है कि हम उसके साथ काम करें और अलौकिक बातों का अनुभव प्राप्त करें। विश्वास हमारे शब्दों के द्वारा और हमारे कार्यों के द्वारा मुक्त होता है। हम अपना विश्वास बोलते हैं। हम अपने विश्वास के अनुसार कार्य करते हैं। उसी तरह, जब हम अपने लिए प्राप्त करते हैं, तब हम उसी रीति से विश्वास का उपयोग करते हैं। परमेश्वर ने हमारी चंगाई के सम्बंध में अपने वचन में जो कुछ कहा है उस पर हम जो विश्वास करते हैं, उसके अनुसार हम बोलते हैं और कार्य करते हैं।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करने का आधारः परमेश्वर का राज्य

हमने पहले अध्याय में यह समझाया कि परमेश्वर का राज्य सामर्थ से आता है। जहां कहीं परमेश्वर का राज्य आता है, वहां अंधकार की शक्तियां पीछे हट जाएगी। हम इस राज्य का हिस्सा हैं। परमेश्वर के राज्य का अधिकार कलीसिया में निहित है, अर्थात विश्वासियों की मण्डली में। कलीसिया यहां पृथ्वी पर अंधकार की शक्तियों के विरोध में आगे बढ़ने के लिए और उनके कामों को नष्ट करने के लिए है।

मत्ती 16:18-19
18 और मैं तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
19 मैं तुझे स्वर्ग राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।

जिस कलीसिया को यीशु बनाएगा वह एक सामर्थी कलीसिया होगी जो बलपूर्वक आगे बढ़कर अधोलोक (अंधकार की शक्तियों) के फाटकों (शक्ति केंद्रों) को उलट देगी, पराजित करेगी। स्वर्ग के राज्य की कुंजियां परमेश्वर के राज्य के अधिकार का उल्लेख करती हैं। जिस कलीसिया का यीशु निर्माण कर रहा है उसमें राज्य का अधिकार निहित है। "जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा," वह स्वर्ग में खुलेगा इसका सही अर्थ यह है कि हम पृथ्वी पर उन बातों को बांधते हैं जिसे स्वर्ग में बंधा हुआ घोषित किया गया है, और हम पृथ्वी पर उसे खोल देते हैं जो स्वर्ग में बंधा हुआ है। इस प्रकार राज्य का अधिकार हम में निहित है, इसलिए हम (कलीसिया) यहां पृथ्वी पर उस बात को अमल में लाते हैं जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग में निर्धारित किया है।

उसका राज्य सब पर है (भजन संहिता 103:19)। हम उस राज्य का हिस्सा हैं और उसका प्रतिनिधित्व करते हैं जो अंधकार के राज्य से बड़ा है। हम राज्य की संतान हैं (मत्ती 13:38)। राज्य की संतान होने के नाते, हम यही करने के लिए यहां पर हैं - परमेश्वर के राज्य को बलपूर्वक लाने और अंधकार के कामों को पराजित करने। हम यहां पर यह देखने के लिए हैं कि उसका राज्य लोगों के हृदयों और जीवनों में आए और उसकी इच्छा पृथ्वी पर वैसी ही पूरी हो जैसी वह स्वर्ग में है। राज्य का अधिकार और सामर्थ हमारे द्वारा तब प्रवाहित होता है जब हम चंगाई और छुटकारे की सेवा करते हैं।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करने का आधारः हमारा भेजा जाना

फिर से एक बार जैसा कि हमने पहले अध्याय में बताया, सुसमाचार का प्रचार चिन्हों, चमत्कारों और अद्भुत कार्यों के साथ किया जाना चाहिए और हमें ऐसा करने की आज्ञा दी गई है। यीशु ने कहा, *"जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं"* (यूहन्ना 20:21)। हमें प्रभु यीशु मसीह के उसी आदेश और लक्ष्य के साथ भेजा गया है। यूहन्ना कहता है, *"परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ कि शैतान के कामों को नाश करे"* (1 यूहन्ना 3:8)। यदि यीशु शैतान के कामों को नाश करने के लिए आया, तो हमें भी वही करने की आज्ञा दी गई है।

यीशु ने अपने शिष्यों को राज्य का सुसमाचार प्रचार करने हेतु और बीमारों को चंगा करने, कोढ़ियों को शुद्ध करने, मुर्दों को जिलाने और दुष्ट ात्माओं को निकालने हेतु बाहर भेजा। हमें भी वही करने के लिए भेजा गया है!

क्या प्रत्येक को चंगा करना परमेश्वर की इच्छा है?

जी हां! यदि लोग प्रभु यीशु के पास विश्वास के साथ आएंगे, तो ऐसे किसी भी व्यक्ति को और प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी शारीरिक बीमारी से चंगा करने की परमेश्वर की इच्छा है, जैसा उसने बाइबल के दिनों में किया। हम इस भरोसे के साथ चंगाई और छुटकारे की सेवा कर सकते हैं कि परमेश्वर के पास विश्वास के साथ आने वाले किसी भी व्यक्ति को चंगा करना परमेश्वर की इच्छा है।

यहां पर कुछ महत्वपूर्ण कारण हैं कि हमें क्यों विश्वास है कि परमेश्वर के पास आने वाले किसी भी व्यक्ति को चंगा करना उसकी इच्छा है।

यीशु ने उसके पास विश्वास से आने वाले सभों पर चंगाई प्रगट की

यीशु शरीर और मांस में प्रगट परमेश्वर की सिद्ध इच्छा है। कोई भी ईश्वर-विज्ञान जो यीशु द्वारा कही गई और की गई बातों का खण्डन करता है या उस पर अविश्वास प्रगट करता है, उसे तुरंत त्याग दिया जा सकता है। यीशु ने उसकी संसारिक सेवकाई के दौरान उसके पास विश्वास से आने वाले किसी भी व्यक्ति को उस किसी भी रोग से चंगा किया जो उस व्यक्ति में था। एक बार भी उसने किसी की ओर देखकर उन्हें यह नहीं बताया कि, परमेश्वर चाहता है कि आप बीमार रहें क्योंकि वह आपको कुछ गहरे आत्मिक सबक सिखाना चाहता है। उसने किसी भी व्यक्ति से यह नहीं कहा, परमेश्वर चाहता है कि आप बीमार रहें क्योंकि आपकी बीमारी के बावजूद जब वह आपका उपयोग करेगा, तो आप उसे बड़ी महिमा प्रदान करेंगे। उसने किसी व्यक्ति से ऐसा नहीं कहा, परमेश्वर आपको चंगा नहीं करेगा क्योंकि आपके पाप बहुत बड़े और कई हैं। यीशु ने ऐसे धर्म-सैद्धांतिक बहाने नहीं बनाए!

बाइबल बार-बार कहती है कि उसके पास आने वाले सभी को उसने चंगा किया। नीचे कुछ वचन दिए गए हैं जो इस बात को बताते हैं। अधोरेखांकित शब्द उन बातों पर ज़ोर देने के लिए हैं।

मत्ती 4:23,24

[23] और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेष करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।
[24] और सारे सूरिया में उसका यष फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिनमें दुष्टात्माएं थीं और मिर्गीवालों और लकवे के मारे हुओं को उसके पास लाए और उसने उन्हें चंगा किया।

मत्ती 8:16

जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।

मत्ती 12:15

यह जानकर यीशु वहां से चला गया; और बहुत लोग उसके पीछे हो लिए, और उसने सबको चंगा किया।

मरकुस 6:56

और जहां कहीं वह गांवों, नगरों, या बस्तियों में जाता था, तो लोग बीमारों को बाजारों में रखकर उससे बिनती करते थे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छू लेने दे। और जितने उसे छूते थे, सब चंगे हो जाते थे।

लूका 4:40

सूरज डूबते समय जिन जिन के यहां लोग विभिन्न प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आए, और उसने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।

जो कोढ़ी परमेश्वर की इच्छा के विषय में अनिश्चित था, उसे यीशु ने तुरंत उत्तर दिया मैं चाहता हूं और तब उसने उस कोढ़ी को चंगा किया।

मत्ती 8:1-3

[1] जब वह उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।
[2] और देखो, एक कोढ़ी ने पास आकर उसे दण्डवत किया और कहा, हे प्रभु, यदि आप चाहें, तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं।
3 तब यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ, और कहा, मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा। और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया।

यह अत्यंत दिलचस्प बात है कि यद्यपि यीशु अपनी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान इस्राएल की खोई हुई भेड़ की सेवा करने आया था, फिर भी उसके निकट आने वालों को उसने खाली हाथ नहीं लौटाया, भले ही वे वाचा के बाहर के लोग थे। रोमी सुबेदार (मत्ती 8:5-13) और कनानी स्त्री (मत्ती 15:22-28) दो व्यक्ति थे जो यहूदी नहीं थे, और फिर भी जब वे यीशु के पास आए, तब यीशु ने उन्हें सेवा प्रदान की। वस्तुतः, दोनों घटनाओं में, उसने बताया कि उनका विश्वास बड़ा था। इसलिए यद्यपि तकनिकी दृष्टि से और ईश्वर विज्ञान की दृष्टि से यह विवाद किया जा सकता है कि इन लोगों को चंगाई और छुटकारा नहीं पाना चाहिए, फिर भी प्रभु यीशु ने उनके लिए सेवकाई की, क्योंकि वे विश्वास के साथ उसके निकट आए।

यीशु ने उसकी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान जिस व्यक्ति को चंगा किया और छुटकारा दिया, वह व्यक्ति उद्धार पाया हुआ नहीं था। जब तक यीशु की मृत्यु नहीं हुई, पुनरूत्थान नहीं हुआ, और कई भाइयों में वह पहिलौठा नहीं हुआ, तब तक लोग नया जन्म नहीं पा सकते थे। इसलिए हम केवल इस कसौटी पर लोगों को दूर नहीं कर सकते, इसे आवश्यक योग्यता बनाकर कि चंगाई और छुटकारे और आश्चर्यकर्म के लिए यीशु में विश्वास करने से पहले उनका नया जन्म होना चाहिए।

एक बात जिसने यीशु को आश्चर्यकर्म करने से और लोगों को चंगा करने से रोका, वह था उनका अविश्वास (मत्ती 13:58; मरकुस 6:5,6)।

क्रूस प्रत्येक के लिए है

जैसा कि हमने पहले अध्ययन किया है, चंगाई, छुटकारा और स्वास्थ्य यीशु मसीह के क्रूस के माध्यम से दिए जाते हैं। क्रूस पर यीशु ने कीमत चुकाई वह सम्पूर्ण मानवजाति के लिए है (1 यूहन्ना 2:2)। यीशु ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान कीमत चुकाई और समान प्रयोजन किया। यीशु ने

> ***क्रूस पर पूरा किया गया कार्य प्रत्येक के लिए है, इसलिए पापों की क्षमा, शरीर और मन के लिए चंगाई भी प्रत्येक के लिए है।***

जो कुछ क्रूस पर किया वह विश्वास करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए उपलब्ध है। क्रूस पर पूरा किया गया कार्य प्रत्येक के लिए है, इसलिए पापों की क्षमा, शरीर और मन के लिए चंगाई भी प्रत्येक के लिए है। शरीर और मन के लिए चंगाई प्राप्त करना पापों की क्षमा ग्रहण करने इतना सरल होना चाहिए।

उद्धार के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा प्रत्येक के लिए है

परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं उन सभी लोगों के लिए हैं जो विश्वास करेंगे। उद्धार के वरदान की प्रतिज्ञा प्रत्येक के लिए है। सोज़ो यह ग्रीक शब्द है जो 110 से अधिक बार पाया जाता है और नए नियम में उद्धार के लिए अत्यंत आम तौर पर उपयोग किया जाने वाला यूनानी शब्द है। सोज़ो क्रिया है। वह जो किया गया है। कुछ जो परमेश्वर के कार्य के कारण होता है। सोज़ो यह शब्द सर्वसमावेशक शब्द है जिसमें आत्मिक उद्धार शामिल है, अर्थात पापों से क्षमा, रोग से चंगाई, शत्रू के हर काम से छुटकारा, खतरे और हानि से मुक्ति और पूर्ण स्वास्थ्य। इसका अर्थ है उद्धार पाना, चंगा होना, छुट कारा पाना, विजयी होना, मुक्ति पाना, सुरक्षित रखा जाना। इसका अर्थ है ये सारी बातें एक ही समय में हैं। *सोज़ो* का अर्थ है शैतान की सामर्थ से बचाया जाना और परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से परमेश्वर की व्यवस्था और कल्याण की सम्पूर्णता में पुनर्स्थापित किया जाना। उसी *सोज़ो* शब्द का अनुवाद संदर्भ के आधार पर क्षमा, चंगा होना, सुरक्षित बचाया जाना किया गया है।

उद्धार (सोज़ो) की परमेश्वर की प्रतिज्ञा में क्षमा, चंगाई, छुटकारा, सुरक्षा, और स्वास्थ्य है।

- *सोज़ो* का अर्थ पापों की क्षमा है (मत्ती 1:21; प्रेरितों के काम 4:12; रोमियों 10:9; इफिसियों 2:8)
- *सोज़ो* का अर्थ भौतिक चंगाई है (मत्ती 9:22; मरकुस 6:56; मरकुस 10:52; याकूब 5:13-16)
- *सोज़ो* का अर्थ दुष्टात्माओं की सामर्थ से छुटकारा है (लूका 8:36; यहूदा 1:5)

- *सोज़ो* का अर्थ खतरे से छुटकारा या सुरक्षा है (मत्ती 8:25; 2 तीमुथियुस 4:18)
- *सोज़ो* प्रत्येक के लिए है (मत्ती 18:11)
- *सोज़ो* विश्वास द्वारा अनुग्रह से प्राप्त किया जाता है (मत्ती 9:21,22; इफिसियों 2:8,9)
- *सोज़ो* तब होता है जब आप अपने हृदय में विश्वास करते हैं और मुंह से अंगिकार करते हैं (रोमियों 10:9,10)

यदि आराधना सभा के दौरान व्यक्ति वेदी के पास आता है और कहता है कि उसे यीशु में विश्वास करने के द्वारा पापों की क्षमा पाना है, तो क्या निम्नलिखित में से कोई वाक्य सहीं हैः

> "शायद परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि आपको क्षमा करें। दुख की बात यह है कि आपको जीवनभर आपके पापों में रहने की ज़रूरत होगी।"
>
> "शायद परमेश्वर चाहता है कि आप अपने पापों में बने रहें ताकि आप परमेश्वर के प्रेम के कुछ गहरे सबक सीख सकें।"
>
> "शायद परमेश्वर आपको आंशिक रूप से क्षमा करना चाहता है। शायद आपको आपके कुछ पापों में बने रहने की ज़रूरत है ताकि आपको निरंतर इस बात का स्मरण हो कि परमेश्वर कितना भला है कि उसने आपके बाकी सारे पापों को क्षमा कर दिया।"

उपर्युक्त सारे बयान हास्यप्रद होंगे! हम किसी व्यक्ति से इस प्रकार की बातें नहीं कहेंगे क्योंकि हम जानते हैं कि उद्धार का परमेश्वर का विनामूल्य वरदान हर एक के लिए है और वे उसे किसी भी समय पा सकते हैं जब वे विश्वास से उसके निकट आने के लिए तैयार हों।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय हम कभी यीशु को यह प्रार्थना करते हुए नहीं पाते कि "यदि आपकी इच्छा हो तो।" एक बार भी नहीं! तो हम क्यों धर्मसिद्धांत बना लेते हैं और ऐसी बातों को करते हैं जो वचन का खंडन करती हैं?

जहां तक नए नियम की बात है, परमेश्वर के उद्धार *(सोज़ो)* में क्षमा, चंगाई, छुटकारा, सुरक्षा और स्वास्थ्य का समावेश है। चंगाई और छुटकारा पाने हेतु हमारे पास आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत करने का हमारा तरीका वही होना चाहिए जब वे पापों की क्षमा पाने हेतु आते हैं। केवल विश्वास करें!

चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय क्या "यदि आपकी इच्छा रही तो" यह प्रार्थना करना उचित है?

विश्वास के साथ परमेश्वर के निकट चंगाई पाने के लिए आने वाले प्रत्येक को चंगा करना परमेश्वर की इच्छा है यह तथ्य स्थापित होने पर, "यदि आपकी इच्छा रही तो" इस प्रकार प्रार्थना करने के लिए कोई स्थान ही नहीं है। इस मामले में हम पहले ही परमेश्वर की इच्छा जानते हैं। हम जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति यदि विश्वास करने के लिए तैयार है तो वह चंगाई और छुटकारा प्राप्त कर सकता है।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय हम कभी यीशु को यह प्रार्थना करते हुए नहीं पाते कि "यदि आपकी इच्छा हो तो।" एक बार भी नहीं! तो हम क्यों धर्मसिद्धांत बना लेते हैं और ऐसी बातों को करते हैं जो वचन का खंडन करती हैं?

यीशु ने केवल एक ही बार कहा, "मेरी नहीं, परंतु आप ही की इच्छा पूरी हो (मत्ती 26:39,42), उस समय वह **गतसेमानी** बाग में क्रूस पर जाने की तैयारी कर रहा था। यह पिता की योजना के प्रति शरणागति की प्रार्थना थी।

उसे आज्ञाकारिता में चलने का चुनाव करना था और छुटकारे के लिए पिता की योजना के अधीन होना था जो केवल क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा ही सम्भव हो सकता था।

क्या हम कभी पापी व्यक्ति के लिए जो यीशु में विश्वास के द्वारा पापों की क्षमा प्राप्त करने की इच्छा से हमारे पास आया है, ऐसी प्रार्थना करेंगे,

"प्रभु, यदि आपकी इच्छा हो तो, कृपया उसके पापों की क्षमा कीजिए और उसे अनंत जीवन दीजिए। नहीं तो, यदि आपकी इच्छा नहीं है, तो उसे नरक जाने दीजिए।" कभी नहीं! हम कभी ऐसी प्रार्थना नहीं करेंगे, "क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, *"कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी"* (प्रेरितों के काम 10:43) और यह कि *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए"* (यूहन्ना 3:16)।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय हम कभी यीशु को यह प्रार्थना करते हुए नहीं पाते कि यदि आपकी इच्छा हो तो। एक बार भी नहीं! तो हम क्यों धर्मसिद्धांत बना लेते हैं और ऐसी बातों को करते हैं जो वचन का खंडन करती हैं?

चंगाई और छुटकारे की सेवा करने का सही तरीका पूर्ण रूप से यह जानते हुए ऐसा करना है कि परमेश्वर चाहता है कि बीमार चंगा हो और छुटकारा पाए। हम यहां जैसे स्वर्ग में वैसे ही पृथ्वी पर उसकी इच्छा पूरी करने के लिए आए हैं।

परमेश्वर सम्प्रभुताकारी है, इसलिए वह लोगों को यदि और जब चंगा करना चाहता है तो क्या चंगा न करेगा?

यह एक प्रामाणिक प्रश्न है जो कई लोग पूछते हैं और उनका उत्तर देना भी काफी चुनौतीभरा होता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, वह कुछ भी कर सकता है। वह किसी भी व्यक्ति को एक क्षण में चंगा कर सकता है और छुड़ा सकता है। हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर सम्प्रभुताकारी है और अपनी ही इच्छा से और जब कभी वह चाहता है कार्य करता है। कोई उसे रोक नहीं सकता। सो एकं भला, सामर्थी, प्रेमी परमेश्वर, चंगा करने वाला और छुड़ाने वाला परमेश्वर प्रत्येक बीमार व्यक्ति को क्यों नहीं चंगा करता और प्रत्येक पीड़ित व्यक्ति को क्यों नहीं छुड़ाता? हम अपने कुछ भाइयों को, उन लोगों को भी जिन्होंने विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर की सेवा की और जो उसे बहुत प्रेम

करते हैं, पीड़ा, रोग क्यों सहते हैं और लम्बे समय तक बीमार पड़े रहने पर क्यों मर जाते हैं? सम्प्रभुताकारी परमेश्वर क्यों उन्हें चंगा नहीं करता और उन्हें स्वास्थ्य नहीं देता?

हम तीन भागों में इसे सम्बोधित करेंगेः

अ. परमेश्वर की सम्प्रभुता और मनुष्य की ज़िम्मेदारी

ब. परमेश्वर की सम्प्रभुता और विश्वास का उपयोग

क. हम सत्य से चलते हैं जो हम पर प्रगट किया गया है और जो अज्ञात है उसे खोज निकालते हैं।

1) परमेश्वर की सम्प्रभुता और मनुष्य की ज़िम्मेदारी

भजन संहिता 115:3,16

3 हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है; उसने जो चाहा वही किया है।

16 स्वर्ग तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है।

परमेश्वर सम्प्रभुताकारी है और जो वह चाहता है करता है, जैसा कि पवित्र शास्त्र कहता है। परंतु अपने सम्प्रभुताकारी गुण के अनुसार, उसने यह निश्चय किया है कि पृथ्वी मानवजाति के हाथ सौंप दें और उसने यह ठहराया है कि सामान्य परिस्थितियों में वह मनुष्य की ज़िम्मेदारी और मनुष्यों के निर्णयों की अवेहलना नहीं करेगा। परमेश्वर ने ऐसा करने का इस हद तक संकल्प किया कि अदन की वाटिका में भी, जब आदम और हव्वा उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने वाले थे और पाप करने वाले थे, तब परमेश्वर ने हस्तक्षेप नहीं किया, जबकि वह ऐसा कर सकता था। वस्तुतः परमेश्वर ये सारी बातें समय से पहले ही जानता था और फिर भी उसने मनुष्य की रचना की और उसे अदन की वाटिका में रखा।

इस पर विचार करें। परमेश्वर ने अपने सम्प्रभुताकारी गुण के अनुसार सबके लिए उद्धार की भेंट का प्रयोजन किया है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए उद्धार का प्रयोजन किया गया है, इसका अर्थ यह नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप उद्धार पाता है। प्रत्येक व्यक्ति को उद्धार के इस प्रयोजन को स्वीकार करने की ज़िम्मेदारी ग्रहण करना है। बाइबल आज भी कहती है,

"जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है" (यूहन्ना 3:36)।

उसी तरह, चंगाई और छुटकारा प्रदान करने के क्षेत्र में, हमारे लिए सामान्य परिस्थितियों में, ज़िम्मेदारी के कई क्षेत्र हैं:

1) जो सेवा करते हैं, वे अनुग्रह में बढ़ें (2 पतरस 3:18), आत्मिक बल में बढ़ें (इफिसियों 3:16) और विश्वास में और अभिषेक और परमेश्वर की सामर्थ प्रदान करने की हमारी योग्यता में बढ़ें। प्रत्येक जुए को तोड़ने के लिए, प्रत्येक बोझ को हटाने के लिए और प्रत्येक दशा को चंगा करने के लिए अभिषेक उपलब्ध है। क्या यह सम्भव है कि सेवकों के रूप में, हम आगे बढ़कर अभिषेक के इस स्तर में कदम बढ़ाने की हमारी ज़िम्मेदारी में असफल हो रहे हैं? शायद निरंतर उस क्षेत्र में कार्य करने के बजाए, ऐसा हम कभी कभार करते हैं।

2) प्रत्येक व्यक्ति की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अपने शरीर का ध्यान रखे, परमेश्वर के वचन पर विश्वास करे और शैतान का, एवं उसके कामों का सामना करे। परमेश्वर यह हमारे लिए नहीं करेगा।

इस समझ के साथ, हम सामान्य तौर पर परमेश्वर को मनुष्य की ज़िम्मेदारी के इन क्षेत्रों के बगैर चंगा करते नहीं देखते। उसने अपने सम्प्रभुताकारी गुण के अनुसार ऐसा न करने का निर्णय लिया है। यह परमेश्वर की सम्प्रभुता का एक पक्ष है।

परंतु, कुछ अवसर होते हैं, जब परमेश्वर इन दो क्षेत्रों में 1) और 2) में जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है, मनुष्यों की असफलता के बावजूद कार्य करता है, और फिर भी चंगाई और छुटकारा प्रदान करता है। ये अपवाद होंगे जिन्हें हम देखते हैं, मानदण्ड नहीं। 1) और 2) इन दो क्षेत्रों में मनुष्य की असफलता के बावजूद परमेश्वर का कार्य करना और चंगा

करना परमेश्वर की सम्प्रभुता का दूसरा पक्ष है। परमेश्वर की सम्प्रभुता को समझने के एक ही सिक्के के दो पहलू।

2) परमेश्वर की सम्प्रभुता और विश्वास का उपयोग

मत्ती 13:58
और उसने वहां उनके अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ के काम नहीं किए।

मरकुस 6:5,6
5 और वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका, केवल थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।
6 और उसने उनके अविश्वास पर आष्चर्य किया और चारों और के गांवों में उपदेष करता फिरा।

यीशु अपने गांव, नासरत में वापस घर लौट आया था, जहां पर तीस वर्ष की उम्र तक वह बढ़ई के बेटे के रूप में छोटे से बड़ा हुआ था। दुख की बात यह है कि उसके अपने गांव के लोग यह स्वीकार नहीं कर पाए कि वह कौन है। उन्होंने उसे परमेश्वर द्वारा भेजे गए व्यक्ति के रूप में, चंगाई और छुटकारा प्रदान करने हेतु अभिषेक पाए हुए व्यक्ति के रूप में देखने के बजाए बढ़ई के बेटे के रूप में देखा। ऐसे वातावरण में, उनके अविश्वास के कारण यीशु ने अधिक सामर्थ के काम नहीं किए।

यदि परमेश्वर सम्प्रभुताकारी है (सर्वशक्तिमान, दूसरों के ऊपर, और औरों से स्वतंत्र) और जिसे कोई नहीं रोक सकता, तो उसे फिर भी क्यों लोगों की आवश्यकता है कि यदि वे उनके जीवनों में सामर्थी कामों को अनुभव करना चाहते हैं, तो अपने व्यक्तिगत विश्वास का उपयोग करें?

यह परस्पर विरोधी लग सकता है, कि हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और फिर भी परमेश्वर हमारे अविश्वास से सीमित हो सकता है। यदि विश्वास न रहा, तो सामान्य तौर पर वह कार्य नहीं करता और न ही कर सकता।

यदि सब कुछ अनुग्रह का विनामूल्य वरदान है, तो यह कैसे कि हम उन्हें केवल विश्वास द्वारा प्राप्त कर सकते हैं? क्योंकि जैसा कि हम समझते

हैं, अनुग्रह परमेश्वर के चरित्र की अभिव्यक्ति है जो उस किसी भी बात से **स्वतंत्र** है जो हमने की है, जबकि विश्वास परमेश्वर में विश्वास और भरोसे की हमारी अभिव्यक्ति है।

यहां पर विचार करने योग्य कुछ बातें दी गई हैंः

- परमेश्वर को उसकी बुद्धि के अनुसार यह उचित जान पड़ा कि ये स्पष्ट रूप से परस्पर विरोधी गुण एक साथ रहते हैं। परमेश्वर की विवादातीत सम्प्रभुता का क्षेत्र है और अवश्य ही व्यक्तिगत विश्वास का एक अविभाज्य और आवश्यक तत्व है जिसके सामर्थी परिणाम हैं।
- कुछ बातें हैं जो केवल परमेश्वर की सम्प्रभुता पर निर्भर हैं, जैसे परमेश्वर का सनातन उद्देश्य और युगों के लिए उसकी योजना। ये सारी बातें व्यक्ति के विश्वास के उपयोग की सहायता के बिना पूरी की जाएगी। और उसके बाद व्यक्तिगत उद्देश्य हैं जो परमेश्वर के पास हैं और जिनकी परिपूर्णता परमेश्वर के साथ व्यक्ति की सहकारिता पर निर्भर है।
- परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से हमें उसके सारे वरदान विनामूल्य देकर और फिर भी प्रत्येक व्यक्ति को विश्वास के द्वारा उन्हें ग्रहण करना आवश्यक बनाकर, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसे प्राप्त करने का "समान अवसर" दे रहा है। वंश, रंग, सामाजिक या आर्थिक स्थान, और पिछले अनुभव, इन सारी बातों के बावजूद, प्रत्येक व्यक्ति के पास परमेश्वर ने उसके अनुग्रह से हमें जो विनामूल्य दिया है उसे प्राप्त करने का समान अवसर है।
- विश्वास के क्षेत्र के अपने दायरे हैं जो परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य से निर्धारित हैं। इसके बाहर कार्य करने का अर्थ परमेश्वर की सम्प्रभुताकारी इच्छा के विरोध में "ना" है, और ऐसा करके कोई सफल नहीं हो सकता।

इसलिए प्रत्येक विश्वासी के लिए यह सीखना अत्यंत आवश्यक है कि विश्वास के द्वारा कैसे जीएं।

फिर भी परमेश्वर में विश्वास के सिक्के के दो पहलू हैं। सामान्य तौर पर, परमेश्वर ने सार्वभौम तरीके से यह ठहराया है कि वह हमेशा विश्वास के उत्तर के रूप में कार्य करेगा। *"तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो"* (मत्ती 9:29), विश्वास के प्रति उसका यह उत्तर है। उसने सामान्य तौर पर इस प्रकार कार्य करने का निर्णय लिया है। दूसरी ओर, कुछ समय होते हैं जब परमेश्वर चंगाई देने और छुटकारा प्रदान करने के लिए सार्वभौम तरीके से कार्य करता है, स्पष्ट तौर पर वहां कोई विश्वास न होते हुए भी। ऐसा होता है, परंतु ये अपवाद हैं और मानदंड नहीं।

हम उस सत्य से चलते हैं जो प्रगट किया गया है और जो अज्ञात है उसे खोज निकालते हैं

व्यवस्थाविवरण 29:29
गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश में रहेगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएं।

नीतिवचन 25:2
परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात के पता लगाने से होती है।

सभोपदेशक 1:13
और मैंने अपना मन लगाया कि जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है, उसका भेद बुद्धि से सोच सोचकर मालूम करूं; यह बड़े दुःख का काम है जो परमेश्वर ने मनुष्य के लिए ठहराया है कि वे उसमें लगें।

हमारे पास सारे उत्तर हैं यह दावा करना हमारी ओर से पूर्णतया मूर्खता की बात होगी। सच्चाई यह है कि हमारे पास सारे उत्तर नहीं हैं। जिस व्यक्ति के विषय में हम जानते हैं कि वह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य है, जो परमेश्वर से बहुत प्रेम करता है और जो मसीह के लिए मरने भी तैयार है उसके विषय में यह कहना कि उसके पास विश्वास नहीं है, गलत होगा। जब हम हमारे अपने कुछ भाइयों को दुख उठाते, बीमार पड़ते और लम्बी बीमारी की वजह से मरते हुए देखते हैं, उन्हें भी जिन्होंने विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर की सेवा की है और जो उसे प्रेम करते हैं, और पूछते हैं, "क्यों?" तो हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि "हम नहीं जानते।"

हम जो करने का निर्णय लेते हैं वह यह है कि हम जो सत्य जानते हैं उसके अनुसार जीना जारी रखेंगे। वचन हमें जो सिखाता है उसका हम पालन करते हैं। हम सत्य के साथ समझौता नहीं करते जो हमें स्पष्ट रूप से प्रगट किया गया है और उसके बाद हम जो अज्ञात है उसकी खोज जारी रखते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें प्रत्येक क्यों का उत्तर मिलेगा। हम इस बात की खोज में हैं कि परमेश्वर ने हमारे लिए जो ठहराया है वह हम कैसे बन सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं। वह चाहता है कि हम हमारे स्वामी के समान बनें और यीशु के समान सेवा करें। इसमें कैसे बढ़ते जाएं इसके उत्तर हम खोजते हैं।

जो ज्ञात है उसे जो अज्ञात है उससे श्रेष्ठ ठहराने की विश्वास अनुमति नहीं देता। विश्वास हमारे पास जो ज्योति है उसे पराजित करने की अंधकार को अनुमति नहीं देता जो परे है।

उन अनुभवों के मध्य भी जहां पर हमारे पास तुरंत उत्तर नहीं है, *"हम... देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं"* (2 कुरिन्थियों 5:7)। परमेश्वर के विषय में जो प्रगट किया गया है और बहुत सारी अज्ञात बातों के बावजूद जो हम जानते हैं, उसके अनुसार जीवन बिताने के लिए विश्वास तैयार है। जो ज्ञात है उसे जो अज्ञात है उससे श्रेष्ठ ठहराने की विश्वास अनुमति नहीं देता। विश्वास हमारे पास जो ज्योति है उसे पराजित करने की अंधकार को अनुमति नहीं देता जो परे है। बल्कि हमारे पास वर्तमान समय में जो ज्योति है उसे विश्वास अगला कदम उठाने हेतु पर्याप्त समझता है, भले ही उस पार अंधकार का संसार क्यों न हो।

हम उन उत्तरों की खोज में लगे रहते हैं कि हमें अपनी ओर से क्या करने की ज़रूरत है, चंगाई और छुटकारे की सेवा अधिक प्रभाव के साथ करते रहना जैसे यीशु ने किया। जो हम नहीं जानते हैं उसके लिए हम परमेश्वर से मांगते रहते हैं। उसने प्रतिज्ञा की है, *"मुझसे प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी बड़ी और कठिन बातें बताऊंगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता"* (यिर्मयाह 33:3)। सुलैमान ने कहा, *"मैंने अपना मन लगाया कि बुद्धि के विषय में जान लूं; कि खोज निकालूं और उसका भेद जानूं, और*

कि दुष्टता की मूर्खता और मूर्खता जो निरा बावलापन है जानू" (सभोपदेशक 7:25)। हम अध्ययन करते रहते हैं, पवित्र शास्त्र को खोजते हैं, आत्मा की सुनते हैं, ताकि हम वह अंतर्दृष्टि प्राप्त करें जिसका हम में इस समय अभाव है जो और बड़ी सामर्थ और अधिकार के साथ सेवा करने में हमारी सहायता करेगा। प्रभु यीशु ने प्रतिज्ञा की कि यदि हम उसके वचन में बने रहे तो हम *"सत्य को जानेंगे, और सत्य हमें स्वतंत्र करेगा"* (यूहन्ना 8:31,32)।

हम परमेश्वर की अधिकाई को पाने के लिए आगे बढ़ते जाते हैं।

अंत में, हम प्रभु के प्रति प्रेम से प्रेरित हैं। हम उससे इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि उसने पहले हमसे प्रेम किया (1 यूहन्ना 4:19)। कोई भी बात उसके प्रति हमारे प्रेम को कम नहीं कर सकती। हम उससे तब भी प्रेम करते हैं जब विश्वास की कसौटी होती है और प्रतीत होता है कि आशा कुचली जा रही है। हम जानते हैं कि एक दिन हमारा विश्वास दृश्य रूप में बदल जाएगा। हमारी आशा खरी होगी। और हमारा प्रेम जारी रहेगा। *"पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इनमें सब से बड़ा प्रेम है"* (1 कुरिन्थियों 13:13)।

हर कोई चंगा क्यों नहीं होता?

हम सहज ही यह कबूल करते हैं कि जिसकी हम सेवा करते हैं उसमें प्रत्येक व्यक्ति चंगा नहीं होता और छुटकारा नहीं पाता। मुझे यकीन है कि प्रत्येक महान चंगाईकर्ता सुसमाचार प्रचारक और परमेश्वर के दास या दासी ने इस बात का सामना किया है और इस प्रश्न का उत्तर देने हेतु संघर्ष किया है कि जिस व्यक्ति की हम सेवा करते हैं उस प्रत्येक व्यक्ति को हम चंगाई और छुटकारा पाते हुए नहीं देखते।

ऐसे प्रश्न का उत्तर अत्यंत आत्मनिष्ठ है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की वास्तविक स्थिति भिन्न हो सकती है। हम यह जानते हैं कि व्यक्ति को उसकी चंगाई या छुटकारा पाने से रोकने वाली कई बातें हो सकती हैं। कई कारण हो सकते हैं, कुछ हमारे लिए ज्ञात होते हैं और कुछ कारण हमारे लिए अज्ञात होते हैं। कुछ सम्भवनीय कारणों को नीचे चंगाई प्राप्त करने के मार्ग में आने वाली रुकावटें नामक भाग में रेखांकित किया गया है।

परंतु, हम इन असफलताओं के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं यह महत्वपूर्ण है। हमें हमेशा यह ध्यान में रखना है कि कोई भी असफलता हमारी ओर से है, परमेश्वर की ओर से नहीं। परमेश्वर वचन के प्रति सत्य है। हम सीखने की और परमेश्वर के राज्य के विषय में और जिस तरह से परमेश्वर कार्य करता है उससे सम्बंधित सत्य खोजने की निरंतर प्रक्रिया में हैं। हम में से कोई भी अपने ज्ञान में सिद्ध नहीं है। परमेश्वर के वचन में और छिपे हुए सत्य को उसके आत्मा के द्वारा खोजने हेतु हमें आगे बढ़ते रहने की ज़रूरत है, ताकि हम यथार्थ रूप से उसका प्रतिनिधित्व कर सकें और उन कामों को कर सकें जिन्हें करना उसने हमारे लिए ठहराया है।

ऐसी परिस्थिति में, जहां पर जिनकी हम सेवा करते हैं वे लोग चंगाई और छुटकारा नहीं पाते, हमें क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना चाहिए इस विषय में यहां कुछ निर्देश दिए गए हैंः

सत्य के साथ समझौता न करें

हमें सत्य के साथ समझौता नहीं करना चाहिए। हम परमेश्वर के स्वभाव की, परमेश्वर के वचन की और क्रूस पर मसीह द्वारा पूरे किए गए कार्य की हमारी समझ नहीं बदलते। ये बातें परम सिद्धांत हैं। परमेश्वर जो है, उसने जो प्रतिज्ञा की है और क्रूस पर मसीह ने पहले ही जो कुछ किया है वह कभी नहीं बदलेगा। हमें अपने अनुभव के अनुसार अपने ईश्वर विज्ञान को बदलने की परीक्षा का इन्कार करना चाहिए। बल्कि हमें परमेश्वर के वचन के मानक के अनुसार अपने अनुभव का स्तर बढ़ाने हेतु आगे बढ़ते जाना है।

अनुमान न लगाएं, केवल कबूल करें "मैं नहीं जानता"

हमारे पास सारे उत्तर नहीं हैं, इसलिए हमें अनुमान नहीं लगाना है और यह बहाना नहीं बनाना है कि हम जानते हैं। जब हम अनिश्चित होते हैं, तब हमें इस प्रकार के बयान देने से बचना है कि आपके पास पर्याप्त विश्वास नहीं है, "कोई छिपा हुआ पाप है," "कुछ पीढ़ियों के श्राप हैं," आदि। जब हम अज्ञान के अनुसार बोलते हैं, तब हम लोगों को चोट पहुंचा सकते हैं। यह कहना पर्याप्त है कि, "मैं नहीं जानता कि आप चंगे क्यों नहीं हुए, परंतु

आपके लिए परमेश्वर का प्रेम निश्चित है और उसकी इच्छा यह है कि वह आपको चंगा देखना चाहता है।"

परमेश्वर से अंतर्दृष्टि मांगें और व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते रहें (सेवा करते रहें)

यह सच है कि हम जिस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं उनमें से प्रत्येक चंगा नहीं होता। परंतु यह बात हमें आगे बढ़ने से और यथासम्भव प्रत्येक व्यक्ति के लिए चंगाई और छुटकारा लाने हेतु अपने उत्तम प्रयास लगाने से रोकने न पाए। हम प्रार्थना करते रहते हैं और जब कभी सम्भव हो तब उस व्यक्ति की सेवा करने के विभिन्न तरीके अपनाने का प्रयास करते रहें। हम उस व्यक्ति को प्रोत्साहन दें कि वह परमेश्वर की ओर आगे बढ़ते रहे, प्रार्थना करते रहे, विश्वास करते रहे, उसकी चंगाई के लिए परमेश्वर की स्तुति करते रहे और परमेश्वर के वचन को दृढ़ता से थामे रहे। परमेश्वर से अंतर्दृष्टि मांगे, आत्मा के वरदान मांगे, जो उन बातों को प्रगट करेंगे जो चंगाई और छुटकारा प्राप्त करने के मार्ग में रुकावट ला रही हैं। कभी-कभी व्यक्ति को किसी पाप के लिए पश्चाताप करने की ज़रूरत होती है, या दूसरे व्यक्ति को क्षमा करने की ज़रूरत होती है। पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील रहें और परमेश्वर का आत्मा जो प्रगट करता है उसके साथ आगे बढ़ते रहें।

परमेश्वर की महिमा करें, स्थिति की नहीं

हमें परमेश्वर की महिमा करना है, और स्थिति की नहीं। बीमारी को या शैतान के दबावकारी कार्य को कभी बड़ा स्थान न दें। कोई भी बीमारी, शैतान का कोई भी कार्य हमारे परमेश्वर से बड़ा नहीं है। केवल इस कारण कि हमने चंगाई या छुटकारा नहीं देखा, हम उसे ऐसा न दिखाएं कि ये बातें परमेश्वर के लिए बहुत कठिन थीं। हमारे परमेश्वर के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। हमें केवल यह सीखने की ज़रूरत है कि उसकी सामर्थ को अधिक प्रभावी रूप से कैसे मुक्त करें। परिस्थिति के बावजूद, हम आनंद मनाते हैं, हम हमेशा प्रार्थना करते हैं और हर बात में धन्यवाद देते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:16-18) क्योंकि हम जानते हैं कि वह कौन है।

"के कारण" नहीं, "के बावजूद"

परमेश्वर बीमारी, शारीरिक रोग, किसी भी भौतिक समस्या "के बावजूद" व्यक्ति का उपयोग कर सकता है। परंतु, इसका अपने आप में यह अर्थ नहीं है कि जिस स्थिति में वे हैं वह उनके लिए परमेश्वर की उत्तम योजना है। परमेश्वर उनके रोग या बीमारी के कारण उनका उपयोग नहीं कर रहा है। परमेश्वर उस परिस्थिति के बावजूद काम करता है। वह हमारी सीमाओं से सीमित नहीं होता। वह अपने उद्देश्य के कारण और यीशु मसीह में हमें दिए गए अनुग्रह के कारण कार्य करता है (2 तीमुथियुस 1:9), चाहे बीमारी हो या न हो! इसलिए वह परमेश्वर है! इसलिए जब परमेश्वर लोगों की बीमारी या रोग के बावजूद व्यक्ति का उपयोग करता है, तब हम परमेश्वर की महिमा करते हैं और बीमारी की नहीं। बीमारी फिर भी ऐसा कुछ है जिससे हमें लड़ने और जिसका सामना करने की ज़रूरत है।

अधिक पाने के लिए आगे बढ़ते रहें!

यदि कोई असफलता है तो वह हमारी ओर से है, परमेश्वर की ओर से नहीं। उसके और अभिषेक को पाने हेतु और "सबके लिए" एवं ज्यादा से "ज्यादा लोगों के लिए" चंगाई कैसे लाई जाए इसके प्रकाशन में आगे बढ़ें, जैसे यीशु ने किया। वह हमारा मानक है। हमें उसके कामों को और अधिक बड़े कामों को करने हेतु आगे बढ़ना है।

कम से कम दो अन्य सम्बंधित प्रश्न हैं जिन्हें हम यहां सम्बोधित कर सकते हैं : कुछ चंगाइयां धीरे-धीरे क्यों होती हैं? और कुछ चंगाइयां आंशिक क्यों होती हैं और पूरी क्यों नहीं होती?

कुछ चंगाइयां धीरे-धीरे क्यों होती हैं?

यीशु की सेवकाई में, उस घटना के अलावा जहां उसने एक अंधे व्यक्ति को दो बार स्पर्श किया, हम अन्य सभी चंगाइयों और छुटकारे की घटनाओं को तुरंत होते हुए देखते हैं। परंतु, जब हम सेवा करते हैं, तब कई बार चंगाइयां समय के साथ धीरे-धीरे होती हैं। फिर से एक बार इस प्रश्न का उत्तर वास्तव में आत्मनिष्ठ है और व्यक्तिगत स्थितियों पर निर्भर है। कई

मामलों में, हम नहीं जानते कि कई बातें तुरंत होने के बजाए धीरे-धीरे क्यों होती हैं। परंतु, हमारी प्रतिक्रिया कार्य को पूरा होते हुए देखने के लिए आगे बढ़ते जाना होनी चाहिए, चाहे उसके लिए कितना ही समय क्यों न हो। हमारे मार्ग में आने वाले सुधार के प्रत्येक स्तर का हम उत्सव मनाते हैं। हमें स्वास्थ्य प्राप्ति की उस प्रत्येक छोटी प्रगती के लिए जो हम देखते हैं प्रभु का धन्यवाद देना चाहिए, परमेश्वर की प्रशंसा करते रहना चाहिए और पूर्ण चंगाई एवं छुटकारा देखने हेतु आगे बढ़ना चाहिए।

मरकुस 8:22-26

22 और वे बैतसैदा में आए; और लोग एक अन्धे को उसके पास ले आए और उससे बिनती की कि उसको छूए।

23 वह उस अन्धे का हाथ पकड़कर उसे गांव के बाहर ले गया, और उसकी आंखों में थूककर उस पर हाथ रखे और उससे पूछा, क्या तू कुछ देखता है?

24 उसने आंख उठा कर कहा, मैं मनुष्यों को पेड़ के समान देखता हूं जो मुझे चलते हुए दिखाई देते हैं।

25 तब उसने फिर दोबारा उसकी आंखों पर हाथ रखे और उसने ध्यान से देखा, और चंगा हो गया, और सब कुछ साफ साफ देखने लगा।

26 और उसने उससे यह कहकर घर भेजा, कि इस गांव के भीतर पांव भी न रखना।

इस अंधे व्यक्ति को सेवा प्रदान करने हेतु यीशु उसे नगर के बाहर क्यों ले गया? और, उसे पूर्ण रूप से दृष्टि प्रदान करने से पहले उसने उसे दो बार क्यों छुआ? यीशु ने उससे क्यों कहा कि वह नगर को न लौटे या नगर के किसी को न बताए? ये सारे अत्यंत पहलीनुमा प्रश्न हैं।

यीशु के शिष्यों में से कम से कम चार बैतसैदा से थे। अंद्रियास, शिमोन पतरस, फिलिप्पुस और नथनेएल बैतसैदा नगर से थे (यूहन्ना 1:44)। बैतसैदा उन नगरों में से एक था जिसे प्रभु यीशु ने उनके द्वारा देखे गए उसके सामर्थी कामों के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने की उनकी अनिच्छा के लिए उलाहना दी थी (मत्ती 11:21-26)। यह स्पष्ट है कि यह नगर यीशु के आश्चर्यकर्मों पर अविश्वास कर रहा था और उन्हें स्वीकार करने तैयार नहीं था, सम्भवतः उनके बुद्धिमान और चतुर (मत्ती 11:25) लोगों के कारण जिन्होंने उस नगर के बाकी निवासियों को भष्ट कर दिया था। कम से कम दूसरे एक और अवसर पर, याईर के घर में, हम प्रभु यीशु

मसीह को उन लोगों को बाहर निकालते हुए देखते हैं जिन्होंने उपहास किया, जो उसकी सेवकाई पर विश्वास नहीं रखते थे और उसे स्वीकार नहीं करते थे (मरकुस 5:40)। यद्यपि यह परिच्छेद इस बात को नहीं बताता, फिर भी यह सम्भव है कि प्रभु यीशु इस व्यक्ति को नगर के बाहर ले गया और फिर उसकी सेवा की, और यह निर्देश भी दिया कि वह वापस नगर को लौटकर न जाए या नगर के लोगों को न बताए, इसका कारण यह था कि उसे अविश्वास से और स्वीकार न करने के अभाव से दूर और सुरक्षित करना जो उस नगर में देखा जा रहा था। केवल इसी कारण प्रभु यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना और लड़की के माता-पिता के अलावा किसी और को अपने साथ आने की अनुमति नहीं दी जब उसने याईर की बेटी को वापस जीवित किया। अंधे लोगों के चंगा होने के अन्य उदाहरणों में, प्रभु यीशु ने स्वतंत्र रूप से सेवा की, और उनके विश्वास के प्रतिउत्तर के रूप में उन्हें दृष्टि प्रदान की। मरकुस के 8 के परिच्छेद में बैतसैदा के इस अंधे व्यक्ति के विश्वास का (या विश्वास के अभाव का) कोई उल्लेख नहीं है, परंतु यह सम्भव है कि वह उस नगर के अविश्वास से प्रभावित होगा। जब उसने अपनी आंखों में आंशिक सुधार देखा तब उसने प्रोत्साहन पाया और वह पूर्ण चंगाई पाने हेतु विश्वास कर पाया।

शायद बैतसैदा के अंधे व्यक्ति की इस घटना से हम कुछ सबक सीख सकते हैं वह यह है कि हम लोगों को उनके विश्वास में सहायता करने हेतु संदेह और अविश्वास के वातावरण से दूर और अलग करें। हम लोगों की शारीरिक स्थिति में धीरे-धीरे सुधार के साथ उनके विश्वास के लिए प्रोत्साहन दें और तब तक आगे बढ़ते रहें जब तक कि चंगाई पूरी नहीं होती।

कुछ चंगाइयां आंशिक क्यों होती हैं और पूरी क्यों नहीं होती?

चंगाई प्रदान करते समय दूसरी बात जो हम देख सकते हैं वह यह है कि कभी-कभी कई समस्याओं से पीड़ित लोग कुछ समस्याओं से चंगाई पाते हैं और कुछ रोग उनके शरीर में बने रहते हैं। यहां पर भी पूर्ण चंगाई क्यों नहीं होती है इसके सभी कारण हमें नहीं मिलेंगे। हमें स्वास्थ्य में उस प्रगति के लिए प्रभु को धन्यवाद देना है जो हम देखते हैं, परमेश्वर की स्तुति करते रहना है और पूर्ण चंगाई एवं छुटकारा देखने के लिए आगे बढ़ते रहना है।

हम उस व्यक्ति को प्रोत्साहन देते रहें और किसी रीति से उसे लज्जित न करें या दोष न दें। परमेश्वर से बिनती करते रहें कि वह प्रगट करे कि उस व्यक्ति की कैसे सेवा करना चाहिए और पूर्ण चंगाई देखने हेतु क्या करने की ज़रूरत है इसे वह प्रगट करे।

यह सम्भव है कि भिन्न स्थितियों के कारण भिन्न होते हैं। एक तो पूर्णतया शारीरिक रोग हो सकता है जिसे चंगाई की ज़रूरत थी और वह तुरंत चंगा हो गया। दूसरी स्थिति दुष्टात्मा से सम्बंधित हो सकती है जिसमें निर्बलता की हठीली आत्मा हो जिसे निकालने की ज़रूरत हो सकती है ताकि चंगाई आ सके।

शायद निर्बलता की आत्मा को निकालकर एक स्थिति का सामना हो सकता है, जबकि दूसरी स्थिति को चंगा होने के लिए, यह सम्भव है कि हमें केवल चंगाई प्राप्त करने हेतु उनके हृदय में विश्वास की बढ़ौतरी के लिए प्रोत्साहन देने की ज़रूरत होती है।

उस व्यक्ति को परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा उत्तम रीति से कैसे सेवा दें इसके लिए हमें पवित्र आत्मा की अगुवाई और मार्गदर्शन के प्रति संवेदनशील होने की ज़रूरत है।

हृदय की तीन प्रवृत्तियां जो परमेश्वर को आश्चर्यकर्म करने का मौका देती हैं

चंगाई और छुटकारा प्रदान करने हेतु, उसी तरह लोगों को चंगाई एवं छुट कारे का स्वीकार करने हेतु तत्पर रहने के लिए प्रोत्साहन देने हेतु, हृदय की तीन महत्वपूर्ण प्रवृत्तियां हैंः **विश्वास, प्रत्याशा** और **प्रबल इच्छा।**

लोगों की सेवा करते समय, हमें विश्वास, प्रत्याशा और प्रबल इच्छा में चलना है। हमारे हृदयों में विश्वास के साथ हम चंगाई और छुटकारा प्रदान करते हैं। हमारा अविश्वास हमारे द्वारा परमेश्वर की सामर्थ को प्रवाहित करने के मार्ग में रुकावट ला सकता है। हमें अपेक्षा करना है कि लोग चंगे हों। अपेक्षा करें कि लोग छुटकारा पाएं और स्वस्थ हों। लोगों को चंगाई

पाते हुए, स्वस्थ होते हुए और परमेश्वर की महिमा के लिए छुटकारा पाते हुए देखने की तीव्र इच्छा रखें।

जब हम लोगों की सेवा करते हैं, तब हमें उनकी सहायता करना है कि वे स्वास्थ्य पाने हेतु विश्वास, प्रत्याशा, और प्रबल इच्छा के स्थान पर आएं। हम वचन, प्रार्थना और आराधना के द्वारा उन्हें प्रोत्साहन देते हैं। लहू बहने वाली स्त्री के समान, हमें लोगों को प्रोत्साहन देना है कि जब वे विश्वास से अपने हाथ को आगे बढ़ाते हैं, तो कुछ होते हुए देखने की अपेक्षा करें। कनानी स्त्री के समान हमें लोगों को प्रोत्साहन देना है कि वे चंगाई और छुटकारा पाने हेतु दृढ़ संकल्प हों।

चंगाई पाने के मार्ग में रुकावटें

चंगाई और छुटकारा पाने के मार्ग में आने वाली अड़चनों या रुकावटों की यह पूर्ण सूची नहीं है, फिर भी लोगों की सेवा करते समय हमें इन बातों का ध्यान रखना है। यदि हम जानते हैं कि इनमें से एक या अधिक रुकावटें मौजूद हैं, तो हमें प्रेमपूर्ण और प्रोत्साहन भरे तरीके से उन्हें सम्बोधित करना चाहिए। सेवा करते समय हमें व्यक्ति की कभी आलोचना नहीं करना चाहिए, उसे दण्डित नहीं करना चाहिए, उस पर दोष नहीं लगाना चाहिए या उसे लज्जित नहीं करना चाहिए। हमें लोगों के जीवनों में परमेश्वर का स्थान लेने की कोशिश नहीं करना चाहिए। हम केवल मिट्टी के बर्तन हैं और हमें परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए उपयोग होने हेतु परमेश्वर के हाथों में खुद को उपलब्ध कराना चाहिए।

- ज्ञान का अभाव (होशे 4:6; यशायाह 5:13)
- विश्वास का अभाव (मरकुस 6:5,6)
- बीमारी को परमेश्वर की इच्छा समझना
- चंगाई पाने हेतु लगातार इच्छा रखने का अभाव। सचमुच चंगाई पाने की इच्छा न रखना। शायद, लोगों की सहानुभूति और ध्यान का लाभ उठाना। शायद, चंगा होने पर सामान्य जिम्मेदारियों के साथ जीवन बिताना होगा यह भय रखना।

- बीमारी का सामना करने के प्रति उदासीन होना (गलत मुद्रा जो उदासीन विश्वास की ओर प्रवृत्त करती हैः यदि परमेश्वर की इच्छा रही, तो वह मुझे चंगा करेगा, परमेश्वर मुझे उसके समय में चंगा करेगा, जो कुछ भी होता है वह परमेश्वर की इच्छा है, आदि)।
- हृदय की गलत प्रवृत्तिः क्रोध, नाराज़गी, ईर्ष्या, क्षमा न करना, कड़वाहट, आदि।

नीतिवचन 14:30
शान्त मन, तन का जीवन है, परन्तु मन के जलने से हड्डियां भी जल जाती हैं।

नीतिवचन 17:22
मन का आनन्द अच्छी औषधि है, परन्तु मन के टूटने से हड्डियां सूख जाती हैं।

- **हानिकारक जीवनशैलियांः** यदि व्यक्ति ऐसे काम करना जारी रखता है जो उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, उदाहरण के तौर पर, शराब, धुम्रपान, नशीले पदार्थों का सेवन, आदि।
- **अन्य अज्ञात बातेंः** हम उस प्रत्येक कारण को नहीं जानते जो चंगाई और छुटकारा पाने के मार्ग में व्यक्ति के लिए रुकावट बनता है। इसलिए हम पवित्र आत्मा की सुनना सीखते हैं और वह हमें दिखाएगा कि विशिष्ट परिस्थितियों में क्या करना चाहिए।

3
पिता के काम

प्रभु यीशु मसीह पिता के कामों को करने के लिए आया। उसने कहा कि उसे पिता के काम करना चाहिए (लूका 2:49)। वह पिता की इच्छा पूरी करने आया (इब्रानियों 10:5-7)। वह पिता के नाम में आया (यूहन्ना 5:43; यूहन्ना 10:25) इस प्रकार पिता के उद्देश्य और मनसा को दिखाने के लिए आया। उसने पुत्र की महिमा प्रगट की, *"जैसे पिता के एकलौते की महिमा"* (यूहन्ना 1:14; यूहन्ना 2:11)। उसने मंदिर को मेरे पिता का घर कहा और दिखा दिया कि चंगाइयां पिता के घर में होनी चाहिए (यूहन्ना 2:16, मत्ती 21:12-14)। पिता के कामों को करने का एक भाग था शैतान के कामों को नाश करना (1 यूहन्ना 3:8)।

हमें पिता के कामों को करने के लिए बुलाया गया है, यीशु के समान।

इस अध्याय में हमारा लक्ष्य यह सीखना है कि यीशु ने पिता के कामों के विषय में क्या सिखाया, और यह देखना कि पिता के कामों को करने के लिए यीशु कैसे पिता के साथ चला। उसके बाद यीशु के उदाहरणों का अनुसरण करने के द्वारा, हम भी पिता के साथ चलना सीख सकते हैं और पिता के कामों को वैसे ही कर सकते हैं जैसा यीशु ने किया।

पिता के कामों के विषय में यीशु ने क्या सिखाया

प्रभु यीशु वह सचमुच मसीह है इस बात को प्रमाणित करने हेतु, उसने उसके जन्म, जीवन, और सेवकाई से सम्बंधित कई अलौकिक परिदृश्यों की ओर संकेत किया होता। वह इस बात की ओर संकेत कर सकता था कि उसके जन्म के समय स्वर्गदूतों के गायक समूह ने चरवाहों के लिए गीत गाया था। वह उन मजूसियों की ओर संकेत कर सकता था जो तारे का पीछा करते हुए पूरब दिशा से आए और उन्होंने उसे भेंट दी। वह उस कबूतर

की ओर संकेत कर सकता था जो उस पर उस समय उतर आया जब वह यरदन नदी में यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले के हाथों से बपतिस्मा ले रहा था। वह स्वर्ग की उस आवाज़ की ओर संकेत कर सकता था जो विभिन्न समयों में प्रगट हुई। परंतु, वह मसीह है इस बात का सत्यापन करने हेतु, इन बातों में से किसी एक की ओर संकेत करने के बजाय, उसने हमेशा उन आश्चर्यकर्मों की ओर संकेत किया जो उसने किए, चंगाइयां, छुटकारा, चिन्ह और अद्भुत कार्य। उसने इन्हें पिता के काम कहा और इनकी ओर उसके मसीह होने के सबूत के रूप में संकेत किया।

यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले से बड़ा गवाह

यूहन्ना 5:31-36

31 यदि मैं आप ही अपनी गवाही दूं तो मेरी गवाही सच्ची नहीं।

32 एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूं कि जो गवाही मेरे विषय में दी जाती है वह सच्ची है।

33 तुमने यूहन्ना से पुछवाया और उसने सच्चाई की गवाही दी है।

34 परन्तु मैं अपने विषय में मनुष्य की गवाही नहीं चाहता; तौभी मैं ये बातें इसलिए कहता हूं कि तुम्हें उद्धार मिले।

35 वह तो जलता और चमकता हुआ दीपक था; और तुम्हें कुछ देर तक उसकी ज्योति में मगन होना अच्छा लगा।

36 परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है; क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है, अर्थात् यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं कि पिता ने मुझे भेजा है।

बैतसैदा की झील के पास यरूशलेम में लंगड़े व्यक्ति की चंगाई के बाद, यीशु ने वह कौन है इसकी बड़ी गवाही (साक्ष्य, सबूत, प्रमाण) के रूप में पिता के कार्यों की ओर संकेत किया। उसने कहा कि जो काम उसने किए (चंगाइयां और आश्चर्यकर्म) वे पुराने नियम के सबसे श्रेष्ठ भविष्यद्वक्ता, यूहन्ना बपतिस्मा करने वाली की गवाही से बड़ी गवाही थे। पुराने नियम के सबसे श्रेष्ठ भविष्यद्वक्ता, यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने यीशु की संकेत किया और घोषणा की कि यह "परमेश्वर का मेम्ना" है, परंतु यह भी मात्र "मनुष्य की गवाही" थी। और यीशु ने कहा, कि पिता के जो काम उसने किए, चंगाई, छुटकारा और आश्चर्यकर्म, यूहन्ना की गवाही से बड़ी गवाही थे।

जब भविष्यद्वक्ता ने संदेह किया

मत्ती 11:1-6

1 जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह उनके नगरों में उपदेष और प्रचार करने को वहां से चला गया।

2 यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उससे यह पूछने भेजा,

3 कि क्या आनेवाले आप ही हैं, या हम दूसरे की बाट जोहें?

4 यीशु ने उत्तर दिया, जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो-

5 कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।

6 और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।

यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले को यीशु के अग्रदूत के रूप में, प्रभु को ग्रहण करने हेतु लोगों को तैयार करने के लिए परमेश्वर द्वारा भेजा गया था। उसी ने जब यरदन नदी में यीशु को बपतिस्मा दिया, तब कबूतर को उस पर उतरते देखा और स्वर्ग से आवाज़ सुनी। उसे परमेश्वर की ओर से ऐसा अचूक चिन्ह मिला था जो यीशु की ओर मसीह के रूप में संकेत था। यूहन्ना ने यीशु का जगत को यह कहते हुए परिचय कराया था, *"देखो, परमेश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप हर लेता है"* (यूहन्ना 1:29)। फिर भी, कुछ समय बाद, यूहन्ना को बन्दी बनाकर कैद में डाला गया, तब शायद उसके अपने डर से, यूहन्ना के मन में संदेह आ गया कि यीशु वास्तव में कौन है। शायद यूहन्ना को यीशु से उम्मीद थी कि वह राजनीतिक अगुवे के रूप में उदय होकर रोमियों को पराजित करेगा। उसके बदले यीशु आत्मिक अगुवा हो रहा था, वह प्रचार कर रहा था, सिखा रहा था और पिता के कामों को कर रहा था। यूहन्ना उलझन में पड़ा हुआ प्रतीत होता है। इसलिए उसने अपने शिष्यों से यीशु से यह पूछने के लिए भेजा, "क्या तू मसीह है या हम किसी और को देखें?" जिस भविष्यद्वक्ता ने यीशु को गवाही दी, उसने अब संदेह किया।

उसके उत्तर स्वरूप, प्रभु यीशु ने प्रमाण के रूप में पिता के कामों की ओर संकेत किया, *"कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी*

शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है" (मत्ती 11:5)। यह दिलचस्प बात है कि इस क्षण भी, यीशु ने उस घटना की ओर इशारा नहीं किया जो उसके बपतिस्मे के समय यरदन नदी के पास हुई थी। बल्कि, उसने उसके मसीह होने के प्रमाण के रूप में पिता के कामों की ओर संकेत किया।

मुझे पिता के कामों को करना चाहिए

यूहन्ना 9:1-7

1 फिर जाते हुए उसने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था।
2 और उसके चेलों ने उससे पूछा, हे रब्बी, किसने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता-पिता ने?
3 यीशु ने उत्तर दिया, न तो उसने पाप किया था; न इसके माता-पिता ने; परन्तु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के काम उसमें प्रगट हों।
4 जिसने मुझे भेजा है हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवष्य है; वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।
5 जब तक मैं जगत में हूं, तब तक जगत की ज्योति हूं। 6 यह कहकर उसने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाकर,
7 उससे कहा, जा, शीलोह के कुण्ड में धो ले। (जिसका अर्थ भेजा हुआ है) तब उसने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।

जब प्रभु यीशु ने एक जन्म से अन्धे व्यक्ति को देखा (बीमार, रोगी आदि), उसने उसे उस व्यक्ति में पिता के कामों को प्रगट करने के अवसर के रूप में देखा। परमेश्वर ने उसे अन्धा किया था ऐसा नहीं, परंतु यह कि इस व्यक्ति के अन्धेपन को चंगा करने के द्वारा पिता के काम प्रगट होने वाले थे। यीशु ने कहा, *"जिसने मुझे भेजा है हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है"* दूसरे शब्दों में, मुझे पिता के काम करने चाहिए। और स्पष्ट रूप से, अन्धे व्यक्ति को दृष्टि देना पिता का काम था। चंगा करना, स्वस्थ करना पिता का काम है, घायल करना या बीमार करना नहीं।

अब, दिन रहते ही, पिता के कामों को करने के लिए हमें सही मौका थाम लेना चाहिए। जब परमेश्वर बोलता है, तब उस पर कार्य करें।

हम यह भी सीखते हैं कि जिस तरह पिता के काम किए जाते हैं, उनमें फर्क हो सकता है। इस मामले में, यीशु ने ज़मीन पर थूका, मिट्टी सानी, उसे अन्धे व्यक्ति की आंखों पर लगाया और उसे धोने के लिए शीलोह के कुण्ड के पास भेजा। उस प्रत्येक अन्धे व्यक्ति के लिए उसने यह तरीका नहीं अपनाया जिन्हें उसने चंगा किया। चंगाई और छुटकारा प्रदान करते समय, हम प्रभु के निर्देश के अनुसार उसे करना सीखते हैं।

जो काम मैं करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं

यूहन्ना 10:24,25

[24] तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, आप हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेंगे? यदि आप मसीह हैं, तो हमसे साफ कह दें।

[25] यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैंने तुमसे कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं।

यूहन्ना 10:37,38

[37] यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरी प्रतीति न करो।

[38] परन्तु यदि मैं करता हूं, तो चाहे मेरी प्रतीति न भी करो, परन्तु उन कामों की तो प्रतीति करो, ताकि तुम जानो, और समझो कि पिता मुझ में है, और मैं पिता में हूं।

जब यहूदी लोग यीशु के पास आए और उन्होंने उसके खीष्ट, मसीह होने के विषय में उससे सीधा सवाल पूछा, तब प्रभु यीशु ने उसके मसीह होने के प्रमाण के रूप में पिता के कामों की ओर संकेत किया। उसने आगे बढ़कर 37 वे वचन में यह मज़बूत बयान दिया, *''यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरी प्रतीति न करो।"* काश हम भी पिता के कामों को करने पर उतना ही ज़ोर देते जितना कि यीशु मसीह ने दिया? काश हम लोगों को बताते कि *"यदि हम अपने पिता के काम नहीं करते, तो हमारी प्रतीति न करो"*? यीशु के लिए पिता के कामों को करना इतना महत्वपूर्ण था। जो प्रचार वह करता था उससे यह अधिक महत्वपूर्ण था। उसने मुख्य रूप से कहा कि 'भले ही जो मैं कहता हूं उस पर तुम विश्वास नहीं करते, तौभी कम से कम कामों पर विश्वास करो।'

उन कामों के कारण मुझ पर विश्वास करो

यूहन्ना 14:1-13

1 तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो।

2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं।

3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

4 और जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो।

5 थोमा ने उससे कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि आप कहां जाते हैं, तो मार्ग कैसे जानें?

6 यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

7 यदि तुमने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।

8 फिलिप्पुस ने उससे कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे; यही हमारे लिए बहुत है।

9 यीशु ने उससे कहा, हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है; तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा?

10 क्या तू प्रतीति नहीं करता कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुमसे कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।

11 मेरी ही प्रतीति करो कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।

12 मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।

14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।

एक समय था, जब वह अपने शिष्यों को अपने गमन के लिए तैयार कर रहा था, वह उनसे उसके पिता के घर के विषय में और उन भवनों के विषय में बोलने लगा जो वह उसके शिष्यों के लिए तैयार करने वाला था।

इस पर फिलिप्पुस ने बिनती की कि वह उन्हें पिता को दिखाए। यीशु ने यह कहते हुए उत्तर दिया, *"यदि तुम ने मुझे देखा है तो पिता को देखा है।"* तब उसने अपने शिष्यों को चुनौती दी, *"मेरी ही प्रतीति करो कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।"* वास्तव में वह कह रहा था, "मेरे वचन पर विश्वास करो, या यदि तुम मेरे वचन पर विश्वास नहीं कर सकते, तो जिन कामों को तुम मुझे करते हुए देखते हो, उनके कारण जो मैं कहता हूं उस पर विश्वास करो।" जो वह कहता है कि वह है, वह होने के प्रमाण के रूप में उसने अपने खुद के शिष्यों का ध्यान पिता के कामों की ओर, चंगाइयों, चिन्हों और चमत्कारों की ओर लगाया।

इसी संदर्भ में प्रभु यीशु ने आगे बढ़ते हुए यूहन्ना 14:12 कहा। प्रत्येक विश्वासी पिता के कामों को करेगा यह प्रतिज्ञा इस बात को प्रमाणित करने के लिए की गई थी कि यीशु कौन है। आज भी, जब लोग परमेश्वर पिता की ओर से आने वाले यीशु के इस दावे का कि वह परमेश्वर द्वारा भेजा गया था, प्रमाण चाहते हैं, तो हमें विश्वासी होने के नाते, उसके कामों के द्वारा और अधिक बड़े कामों के द्वारा उसके दावे को प्रमाणित करना है!

कामों को देखने से हमारे पास दूसरा कोई विकल्प नहीं रह जाता

यूहन्ना 15:24

यदि मैं उनमें वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया।

"पिता के काम", मुख्य रूप से यीशु मसीह के विषय में "अंतिम निर्णायक प्रमाण हैं। एक बार जब लोग कामों को देखते हैं, तब उन्हें प्रमाण दिया जाता है और अब उन्हें यह निर्णय लेना है कि वे उससे प्रेम करेंगे या घृणा करेंगे।

यीशु पिता के साथ कैसे चला?

यीशु पिता के साथ कैसे चला? पिता के साथ उसका रिश्ता क्या था? हमें भी पिता के साथ उसी तरह चलते हुए आगे बढ़ने की ज़रूरत है।

पिता की गोद में

यूहन्ना 1:18
परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, 'एकलौता पुत्र' जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया।

"पिता की गोद में" होने का अर्थ *"निकट सन्निधता में"* होना है (एम्लिफाइड बाइबल)। प्रभु यीशु पिता की *''निकट सन्निधता"* में चलता था। हम उसे अकेले में पिता के साथ बहुत समय बिताते हुए देखते हैं (मत्ती 14:23; मरकुस 1:35; लूका 5:16; लूका 6:12; यूहन्ना 6:15)। यद्यपि वह परमेश्वर था जो मनुष्य बन गया, और बेपरिमाण आत्मा द्वारा अभिषेक पाया हुआ था, फिर भी हम यीशु को पिता के साथ एकांत में जाते हुए देखते हैं। उसे पिता के साथ इस तरह निकट सन्निधता में, निकट सहभागिता में चलते हुए देखते हैं।

पिता के साथ इस निकट संगति से उसने पिता को प्रगट किया। एम्लिफाइड़ बाइबल में लिखा है: *"उसने उसे प्रगट किया है और उसे उस स्थान में लाया है जहां पर उसे देखा जा सकता है। उसने उसे परिभाषित किया है और उसने उसे प्रगट किया है।"*

यूहन्ना 10:15
जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूं...

यूहन्ना 10:30
मैं और पिता एक हैं।

ये वचन (10:15,30) निकटता और घनिष्ठ सहभागिता को दर्शाते हैं। 'मैं पिता को जानता हूं और पिता मुझे जानता है' निकट सहभागिता का परिणाम है। *"मैं और मेरा पिता एक हैं" या मेसेज बाइबल का अनुवाद हम एक हृदय और मन"* हैं। इसका अर्थ पिता और पुत्र में प्रत्येक बात में एक सिद्ध पंक्तिबद्धता, एकता और पूर्ण सहमति है। इसलिए प्रभु यीशु ने अक्सर कहा, *"यदि तुमने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते"* (यूहन्ना 14:7), और *"जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है"* (यूहन्ना 14:9)।

जैसा वह चला उस प्रकार चलने का यह हमारे लिए कैसा उत्तम उदाहरण है - पिता के निकट सन्निधता में रहना और उसके साथ पूर्ण पंक्तिबद्धता में रहना सीखना, इसके द्वारा हम उसे प्रगट करते हैं और उसके बारे में घोषणा करते हैं।

पिता पुत्र से प्रेम करता है

यूहन्ना 3:35
पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं।

यूहन्ना 10:17
पिता इसलिए मुझ से प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं।

यूहन्ना 8:54
यीशु ने उत्तर दिया, यदि मैं आप अपनी महिमा करूं, तो मेरी महिमा कुछ नहीं, परन्तु मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो कि वह हमारा परमेश्वर है।

यूहन्ना 15:10
यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे पेम में बने रहोगे; जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।

यूहन्ना 16:32
देखो वह घड़ी आती है, वरन आ पहुंची है कि तुम सब तितर-बितर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है।

कई अवसरों पर प्रभु यीशु ने उसके प्रति पिता के प्रेम के विषय में कहा। उस प्रेम की वजह से, पिता ने सबकुछ उसके हाथों में कर दिया। पिता ने पुत्र को आदर दिया और वह सबकुछ दिया जो यीशु ने चाहा। उसने मनुष्य से आदर नहीं चाहा, न ही उसने खुद के लिए आदर पाने का प्रयास किया। पुत्र पिता की आज्ञाओं में चला और इस प्रकार पिता के प्रेम में चला। उसके शिष्य उसे छोड़ने वाले भी थे, फिर भी यीशु जानता था कि पिता उसके साथ रहेगा और उसे छोड़ेगा नहीं।

उसी तरह हमें पिता के प्रेम में चलना है। प्रभु यीशु चाहता है कि हम यह जानें कि पिता हमसे उसी तरह प्रेम करता है जैसे वह पुत्र से

प्रेम करता है। यीशु ने प्रार्थना की कि उसके शिष्य जानें कि पिता ने जैसे मुझसे प्रेम रखा, वैसे ही उनसे प्रेम रखा (यूहन्ना 17:23)। जब हमें पिता के प्रेम का आश्वासन प्राप्त होता है, तब हम केवल उस बात की खोज करते हैं जो उसकी ओर से आती है। हमारे प्रति उसके प्रेम को जानकर हमारी इच्छा पूरी होती है। हम केवल उस आदर की चाह रखते हैं जो वह हमारे जीवनों को देता है, और न ही वह आदर जो मनुष्य की ओर से आता है। हम उसकी आज्ञाओं में चलने के द्वारा उसके प्रेम में बने रहने का प्रयास करते हैं।

पिता की इच्छा पूरी करने से प्राप्त बल

यूहन्ना 4:34
यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं।"

यूहन्ना 6:57
जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूं...

यीशु ने कहा कि उसका भोजन (पोषण, निर्वाह) पिता की इच्छा पूरी करना था और उसे भेजने वाले पिता के काम को पूरा करना था। वह पिता की अधीनता में रहा और उस पर इतनी अधिकता से निर्भर रहा कि उसने कहा, 'मैं पिता के कारण जीवित हूं।'

कौन सी बात हमें बल देती है? क्या हम पिता की वजह से जीवित हैं? क्या वह हमारे जीवनों का केंद्र है और क्या हमारा बल उसकी इच्छा का अनुसरण करने और उसके कार्य को करने से आता है?

मैं पिता को जो करते हुए देखता हूं वह करना

यूहन्ना 5:1-14 में बैतसैदा की झील के पास लंगड़े व्यक्ति को चंगा करने के बाद, प्रभु यीशु ने कई बातें समझाई कि वह पिता के कामों को क्यों और कैसे करता था। यह बात हमें अंतर्दृष्टि प्रदान करती है कि वह पिता के साथ कैसे चला।

यूहन्ना 5:17
इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं।"

लंगड़े व्यक्ति को चंगा करना मात्र पिता का कार्य था। यीशु ने कहा था कि वह केवल पिता के साथ मिलकर परिश्रम कर रहा है। चंगाई, छुटकारा और आश्चर्यकर्मों की सेवकाई—अलौकिक सेवकाई—मात्र पिता के साथ परिश्रम करना है। पिता काम कर रहा है और हम भी काम करते हैं। हम केवल उस समय रुकते हैं, जब वह रुकता है, और जहां तक हम जानते हैं, उसने काम करना कभी नहीं रोका!

यूहन्ना 5:19
इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वही जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है, उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।"

यीशु ने खुद को इस तरह पिता के अधीन किया, कि वह अपनी इच्छा से नहीं चला। उसने वही किया जो उसने पिता को करते देखा।

यूहन्ना 5:20
क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है वह सब उसे दिखाता है; और वह इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो।

कामों को और बड़े कामों को करना इस बात पर निर्भर है कि हम पिता को क्या करते हुए देखते हैं, और उसी प्रकार खुद भी करना। हमें प्रार्थना करने की और पिता से यह मांगने की ज़रूरत है कि आज तक हमने जिन कामों को देखा है उससे अधिक बड़े काम वह हमें दिखाए, ताकि लोग देखें, सुनें, अनुभव करें और अचम्भित हों।

मेरी इच्छा नहीं, परंतु पिता की इच्छा

यूहन्ना 5:30
मैं अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता। जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूं।

यूहन्ना 8:29

और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिससे वह प्रसन्न होता है।

यूहन्ना 10:32

इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैंने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उनमें से किस काम के लिए तुम मुझे पत्थरवाह करते हो?

यूहन्ना 14:31

परन्तु यह इसलिए होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूं। उठो, यहां से चलें।

हर बात में वह पिता के अधीन था, उसने अपनी नहीं परंतु अपने भेजने वाले पिता की इच्छा पूरी करना चाहा। उसने हमेशा वही किया जिससे पिता को प्रसन्नता होती थी। जो काम वह कर रहा था वह हमेशा पिता के लिए प्रसन्नतादायक था। जो काम वह कर रहा था, वे पिता की ओर से भेजे जाने वाले काम थे। वह अपने आत्मबल पर काम नहीं करता था। पिता के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर, वह पिता की आज्ञा का पालन करते हुए चला। उसे पिता की आज्ञा मानने का चुनाव करने का फैसला करना था। इब्रानियों का लेखक कहता है, *"और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा-उठा कर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया"* (इब्रानियों 5:8,9)।

जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया, उसी के अनुसार मैं बोलता हूं

यूहन्ना 7:14-16

14 और जब पर्व के आधे दिन बीत गए; तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेष करने लगा।
15 तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा, कि इसे बिना पढ़े विद्या कैसे आ गई?
16 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, मेरा उपदेष मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है।

यूहन्ना 8:26,28,38

26 तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है, परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो मैंने उससे सुना है, वही जगत से कहता हूं।

[28] तब यीशु ने कहा, जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूं, और अपने आपसे कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूं।
[38] मैं वही कहता हूं जो मैंने अपने पिता के यहां देखा है; और तुम वही करते रहते हो जो तुमने अपने पिता से सुना है।

यूहन्ना 12:49,50
[49] क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं की, परन्तु पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूं? और क्या क्या बोलूं?
[50] और मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है। इसलिए मैं जो बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं।

उसकी सारी शिक्षा में, उसने जो कुछ पिता से सीखा वही उसने सिखाया।

यह सामर्थी है। उसने पिता से सीखा। जैसे पिता ने उस पर अपनी बातें प्रगट की, वैसे ही उसने संसार से बातें की। जो कुछ उसने गुप्त में सीखा था, पिता की उपस्थिति में एकांत में सीखा था, वही उसने भीड़ से सार्वजनिक सेवकाई में कहा। जैसे यशायाह ने भविष्यद्वाणी की, *"प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूं। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं। प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला है, और मैंने विरोध न किया, न पीछे हटा"* (यशायाह 50:4,5)।

पिता के समय के साथ कदम मिलाकर

यूहन्ना 2:4
यीशु ने उससे कहा, "हे महिला, मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया।"

यूहन्ना 7:6-8
[6] तब यीशु ने उनसे कहा, मेरा समय अभी तक नहीं आया; परन्तु तुम्हारे लिए सब समय है।
[7] जगत तुमसे बैर नहीं कर सकता, परन्तु वह मुझ से बैर करता है, क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही देता हूं कि उसके काम बुरे हैं।
[8] तुम पर्व में जाओ। मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता, क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ।

यूहन्ना 7:30
इस पर उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, तौभी किसी ने उस पर हाथ न डाला, क्योंकि उसका समय अब तक न आया था।

यूहन्ना 8:20
ये बातें उसने मन्दिर में उपदेष देते हुए भण्डार घर में कही, और किसी ने उसे न पकड़ा; क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था।

यूहन्ना 12:23
उस पर यीशु ने उनसे कहा, वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो।

यूहन्ना 13:1
फसह के पर्व से पहले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से जो जगत में थे, जैसा पेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही पेम रखता रहा।

यूहन्ना 16:4,12
4 परन्तु ये बातें मैंने इसलिए तुमसे कही कि जब उनका समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था, और मैंने आरंभ में तुमसे ये बातें इसलिए नहीं कही क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।
12 मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।

यूहन्ना 17:1
यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखें आकाष की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।

प्रभु यीशु पिता के साथ कदम मिलाकर और समय के साथ चलता था। वह अपने पिता के समय के प्रति जागृत और अधीन था। अपनी सेवकाई की शुरूवात करने से पहले और अपने पहले आश्चर्यकर्म से पहले उसने करीब 30 वर्षों तक इंतज़ार किया। उसकी सेवकाई का आरंभ यशायाह 61 के सामर्थी वचनों से हुआ। भविष्यद्वाणी का वह परिच्छेद पढ़ने के बाद, यीशु ने श्रोताओं को घोषणा की, *"तब वह उनसे कहने लगा कि आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है"* (लूका 4:21)। अपनी आश्चर्यकर्म की सेवकाई का आरंभ करने हेतु यीशु को पिता के समय का बोध था। और

यह होते हुए भी, यद्यपि उसकी संसारिक मां ने उसे प्रेरित किया, फिर भी यीशु निश्चित समय के लिए रुका रहा जब उसने पिता से सुना और पिता ने उसे कार्य करने हेतु भेजा (यूहन्ना 2:4)। पर्व के लिए यरूशलेम को जाते समय, वह पिता के समय का इंतज़ार करता रहा (यूहन्ना 7)। वह पिता के साथ कदम मिलाकर और समय के साथ चलता रहा इसलिए, उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के नियुक्त समय तक उसे कोई हानि नहीं हुई। जब उसका क्रूस पर जाने का, उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान का समय आया, तब उसने वह जाना।

उसका संदेश और प्रचार समय के अनुरूप था—समय पर कहा गया वचन। वह पश्चाताप का प्रचार करता हुआ आया, उसने कहा, *"समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो"* (मरकुस 1:15)। वह एक नए युग के आरंभ की घोषणा कर रहा था और उस समय परमेश्वर पृथ्वी पर जो कुछ कर रहा था उसकी घोषणा और उसके संदेश ने लोगों को ध्यान खींच लिया। वह समय से बाहर ऐसा कुछ प्रचार नहीं कर रहा था या घोषित नहीं कर रहा था। वह उन बातों के विषय में पूर्ण रूप से जागृत था जो पिता कर रहा था और करने वाला था - पृथ्वी पर परमेश्वर का वर्तमान और आने वाला कार्य। उसने उस समय के आरम्भ का उल्लेख करते हुए समय आता है इस वाक्यांश का उपयोग किया जब लोग आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करेंगे (यूहन्ना 4:21, 23) और मृतकों से आने वाले पुनरुत्थान का उल्लेख करते हुए भी (यूहन्ना 5:25)। उसने अपने शिष्यों को जो शिक्षाएं दीं वे समय के अनुसार दी गईं। आने वाली बातों के लिए उन्हें तैयार करने हेतु उसने सही समय पर कुछ बातें कही। वह जानता था कि उसे उन्हें बहुत कुछ प्रगट करना था, परंतु समय सही नहीं था। उसने उन्हें आश्वासन दिया कि जो बातें उन्हें जानने की ज़रूरत थी वह पवित्र आत्मा उन्हें सिखाएगा (यूहन्ना 16:12, 13)। जब पवित्र आत्मा आया, तो यह वह समय होगा जब वह अपने चेलों के साथ अब अलंकारिक भाषा में बातें नहीं करेगा, परंतु पिता के विषय में साफ-साफ बातें करेगा (यूहन्ना 16:25)।

प्रार्थना में दृढ़

यूहन्ना 11:41-42

41 तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है।
42 और मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उसके कारण मैंने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।

प्रभु यीशु पिता के साथ इस तरह चला जिससे वह प्रार्थना में दृढ़ दिखाई दिया। लाजर की कब्र के सामने खड़े होकर, और अब जबकि लाजर को मरे हुए चार दिन हो चुके थे, यीशु ने उस प्रार्थना के लिए पिता को केवल धन्यवाद दिया जो उसने पहले ही सुनी थी। उसके पास यही दृढ़ आश्वासन था कि जो प्रार्थना में प्रस्तुत किया गया है वह पहले ही दे दिया गया है। यीशु ने कहा, *"मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है"* (यूहन्ना 11:42अ)। उसका प्रार्थना जीवन ऐसा ही था। वह जानता था कि परमेश्वर हमेशा उसकी सुनता है और उसकी बिनती का उत्तर देता है। अन्य अवसर पर, जब यीशु रोटियों और मछलियों को बहुगुणित करने वाला था, तब उसने भोजन को केवल आशीष दी और धन्यवाद दिया और उन्हें बांटा। वह जानता था कि आश्चर्यकर्म होगा। *''तब यीशु ने रोटियां लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को बांट दी; और वैसी ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे बांट दिया"* (यूहन्ना 6:11)।

यीशु जानता था कि जितनी बार वह पिता से प्रार्थना करेगा, उसकी बिनती सुनी जाएगी। वह हमेशा अपेक्षा करता था कि उसकी प्रार्थना का उत्तर प्राप्त हो। परमेश्वर हमें निमंत्रण देता है कि जितनी बार हम प्रार्थना करते हैं, उतनी बार हमारी प्रार्थना का उत्तर मिलेगा, इस तरह से हम चलें।

पिता की महिमा के लिए जीना

यूहन्ना 7:18

जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें अधर्म नहीं।

यूहन्ना 12:27, 28
[27] अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिए अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं।
[28] हे पिता, अपने नाम की महिमा कर। तब यह आकाशवाणी हुई, मैंने उसकी महिमा की है, और फिर भी करूंगा।

यूहन्ना 17:4
"जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।"

प्रभु यीशु पिता की महिमा करने आया। सारी बातों में उसने उसकी महिमा करने का प्रयास किया जिसने उसे भेजा था। जब उसे क्रूस पर जाने की तैयारी करना था, तब भी उसकी प्रेरणा का वर्णन उसकी प्रार्थना में किया गया है, *"हे पिता, अपने नाम की महिमा कर"* (यूहन्ना 12:28अ)। जब यीशु ने अपने कार्य के सेवकाई वाले भाग को पूरा किया था, तब उसने उसकी महायाजकीय प्रार्थना की, और कह सका, *"मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।"*

क्या हम इस तरह से जीवन बिता रहे हैं जहां पर हमारी पूर्ण इच्छा पिता की महिमा करना है? क्या हमारे अंत के समय हम यह कह पाएंगे, "मैंने पृथ्वी पर आपकी इच्छा पूरी की है?"

पिता के साथ चलने और उसके कार्यों को करने हेतु बुलाए गए

हमें पिता के साथ, पुत्र के साथ और पवित्र आत्मा के साथ सहभागिता (संगति, निकट व्यक्तिगत् रिश्ता) स्थापित करने हेतु बुलाया गया है। प्रेरित यूहन्ना ने लिखा, *"जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है"* (1 यूहन्ना 1:3)। प्रेरित पौलुस विश्वासियों के लिए प्रार्थना की है कि वे पवित्र आत्मा की सहभागिता में चलें। *"प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे"* (2 कुरिन्थियों 13:14)। हमें पिता के साथ चलने के लिए बुलाया

गया है, जैसे प्रभु यीशु पिता के साथ चला (1 यूहन्ना 2:6)। पिता हमसे वैसे ही प्रेम करता है जैसे उसने पिता से प्रेम किया और हमसे कुछ भी नहीं रख छोड़ेगा।

हमें पिता के कामों को करने के लिए भेजा गया है।

यूहन्ना 17:18
जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैंने भी उन्हें जगत में भेजा।

यूहन्ना 20:21
यीशु ने फिर उनसे कहा, तुम्हें शान्ति मिले! जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।

हमें पिता का काम करने के लिए भेजा गया है जैसे यीशु ने किया। प्रभु यीशु ने हमारे लिए अपने जीवन का उदाहरण रखा है। प्रभु यीशु हमारा मानक है, जीवन और सेवकाई के लिए हमारा सिद्ध नमूना। उसने दिखा दिया कि पिता के कार्य क्या हैं और पिता के कामों को कैसे करना चाहिए। हमें उसका अनुकरण करना है। हमें वैसे ही चलना है जैसे वह चला ताकि हम पिता के कामों को कर सकें।

यीशु ने कहा, हम उससे भी बड़ें कामों को करेंगे जिसका अर्थ यह है कि बहुत कुछ है जिसमें हम चल सकते हैं। चंगाई और छुटकारे की सेवा के कई क्षेत्र हैं जिन्हें हमने अब तक अनुभव नहीं किया है।

यूहन्ना 14:12
"मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।"

जैसा वह पिता के साथ चला और उसने पिता के कामों को किया वैसा चलने हेतु आगे बढ़ें।

4

यीशु से चंगाई और छुटकारा प्रदान करना सीखना

इस अध्याय में चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय हम सात सिध्दांतों पर विचार करेंगे। यीशु की सेवकाई में हम इनमें से प्रत्येक को देखते हैं और सबक सीखते हैं। नीचे उल्लेख किए गए पहले पांच सिध्दांत रेंडी क्लार्क (ग्लोबल अवेकनिंग) द्वारा दिए गए "थ्रिल ऑफ विक्ट्री" नामक प्रवचन पर आधारित हैं। मैंने इन पांच मुद्दों को बदला गया है, उनका विस्तार किया गया है और उनमें पवित्र शास्त्र के वचनों को जोड़ा गया है और विचार करने योग्य सात बातों की इस सूची के एक भाग के रूप में दो अतिरिक्त मुद्दे शामिल किए हैं।

1. परमेश्वर की इच्छा
2. विश्वास का अभ्यास
3. करूणा का प्रवाह
4. पवित्र आत्मा का अभिषेक
5. पाप और उध्दार की समस्या के साथ व्यवहार करना
6. यीशु ने जिन पध्दतियों का उपयोग किया
7. यीशु की चगांइयों और आश्चर्यकर्मों का स्वरूप

मानक और अपवाद

हमारे पास जो सत्य है उसमें हम चलते हैं और जो कुछ हम जानते हैं उसके अनुसार काम करते हैं। हम इन्हें "मानक" कहते हैं। ये वे सिद्धांत हैं जिन्हें हम परमेश्वर के वचन में देखते हैं और जिनके साथ हम काम करते हैं। परंतु, हमें हमेशा ये याद रखना है कि परमेश्वर हमारी समझ से बड़ा है और उसके विषय में हमारे वर्तमान ज्ञान से बड़ा है और हमारे सारे ज्ञान

से बड़ा है - इसलिए हमेशा ऐसी परिस्थितियां होंगी जहां पर परमेश्वर हमें चौंकाता है! हम इन्हें "अपवाद" कहते हैं।

हम सामान्य तौर पर परमेश्वर के वचन के सिद्धातों के आधार पर काम करते हैं। परंतु, हमें परमेश्वर की उपस्थिति और सम्बंधित परिस्थिति में उसकी अगुवाई के प्रति अत्यंत संवेदनशील रहना है। जो हम जानते हैं, उसमें भिन्न रूप से सेवा करने हेतु यदि परमेश्वर हमारी अगुवाई करता है, तो हमें उसका अनुसरण करना है और किसी सिद्धांत या प्रणाली में फंसकर नहीं रहना है। हमारा लक्ष्य पूर्ण रूप से उसकी शरण में रहना और इस तरह से उसका अनुसरण करना है जिसमें वह अपने लोगों को चंगाई और छुटकारा प्रदान करने की मनसा रखता है। जो आश्चर्यकर्म हम देखते हैं और अनुभव करते हैं, वह परमेश्वर के विषय में और जिस तरह से वह कार्य करता है उस विषय में हमें और भी कुछ सिखाता है। अतः हम निरंतर हम परमेश्वर के मार्गों के विषय में सीख रहे हैं और उन मार्गों के विषय में जिसमें उसका आत्मा कार्य करता है।

परमेश्वर की इच्छा

हम समझ गए हैं कि परमेश्वर की इच्छा है कि उसके पास विश्वास से आने वाले प्रत्येक को चंगा करे। इस बात की हमने पिछले अध्याय में पुष्टि की। हम यीशु की सेवकाई से परमेश्वर के सम्बंध में महत्वपूर्ण पहलुओं को सीखते हैं।

जो कुछ भी यीशु ने कहा और किया उसके माध्यम से परमेश्वर की इच्छा के सम्बंध में जो भी प्रश्न थे उन्हें उसने दूर किया

जब परमेश्वर की इच्छा पर सवाल किया गया, तब उसने उत्तर दिया, "मैं चाहता हूं यह मेरी इच्छा है।" जब कोढ़ी उससे कहने लगा, "यदि तेरी इच्छा है तो तू मुझे चंगा कर सकता है।" प्रभु ने कहा, *''तब यीशु ने उस पर तरस खाकर अपना हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, मैं चाहता हूं; तू शुद्ध हो जा। और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा और वह शुद्ध हो गया"* (मरकुस 1:40-42)।

यीशु ने प्रत्यक्ष रूप से दिखाया कि उसके पास विश्वास से आने वाले सभों को चंगा करने की उसकी इच्छा है

हमने पहले ही इस बात को सम्बोधित किया है और यहां पर फिर से दोहराते हैं कि प्रभु यीशु ने उसके पास विश्वास से आने वाले सब लोगों को चंगा किया (मत्ती 4:23,24; 8:16; 9:35,36; 12:15; मरकुस 1:34; लूका 4:40; 5:15; 6:17,19; प्रेरितों के काम 10:38)।

उसने कभी किसी कारण से किसी को खाली हाथ नहीं लौटाया।

फिर भी यीशु ने यूंही किसी को चंगा नहीं किया

प्रभु यीशु ने उसके पास विश्वास से आने वाले सभों को चंगा किया, फिर भी उसने लोगों पर ज़बरन चंगाई नहीं लादी।

बैतसैदा की झील के पास, एक लकवा पीड़ित था जो पिछले 38 वर्षों से उसी दशा में था (यूहन्ना 5:1-9)। प्रभु यीशु इस प्रश्न के साथ उस व्यक्ति के पास गया, *"क्या तू चंगा होना चाहता है।"* यह व्यक्ति पूर्ण रूप से अनजान था कि उसके साथ कौन बोल रहा है और उससे क्या अपेक्षा करें। उसने उत्तर दिया कि जिस समय स्वर्गदूत पानी हिलाकर जाता है उस समय उसके पास झील में उतरने हेतु मदत करने वाला कोई नहीं रहता। यीशु ने उससे तुरंत कहा, *"उठ और अपनी खाट उठाकर चलने लग।"* बहुत अधिक सम्भावना है कि यह व्यक्ति आश्चर्यकर्म की अपेक्षा नहीं कर रहा था। परंतु यीशु ने जब उससे ये शब्द कहे, तब परमेश्वर की सामर्थ उस पर उतर आई और उस सामर्थ ने उसे चंगा कर दिया। *"वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा।"* यह परमेश्वर का सम्प्रभुताकारी कार्य था, जहां पर चंगाई का काम पूरा हुआ, उसमें उस व्यक्ति के विश्वास की ज़रूरत नहीं थी या वह सक्रिय रूप से चंगाई के लिए कोशिश नहीं कर रहा था, न ही उसने चंगाई की इच्छा रखी थी।

हम जानते हैं कि जब लोग सक्रिय रूप से चंगाई ग्रहण नहीं करते थे (या चंगाई को पाने की कोशिश नहीं करते थे), तब यीशु उन्हें यूंही चंगा नहीं करता था। और फिर भी इस मामले में, उसने एक ऐसे व्यक्ति को

चंगा किया जिसे इस बात की कल्पना नहीं थी कि क्या हो रहा है। और इसके अलावा, उस लकवा पीड़ित व्यक्ति के आसपास जो लोग थे उन्हें उसने चंगा नहीं किया, उन्हें उसने वैसे ही छोड़ दिया। वे जैसे थे वैसा ही उन्हें छोड़ दिया।

यीशु ने उस व्यक्ति को क्यों चंगा किया। यीशु ने उस झील के अलावा और स्थानों में जाकर हर किसी को चंगा क्यों नहीं किया? यीशु ने बाद में स्पष्ट किया कि उसने वही किया जो उसने पिता को करते देखा, उससे अधिक नहीं, उससे कम नहीं और कुछ नहीं (यूहन्ना 5:17,19-20)। चंगाई निश्चित रूप से झील के पास बैठे अन्य हर एक व्यक्ति के लिए परमेश्वर की वाचा में और क्रूस में थी, फिर भी उसने उस दिन सार्वभौमिक रूप से उनके लिए काम नहीं किया। हर एक मानक यह होगा कि यीशु के पास आने वाली बाकी भीड़ के समान वे भी आकर विश्वास से ग्रहण करें।

यद्यपि यीशु ने मंदिर में कई अंधों और लगड़ों को चंगा किया (मत्ती 21:10-14), फिर भी प्रेरितों के काम के तीसरे अध्याय का लगड़ा व्यक्ति तब तक चंगा नहीं हुआ (प्रेरितों के काम 3:1-2) जब तक कि पतरस और यूहन्ना ने उसकी सेवा नहीं की।

यीशु ने यूंही मूर्दों को नहीं जिलाया। यीशु ने जिन तीन मूर्दों को जिलाया जिनके विषय में लिखा गया है, वे सभी जवान लोग थे।

लागूकरण

1) जब लोग परमेश्वर की इच्छा के विषय में निश्चित रूप से नहीं जानते, तब उन्हें हम ऐसे स्थान में लाते हैं जहां पर वे जानते हैं कि उन्हें चंगा करना परमेश्वर की इच्छा है। जो परमेश्वर क्षमा करता है, वहीं परमेश्वर चंगा भी करता है (भजन संहिता 103:1-3)।

2) परमेश्वर हर एक को चंगा करने की इच्छा रखता है और इसलिए हम प्रार्थना करते हैं और हर एक की सेवा करते हैं। फिर भी हम यूंही या मनमाने ढ़ग से लोगों को सेवा प्रदान करते नहीं फिरते—विशेषकर जब वे चंगाई की इच्छा नहीं रखते तब।

3) पिता विशिष्ट क्षण में क्या करता है इस बात की हम सूचना रखते हैं और जो वह हम पर प्रगट करता है वही करते हैं। (उदाहरण ज्ञान के वचन के माध्यम से)। ऐसे क्षणों में, जो कुछ वह प्रगट करता है उसके अनुसार हम चलते हैं। अन्य परिस्थितियों में, जो कुछ भी उसने प्रगट किया है उसके अनुसार हम कार्य करते हैं (अर्थात् परमेश्वर का वचन)—हम वचन की शिक्षा देते हैं और उसके वचन में विश्वास के आधार पर सेवा करते हैं।

विश्वास का उपयोग

चंगाई की सेवकाई में सम्भवतः विश्वास और तरस ये दो महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। सामान्य तौर पर हम जानते हैं कि जहां पर अधिक विश्वास होता है, वहां और चंगाई होती है। यीशु के पास जो लोग चंगाई और छुटकारे के लिए आए उनमें वह विश्वास देखना चाहता था। जो लोग विश्वास से यीशु के पास आए, वे चंगे हो गए। कई अवसरों पर, प्रभु यीशु ने लोगों को मार्गदर्शन किया कि वे उनके विश्वास के अनुसार कार्य करें और जब उन्होंने ऐसा किया, तब वे चंगे हो गए।

- रोमी सुबेदार (मत्ती 8:10, लूका 7:9)
- लकवा पीड़ित (मत्ती 9:2, मरकुस 2:5, लूका 5:20)
- लोहू बहने वाली स्त्री (मत्ती 9:22, मरकुस 5:34, लूका 8:48)
- दो अंधें पुरुष (मत्ती 9:29)
- कनानी स्त्री (मत्ती 15:28)
- दुष्टात्मा पीड़ित लड़का (मत्ती 17:20)
- अंधा बरतिमय (मरकुस 10:46-52, लूका 18:42)
- दस कौढ़ियों में से एक (लूका 17:19)

हम यह भी जानते हैं कि अविश्वास ने परमेश्वर की सामर्थ की प्रवाह को रोक दिया (मत्ती 13:58; मरकुस 6:5,6; मत्ती 17:20)।

फिर भी कुछ अपवाद थे, जहां यीशु ने बहुत कम विश्वास के या बिना विश्वास के लोगों की सेवा की और वे चंगे हो गए या उन्होंने छुटकारा पायाः

- बेतहसैदा की झील के पास वाला व्यक्ति (यूहन्ना 5:5-9)
- दुष्टात्मा से पीड़ित लड़के के साथ आया व्यक्ति (मत्ती 9:17-29)।

लागूकरण

1) हम हमारे हृदयों में विश्वास रखकर सेवा करते हैं और चंगाई पाते हैं (प्रेरितो के काम 3:16)।
2) परमेश्वर विश्वास के उत्तर के रूप में हमारे मध्य आश्चर्यकर्म करता है और आत्मा को भेजता है (गलातियों 3:5)।
3) विश्वास परमेश्वर के वचन पर आधारित है, इसलिए अपने विश्वास का स्तर इतना बढ़ाएं कि आप और प्रभावी रूप से और चंगाईयां, और चमत्कार कर सकें, और छुटकारा प्रदान कर सकें (रोमियों 10:17)।
4) विश्वास वर्तमानकाल है - इसलिए अभी कार्य करें (इब्रानियों 11:1)।
5) कभी कभी परमेश्वर चंगाईयों के वरदानों या अद्‌भुत कार्यों के माध्यम से अलौकिक रूप से कार्य करेगा, जहां या तो पाने वाले के पास या सेवक के पास या कभी कभी दोनों के पास बड़े स्तर का विश्वास नहीं होगा।
6) कभी कभी आपके पास केवल राई के दाने के बराबर का विश्वास होता है। इस विश्वास के साथ आरंभ करें और परमेश्वर उस विश्वास को आदर देगा।
7) इसलिए भले ही आपके पास और जिनकी आप सेवा कर रहे हैं उनके पास आप बड़े स्तर के विश्वास का अनुभव नहीं करते, फिर भी कदम बढ़ाएं और लोगों की सेवा करें।

तरस (करूणा) का प्रवाह

प्रभु यीशु ने लोगों के प्रति गहरे तरस से सेवा की। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां बाइबल स्पष्ट रूप से यह लिखती है कि प्रभु यीशु को लोगों पर तरस आया और उसने उनकी सेवा की।

यहां पर कुछ उदाहरण है:

- जब यीशु ने भीड़ को देखा तो उसे लोगों पर तरस आया (मत्ती 9:36)।
- यीशु ने उन पर तरस खाया और उनके बीमारों को चंगा किया (मत्ती 14:14)।
- यीशु ने भीड़ पर तरस खाया और उन्हें रोटी खिलाई (मत्ती 15:32; मरकुस 8:2)।
- यीशु ने तरस खाकर अंधे व्यक्ति को चंगा किया (मत्ती 20:34)।
- यीशु ने तरस खाकर कोढ़ी को शुद्ध किया (मरकुस 1:41)।
- दुष्टात्मा पीड़ित जिसने छुटकारा पाया, वह परमेश्वर के तरस का प्रात्याशित था (मरकुस 5:19)।
- यीशु ने तरस के कारण लोगों को सिखाया (मरकुस 6:34)।
- दुष्टात्मा से पीड़ित लड़के ने तरस के कारण छुटकारा पाया (मरकुस 9:22)।
- नाईन की विधवा (लूका 7:13)।

अपवाद

1) घर में जो लोग थे उनसे यीशु नाराज़ और दुखी हुआ और फिर भी लकवे के मारे हुए को चंगा करने के लिए वह आगे बढ़ा (मरकुस 3:1-5)।

2) कनानी स्त्री के प्रति यीशु ने और उसके शिष्यों अधिक करूणा प्रगट नहीं की, और फिर भी उसे उसकी बेटी के लिए चंगाई मिली (मत्ती 15:21-28)

3) यीशु ने मात्र धार्मिक क्रोध प्रगट किया था। और उसके तुरंत बाद हम उसे लोगों को चंगा करते देखते हैं! (मत्ती 21:12-14)।

लागूकरण

1. हमें बीमार, दुखी और पीड़ितों के प्रति करूणा या तरस में बढ़ना है।

2. चंगाई की सेवकाई में भावनात्मक 'क्लेश' शामिल है जिस समय आप बीमार और दुखी लोगों के प्रति तरस महसूस करते हैं।

   यीशु ने आह भरी या आत्मा में कराहा।

   मरकुस 7:32-35
   32 और लोगों ने एक बहरे को जो हकलाता भी था, उसके पास लाकर उससे बिनती की कि वह अपना हाथ उस पर रखे।
   33 तब वह उसको भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उंगलियां उसके कानों में डाली और थूक कर उसकी जीभ को छूआ।
   34 और स्वर्ग की ओर देखकर उसने आह भरी, और उससे कहा, इप्फत्तह, अर्थात् खुल जा।
   35 और उसके कान खुल गए, और उसकी जीभ की गांठ भी खुल गई और वह साफ साफ बोलने लगा।

   यीशु आत्मा में कराहा (उदास हुआ) और रोया।

   यूहन्ना 11:33-36
   33 जब यीशु ने उसको और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और घबरा कर कहा, तुमने उसे कहां रखा है?
   34 उन्होंने उससे कहा, हे प्रभु, चलकर देख लो।
   35 यीशु के आंसू बहने लगे।
   36 तब यहूदी कहने लगे, देखो, वह उससे कैसी प्रीति रखता था।

3. ऐसा समय आएगा जब सेवक के नाते आपके पास तरस की कोई गहरी भावना नहीं होगी—फिर भी परमेश्वर क्योंकि वह तरस से भरा है—किसी को चंगाई प्रदान करने हेतु आपका उपयोग करता है।

4. हमें हमेशा तरस से भरे रहना है, परंतु तरस की भावना का अभाव आपको रोकने न पाए। किसी भी तरह सेवा करें, क्योंकि परमेश्वर हमेशा लोगों के प्रति तरस रखता है।

पवित्र आत्मा का अभिषेक

हमने चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय पवित्र आत्मा की सामर्थ की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है। हम जानते हैं कि प्रभु यीशु ने आत्मा की सामर्थ से सेवा की (लूका 4:14,17-18, 36; यूहन्ना 3:34; प्रेरितों के काम 10:38; मती 12:28; इब्रानियों 2:3,4)। इसलिए हम अभिषेक में बढ़ना सीखते हैं और अभिषेक से सेवा करते हैं। हम आत्मा के बहाव के प्रति और परमेश्वर के अभिषेक के प्रति संवेदनशील हैं, और चंगाई एवं छुट कारे की सेवा करते समय इसके अधीन होते हैं।

उसी तरह हम उन लोगों के महत्व को पहचानते हैं जिन्हें परमेश्वर ने विशिष्ट क्षेत्रों में बुलाया और अभिषेक किया है। उदाहरण के तौर पर, हम जानते हैं कि परमेश्वर ने चंगाई करने वाले सुसमाचार प्रचारकों और आश्चर्यकर्म करने वालों को अभिषेक किया है। हम जानते हैं कि कुछ विशेष लोग हैं जिन्हें निश्चित तरीके से और विशिष्ट प्रकार की ज़रूरतों के लिए भी सेवा करने हेतु अभिषेक किया गया है।

हम आत्मिक वातावरण के प्रति भी संवेदनशील हैं जो अभिषेक के प्रवाह के प्रति अनुकूल है। हम जानते हैं कि जहां पर बहुत प्रार्थना, बहुत आराधना, बड़ा विश्वास, और उच्च स्तर की अपेक्षा होती है, वहां पर एक ऐसा आत्मिक वातावरण होता है जो परमेश्वर के अभिषेक के बहाव के लिए और, चंगाइयों और आश्चर्यकर्मों के होने के लिए अत्यंत अनुकूल होता है। अतः हम अभिषेक के बहाव के लिए उचित आत्मिक वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं।

अपवाद

हमने जिस बात का ऊपर वर्णन किया है वह मानक है और हमें उसके और अभिषेक की इच्छा रखना सीखना है और ऐसे आत्मिक वातावरण को तैयार करने हेतु सहायता करना है जो परमेश्वर के अभिषेक के बहाव में सहायता करेगा। परंतु, जिस बात का हमने अभी वर्णन किया है, उसके लिए कुछ अपवाद हैं। ऐसा समय होता है जब परमेश्वर ऐसे वातावरणों में

सामर्थ के साथ कार्य करता है जिसे हम परमेश्वर के अभिषेक के बहाव के लिए "विपरीत" समझते हैं, या जब हम खुद को अधिक "अभिषेक प्राप्त" महसूस नहीं करते। ऐसा समय होता है जब परमेश्वर ऐसे व्यक्ति का उपयोग करता है जिसके विषय में हमें कम से कम अपेक्षा होती है कि वह अद्‌भुत आश्चर्यकर्मों को करेगा। वह ऐसे किसी व्यक्ति के द्वारा काम करता है जिसे हम चंगाई और छुटकारा लाने हेतु "अभिषिक्त" या वरदान प्राप्त नहीं समझते।

प्रभु यीशु के पास हमेशा ही अभिषेक के अंतर्गत सेवा करने हेतु उत्तम वातावरण नहीं होता था। अक्सर, वह फरीसियों, शास्त्रियों और सदूकियों से घिरा हुआ रहता था। उनमें से कई प्रश्न पूछते आते थे, ताकि दोष निकालें या वादविवाद करें। फिर भी हम देखते हैं कि शत्रुतापूर्ण लोगों के द्वारा घिरे होने पर भी चंगाई करने हेतु पवित्र आत्मा की सामर्थ प्रभु यीशु के साथ होती थी" (लूका 5:17)।

अधिकतर आश्चर्यकर्म जो यीशु ने किए वे धूल भरी सड़कों और बाजारों में हुए। हम इन्हें अत्यंत आत्मिक वातावरण नहीं मान सकते और यदि हमें वहां सेवा करना होता, तो हम अधिक अभिषिक्त महसूस नहीं करते। परंतु, हम देखते हैं कि वहीं पर बाजारों में, जहां पर भीड़ उसके चारों ओर आपस में टकराती रहती थी, वहां पवित्र आत्मा की सामर्थ यीशु के द्वारा प्रवाहित होती रहती थी (मरकुस 5:30; लूका 6:19; 8:46)।

लागूकरण

1) **अभिषिक्त व्यक्तिः** परमेश्वर बीमारों और पीड़ितों को चंगाई प्रदान करने हेतु लोगों को अभिषेक करता है। हमें अधिक सामर्थ, अधिक तरस और नम्रता के लिए प्रार्थना करने की ज़रूरत है। हमें अधिक अभिषेक के स्थान में आना है ताकि हम और बड़ी चंगाइयां और छुट कारे देख सकें। "परमेश्वर, हमें और अभिषेक की ज़रूरत है।" क्या आप कीमत चुकाने के लिए तैयार हैं (और पाने हेतु आगे बढ़ने हेतु) और अभिषेक पाने हेतु जो कीमत चुकानी होगी उसका कलंक सहने हेतु तैयार हैं?

2) **ऐसे व्यक्ति जिसे पहचाना नहीं गया है:** ऐसा समय होगा जब परमेश्वर ऐसे लोगों का उपयोग कर सकता है और करेगा जिन्हें हम उसकी चंगाई के सामर्थ के सोतों के रूप में "अभिषिक्त" नहीं समझते हैं। वे उसके वचन के आधार पर और उसके वचन में विश्वास के आधार पर, मात्र उसके नाम में सेवा करते हैं।

3) **अभिषेक को महसूस करना:** ऐसा समय होता है जब हम अभिषेक का साकार बोध प्राप्त कर सकते हैं और ऐसा समय हो सकता है जब हमें कुछ महसूस न हो। महसूस हो या न हो, हम विश्वास से सेवा करते हैं।

4) **वातावरण:** ऐसा समय होता है जब हम सोचते हैं कि वातावरण परमेश्वर के प्रगट उपस्थिति के लिए अनुकूल है और ऐसा समय होता है जब वहां पर "गड़बड़ी" होती है, और परमेश्वर की उपस्थिति (अभिषेक) फिर भी प्रगट होती है।

पाप और उद्धार का विषय

क्रूस से पहले जिस व्यक्ति की यीशु ने सेवा की वह प्रत्येक व्यक्ति उद्धार न पाया हुआ (नया जन्म न पाया हुआ) था।

एक घटना है जब यीशु ने पहले पाप को दूर किया और उसके बाद चंगाई प्रदान की। उदाहरण, लकवे के मारे हुए की चंगाई (मरकुस 2:1-12) जहां उसने पहले कहा, *"हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए"* और फिर उसने कहा, *"उठ अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।"* अन्य कुछ उदाहरण हैं जब यीशु ने पहले चंगाई की और बाद में पाप और उद्धार के विषय का सामना किया (यीशु पर विश्वास करने का)। उदाहरण के तौर पर, बैतसैदा की झील के पास उस व्यक्ति को चंगा करने के बाद (यूहन्ना 5:1-14), यीशु ने कहा, *"देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से पाप न करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।"* उसी तरह अंधे व्यक्ति को चंगा करने के बाद, यीशु ने परमेश्वर के पुत्र में विश्वास करने हेतु उसकी अगुवाई की (यूहन्ना 9:1-7,35-38)।

बाकी सारे उदाहरणों में, यीशु ने बहुसंख्य लोगों को चंगा किया और ऐसा कोई लेख नहीं है कि हर बार उसने पाप को दूर किया हो या उद्धार के विषय से निपटा हो, यद्यपि उसने लोगों को पश्चाताप करने हेतु और विश्वास करने हेतु बुलाहट देते हुए प्रचार किया।

हम हर परिस्थिति में यीशु को बीमारी का सम्बंध व्यक्ति के जीवन के या उसके पूर्वजों के किसी व्यक्तिगत पाप से जोड़ते हुए नहीं देखते। एक ही उदाहरण लिखा गया है जहां पर उसके चेलों ने उससे इस विषय में पूछा, वह उदाहरण है यूहन्ना 9 में। उन्होंने यीशु से पूछा, *"हे रब्बी, किसने पाप किया था कि यह अंधा जन्मा, इस मनुष्य ने या इसके माता-पिता ने? यीशु ने उत्तर दिया, न तो इसने पाप किया था, न इसके माता-पिता ने; परंतु यह इसलिए हुआ, कि परमेश्वर के काम उसमें प्रगट हों।"*

चंगाई करने से केवल एक ही पाप यीशु को रोकता था, वह था अविश्वास का पाप (मरकुस 6:5, 6)।

लागूकरण

1) हमें प्रत्येक बीमारी का सम्बंध व्यक्ति के जीवन के किसी पाप से नहीं जोड़ना चाहिए (**उदाहरण:** अंधा मनुष्य - यूहन्ना 9:1-7)।

2) ऐसा समय होता है जब परमेश्वर पाप और उद्धार के विषय के साथ व्यवहार करने से पहले चंगा करता है (**उदाहरण:** बैतसैदा के झील के पास का व्यक्ति - यूहन्ना 5:1-14)।

3) ऐसा समय हो सकता है जब चंगाई प्रगट होने से पहले, परमेश्वर विशिष्ट तौर पर पहले पाप और उद्धार के विषय के साथ व्यवहार करने हेतु आपकी अगुवाई करेगा (**उदाहरण:** लकवे का मारा - मरकुस 2:1-12)। प्रभु के प्रति संवेदनशील रहें।

4) पाप के साथ व्यवहार करने से पहले यदि परमेश्वर चंगा करता है, तो आगे बढ़कर देखें कि वह व्यक्ति सब आश्चर्यकर्मों में सबसे बड़े आश्चर्यकर्म का अनुभव करता है, उद्धार का अनुभव। जहां आवश्यकता हो, व्यक्ति को चेतावनी दें कि वह पापमय जीवनशैली से दूर रहे।

वे पद्धतियां जिनका यीशु ने उपयोग किया

चंगाई और छुटकारे की सेवा करने हेतु यीशु ने किसी विशिष्ट प्रक्रिया या पद्धती का उपयोग नहीं किया। उसने पिता को जो करते देखा वही किया (यूहन्ना 5:19)।

सुसमाचारों में, हम यीशु को विभिन्न तरीके से सेवा करते हुए देखते हैं:

- हाथों को रखना
- आज्ञा का वचन
- हाथों को रखना और आज्ञा का वचन
- बीमार लोगों ने यीशु को स्पर्श किया
- उसने लोगों को विश्वास में कार्य करने हेतु प्रेरित किया : जाकर झील में धो लो, उठकर चलो, आदि।
- उसने छुटकारे के द्वारा चंगाई की सेवा की। मत्ती 9:32, 33 (गूंगा); 12:22 (अंधा और गूंगा) 17:15-18 (पागलपन और आत्महत्या की प्रवृत्तियां) लूका 13:10-13 (कुबड़ापन)।
- **असामान्य पद्धतियां:** थूकना, गीली मिट्‌टी, कानों में उंगली, जीभ को छूना, मरकुस 7:33; मरकुस 8:23; यूहन्ना 9:6, 7।
- उसने दूर से चंगा किया।
- उसने घोषित किया कि काम पूरा हो गया है और व्यक्ति को विश्वास के साथ जाने को कहा।
- उसने तेल से अभिषेक करने हेतु शिष्यों को भेजा।
- अन्य पद्धतियां हमारे लिए लिखी नहीं गई हैं (यूहन्ना 21:25)।

लागूकरण

1) चंगाई और छुटकारे की सेवा प्रदान करने हेतु हम खुद को पहचानते हैं और अत्यंत सामान्य तरीके से खुद को तैयार करते हैं। जब हम सेवा करते हैं, तब हम हमारे लिए उपलब्ध सामान्य तरीकों में से किसी एक का उपयोग करते हैं।

2) परंतु, हम पवित्र आत्मा द्वारा प्रभु के मार्गदर्शन के प्रति संवेदनशील रहते हैं और हम भिन्न तरीके से कामों को करते हैं जब वह हमें ऐसा करने हेतु मार्गदर्शन करता है।

3) हम किसी एक पद्धति या प्रक्रिया पर ध्यान नहीं लगाते। हम स्मरण करते हैं कि चंगाई और छुटकारा प्रभु की ओर से आते हैं, सेवा करने हेतु उपयोग की जाने वाली पद्धति या प्रक्रिया के कारण नहीं। भले ही हम किसी विशिष्ट पद्धति का बार-बार उपयोग करते हुए सहज महसूस करते हैं, फिर भी हम प्रभु पर आंखें लगाना और उसकी अगुवाई के प्रति अधीन रहना सीखते हैं।

4) हम लोगों को सिखाते हैं कि वे पद्धति या प्रक्रिया पर ध्यान न लगाएं, परंतु प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व पर ध्यान लगाएं। वह चंगाईकर्ता है। हमें सावधान रहना है कि हम उस पद्धति या प्रक्रिया को जिसका परमेश्वर विशिष्ट समय में उपयोग करता है, मूर्ति का स्वरूप न दें (**उदाहरणः** पीतल का सांप जिसका उपयोग मूसा के समय में गिनती की पुस्तक 21:9 में लोगों को चंगाई प्रदान करने हेतु किया गया था, वह बाद में उपासना का विषय बन गया - 2 राजा 18:4)।

अलौकिक चंगाई का स्वरूप

जब कभी यीशु ने चंगाई और छुटकारा दिया, तब हम देखते हैं कि जो आश्चर्यकर्म हुए वेः

- **तुरंतः** आश्चर्यकर्म वहीं और तुरंत हुए
- **सम्पूर्णः** व्यक्ति ने पूर्ण रूप से चंगाई और छुटकारा पाया
- **प्रमाणित करने योग्यः** लोग जांचकर देख सकते थे कि आश्चर्यकर्म वास्तविक थे
- **परमेश्वर की महिमा की, मनुष्य की नहींः** ध्यान परमेश्वर पर था

यही हमारा मानक है जिसे हमें हासिल करना चाहिए। हम जानते हैं कि जब हम सेवा करते हैं, तब हम हमेशा ऐसे परिणामों को देखते हैं। परंतु हमें यह देखने के लिए आगे बढ़ना है। परंतु जब तक हम वहां नहीं आ पहुंचते, तब तक हम उस प्रत्येक छोटी प्रगति का उत्सव मनाते हैं।

5
सेवकाई का रहस्य यीशु द्वारा जैसे दिखाया गया है

सेवकाई की चार महत्वपूर्ण 'कुंजियां' या 'रहस्य' हैं जैसे प्रभु यीशु ने वह दिखाया।

1) क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य के आधार पर सेवा करना
2) क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य के आधार पर सेवा करना
3) प्रभुता और अधिकार के स्थान से सेवा करना
4) आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ के द्वारा सेवा करना

पिछले अध्यायों में हमने इन पर अध्ययन किया, और हम मुख्य क्षेत्रों के रूप में इन बातों पर ज़ोर देना चाहते हैं जिनमें हमें बढ़ने की और सेवा करने की ज़रूरत है। इन बातों में हमारी जड़ें जितनी गहरी होंगी, उतना ही इनके विषय में हमारा यकीन दृढ़ होगा, और इनके विषय में हमारी समझ जितनी स्पष्ट होगी, उतना सामर्थी वह कार्य होगा जो हमारे द्वारा किया जाएगा।

कुंजी 1 घनिष्ठता और आज्ञाकारिता से प्रेरित होकर सेवा करना

हमने इससे पहले के अध्याय में पाया है कि प्रभु यीशु मसीह किस प्रकार पिता के साथ निकट सहभागिता में चलता था। वह पिता की पूर्ण आज्ञाकारिता में चलता था। उसने वही किया जो उसने पिता को करते देखा, और वही सिखाया जो उसने पिता से सीखा।

घनिष्ठता, आज्ञाकारिता और फलदायकता को अलग नहीं किया जा सकता।

घनिष्ठता का अर्थ है घनिष्ठ सहभागिता में हम उसमें और वह हम में बने रहने के स्थान में होना। प्रभु हमें घनिष्ठता के इस स्थान में बुलाता है।

यूहन्ना 15:4,5,7
4 तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुममें; जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
5 मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।
7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुममें बनी रहें तो जो चाहो मांगो, और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।

आराधना और प्रार्थना में उसकी उपस्थिति में उसके साथ समय बिताने के द्वारा घनिष्ठता का विकास होता है। जब हम उसके वचन को हमें और हमारे जीवनों के प्रत्येक क्षेत्र को भर देने का मौका देते हैं तब हम निकट सहभागिता में बढ़ते जाते हैं। हम हर बात में उसके वचन के अधीन रहते हैं। घनिष्ठता का विकास तब होता है जब हम उसकी आज्ञा में चलते और उन कामों को करते हैं जिनसे उसे प्रसन्नता होती है।

यूहन्ना 15:9,10
9 जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैंने तुमसे प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे पेम में बने रहोगे; जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।

सच्ची आज्ञाकारिता घनिष्ठता (प्रेम और भक्ति) की अभिव्यक्ति है।

यूहन्ना 14:15
"यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।

यूहन्ना 15:14
जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो।

आज्ञाकारिता परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते की अभिव्यक्ति है। हम उससे प्रेम करते हैं, हम उसके मित्र हैं, इसलिए हम उसकी आज्ञा मानते हैं। जब हम प्रभु यीशु से प्रेम करते हैं, तब आज्ञाकारिता जीवन का सामान्य मार्ग होगा।

यूहन्ना 14:21

जिसके पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूंगा, और अपने आपको उस पर प्रगट करूंगा।

यूहन्ना 14:23

यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे।

जब हम आज्ञाकारिता में चलते हैं, तब वह हमारे रिश्ते को और गहरे स्तर पर ले जाता है।

आज्ञाकारिता उसके प्रेम को (*"मैं उससे प्रेम करूंगा"*), उसके गहरे प्रकाशन को (*"अपने आपको उस पर प्रगट करूंगा"*) और उसके साथ गहरी नज़दीकी को (*"उसके साथ वास करेंगे"*) जन्म देती है।

घनिष्ठता और आज्ञाकारिता में हमारा आचरण एक आजीवन यात्रा है। उसका सम्बंध पिछले सप्ताह हमने जो कुछ अनुभव किया उससे नहीं है, भले ही हमने उसकी उपस्थिति में बड़ा अनुभव पाया हो। वहीं पर हम आज हैं, वहीं पर हम अभी हैं। जैसे जैसे समय बढ़ता जाता है, वैसे वैसे क्या हम प्रभु के साथ हमारे रिश्ते में मित्रता, निकटता, प्रेम और आज्ञाकारिता के प्रत्येक स्तर पर बढ़ते जाते हैं?

चंगाई और छुटकारे की सेवा में परमेश्वर द्वारा बहुतायत से उपयोग किए गए परमेश्वर के एक जन, जॉन जी. लेक ने कहा है।

"चंगाई मूल तौर पर एक आत्मिक बात है। बीमार को चंगा करने वाली सामर्थ परमेश्वर के द्वारा आपकी आत्मा के माध्यम से, आपके हाथ से उस स्त्री या पुरुष में आती है। यदि आपकी आत्मिक सहभागिता सही प्रकार की है, तो आपको परमेश्वर के निकट सामर्थ मिलेगी, और इससे वंचित नहीं रहा जा सकता।"

"यह सच है, कि जब हम प्रभु के साथ सही संगति और सहभागिता में होते हैं, तो सारे अधोलोक में भी इतनी सामर्थ नहीं होती कि हमारी छोटी उंगली को भी रोग से पीड़ित कर सकें।"

[जॉन जी. लेक के उपदेश, गॉर्डन लिंडसे द्वारा संपादित, क्राइस्ट फॉर द नेशन्स द्वारा प्रकाशित]

कुंजी 2 क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य के आधार पर सेवा करना

मती 8:16,17

16 जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया;
17 ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो,

"उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया
और हमारी बीमारियों को उठा लिया।"

प्रभु यीशु ने क्रूस पर जाने से पहले ही पापों की क्षमा की, लोगों को चंगा किया और छुड़ाया। प्रभु यीशु क्रूस पर जो कुछ संपादित करने वाला था उसके आधार पर उसने सेवा की। क्रूस पर पूरा किया गया उसका कार्य जो कुकुछ उपलब्ध कराने वाला था उसके आधार पर उसने उन सभों को जो बीमार थे चंगा किया और दुष्टात्माओं को निकाला। क्रूस पर उसकी वास्तविक मृत्यु से पहले जो कुछ उसने किया वह क्रूस पर उसके द्वारा किए कार्य के लाभों का पूर्ण स्वाद था।

जब हम बीमारी और रोग का सामना करते हैं और दुष्टात्माओं का मुकाबला करते हैं, तब हमें क्रूस पर मसीह द्वारा पूरा किए गए काम के आधार पर ऐसा करना है। पाप, रोग, और शैतान सभी के साथ क्रूस पर व्यवहार किया गया। पाप का दाम चुकाया गया, रोग हटाया गया और शैतान को पराजित किया गया। इस पूरे किए गए कार्य के आधार पर हम सेवा करते हैं कार्य पूरा हो गया है। बचा यह है कि उसे हमें विश्वास से ग्रहण करना है और उसमें चलना है।

कुंजी 3 प्रभुता और अधिकार के स्थान से सेवा करना

यीशु किसी भी दुष्टात्मा से या किसी प्रकार के रोग से नहीं डरता था। वह कभी आगे-पीछे नहीं सोचता था, परंतु चंगाई और छुटकारा प्रदान करते समय प्रभुता और अधिकार के साथ कार्य करता था। वह दुष्टात्मा, रोग और मृत्यु पर अधिकारी के रूप में चलता था। वह जानता था कि ये हारे हुए शत्रु हैं। उसने याचना नहीं की झुका नहीं, बिनती नहीं की, शिकायत नहीं की, रोग या दुष्टात्माओं की सामर्थ से डरा नहीं। जब परिस्थिति बिगड़ती गई, जैसा कि हम याईर की बेटी के मामले में देखते हैं कि जब याईर और यीशु मार्ग पर ही थे, तब याईर की बेटी मर गई। यीशु ने केवल इतना कहा, मत डर, केवल विश्वास कर। दुष्टात्माओं ने जब यीशु को आते देखा, तब वे दुबककर छिप गए। उन्होंने उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचाना जिसके पास उन पर पूर्ण प्रभुता और अधिकार था। दुष्टात्माएं चिल्लाने लगीं, *"हे यीशु नासरी, हमें आपसे क्या काम? क्या आप हमें नाश करने आए हैं? मैं आपको जानता हूं कि आप कौन हैं? आप परमेश्वर के पवित्र जन हैं"* (लूका 4:34)। गिरासेनियो के देश का वह व्यक्ति जो दुष्टात्माओं की सेना से पीड़ित था, इतना भयानक था कि कोई उसे रोक नहीं सकता था। उसने जब यीशु को देखा, तब वह उसके पास दौड़कर आया और झुककर उसे दण्डवत किया (मरकुस 5:6)। जब लोगों ने उस प्रभुता को देखा जिससे यीशु दुष्टात्माओं को डांटता था, तब उन्होंने कहा, *"यह कैसा वचन है? क्योंकि वह अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं"* (लूका 4:36)।

प्रभु यीशु ने हमें अधिकार दिया है, *"देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी"* (लूका 10:19)। हमें भी प्रभुता और अधिकार के स्थान से सेवा करना है। हमें उस अधिकार को जानने की और उस में भरोसा रखने की ज़रूरत है जो मसीह में हमारा है।

रोग या बीमारी की दशा या दुष्टात्माओं के उत्पीड़न को देखकर हमें अपने हृदय में भयभीत नहीं होना है। हमें प्रतिघात या प्रतिशोध से डरना

नहीं चाहिए। भय हमें निर्बल करता है। भय विश्वास के विरुद्ध है और भय द्वार खोलता है। उसने प्रतिज्ञा की है कि हमें कुछ भी किसी रीति से हानि नहीं पहुंचाएगा। *"हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; परंतु जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है, और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता"* (1 यूहन्ना 5:18)। हमें विश्वास के साथ काम करना है, उस अधिकार और प्रभुता का भरोसा रखते हुए काम करना है जो यीशु के सामर्थी नाम में हमें मिला है।

कुंजी 4 आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ से सेवा करना

हमने पिछले अध्यायों में इस बात पर ज़ोर दिया है कि चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय यीशु पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ काम करता था। उसके गवाह बनने हेतु उसने पवित्र आत्मा की उसी सामर्थ की हमें प्रतिज्ञा की है। पवित्र आत्मा सर्वशक्तिमान है! पवित्र आत्मा सृजनहार है (भजन संहिता 104:30)। पवित्र आत्मा जीवन देता है (अय्यूब 33:4)। पवित्र आत्मा हमारे मरणहार शरीरों को जिलाता है (रोमियों 8:11)। चंगाई और छुटकारा लाने हेतु पवित्र आत्मा की सामर्थ हमारे द्वारा बहती है।

लोगों को स्वस्थ करने हेतु हमारे पास विश्वास होना चाहिए और हम उसकी उपस्थिति और सामर्थ पर निर्भर रहें।

6
रोग और चंगाई के सम्बंध में सामान्य प्रश्नों के उत्तर

पवित्र शास्त्र में कई परिच्छेद हैं जिन्हें अक्सर गलत समझा जाता है और बीमारी को और अन्य दुष्टात्माओं के कामों को सहने के आधार के रूप में उपयोग किया जाता है। इस अध्याय में, हम इन विषयों में से कुछ का अवलोकन करेंगे और इन्हें समझने हेतु अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे। हमें यह बात ध्यान में रखना है कि सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र को बाकी पवित्र शास्त्र के प्रकाश में और यीशु मसीह के व्यक्तित्व के प्रकाश में देखा जाना चाहिए। परमेश्वर के विषय में हम जो कुछ जानते हैं उसका सम्बंध उस परमेश्वर के द्वारा जो देहधारी हुआ, अर्थात यीशु के द्वारा जो देखा और सुना है, उससे पंक्तिबद्ध होना चाहिए। परमेश्वर के विषय में जो समझने का हम दावा करते हैं जो यीशु ने जो कही गई और की बई बातों के अनुरूप नहीं हैं, उस पर सवाल किया जा सकता है और उसे त्याग दिया जा सकता है। यीशु मसीह सिद्ध ईश्वरविज्ञान है, वह वचन जो देहधारी हुआ।

पौलुस का कांटा

2 कुरिन्थियों 12:7-10

7 और इसलिए कि मैं प्रकाशों की बहुतायत से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूसे मारे, ताकि मैं फूल न जाऊं।
8 इसके विषय में मैंने प्रभु से तीन बार बिनती की कि मुझ से यह दूर हो जाए।
9 और उसने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे।
10 इस कारण मैं मसीह के लिए निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में और उपद्रवों में, और संकटों में, प्रसन्न हूं; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं।

प्रेरित पौलुस ने सचमुच बहुतायत के प्रकाशन पाए थे। उसके कई व्यक्तिगत अनुभवों, परमेश्वर की मुलाकातों और तीसरे स्वर्ग पर उठा लिए जाने के अलावा, पौलुस ने नए नियम के अधिकतर प्रकाशन को समझा और लिखा। कहीं पौलुस घमण्ड से फूल न जाए, इसलिए परमेश्वर ने उसके "शरीर में कांटे" की अनुमति दी। अब कई लोग तर्क करते हैं कि "शरीर का यह कांटा" क्या था। कुछ कहते हैं कि वह कोई रोग था, आंख की समस्या, हाथ की समस्या। परंतु प्रेरित कहता है कि वह शैतान का एक दूत (यूनानी *एन्जोलॉस* - दूत) था। पौलुस स्पष्ट रूप से बताता है कि उसके शरीर का कांटा शैतान का दूत था। ग्रीक भाषा में संदेश देने वाले के लिए उसी शब्द का उपयोग किया जाता है जो दूत के लिए होता है, और उदाहरण के तौर पर, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के दूसरे और तीसरे अध्याय में "कलीसिया के दूत" के लिए उपयोग किया गया है, जब प्रभु ने प्रत्येक कलीसिया को सम्बोधित किया। शैतान का दूत एक आत्मिक जीव था जो निरंतर पौलुस की सेवकाई में उसका विरोध कर रहा था और उसे "घुसे मार रहा था" (बार-बार वार कर रहा था)। पिछले अध्याय में, पौलुस ने उन कई मुश्किलों, विपत्ति, और निर्बलता का वर्णन किया जो उसने सही। उसने इस प्रकार कहा, *"क्या वे ही मसीह के सेवक हैं? मैं पागल की नाईं कहता हूं। मैं उनसे बढ़कर हूं! अधिक परिश्रम करने में; बार बार कैद होने में; कोड़े खाने में; बार बार मृत्यु के जोखिमों में। पांच बार मैंने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाए। तीन बार मैंने बेंतें खाईं; एक बार पत्थरवाह किया गया; तीन बार जहाज जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात दिन मैंने समुद्र में काटा। मैं बार बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जातिवालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों में के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठ भाइयों के बीच जोखिमों में। परिश्रम और कष्ट में; बार बार जागते रहने में; भूख-पियास में; बार बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में"* (2 कुरिन्थियों 11:23-27)।

यद्यपि इनमें से कुछ विपत्तियां स्वयं उसने खुद पर ली थीं, परंतु इनमें से कई उन कार्यों के विरोध में आयीं जो वह कर रहा था। ये सारी

बातें उसे "जमीन पर बनाए रखने" के लिए थीं, यह जानते हुए विनम्रता में चलने में उसकी सहायता करने के लिए थी कि उसे प्रभु पर निर्भर रहना था। पौलुस ने तीन बार प्रार्थना की कि यह दुष्ट जीव उससे दूर कर दिया जाए। ऐसी परिस्थिति में, परमेश्वर ने शैतान के इस दूत को हटाया नहीं। बल्कि, उसने पौलुस से कहा कि वह उसके अनुग्रह पर निर्भर रहे, आगे बढ़ता रहे और जो कुछ यह शैतानी जीव कर रहा था उस पर जय पाते चले जाए। इसलिए पौलुस समझ गया कि उसके निर्बलता के क्षणों में भी उसे मजबूत बनाए रखने हेतु परमेश्वर का अनुग्रह काफी था।

विश्वासी होने के नाते आज हम में से किसी ने बहुतायत के ऐसे प्रकाशन नहीं पाए हैं। हमें पौलुस के समान उपयोग नहीं किया गया है कि हमें "शरीर में कांटे का" सौभाग्य दिया जाए, हमें विनम्र बनाए रखने के लिए शैतान का दूत घूसे मारे। इसके अतिरिक्त, हमारा यह कहना कि हमारा रोग "शरीर में कांटा" है जो महान आत्मिक उद्देश्य से हमें दिया गया है, पवित्र शास्त्र के विपरीत और खुद को बढ़ावा देने वाला है। हमें रोग के साथ शैतान के काम के रूप में लड़ना है जिसे हमारे शरीरों पर कोई अधिकार नहीं है।

अय्यूब की मुश्किलें

अय्यूब 1:12
तब शैतान यहोवा के सामने से चला गया।

अय्यूब 2:6,7
6 यहोवा ने शैतान से कहा, "सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।"
7 तब शैतान यहोवा के सामने से निकला, और अय्यूब को पांव के तलवे से ले सिर की चोटी तक बड़े बड़े फोड़ों से पीड़ित किया।

अय्यूब 2:10
इन सब बातों में भी अय्यूब ने अपने मुंह से कोई पाप नहीं किया।

अय्यूब 3:25
क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूं, वही मुझ पर आ पड़ती है, और जिस बात से मैं भय खाता हूं वही मुझ पर आ जाती है।

अय्यूब 42:10
जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा दुःख दूर किया, और जितना अय्यूब का पहले था, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया।

याकूब 5:11
देखो, हम धीरज धरनेवालों को धन्य कहते हैं। तुमने अय्यूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती है।

अय्यूब पर और उसके परिवार पर वार करने वाला शैतान था, जिसने उस पर सब प्रकार की विपत्तियां और रोग लाया (अय्यूब 1:12; 2:7)। शैतान द्वारा किए गए कामों के लिए हम परमेश्वर पर दोष नहीं लगा सकते। यह सच है कि परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब को छूने की अनुमति दी जो अन्यथा परमेश्वर की सुरक्षा में था क्योंकि परमेश्वर ने "उसके चारों ओर बाड़ा बांधा था" (अय्यूब 1:10)। परंतु सारी विपत्तियों को लाने वाला शैतान ही था, जिसने मौसम और प्रकृति के तत्वों का भी उपयोग किया था।

आज हमारी दुनिया में, शैतान और उसकी दुष्टात्माओं को उनके बुरे शैतानी कामों को करने की अनुमति है। सामान्य तौर पर, परमेश्वर शैतान और दुष्टात्माओं को परीक्षाओं, रुकावटों और अन्य बाधाओं के साथ विश्वासियों के विरोध में आने से नहीं रोकता। हम सभी इस प्रकार की बातों का सामना करते हैं। परमेश्वर इन बातों की उन लोगों के विरोध में भी अनुमति देता है जो उसमें विश्वास करते हैं। परमेश्वर इनका उपयोग हमारे प्रशिक्षण और मसीह की समानता में परिपक्वता लाने के भाग के रूप में करता है। वह हमें अच्छी कुश्ती लड़ने, शैतान का सामना करने, अन्धःकार की शक्तियों के विरोध में कुश्ती लड़ने, हर अग्नीमय तीरों को बुझाने, और विजयी जीवन जीने के लिए बुलाता है। विश्वासी होने के नाते हम ईश्वरीय सुरक्षा का लाभ पा सकते हैं (भजन संहिता 34:7; भजन संहिता 91; यशायाह 54:17; 1 यूहन्ना 5:18) या भय, संदेह या अनाज्ञाकारिता की वजह से खुद को शैतान के हमलों के सामने संवेदनशील बना देते हैं जिन्हें अन्यथा हम पर हावी नहीं होना चाहिए। परमेश्वर ने शत्रु पर विजयी

होने के लिए हमें हर प्रकार का हथियार दिया है (इफिसियों 6:10-18), ऐसा कुछ जिसके विषय में ज़रूरी नहीं की अय्यूब समझता था। इन सब के प्रकाश में जो अय्यूब के विपरीत, हमारे पास नए नियम में है, हमें सचमुच ज़रूरत नहीं है कि शैतान हम पर जय पाए, भले ही उसकी सेनाएं हम पर धावा क्यों न बोल दें।

जो कुछ भी हुआ था उनके मध्य, अय्यूब अपनी खराई में और प्रभु के प्रति विश्वास में बना रहा। वह परमेश्वर के प्रति उसकी भक्ति में दृढ़ रहा। यह जानते हुए कि प्रभु सचमुच करूणामय और दयालू है, हमें अय्यूब के धीरज का अनुकरण करना है, और वह अंततः सारी बातों को हमारे लिए भलाई में बदल देगा। अय्यूब का एक और पहलू है, वह बहुत डरता था कि कहीं इस प्रकार की विपत्ति उस पर न आए और वह आई। भय विरुद्ध दिशा में विश्वास है। वह गलत बातों को हमारे जीवनों में आकर्षित करता है। परमेश्वर की संतानों के रूप में, हम ऐसे डर के बिना रहना सीख सकते हैं, और बल्कि विश्वास पर निर्भर रहें।

शैतान के हाथों में सौंपना

1 कुरिन्थियों 5:1-5

1 यहां तक सुनने में आता है कि तुममें व्यभिचार होता है, वरन् ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता, कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है।
2 और तुम शोक तो नहीं करते, जिससे ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड करते हो।
3 मैं तो शरीर के भाव से दूर था, परन्तु आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर, मानो उपस्थिति की दशा में ऐसा काम करनेवाले के विषय में यह आज्ञा दे चुका हूं,
4 कि जब तुम, और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य, हमारे प्रभु यीशु के नाम से,
5 शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए।

1 तीमुथियुस 1:20

उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैंने शैतान को सौंप दिया, कि वे निन्दा करना न सीखें।

2 तीमुथियुस 2:17-18
17 और उनका वचन सड़े घाव के समान फैलता जाएगा; हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं,
18 जो यह कहकर कि पुनरुत्थान हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और कितनों के विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं।

2 तीमुथियुस 4:14-15
14 सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराइयां की हैं, प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार बदला देगा।
15 तू भी उससे सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया।

केवल दो उदाहरणों में प्रेरित पौलुस किसी को शैतान के हाथों में सौंपने का उल्लेख करता है। कुरिन्थुस की कलीसिया में, उसका सम्बंध उस पुरुष की सजा से था जो अनैतिकता में जी रहा था, जो प्रारम्भ में पश्चाताप नहीं करता प्रतीत हो रहा था। पौलुस चाहता था कि इस व्यक्ति को कुछ समय के लिए स्थानीय मण्डली से दूर कर दिया जाए (1 कुरिन्थियों 5:13) और शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंप दिया जाए, ताकि उसकी आत्मा बचाई जा सके। हम मानते हैं कि पौलुस अपने प्रेरित के अधिकार का उपयोग कर रहा है और पश्चाताप रहित पापी आचरण के लिए सजा दे रहा है। इस व्यक्ति को स्थानीय कलीसिया से निकाल दिया जा रहा है, एक अर्थ से भौतिक रूप से, उसी तरह आत्मिक रूप से। *"ऐसे जन के लिए यह दण्ड जो भाइयों में से बहुतों ने दिया, बहुत है। इसलिए इससे यह भला है कि उसका अपराध क्षमा करो; और शान्ति दो, न हो कि ऐसा मनुष्य बहुत उदासी में डूब जाए। इस कारण मैं तुमसे बिनती करता हूं कि उसको अपने प्रेम का प्रमाण दो"* (2 कुरिन्थियों 2:6-8)। इस व्यक्ति को वास्तव में कोई शारीरिक हानि हुई या नहीं इस विषय में हमारे पास कोई लेख नहीं है। बहरहाल, ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत दुख मनाया गया और सच्चा पश्चाताप हुआ, जिससे पौलुस स्वयं लिखता है: *"जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो, उसे मैं भी क्षमा करता हूं, क्योंकि मैंने भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह में होकर क्षमा किया है"* (2 कुरिन्थियों 2:10)।

दूसरे उदाहरण का सम्बंध इफिसुस की कलीसिया के दो विद्रोही पुरुषों से है, हुमिनयुस और सिकन्दर। हुमिनयुस निंदा कर रहा था, शायद पौलुस की और मसीह से सम्बंधित सत्य की, और इस झूठी शिक्षा का प्रचार कर रहा था कि पुनरूत्थान हो चुका है, और कुछ लोगों को विश्वास से दूर ले जा रहा था। सिकन्दर वह व्यक्ति प्रतीत होता है जिसने पौलुस का विरोध किया, उसने ऐसी बातें कहीं जिनसे पौलुस की बहुत हानि हुई। दोनों मामलों में, इन लोगों को कलीसिया से हटाने के लिए और उन्हें शैतान के हाथों में सौंपने के लिए पौलुस ने प्रेरित के अपने अधिकार का उपयोग किया। पौलुस के हृदय को जानकर ऐसा इस उद्देश्य से किया गया होगा कि ये लोग पश्चाताप करें और सत्य से समझौता कर लें। परंतु इस मामले में परिणाम के विषय में हमारे पास कोई लेख नहीं है।

यह सच है कि जब व्यक्ति अनाज्ञाकारिता, विद्रोह और परमेश्वर की सीमाओं से बाहर रहता है, तब वह शैतान के लिए संवेदनशील बन जाता है। परंतु विश्वासियों के नाते, हमें इस बात से भयभीत होने की ज़रूरत नहीं है कि हमें शैतान के हाथों में सौंपा जाएगा, क्योंकि हम परमेश्वर में आगे बढ़ते हैं, उससे दूर नहीं होते।

कुरिन्थुस की कलीसिया - कई कमज़ोर, कई रोगी, और कई समय से पहले मर जाते हैं

1 कुरिन्थियों 11:17-34

17 परन्तु यह आज्ञा देते हुए, मैं तुम्हें नहीं सराहता, इसलिए कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि होती है।

18 क्योंकि पहले तो मैं यह सुनता हूं, कि जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो, तो तुममें फूट होती है और मैं कुछ कुछ प्रतीति भी करता हूं।

19 क्योंकि विधर्म भी तुममें अवश्य होंगे, इसलिए कि जो लोग तुममें खरे निकले हैं, वे प्रगट हो जाएं।

20 इसलिए तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह प्रभु भोज खाने के लिए नहीं।

21 क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहले अपना भोज खा लेता है, इसलिए कोई तो भूखा रहता है, और कोई मतवाला हो जाता है।

22 क्या खाने पीने के लिए तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिन के पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो? मैं तुमसे क्या कहूं? मैं प्रशंसा नहीं करता।
23 क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची, और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी, कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली,
24 और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है; मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।"
25 इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटौरा भी लिया, और कहा, "यह कटौरा मेरे लोहू में नई वाचा है; जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।"
26 क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटौरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।
27 इसलिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटौरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा।
28 इसलिए मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटौरे में से पीए।
29 क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।
30 इसी कारण तुममें बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।
31 यदि हम अपने आप को जांचते, तो दण्ड न पाते।
32 परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।
33 इसलिए, हे मेरे भाइयो, जब तुम खाने के लिए इकट्ठे होते हो, तो एक दूसरे के लिए ठहरा करो।
34 यदि कोई भूखा हो, तो अपने घर में खा ले जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो; और शेष बातों को मैं आकर ठीक कर दूंगा।

यद्यपि कुरिन्थुस की कलीसिया लोगों का अत्यंत आत्मिक समूह थी, फिर भी उसमें कई समस्याएं थीं जिन्हें सम्बोधित करना आवश्यक था, नैतिक मानदंड के क्षेत्र में, कलीसिया की सभाओं में आचरण के सम्बंध में, और संयुक्त समुदाय के रूप में एक साथ रहते हुए। इसका एक भाग था प्रभु भोज का उत्सव मनाते समय उनका आचरण। इसके साथ आदरपूर्ण व्यवहार करने के बजाय और आत्मिक अर्थ के साथ ऐसा करने के बजाय, यह कलीसिया की सभा में उत्सव मनाने का, खाने और पीने का समय बन

गया था। उन्होंने इसे एक साथ उत्सव मनाने के समय में बदल दिया था, जो वे घर में कर सकते थे ऐसा पौलुस का कहना था। प्रभु का उद्देश्य यह था कि यह बड़े आदर का और उसकी मृत्यु, पुनरूत्थान, और जल्द ही लौटने की घोषणा का समय हो, परंतु वह दोपहर के भोजन के उत्सव में बदल गया था!

परिणामस्वरूप, मसीह के क्रूस के लाभों, आशीषों और सामर्थ को अनुभव करने के बजाय, उसके विपरीत ये कुरिन्थुस वासी पवित्र मेज का अनादर करने के द्वारा, परमेश्वर के दण्ड के लिए खुद को सौंप रहे थे। परिणामस्वरूप, चंगाई, छुटकारा और स्वास्थ्य आदि क्रूस के लाभों को प्राप्त करने के बजाए, कई बीमार और निर्बल हो रहे थे और समय से पहले मर रहे थे।

जिस उद्देश्य से प्रभु की मेज दी गई थी, वह यह था कि हम इस पवित्र उत्सव में प्रभु की मृत्यु का प्रचार करें और इस प्रकार यीशु मसीह के क्रूस की पूर्ण आशीषों को अनुभव करें। यह परमेश्वर की योजना और इच्छा है। यह परमेश्वर की इच्छा है। उसके लोगों के लिए उसका उद्देश्य यह नहीं है कि वे निर्बल और बीमार हों, और समय से पहले मर जाएं।

परंतु स्पष्ट रूप से जो पवित्र था उसका अनादर करने के द्वारा और अपने खुद के जीवन का परीक्षण करने पर और प्रभु की देह को पहचानने पर अपना मन लगाने के बजाए उसे उत्सव मनाने का समय बनाने के द्वारा, हम परमेश्वर की नियोजित आशीषों को प्राप्त करने से चूक जाते हैं और उसके बजाए परमेश्वर की सुरक्षा से बाहर निकलकर खुद को निर्बलता, बीमारी, और असमय मृत्यु के सामने निर्बल कर देते हैं। हम परमेश्वर के न्याय के व्यवहार को (अ) दैवीय सुरक्षा के हटा लिए जाने और (ब) लोगों का ध्यान आकर्षित करने हेतु परमेश्वर द्वारा इन बातों की अनुमति या उपयोग (निर्बलता, रोग और असमय मृत्यु) के रूप में समझते हैं, ताकि हमें सही मार्ग पर लाया जा सके। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है, परंतु जब हम परमेश्वर की योजना से बाहर कदम निकालते हैं, अनाज्ञाकारिता में

चलते हैं तब ऐसा ही होता है। यदि हम खुद को जांचें और आज्ञाकारिता में चलें, तो हम इनसे बच सकते हैं।

विश्वासियों के नाते आज, प्रभु की मेज में गलत तरीके से सहभागी होने के कारण हमें निर्बलता, रोग और असमय मृत्यु से नहीं डरना है, केवल इसलिए क्योंकि हमें उसे सही रीति से करना सिखाया गया है। जितनी बार हम प्रभु की मेज में सहभागी होते हैं, उतनी बार क्या करना चाहिए यह हम जानते हैं। यह नहीं कि छोटी सी गलती के लिए परमेश्वर हम पर न्याय उण्डेलने का इंतजार करता है! बल्कि जितनी बार हम प्रभु की मेज में शामिल होते हैं, उतनी बार हम उसके हृदय को आनंदित करते हैं और शत्रु की छावनी में डर उत्पन्न करते हैं!

तीमुथियुस का पेट

1 तीमुथियुस 5:23

भविष्य में केवल जल ही का पीनेवाला न रह, पर अपने पेट के और अपने बार बार बीमार होने के कारण थोड़ा थोड़ा दाखरस भी काम में लाया कर।

इस वचन से स्पष्ट है कि तीमुथियुस को बार-बार पेट की समस्या थी और शायद अन्य शारीरिक तकलीफें भी थीं जो बार-बार आती थीं। ऐसा इफिसुस को आने के बाद उसके साथ होने लगा या ये समस्याएं पहले ही लम्बे समय से उसके साथ थीं, यह ज्ञात नहीं है। उसी तरह, यह ज्ञात नहीं है कि तीमुथियुस के जीवन में ये समस्याएं केवल थोड़े समय के लिए थी या ये समस्याएं लगातार होती रही थीं। अतः इस विषय में किसी भी प्रकार की टिप्पणियां मात्र अनुमान होगा। हम केवल यह जानते हैं कि तीमुथियुस इफिसुस की कलीसिया की अगुवाई करता था और इन रोगों के कारण उसकी सेवकाई रुकी नहीं।

प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस की पेट की समस्या के लिए उसके दाखरस के उपयोग की सिफारिश की क्योंकि उसमें औषधीय मूल्य पाया जाता है। अतः हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्राकृतिक और चिकित्सीय उपाचारों का उपयोग करना उचित है, साथ ही साथ अपना हृदय प्रभु के प्रति समर्पित रखें।

हिज्किय्याह का रोग

2 राजाओं 20:1-7

1 उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि मरने पर था, और आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता ने उसके पास जाकर कहा, यहोवा यों कहता है, कि अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे; क्योंकि तू नहीं बचेगा, मर जाएगा।
2 तब उसने भीत की ओर मुंह फेर, यहोवा से प्रार्थना करके कहा, हे यहोवा!
3 मैं बिनती करता हूं, स्मरण कर, कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलता आया हूं; और जो तुझे अच्छा लगता है वही मैं करता आया हूं। तब हिजकिय्याह बिलक बिलककर रोया।
4 और ऐसा हुआ कि यशायाह नगर के बीच तक जाने भी न पाया था कि यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा,
5 कि लौटकर मेरी प्रजा के प्रधान हिजकिय्याह से कह, कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैंने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं, देख, मैं तुझे चंगा करता हूं; परसों तू यहोवा के भवन में जा सकेगा।
6 और मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा। और अश्शूर के राजा के हाथ से तुझे और इस नगर को बचाऊंगा, और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करूंगा।
7 तब यशायाह ने कहा, अंजीरों की एक टिकिया लो। जब उन्होंने उसे लेकर फोड़े पर बान्धा, तब वह चंगा हो गया।

यशायाह 38:21

यशायाह ने कहा था, अंजीरों की एक टिकिया बनाकर हिजकिय्याह के फोड़े पर बान्धी जाए, तब वह बचेगा।

राजा हिज्किय्याह बीमार था और मृत्यु के निकट था। भविष्यद्वक्ता से चेतावनी पाकर, हिज्किय्याह प्रभु की ओर फिरता है और प्रार्थना करता है, परमेश्वर राजा की प्रार्थना सुनता है और भविष्यद्वक्ता के द्वारा लोगों को यह निर्देश देता है कि वे अंजीरों की टिकिया बनाकर उसे फोड़े पर लगाए (कुछ संस्करणों में अल्सर पढ़ते हैं)। हिज्किय्याह चंगा हो जाता है तथा और पंद्रह वर्षों तक जीवित रहता है।

स्पष्ट रूप से परमेश्वर अंजीरों की टिकिया के उपयोग के बगैर हिज्किय्याह को चंगा कर सकता था। अंजीरों से बनी टिकिया में फोड़े के

लिए कोई चंगाई या औषधीय गुण था या नहीं, यह निश्चित नहीं है। उसमें चिकित्सीय मूल्य हो या ना हो, हम यह निश्चित कह सकते हैं कि परमेश्वर प्राकृतिक तत्वों के उपयोग के विरोध में नहीं है जिसके द्वारा उसकी चंगाई व्यक्ति को प्राप्त हो सकती है।

त्रुफिमुस को बीमार छोड़ा

2 तीमुथियुस 4:20

इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया, और त्रुफिमुस को मैंने मीलेतुस में बीमार छोड़ा है।

त्रुफिमुस ऐसा जन था जो आत्मा की सामर्थ में सेवा करता था और जहां उसने सेवा की वहां कई स्थानों में उसने अद्‌भुत चंगाइयों, आश्चर्यकर्मों, चिन्हों और अद्‌भुत कार्यों को होते देखा। परंतु, वह फिर भी यह कहते हुए लिखता है कि रोम के लिए निकलने से पहले, उसने अपनी टीम के सदस्यों में से एक को, त्रुफिमुस को मीलेतुस में छोड़ दिया (पेरितों के काम 20:4,15)।

यद्यपि स्वयं पौलुस ने सिद्ध परिणामों को नहीं देखा, फिर भी वह आत्मा के कार्य, चंगाइयों, आश्चर्यकर्मों, आत्मा के वरदानों, चिन्हों और अद्‌भुत कार्यों पर अविश्वास नहीं करता। वस्तुतः, अपनी पत्रियों में वह इन विषयों पर निश्चयात्मक रूप से लिखता है।

हम नहीं जानते कि त्रुफिमुस के साथ वास्तव में क्या हुआ। हम नहीं जानते कि यह अस्थायी रोग था जिससे वह तुरंत चंगा हुआ या नहीं। बहरहाल, हम कबूल करते हैं कि हमारे पास हमेशा ही उत्तर नहीं होते। फिर भी हम प्रभु के कार्य में आगे बढ़ते जाते हैं, आत्मा की सामर्थ में सेवा करते हैं, जैसे पौलुस ने की।

इपफ्रुदीतुस - मसीह के कार्य के लिए मृत्यु के निकट पहुंचा

फिलिप्पियों 2:25-30

25 परंतु मैंने इपफ्रुदीतुस को जो मेरा भाई, और सहकर्मी और संगी योद्धा और तुम्हारा दूत, और आवश्यक बातों में मेरी सेवा टहल करनेवाला है, तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा।

26 क्योंकि उसका मन तुम सब में लगा हुआ था, इस कारण वह व्याकुल रहता था क्योंकि तुमने उसकी बीमारी का हाल सुना था।
27 और निश्चय वह बीमार तो हो गया था, यहां तक कि मरने पर था, परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की; और केवल उस ही पर नहीं, पर मुझ पर भी कि मुझे शोक पर शोक न हो।
28 इसलिए मैंने उसे भेजने का और भी यत्न किया कि तुम उससे फिर भेंट करके आनन्दित हो जाओ और मेरा भी शोक घट जाए।
29 इसलिए तुम प्रभु में उससे बहुत आनन्द के साथ भेंट करना, और ऐसों का आदर किया करना।
30 क्योंकि वह मसीह के काम के लिए अपने प्राणों पर जोखिम उठाकर मरने के निकट हो गया था, ताकि जो घटी तुम्हारी ओर से मेरी सेवा में हुई, उसे पूरा करे।

फिलिप्पियों 4:18
मेरे पास सब कुछ है, वरन् बहुतायत से भी है। जो वस्तुएं तुमने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूं, वह तो सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है।

फिलिप्पियों 1:22-24
22 पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिए लाभदायक है, तो मैं नहीं जानता कि किसको चुनूं।
23 क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है।
24 परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है।

पौलुस रोम की कैद में था। इपफ्रुदीतुस को फिलिप्पी की कलीसिया द्वारा प्रेरित की सेवा के लिए भेजा गया था जो कि कैद में था। प्रेरित पौलुस की सेवा करते समय, इपफ्रुदीतुस ने इतना अधिक परिश्रम किया कि वह मरने पर आ गया, उसने अपने जीवन की परवाह नहीं की। उसने जो सेवा की उसका निश्चित स्वरूप और उसने कितना परिश्रम किया यह हम नहीं जानते। परंतु यह ध्यान देना पर्याप्त है कि प्रभु की सेवा करने की प्रक्रिया में वह रोगी बन गया और मरने पर पहुंच गया। परमेश्वर की दया से उसका जीवन बच गया और इपफ्रुदीतुस जीवित रहा।

हम मसीही सेवा में हैं और प्रभु की और उसके लोगों की सेवा कर रहे हैं इसलिए, हमें हमारा उत्तम स्वास्थ्य होगा और हमारे पास बल होगा ऐसा आश्वासन हमारे पास नहीं है। हमारे स्वास्थ्य का ध्यान रखने की हमारी ज़िम्मेदारी के भाग के रूप में जो करना ज़रूरी है वह हमें भी करने की ज़रूरत है। यह सम्भव है कि हम आवश्यकता से अधिक काम करें और इस प्रक्रिया में मरने का खतरा मोल लें।

मसीह के कार्य के निमित्त मरने तक काम करते रहना उत्तम प्रतीत हो सकता है, परंतु यह कुछ अनावश्यक और लाभरहित है। हम मरने के बजाए, यहां पर पृथ्वी पर जीवित रहते हुए परमेश्वर के लिए, उसके राज्य के लिए और उसके लोगों के लिए अधिक उपयोगी हैं। अर्थात, यहां से चले जाना और मसीह के साथ रहना अधिक बेहतर है। परंतु, उसकी कलीसिया और उसके राज्य के निमित्त, बेहतर है कि हम हमारे स्वास्थ्य का ध्यान रखें, लम्बे समय तक जीवित रहें, स्वस्थ और फलदायक जीवन बिताएं।

क्या बीमारी प्रभु की ताड़ना है?

1 कुरिन्थियों 11:28-32

28 इसलिए मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटौरे में से पीए।
29 क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।
30 इसी कारण तुममें बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।
31 यदि हम अपने आप को जांचते, तो दण्ड न पाते।
32 परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।

इब्रानियों 12:5-11

5 और तुम उस उपदेश को जो तुमको पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़।
6 क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।

[7] तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो। परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?
[8] यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे!
[9] फिर जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो क्या हम आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें, जिससे जीवित रहें।
[10] वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए ताड़ना करते थे, परंतु यह तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं।
[11] और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, परंतु शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।

प्रकाशितवाक्य 3:19
मैं जिन जिन से प्रीति रखता हूं, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूं, इसलिए सरगर्म हो, और मन फिरा।

भजन संहिता 103:10-13
[10] उसने हमारे पापों के अनुसार हमसे व्यवहार नही किया, और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हम को बदला दिया है।
[11] जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है, वैसे ही उसकी करुणा उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है।
[12] उदयाचल अस्ताचल से जितना दूर है, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है।
[13] जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।

यदि हमारे बच्चे कुछ गलत करते हैं तो हममें से कितने ऐसे लोग हैं जो उन पर किसी प्रकार का रोग भेजकर, उन्हें किसी प्रकार की दुर्घटना में डालकर, उन्हें बीमारी के बिछौने पर डालकर, या उन्हें कैंसर देकर या अन्य कोई निर्बल करने वाली या जानलेवा बीमारी देकर सुधारना चाहेंगे और क्या सही है और उचित है यह सिखाना चाहेंगे? मुझे लगता है यह कहना सुरक्षित है कि हम में से कोई भी ऐसा नहीं करेगा! हम में से अधिकतर लोग अपने बच्चे के साथ सख्ती से बातें करेंगे, कभी-कभी उन्हें एक दो बार पीटेंगे और फिर शायद उनके कुछ अधिकारों को उनसे छीन लेंगे। यदि

बच्चे बड़े हैं, जहां पर उन्हें पीटना उचित नहीं है, तो हम बैठकर उनके साथ बहस करते हैं और उन्हें समझाने का प्रयास करते हैं ताकि क्या सही है वह उन्हें सिखा सकें। यदि हम बुरे होकर जानते हैं कि अपने बच्चों के साथ इस तरह कैसे व्यवहार करें, तो हमारा स्वर्गीय पिता अपने बच्चों के साथ कितना अधिक बेहतर तरीके से व्यवहार करेगा, ताकि प्रेम के साथ उन्हें सुधार सके, निर्देश दे, सिखाए और उनके जीवनों के लिए क्या उत्तम है उस ओर उनका मार्गदर्शन कर सकें।

प्रभु की ताड़ना के विषय को अक्सर गलत समझा जाता है और गलत तरीके से पेश किया जाता है। लोग बीमार होते हैं, और उसके बाद दावा करते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें रोगी कर दिया ताकि उन्हें गंभीर आत्मिक पाठ सिखा सकें। हम सहमत हैं कि संसारिक माता-पिता भी उनके बच्चों के साथ ऐसा नहीं करेंगे, जब हम परमेश्वर पर ऐसे काम करने का आरोप लगाते हैं, तो हम उसे हमारे संसारिक माता-पिता से भी बुरा बनाते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक विश्वासी को लीजिए जो बीमार पड़ता है और उसे कुछ दिन (या सप्ताह) बिछौने पर बिताना पड़ता है। बिछौने पर पड़े-पड़े, उसके पास करने के लिए कुछ नहीं होता, और वह मसीही विश्वासी उत्तम मसीही पुस्तकें पढ़ने लगता है, या कई प्रवचन सुनने लगता है और इनके द्वारा आत्मिक समझ प्राप्त करता है और आत्मिक तौर पर मजबूती महसूस करता है। उचित समय में, विश्वासी वापस स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है। अत्यंत आम स्पष्टीकरण जो हम सुनते हैं वह यह है कि परमेश्वर ने इस व्यक्ति को इसलिए बीमार किया कि उसे आत्मिक तौर मजबूत बना सके और उसे विशिष्ट आत्मिक पाठ सिखा सके। मेरा तर्क यह है, पहले हम परमेश्वर को ऐसे काम करने का दोष लगा रहे हैं जो हम माता-पिता होने के नाते खुद नहीं करेंगे, और परमेश्वर को हमसे अधिक बुरा बनाते हैं। दूसरी बात, यदि उस विश्वासी ने उत्तम स्वास्थ्य में रहते हुए यदि उन्हीं पुस्तकों को पढ़ा होता और उन्हीं प्रवचनों को सुना होता, तो वह इन्हीं आत्मिक पाठों को सीख सकता था।

"ताड़ना" यह शब्द ग्रीक भाषा में "chasten" है जिसका अर्थ है *"बालक को प्रशिक्षण देना, अर्थात उसे शिक्षा देना, या अनुशासित करना (सजा के*

द्वारा)" "निर्देश देना, सीखना, सिखाना" (स्ट्रांग कॉन्कर्डन्स)। इस शब्द का अनुवाद "पढ़ाई गई" भी किया गया है (प्रेरितों के काम 7:22) क्योंकि *"मूसा को मिसियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह सब बातों में और कामों में सामर्थी था।"* इस शब्द का अनुवाद *"सिखाया गया"* किया गया है (प्रेरितों के काम 22:3) जहां पर पौलुस उल्लेख करता है कि वह गमलीएल द्वारा सिखाया गया था। *"मैं तो यहूदी मनुष्य हूं, जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा; परन्तु इस नगर में गमलीएल के पांवों के पास बैठकर पढ़ाया गया, और बापदादों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया; और परमेश्वर के लिए ऐसी धुन लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो। इसी शब्द का उल्लेख शारीरिक पिटाई के लिए भी किया गया है"* (लूका 23:16,22), यीशु में कोई दोष न पाकर पीलातुस ने यीशु को पिटवाकर छोड़ देने का प्रस्ताव रखा, इस आशा से कि वह यहूदियों को प्रसन्न करेगा। सो ताड़ना का सम्बंध कभी-कभी सिखाने (सीखने, प्रशिक्षण, शिक्षा), सुधार और कभी-कभी सजा से होता है। ताड़ना का मूल उद्‌देश्य कुछ सीखने हेतु व्यक्ति की सहायता करना है। उसका उद्‌देश्य शिक्षा है, विनाश नहीं। विशिष्ट तौर पर, ताड़ना का सम्बंध बच्चे को प्रशिक्षण देने से है और अतः ऐसे कार्य से सम्बंध रखता है जो प्रेम के कारण किया गया है, क्रोध से नहीं। सामान्य तौर पर, ताड़ना का सम्बंध प्रेम के साथ बालक को सिखाने, सुधारने और सजा देने से है, और केवल चरम परिस्थितियों में।

सामान्य तौर पर ताड़ना का सम्बंध प्रेम के साथ बालक को सिखाने, सुधारने और सजा देने से है, और केवल चरम परिस्थितियों में।

इब्रानियों 12 प्रभु की ताड़ना के उद्‌देश्य का वर्णन करता है जो हमें पवित्रता और धार्मिकता की शिक्षा देना है। इसलिए अब, हमारे प्रारम्भिक प्रश्न की ओरः क्या कोई संसारिक माता-पिता हैं जो अपने बच्चों को सही कार्य करना सिखाने के लिए बीमारी और रोग का उपयोग करेंगे? नहीं! उसी तरह, हमारा पिता जो कि अत्यंत महान पिता है, सनातन प्रेमी स्वर्गीय पिता है, अपने बच्चों को प्रतिदिन के जीवन के सामान्य व्यवहार के लिए ताड़ना देने हेतु उन्हें बीमार नहीं करेगा। हमारे जीवनों में अपने अनुशासन

को लाने के लिए परमेश्वर अपने वचन, अपने आत्मा और अन्य विश्वासियों की सहभागिता का उपयोग करेगा।

हमने इस अध्याय में पहले कुरिन्थुस की कलीसिया के विषय में चर्चा की है, जहां वे पूर्णतया अव्यवस्थित थे और पवित्र सहभागिता के बजाय उत्सव मनाने के लिए प्रभु भोज की मेज का अनादर करते थे। उनके मामले में जो हुआ, वह यह है कि अनाज्ञाकारिता के द्वारा उन्होंने चंगाई, स्वास्थ्य और सम्पूर्णता की आशीष को खो दिया और उसके बदले खुद को निर्बलता, रोग और मृत्यु के प्रति संवेदनशील बना दिया। उन्हें प्रभु भोज ग्रहण करने की सही पद्धति की ओर वापस लाने हेतु उसके दैवीय अनुशासनात्मक व्यवहार के भाग के रूप में परमेश्वर ने इन बातों की अनुमति दी। परंतु विश्वासी होने के नाते यह प्रभु का सामान्य अनुशासनात्मक व्यवहार नहीं था, परंतु दैवीय दण्ड का मामला था। इन सबके प्रकाश में पवित्र शास्त्र परमेश्वर के स्वभाव के विषय में और परमेश्वर के कार्य के विषय में जो यीशु मसीह के व्यक्तित्व में प्रगट किया गया है, प्रभु के साथ चलने वाले विश्वासी के लिए यह कहना गलत है कि प्रभु उसे कोई रोग देकर ताड़ना दे रहा है।

क्या विश्वास और औषधी को एक साथ जोड़ना उचित है?

राजा हिज्किय्याह और तीमुथियुस के उदाहरणों को देखकर, हम विश्वास करते हैं कि विश्वास और औषधी को एक साथ जोड़ने में कुछ गलत नहीं है। परमेश्वर ने हमें ज्ञान, तकनीक और प्राकृतिक संसाधन आदि सामग्री सौंपी है जिसका उपयोग हमें उसके उद्देश्यों के लिए और उसकी महिमा के लिए करना है। हम जानते हैं कि चंगा करना और लोगों को ठीक करना परमेश्वर का उद्देश्य है। इसलिए हम उन संसाधनों का उपयोग करने से पीछे नहीं हटते जो परमेश्वर ने हमें चंगाई लाने के लिए दिए हैं।

जब हम औषधी देते हैं या चिकित्सीय सहायता पाते हैं, तब हमारी आंखें चंगाई और उपचार लाने हेतु प्रभु पर लगी होती हैं। चंगाई के लिए उसके वचन में और उसकी सामर्थ में हमारा विश्वास अंततः उसकी ओर से आता है।

क्या आपके स्वास्थ्य की देखभाल करना अविश्वास का चिन्ह है?

इपफ्रुदीतुस से एक सबक हम सीख सकते हैं जो यह है कि मसीही सेवकाई में प्रभु की और उसके लोगों की सेवा करते हुए जब हम अपना कार्य करते हैं, तब हमें ज़िम्मेदार रहकर अपने स्वास्थ्य की भी देखभाल करना है। अन्यथा हमारे अपने शरीरों की उपेक्षा करने की सम्भावना है और हमें जो काम सौंपा गया है उसे पूरा किए बगैर असमय मृत्यु का खतरा हम मोल लेते हैं। जबकि हम चंगाई, स्वास्थ्य, और सम्पूर्णता के लिए प्रभु की ओर देखते हैं, हमारी ज़िम्मेदारी के भाग के रूप में हमारे लिए अपने स्वास्थ्य की देखभाल करना आवश्यक है। उत्तम स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए जो हमारे लिए उपलब्ध है और जिसे हम आसानी से पा सकते हैं उसे करने की हमें ज़रूरत है। उदाहरण के तौर पर, हम में से कुछ लोग नियमित रूप से (उदाहरण के तौर पर, वार्षिक) स्वास्थ्य जांच करा सकते हैं, अपने खानपान का ध्यान रख सकते हैं, व्यायाम कर सकते हैं आदि। जहां आवश्यक हो, डॉक्टर्स द्वारा बताए गए रोकथाम के उपाय अपनाएं। ये अविश्वास के चिन्ह नहीं होंगे, बल्कि उत्तम भण्डारीपन की अभिव्यक्ति होगी। चंगाई और स्वास्थ्य के लिए हमारा विश्वास प्रभु में है।

7
चंगाई की सेवा करने हेतु व्यवहारिक दिशा-निर्देश

चंगाई की सेवा करने के तरीके

हम कई तरह से रोगी व्यक्ति को सेवा दे सकते हैं। हमें हर बार कोई निश्चित तरीका या प्रक्रिया में उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है। हम जो करने का प्रयास करते हैं वह है पवित्र शास्त्र में वर्णन किए गए चंगाई की सेवा प्रदान करने के कई मार्गों से परिचित होना। किसी भी रीति से सेवा करने हेतु किसी भी समय तैयार रहें। प्रभु के प्रति संवेदनशील रहें और आपके हृदय में चंगाई करने हेतु जो भी तरीका आप पाते हैं उसका उपयोग करें।

स्मरण रखें, कि चंगाई उस पद्धति में नहीं है, परंतु व्यक्ति में है। यीशु चंगाईकर्ता है। चंगाई इसलिए नहीं होती क्योंकि हमने सबकुछ सही किया। चंगाई बीमार व्यक्ति में प्रवाहित होने वाली सामर्थ के कारण होती है जो उन्हें चंगा करती है।

याद रखें कि इनकी चर्चा केवल सेवा के लिए तैयार करने के दृष्टिकोण से की गई है, इन्हें इस तरह से अलग नहीं किया गया है कि यदि हम एक पद्धति का उपयोग करते हैं तो उसे दूसरी पद्धति से न जोड़ें। वास्तव में, सेवकाई के दौरान हम विशिष्ट तौर पर चंगाई की सेवा करने हेतु इन पद्धतियों को एक साथ उपयोग करेंगे।

उसी तरह ध्यान में रखें कि यद्यपि हम यहां पर विशिष्ट तौर पर शारीरिक चंगाई की चर्चा कर रहे हैं, वास्तव में, ऐसी परिस्थितियां होंगी जब हम भौतिक चंगाई, छुटकारा और आंतरिक चंगाई प्रदान करेंगे, तब सब कुछ एक साथ प्रवाहित होगा। फिर से यहां पर कोई विशिष्ट क्रम नहीं है जिसके अनुसार यह किया जाए। कभी-कभी - हम छुटकारे से आरम्भ कर सकते हैं, उसके बाद शारीरिक चंगाई और तत्पश्चात आंतरिक चंगाई

की सेवा कर सकते हैं। अन्य समयों में हो सकता है कि परमेश्वर भिन्न रूप से हमारी अगुवाई करे। उसी तरह यह भी ध्यान में रखें कि जबकि हम भौतिक चंगाई की सेवकाई करते हैं, उसी समय परमेश्वर व्यक्ति के जीवन में छुटकारा और आंतरिक चंगाई ला सकता है। जब लोग परमेश्वर के स्पर्श का अनुभव करते हैं तब उनके व्यक्तित्व में जो कुछ होता है उसका हमें हमेशा ही ज्ञान नहीं होता।

यहां पर हम संक्षिप्त रूप से चंगाई प्रदान करने/प्राप्त करने के वे कई तरीके प्रस्तुत कर रहे हैं जो पवित्र शास्त्र में देखे जाते हैं।

परमेश्वर में व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा

परमेश्वर ने यह घोषणा की है कि उसका वचन हमारे सम्पूर्ण शरीर के लिए औषधी है (नीतिवचन 4:20-22)। इसलिए परमेश्वर के वचन में मनन करने के द्वारा और उसके वचन से जन्मे विश्वास का उपयोग करके कोई भी चंगाई पा सकता है (रोमियों 10:17)। जब विश्वास उस वचन के साथ मिला होता है जो हम पाते हैं, तब परमेश्वर की सामर्थ चंगाई का आश्चर्यकर्म करने हेतु मुक्त होती है।

विश्वास का नियम इस तरह बयान किया जाता है - तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो (मत्ती 9:29)। हमारे हृदयों में जो विश्वास है उसे जब हम मुक्त करेंगे तब हम हमेशा प्राप्त करेंगे। परमेश्वर ने इसी नियम को निर्धारित किया है।

आप अपनी चंगाई के लिए परमेश्वर पर विश्वास रख सकते हैं। उदाहरणः लहू बहने वाली स्त्री (मत्ती 9:22), दो अन्धे मनुष्य मत्ती 9:22-30), दस कोढ़ियों में से एक (लूका 17:11-19), यरीहो के बाहर का अन्धा व्यक्ति (लूका 18:35-42)।

- विश्वास करना और बोलना (मत्ती 17:20, मरकुस 11:23, रोमियों 10:9,10)। हम हृदयों से विश्वास करते हैं और अपने मुंह से अंगिकार करते हैं। इस एक तरह से विश्वास अभिव्यक्त किया जाता है।
- विश्वास करना और अपने विश्वास के अनुसार कार्य करना।

दूसरों के लिए विश्वास का उपयोग करना

किसी और की चंगाई के लिए भी हम परमेश्वर में विश्वास कर सकते हैं। उदाहरण : रोमी सुबेदार ने उसके सेवक के लिए (मत्ती 8:10-13), कनानी स्त्री ने उसकी बेटी के लिए (मत्ती 15:28), पतरस और यूहन्ना ने मंदिर के द्वार के पास बैठे लंगड़े व्यक्ति के लिए (प्रेरितों के काम 3:16) विश्वास किया।

जहां दो या तीन एक साथ विश्वास करते हैं वहां परमेश्वर में परस्पर विश्वास हो सकता है। उदाहरण : चार मित्र और उनका लकवा पीड़ित मित्र (मत्ती 9:2), विश्वास की प्रार्थना करने वाले प्राचीनों का समूह (याकूब 5:14-15)।

हम किसी और के लिए परमेश्वर में सामुहिक विश्वास भी रख सकते हैं, जहां बड़ी संख्या में लोग एक साथ मिलकर आश्चर्यकर्म के लिए विश्वास करते हैं। उदाहरणः पौलुस को जब पत्थरवाह किया गया और उसे मरने के लिए छोड़ दिया गया था उसके बाद चेले उसके पास इकट्ठा हुए (पेरितों के काम 14:19-20)।

सहमति की प्रार्थना के द्वारा

मती 18:18-20

18 मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कुछ तुम पृथ्वी पर बान्धोगे, वह स्वर्ग में बान्धा जाएगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खोला जाएगा।
19 फिर मैं तुम से कहता हूं कि यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन के होकर मांगे, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उनके लिए हो जाएगी।
20 क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।

कभी-कभी जब हम समूह में सेवा करते हैं, तब हम प्रार्थना कर सकते हैं और/या शैतान जो कर रहा है उसे बांधने हेतु और शत्रु ने उस व्यक्ति के जीवन में जो समस्या लाई है उससे मुक्त करने हेतु अपने अधिकार का उपयोग कर सकते हैं। हम ऐसा आपस में सहमत या एक मन होकर करते हैं और अपने विश्वास को मुक्त करते हैं और परमेश्वर द्वारा दिए गए अपने

अधिकार का उपयोग करते हैं। एकचित्तता या सहमति में सामर्थ होती है और इसका सामर्थी प्रभाव होता है।

विश्वास की प्रार्थना के द्वारा

याकूब 5:14,15

14 यदि तुममें कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिए प्रार्थना करें।

15 और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप भी किए हों, तो उनकी भी क्षमा हो जाएगी।

मती 21:22

और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुमको मिलेगा।

यूहन्ना 14:14

यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।

पेरितों के काम 28:8

पुबलियुस का पिता ज्वर और आंव लोहू से रोगी पड़ा था। इसलिए पौलुस ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की, और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया।

याकूब की पत्री के ये वचन कलीसिया के प्राचीनों (आत्मिक अगुवों) को बुलाहट देते हैं कि वे बीमार व्यक्ति के लिए विश्वास की प्रार्थना करें। ऐसा प्रभु यीशु के नाम में और अभिषेक के तेल के साथ किया जाता है।

सभी विश्वासी किसी के चंगा होने के लिए विश्वास की प्रार्थना कर सकते हैं। इसलिए हमें विश्वास की प्रार्थना को प्राचीनों तक सीमित नहीं करना है। चंगाई इसलिए होती है क्योंकि हम प्रभु यीशु मसीह के नाम में विश्वास की प्रार्थना करते हैं।

आज्ञा के वचन के द्वारा

मती 8:16

जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।

लूका 4:38,39
38 वह आराधनालय में से उठकर शमौन के घर में गया और शमौन की सास को ज्वर चढ़ा हुआ था, और उन्होंने उसके लिए बिनती की।
39 उसने उसके निकट खड़े होकर ज्वर को डांटा और वह उस पर से उतर गया और वह तुरन्त उठकर उनकी सेवा टहल करने लगी।

मती 17:20
उसने उनसे कहा, तुम्हारे अविश्वास के कारण; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कहोगे कि 'यहां से सरक कर वहां चला जा', तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए असम्भव न होगी।

जैसे हम यीशु को करते देखते हैं, हम बीमारी को आज्ञा का वचन कहते हैं और दुष्टात्मा को आज्ञा देते हैं कि वह चला जाए। यीशु ने बुखार को डांटा और वह चला गया। उसी तरह, हम बीमारी या रोग को डांटते हैं और उसे यीशु के सामर्थी नाम में चले जाने की आज्ञा देते हैं। ऐसा हम अपने हृदय में विश्वास के साथ करते हैं। यीशु ने कहा कि यदि हमारे पास विश्वास है और यदि हम पहाड़ को हट जाने की आज्ञा देते हैं, तो वह हट जाएगा और कुछ भी असम्भव न होगा। जब व्यक्ति हमारे सामने होता है तब या जब व्यक्ति हमसे दूर भौगोलिक दृष्टि से भिन्न स्थान में होता भी है तब हम आज्ञा का वचन बोलकर बीमारी और रोग को डांटते हैं। आत्मिक क्षेत्र में वास्तव में कोई 'अंतर' नहीं होता।

हाथों को रखने के द्वारा (तेल लगाने के साथ, आज्ञा के वचन के साथ)

मती 8:3
तब यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ, और कहा, मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा। और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया।

मती 8:15
उसने उसका हाथ छूआ और उसका ज्वर उतर गया; और वह उठकर उसकी सेवा करने लगी।

मती 9:29
तब उसने उनकी आंखें छूकर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो।

मती 20:34
यीशु ने तरस खाकर उनकी आंखों को स्पर्श किया। वे तुरन्त देखने लगे और उसके पीछे हो लिए।

मरकुस 6:12-13
12 और उन्होंने जाकर प्रचार किया कि मन फिराओ।
13 और बहुतेरे दुष्टात्माओं को निकाला, और बहुत बीमारों पर तेल मलकर उन्हें चंगा किया।

मरकुस 7:32-35
32 और लोगों ने एक बहरे को जो हकलाता भी था, उसके पास लाकर उससे बिनती की कि वह अपना हाथ उस पर रखे।
33 तब वह उसको भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उंगलियां उसके कानों में डाली और थूक कर उसकी जीभ को छूआ।
34 और स्वर्ग की ओर देखकर उसने आह भरी, और उससे कहा, इप्फत्तह, अर्थात् खुल जा।
35 और उसके कान खुल गए, और उसकी जीभ की गांठ भी खुल गई और वह साफ साफ बोलने लगा।

लूका 4:40
सूरज डूबते समय जिन जिन के यहां लोग विभिन्न प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आए, और उसने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।

लूका 13:13
तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।

मरकुस 16:17,18
17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे,
18 और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।

हाथों को रखने के द्वारा रोगी की चंगाई के लिए सेवा करने का आम तरीका है। हम रोगी व्यक्ति पर हाथ रखते हैं और बीमारी को यीशु के

सामर्थी नाम में आज्ञा देते हैं कि वह चली जाए। हम अपेक्षा करते हैं कि पवित्र आत्मा की सामर्थ हाथों को रखने के द्वारा प्राप्त हो।

हाथों को रखने के द्वारा चंगाई की सेवा कई तरह से की जा सकती है, उदाहरण के तौर पर...

- यीशु के नाम में विश्वास की प्रार्थना के साथ हाथों को रखना
- हाथों को रखना और यीशु के नाम में आज्ञा का वचन देना
- विश्वास की प्रार्थना और तेल लगाने के साथ हाथों को रखना
- हाथों को रखना और प्रभु के नाम में तेल उण्डेलना (आवश्यक नहीं है कि मौखिक प्रार्थना की जाए)

जब लोगों पर हाथों को रखने के द्वारा उनकी सेवा की जाती है, तब वे आत्मा में 'गिर' भी सकते हैं और नहीं भी गिर सकते। जब लोगों पर हाथ रखे जाते हैं तब उनका सामर्थ की अधीनता में गिरना ज़रूरी नहीं है। यदि ऐसा नहीं होता, तो हम इसकी परवाह नहीं करते।

सामान्य तौर पर, हम शरीर के ऐसे स्थानों में हाथ रखते हैं जहां चंगाई पाने की ज़रूरत होती है। यह विशिष्ट बात है, यद्यपि ऐसा करना ज़रूरी नहीं है। कभी-कभी, जब पुरुष स्त्री के लिए प्रार्थना करता है, तब हम उस स्त्री से कह सकते हैं कि वह अपने शरीर के उस हिस्से पर हाथ रखे जो रोग से प्रभावित है, और उस समय पुरुष स्त्री के सिर पर हाथ रखता है।

जब बीमार आपको छूते हैं

मती 9:20
और देखो, एक स्त्री ने, जिसको बारह वर्ष से लोहू बहने की बीमारी थी, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया।

मती 14:36
और उससे बिनती करने लगे, वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छूने दे। और जितनों ने उसे छूआ, वे चंगे हो गए।

ऐसा समय होता है जब लोग हाथ बढ़ाकर हमें विश्वास से छू लेते हैं। उनका स्पर्श विश्वास का कार्य और परमेश्वर की सामर्थ के साथ उनका सम्पर्क है। ऐसा करने हेतु परमेश्वर उनका आदर करता है और वे उनकी चंगाई पा लेते हैं।

विश्वास की घोषणा के द्वारा

मती 8:13
और यीशु ने सूबेदार से कहा, जा, जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिए हो। और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया।।

मती 15:28
इस पर यीशु ने उसको उत्तर देकर कहा, हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है! जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो। और उसकी बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई।

यूहन्ना 4:50
यीशु ने उससे कहा, जा, तेरा पुत्र जीवित है। उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की, और चला गया।

यूहन्ना 5:8,9
8 **यीशु ने उससे कहा, उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर।**
9 **वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा।**

ऐसा समय होता है जब प्रभु व्यक्ति को यह बताने हेतु हमारी अगुवाई कर सकता है कि चंगाई हो गई है। प्रार्थना या आज्ञा का वचन होना ज़रूरी नहीं होता, या इन का संयोग हो सकता है। हम विश्वास और अधिकार के साथ घोषणा करते हैं कि कार्य हो गया है। परमेश्वर कार्य करता है। व्यक्ति देखता है कि चंगाई हो गई है।

विश्वास के अनुसार कार्य करने के द्वारा

मती 9:6,7
6 **परन्तु इसलिए कि तुम जान लो, कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है - उसने लकवे के मारे हुए से कहा, उठ, अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।**
7 **और वह उठकर अपने घर चला गया।**

मती 12:13
तब उसने उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा। उसने अपना हाथ बढ़ाया, और वह फिर दूसरे हाथ के समान अच्छा हो गया।

यूहन्ना 9:7
उससे कहा, जा, शीलोह के कुण्ड में धो ले। (जिसका अर्थ भेजा हुआ है) तब उसने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।

पेरितों के काम 3:6-8
6 तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूं: यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।
7 और उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसे उठाया, और तुरन्त उसके पांवों और टखनों में बल आ गया।
8 और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा, और चलता, और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया।

पेरितों के काम 14:8-10
8 लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पांवों का निर्बल था। वह जन्म ही से लंगड़ा था, और कभी न चला था।
9 वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था और इसने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा कि इसको चंगा हो जाने का विश्वास है।
10 और ऊंचे शब्द से कहा, अपने पांवों के बल सीधा खड़ा हो। तब वह उछलकर चलने फिरने लगा।

ऐसा समय होता है जब पवित्र आत्मा रोगी व्यक्ति को यह बताने हेतु हमारी अगुवाई कर सकता है कि वे अपने विश्वास पर कार्य करें। सामान्य तौर पर यह कुछ करने की शुरूवात करने हेतु उन्हें आज्ञा देना होता है जो वे अपनी बीमारी की वजह से नहीं कर पा रहे हैं। कभी-कभी जब वे ऐसा करने का प्रयास करते हैं तब हम आरंभ में उनकी सहायता कर सकते हैं। जब लोग अपने विश्वास के अनुसार कार्य करने लगते हैं, तब परमेश्वर की सामर्थ उन्हें स्वस्थ करती है। वे सीधे अपनी चंगाई में प्रवेश करते हैं।

जब लोग विश्वास के अनुसार चलते हैं

मती 9:20-22

[20] और देखो, एक स्त्री ने, जिसको बारह वर्ष से लोहू बहने की बीमारी थी, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया।

[21] क्योंकि वह अपने मन में कहती थी कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी, तो चंगी हो जाऊंगी।

[22] यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा, पुत्री! ढाढ़स बान्ध, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। और वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।

मरकुस 2:3-5

[3] और लोग एक लकवे के मारे हुए को चार मनुष्यों से उठवाकर उसके पास ले आए।

[4] परन्तु जब वे भीड़ के कारण उसके निकट न पहुंच सके, तो उन्होंने उस छत को जिसके नीचे वह था, खोल दिया, और जब उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर लकवे का मारा हुआ पड़ा था, लटका दिया।

[5] यीशु ने, उनका विश्वास देखकर, उस लकवे के मारे हुए से कहा, हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।

उसी तरह, लोग विश्वास में ऐसे काम कर सकते हैं जो उन्हें करने के लिए नहीं कहा गया है। जिस प्रकार लहू बहने वाली स्त्री ने भीड़ में से मार्ग निकाला और यीशु के वस्त्र की छोर को छू लिया। यह विश्वास का कार्य था। परमेश्वर ने इसे आदर दिया। वे चार पुरुष जो अपने लकवा पीड़ित मित्र को यीशु के पास ले आए, वे अपने विश्वास के अनुसार कार्य कर रहे थे। वे छत पर चढ़ गए और उन्होंने अपने मित्र को छत से नीचे उतार दिया। यीशु ने उनके विश्वास को देखा। उनका मित्र चंगा हो गया। विश्वास का उनका कार्य उनके और परमेश्वर के बीच कुछ है। परमेश्वर उनके हृदय को देखता है और उत्तर देता है।

आत्मा के वरदानों के द्वारा

1 कुरिन्थियों 12:7-11

[7] किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।

[8] क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें,

[9] और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है।
[10] फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख; और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना।
[11] परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है।

इब्रानियों 2:3,4
[3] तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिंत रहकर कैसे बच सकते हैं, जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ?
[4] और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, अद्भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।

परमेश्वर आत्मा के वरदानों के द्वारा चंगाई देता है। सामान्य तौर पर, यह चंगाइयों के वरदानों का, और ज्ञान के वचनों का कार्य होगा, कभी-कभी उनके साथ सामर्थ के काम और विश्वास का वरदान भी होता है। आत्मा के अन्य वरदान भी उसी समय कार्यरत हो सकते हैं। चंगाई और छुटकारे की सेवा होते समय ही बुद्धि का वचन हो सकता है, आत्माओं की परख या भविष्यद्वाणी भी हो सकती है।

लोगों की सेवा करते समय हमें इन बातों की इच्छा रखना है। ये वरदान मुक्त हों इसलिए हमें विश्वास में कदम बढ़ाना है। यह हमारी भूमिका है। सामान्य तौर पर परमेश्वर विश्वास में कदम बढ़ाने हेतु हमारी इच्छा और तैयारी का उत्तर देता है, और आत्मा के इन वरदानों को एक साथ भेजता है।

कभी-कभी ऐसा समय होता है जब ये वरदान उस समय मुक्त होते हैं जब वास्तव में किसी के पास बड़ा विश्वास नहीं होता या कोई कुछ बड़ा होने की अपेक्षा नहीं करता। न तो सेवा करने वाला और न ही सेवा पाने वाला बड़ा विश्वास रखता है, परंतु फिर भी इन वरदानों के प्रगट के कारण चंगाइयां, छुटकारा और आश्चयकर्म होते हैं। उदाहरण के तौर पर,

कोई अविश्वासी जो मात्र दर्शक के रूप में सभा में आता है, जिसे प्रभु यीशु मसीह का कोई ज्ञान होता और न ही उसमें विश्वास होता है, वह व्यक्ति सभा के दौरान ऐसे समय चंगाई का अद्भुत आश्चर्यकर्म प्राप्त कर सकता है जब वास्तव में न कोई उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता है और न ही उसे सेवा प्रदान करता है। उस व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करने हेतु और उसे मसीह के विश्वास में लाने हेतु यह परमेश्वर का सार्वभौम कार्य होगा।

अगले अध्याय में, हम आत्मा के वरदानों के साथ चंगाई और छुटकारे की सेवा के विषय में चर्चा करेंगे।

चंगाई के अभिषेक के द्वारा

लूका 5:17
और एक दिन ऐसा हुआ कि वह उपदेश दे रहा था, और फरीसी और व्यवस्थापक वहां बैठे हुए थे, जो गलील और यहूदिया के हर एक गांव से, और यरूश्लेम से आए थे; और चंगा करने के लिए प्रभु की सामर्थ उसके साथ थी।

लूका 6:19
और सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उसमें से सामर्थ निकलकर सब को चंगा करती थी।

लूका 8:46-47
46 परन्तु यीशु ने कहा, किसी ने मुझे छूआ है, क्योंकि मैंने जान लिया है कि मुझमें से सामर्थ निकली है।
47 जब स्त्री ने देखा कि मैं छिप नहीं सकती, तब कांपती हुई आयी, और उसके पांवों पर गिरकर सब लोगों के सामने बताया, कि उसने किस कारण से उसे छूआ, और वह कैसे तुरन्त चंगी हो गई।

अभिषेक पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ है। अभिषेक व्यक्ति को सामर्थ दे सकता है या परमेश्वर की सामर्थ प्रगट हो इसलिए विश्वासियों की मण्डली (सभा) में उपस्थित हो सकता है। प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा की सामर्थ से सेवकाई की (प्रेरितों के काम 10:38)। वही सामर्थ सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध है (प्रेरितों के काम 1:8) और इसलिए वह हम में से प्रवाहित हो सकती है, जैसे वह यीशु से बह निकली। चंगाई का अभिषेक पवित्र आत्मा की वह उपस्थिति और सामर्थ है जो चंगाई के होने

का कारण बनती है। जब यीशु ने सेवा की, तब लोगों को चंगा करने हेतु प्रभु की सामर्थ उपस्थित थी। चंगाई की सामर्थ (चंगाई का गुण या चंगाई का अभिषेक) उसमें से बह निकली और उसने उसे छूने वाले कई लोगों को चंगा किया।

जब हम चंगाई की सेवा करते हैं, तब हमें इच्छा रखना चाहिए और अपेक्षा रखना चाहिए कि पवित्र आत्मा की चंगाई की वही सामर्थ हमारे द्वारा भी प्रवाहित हो और बीमारों को चंगा करे। ऐसा समय होता है, जब हम चंगाई की इस सामर्थ के बहाव को जान सकते हैं (साकार रूप से अनुभव कर सकते हैं)। अन्य समयों में, हम कुछ महसूस नहीं करते और फिर भी हम यह जानते हुए विश्वास से सेवा करते हैं कि पवित्र आत्मा की सामर्थ हमारे द्वारा मुक्त की जा रही है।

विशेष अभिषेकों के द्वारा

प्रेरितों के काम 5:12-16

12 और प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, (और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।
13 परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उनमें जा मिले; तौभी लोग उनकी बड़ाई करते थे।
14 और विश्वास करनेवाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे);
15 यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए।
16 और यरूश्लेम के आस पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे।

ऐसा समय होता है जब व्यक्तियों के रूप में हम पर या सम्पूर्ण मंडली पर चंगाई का विशेष अभिषेक आता है। जब ऐसा होता है, तब कई असामान्य और असंख्य आश्चर्यकर्म अपने आप होने लगते हैं। पवित्र आत्मा उस समय जो करने की इच्छा रखता है उसके प्रति हमें संवेदनशील बनना है और इसे पहचानना है और उसके साथ आगे बढ़ना है, ताकि लोगों को छूआ जा

सके। ऐसे समयों मे हमें आत्मा के कार्य को बुझाना नहीं है क्योंकि परमेश्वर जानबूझकर किसी कारण से यह विशेष अभिषेक भेज रहा है।

"चंगाई का वातावरण," जहां किसी सभा पर चंगाई का अभिषेक वातावरण को भर देता है, ऐसे वातावरण को प्रार्थना, आराधना, विश्वास और प्रत्याशा के उच्च स्तर के द्वारा उत्पन्न किया जा सकता है। जबकि चंगाई के लिए वातावरण को तैयार करना सहायक और चाहनीय है, यह हमेशा सम्भव नहीं हो सकता, क्योंकि यीशु के समान, हमें प्रतिकूल वातावरण में सेवा करना पड़ सकता है। वातावरण जैसा भी हो परमेश्वर सामर्थ के साथ कार्य कर सकता है और इसलिए हमें हमेशा परमेश्वर के आत्मा के लिए तैयार और संवेदनशील रहना चाहिए।

पश्चाताप और पाप त्याग द्वारा

यूहन्ना 5:14
इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला, तब उसने उससे कहा, देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।

यूहन्ना 9:1-3
1 फिर जाते हुए उसने एक मनुष्य को देखा,जो जन्म का अन्धा था।
2 और उसके चेलों ने उससे पूछा, हे रब्बी, किसने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता-पिता ने?
3 यीशु ने उत्तर दिया, न तो उसने पाप किया था; न इसके माता-पिता ने; परन्तु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के काम उसमें प्रगट हों।

सभी बीमारियां व्यक्ति के व्यक्तिगत पाप का दर्शक नहीं होती, जैसा हम यूहन्ना 9 में उस व्यक्ति के सम्बंध में देखते हैं जो जन्म से अन्धा था। परंतु, यह हो सकता है कि उस व्यक्ति के जीवन में पाप होगा जिसने भौतिक बीमारी के लिए द्वार खोल दिया। यह सम्भव है कि यूहन्ना 5 का लंगड़ा व्यक्ति, किसी विशिष्ट पाप की वजह से लंगड़ेपन की दशा में आया। जब प्रभु ने उसे चंगा किया और उसे समझाया कि *"फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े,"* तो वह समझ गया

कि उसका अर्थ क्या है। ऐसा नहीं था कि वह कभी 'पाप' नहीं करेगा, परंतु यीशु उस पाप (या पापों) का उल्लेख कर रहा था जो उसे उस दशा में ले आया था। विचार करें कि यदि यूहन्ना 5 का वह लंगड़ा व्यक्ति जाकर पाप करता, तो क्या हुआ होता। जैसा कि यीशु ने कहा और "भारी विपत्ति" उसे क्लेशित करती। उसे चंगाई पाने और फिर स्वस्थ होने के लिए पश्चाताप करना पड़ता और उस पाप का त्याग करना पड़ता।

चंगाई की सेवा करते समय, प्रभु हमारा मार्गदर्शन कर सकता है कि जिस व्यक्ति की हम सेवा कर रहे हैं उसके जीवन के पाप के साथ पहले व्यवहार करें। उसके बाद हम बड़े प्रेमपूर्वक व्यक्ति से यह बात कहते हैं और उन्हें पश्चाताप की ओर उस पाप से सम्बंधित बातों को त्यागने की ओर प्रवृत्त करें। उस व्यक्ति ने अपने दिल में अक्षम्यता, घृणा, क्रोध और हृदय की अन्य गलत प्रवृत्तियां पाल रखी होगी, जिन्हें त्यागने की ज़रूरत हो सकती है। खास तौर पर, उस व्यक्ति को विशिष्ट जीवनशैली, पापमय आदतें, अशुद्ध आत्माओं को किया हुआ समर्पण त्यागने, दुष्टात्माओं के साथ सम्बंधों को रद्द करने और द्वारों/प्रवेशद्वारों को बंद करने कहते हैं।

छुटकारे के द्वारा

मती 9:32,33

32 जब वे बाहर जा रहे थे, तो देखो, लोग एक गूंगे को जिसमें दुष्टात्मा थी उसके पास लाए।

33 और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई तो गूंगा बोलने लगा, और भीड़ ने अचम्भा करके कहा, इसाएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया!

मती 12:22

तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिसमें दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए, और उसने उसे अच्छा किया। वह गूंगा बोलने और देखने लगा।

लूका 13:11-13

11 और देखो, एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी, और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी।

12 यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और कहा, हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से मुक्त हो गई।

[13] तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।

गौर करें कि उपर्युक्त उदाहरणों में हम दुष्टात्माओं की उपस्थिति के कारण अन्धेपन, बहिरेपन, गूंगेपन और कुबड़ेपन को देखते हैं। इससे यह सूचित नहीं होता कि हर एक अन्धापन, बहिरापन, गूंगापन या पीठ की समस्या निर्बलता की आत्मा के कारण है। कुछ अन्धापन दुर्घटना या अन्य कारणों से हो सकता है। हम परमेश्वर के आत्मा की सुनने की कोशिश करते हैं और उसकी अगुवाई का अनुसरण करते हैं। जब हम निश्चित नहीं जानते, तब हम चंगाई की सेवा करने हेतु आगे बढ़ते हैं और निर्बलता की आत्मा को सम्बोधित करते हैं जो उपस्थित हो सकती है। कई असाध्य रोग और शारीरिक रोग जिनका कारण अज्ञात है, सामान्य तौर पर निर्बलता की आत्मा के दर्शक होते हैं जिसे निकालने की ज़रूरत है।

तीन सुसमाचारों में भी एक जवान लड़के का उदाहरण दिया गया है जिसे शायद कि मिर्गी थी (मत्ती 17:14-18; मरकुस 9:17-27; लूका 9:37-43)। यह वास्तव में दुष्टात्मा के उत्पीड़न का मामला था जिससे बहिरापन, गूंगापन, पागलपन और आत्महत्या की प्रवृत्तियां उत्पन्न होती हैं।

इसलिए जब आत्मा निकाली गई तब लड़का चंगा हो गया। हम जानते हैं कि चिकित्सा की दृष्टि से मिरगी का कारण रसायनिक असंतुलन के कारण होता है जिसके लिए सामर्थ के कामों की आवश्यकता होती है। परंतु कुछ मामलों में उसके पीछे निर्बलता की आत्मा भी हो सकती है जिसका सामना करने की ज़रूरत होती है।

प्रभु भोज का उत्सव मनाते समय विश्वास के उपयोग द्वारा

1 कुरिन्थियों 11:26

क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटौरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।

हमारे प्रभु यीशु मसीह का क्रूस हमारी "मुक्ति की घोषणा" है। यह वह स्थान है जहां पर पापों की क्षमा, चंगाई और शरीर एवं मन के लिए

स्वास्थ्य, और पतन के परिणामों को दूर करने वाला हर उपाय दिया गया है। प्रभु यीशु मसीह ने उसके स्मरण में करने हेतु हमारे लिए "प्रभु भोज" या "प्रभु की मेज" स्थापन की है। जितनी बार हम प्रभु की मेज में शामिल होते हैं, हम प्रभु की मृत्यु की घोषणा करते हैं। हम जानते हैं कि मसीह ने हमारे लिए क्रूस पर उसकी देह में क्या पूरा किया है। प्रभु की मेज क्रूस पर मसीह द्वारा पूरा किए गए कार्य में और इस सच्चाई में कि वह जी उठा है और फिर आने वाला है, हमारे विश्वास की घोषणा या ऐलान है। यह वह समय है जब हम अपने विश्वास के साथ हमारी इच्छा और अपेक्षा जोड़ते हैं ताकि मसीह की पूर्ण आशीषों को प्राप्त कर सकें कि वे हमारे जीवनों में वास्तविक और प्रभावी हो। हम अपेक्षा करते हैं कि पवित्र आत्मा हमारे जीवनों के प्रत्येक भाग में मसीह के क्रूस की पूर्ण आशीषों को लागू करे। हम परमेश्वर के आत्मा को निमंत्रण देते हैं कि वह क्रूस की सामर्थ को हमारे जीवनों में प्रभावी करे। क्रूस पर मसीह का कार्य पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा पूरा हुआ (इब्रानियों 9:14)। यही आत्मा यहां पर है ताकि हमारे जीवनों में क्रूस की सामर्थ और आशीषों को प्रभावी सिद्ध कर सके। जितनी बार हम प्रभु की मेज में शामिल होते हैं, उतनी बार हमें इस अपेक्षा के साथ ऐसा करना है। परमेश्वर हमारे विश्वास को सामर्थ के कामों से पूरा करेगा (2 थिस्सिलुनीकियों 1:11)।

कुरिन्थुस के विश्वासी इस आशीष को खो रहे थे क्योंकि उन्होंने उचित रीति से प्रभु की मेज में भाग नहीं लिया था। वे उसे उत्सव और मतवालेपन के समय के रूप में उपयोग कर रहे थे। परमेश्वर की आशीषों को अनुभव करने के बदले, उन्होंने खुद पर दण्ड लाया और वे निर्बल और रोगी हो गए, और असमय मृत्यु का ग्रास बन गए। *"क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। इसी कारण तुममें बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए"* (1 कुरिन्थियों 11:29,30)। निर्बलता, रोग और मृत्यु से प्रभु की मेज में उचित रीति से भाग लेने के द्वारा बचा जा सकता था।

प्रार्थना वस्त्रों के उपयोग से

प्रेरितों के काम 19:11,12

11 और परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ के अनोखे काम दिखाता था।
12 यहां तक कि रुमाल और अंगोछे उसकी देह से छुवाकर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियां जाती रहती थीं; और दुष्टात्माएं उनमें से निकल जाया करती थीं।

हम परमेश्वर को पौलुस के द्वारा अद्‌भुत कार्य करते हुए देखते हैं जहां पौलुस के रूमाल और अंगोछे लेकर बीमारों पर और दुष्टात्माओं से पीड़ितों पर डाले जाते थे जिससे चंगाई और छुटकारा प्राप्त हुआ। परमेश्वर आज भी इस पद्धती के द्वारा कार्य करता है। इसलिए ऐसे मामलों में जहां पर प्रभु हमारी अगुवाई करता है, हम वस्त्र के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और उन्हें लेकर बीमारों पर डाल सकते हैं। जब इन्हें विश्वास से बीमार व्यक्ति पर डाला जाता है, तब उन्हें चंगाई और छुटकारा प्राप्त होता है। परमेश्वर तेल, जल, आदि भौतिक वस्तुओं का उपयोग भी कर सकता है।

यहां पर वस्त्रों/वस्तुओं का उपयोग करते समय एक सावधानी का शब्द दिया जाता है। कभी-कभी यदि लोगों को उचित निर्देश न दिया जाए, तो वे उनके लिए चंगाई और छुटकारा लाने वाली वस्तुओं को आराधना की वस्तु, ताबीज या उनका ध्यान आकर्षित करने वाली अन्य अलौकिक वस्तु के रूप में उपयोग करने लगते हैं।

अन्य असामान्य पद्धतियों के माध्यम से

हमने जिस तरह से चंगाई दी जा सकती है उसमें से कुछ पद्धतियों की सूची तैयार करने का प्रयास किया है, परंतु ध्यान रखें कि यह पूर्ण सूची नहीं है। प्रभु अन्य असामान्य पद्धतियों का उपयोग कर सकता है और हमें अपने आपको उनके लिए तैयार करना है। इस सच्चाई पर विचार करें कि कुछ उदाहरणों में प्रभु यीशु ने कुछ असामान्य पद्धतियों से सेवा की। एक बार जब वह अंधे और गूंगे व्यक्ति की सेवा कर रहा था, तब प्रभु यीशु ने उस व्यक्ति के कानों में उंगलियां डाली और फिर थूका और फिर अपने थूक से उस व्यक्ति को छूआ, और वह व्यक्ति सुनने और बोलने लगा (मरकुस 7:32-25)। दूसरा अंधे व्यक्ति के साथ भी उसने यही किया, यीशु ने उसकी

आंखों पर थूका और अपने हाथ उस पर रखे और अंधा व्यक्ति देखने लगा (मरकुस 8:22-26)। दूसरे एक अंधे व्यक्ति के लिए, यीशु ने जमीन पर थूका और उससे मिट्टी सानी, वह मिट्टी उस अंधे व्यक्ति की आंखों पर लगाई और उससे कहा, जा, शीलोह के कुण्ड में धो ले और वह अंधा व्यक्ति चंगा हो गया (यूहन्ना 9:6,7)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम देखते हैं कि परमेश्वर पतरस की छाया का उपयोग चंगाई लाने के लिए करता है।

इसलिए हमें परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए तैयार रहना है और यदि वह हमारी अगुवाई करता है, तो असामान्य रीति से सेवा करना है। परंतु, उस बात को नित्यक्रिया न बनाए जिसे परमेश्वर ने आपको विशिष्ट परिस्थितियों में उपयोग करने के लिए कहा है। उसकी अगुवाई में चलते रहें। यहां पर हमारा लक्ष्य नई पद्धति को बढ़ावा देना और चंगाई की सेवा करने के किसी असामान्य तरीके में अपनी पहचान बनाना नहीं है। हमारा लक्ष्य लोगों को चंगा करना और सारी बातों में प्रभु को महिमा देना है।

चंगाई प्रदान करना - एक एक को

व्यक्तिगत तौर पर व्यक्ति के लिए चंगाई की प्रार्थना करते समय, यदि सम्भव हुआ तो, वचन की सेवकाई के द्वारा व्यक्ति के विश्वास को बढ़ाने हेतु समय दें। हमारी चंगाई और छुटकारे का आधार बताएं। उसके बाद हम ऊपर चर्चा किए गए तरीकों में से किसी का भी, जैसा उचित हो उपयोग कर सकते हैं। हम चंगाइयों के वरदानों और सामर्थ के कामों के प्रगट होने की इच्छा रखते हैं और उसकी खोज करते हैं। अगले अध्याय में, हम प्रत्येक के लिए व्यक्तिगत तौर पर चंगाई प्रदान करने का सरल और आसान तरीका सीखेंगे।

विशाल सभा में चंगाई की सेवकाई करना

विशाल सभा में चंगाई की सेवा करते समय अनुसरण करने हेतु कोई निश्चित प्रारूप या बहाव नहीं है, परंतु यहां पर विशाल परिवेश में सेवकाई करने के कुछ सामान्य तरीके दिए गए हैं। हमारा सामान्य तरीका है जब कभी सम्भव हो, लोगों के हृदयों में विश्वास को बढ़ाने हेतु वचन का प्रचार करना।

उसके बाद कैसे सेवा करना चाहिए इस विषय में हम प्रभु के मार्गदर्शन का अनुसरण करते हैं। कभी-कभी प्रभु हमें कह सकता है कि हम चंगाई के लिए प्रार्थना कतार में लोगों को बुलाएं या वेदी के पास बुलाएं जहां पर लोग सामने आकर सेवा प्राप्त करते हैं। कभी-कभी ज्ञान के वचन के द्वारा हम चंगाई के लिए विशिष्ट रोगियों के नाम पुकारते हैं, और उसके बाद दूसरों की चंगाई के लिए प्रार्थना करते हैं। इसका कोई निश्चित सूत्र नहीं है। कुंजी यह है कि प्रभु के प्रति संवेदनशील बने रहें और उसकी अगुवाई में चलें। नीचे कुछ सामान्य पद्धतियां दी गई हैं जिनका उपयोग हम वचन की सेवकाई के बाद जनसमुदाय को चंगाई प्रदान करने हेतु करते हैं।

हम लोगों से कह सकते हैं कि यदि सम्भव हो तो वे अपने शरीर के उस अंग पर हाथ रखें जिसे चंगाई की आवश्यकता है। यह उनके विश्वास का उपयोग करने का और उन्हें विशिष्ट आश्चर्यकर्म के लिए प्रभु की ओर देखने हेतु उन्हें सहायता प्रदान करने का एक सरल तरीका है।

जब हम सामुदायिक तौर पर चंगाई की सेवा करते हैं, तब हमें अशुद्ध आत्माओं को और निर्बलता की आत्माओं को निकालने के द्वारा आरम्भ करना है। ये दुष्टात्माएं हैं जो लोगों को रोगी बनाए रखती हैं और चंगाई प्राप्त करने के मार्ग में रुकावट लाती हैं। इसलिए हम सामुहिक छुटकारे के समय से जाते हैं। हम प्रभु के प्रति संवेदनशील बने रहते हैं जब वह आत्माओं की परख के द्वारा कुछ विशिष्ट प्रकार की आत्माओं को प्रगट करता है जिन्हें डांटने की ज़रूरत होती है।

उसके बाद लोगों की चंगाई के लिए आगे के वचन जारी करें। इस समय के दौरान हम ज्ञान के वचनों के लिए प्रभु के प्रति संवेदनशील रहते हैं और विशिष्ट बीमारियों के नाम पुकारते हैं जो चंगे हो रहे हैं या विशिष्ट परिस्थितियों का वर्णन करते हैं जो उन रोगों या समस्याओं का कारण रही हैं। ज्ञान के ये विशिष्ट वचन या परिस्थितियों के वर्णन लोगों के हृदय में विश्वास को बढ़ाते हैं और उन्हें उनकी चंगाई के आश्चर्यकर्म को प्राप्त करने हेतु तैयार करते हैं।

हम पवित्र आत्मा की सामर्थ को निमंत्रण देते हैं कि चंगाई सामर्थ के साथ (चंगाई का अभिषेक) उन पर प्रगट हो और चंगाइयों के वरदान और आश्चर्यकर्म भी प्रगट हों। फिर से एक बार पवित्र आत्मा विशिष्ट रोगों को जो चंगे हो रहे हैं प्रगट कर सकता है और हम उनके नाम पुकारते हैं।

उसके बाद हम लोगों को प्रोत्साहन देते हैं कि वे अपनी चंगाई को जांचें और अपने विश्वास के अनुसार कार्य करें। अक्सर जब लोग अपने शरीरों को जांचने लगते हैं और उनके विश्वास के अनुसार कार्य करते हैं, तब चंगाई के आश्चर्यकर्म होते हैं। वे पाते हैं कि वे पूर्ण रूप से चंगे हो गए हैं या उनमें पहले की तुलना में सुधार आया है। जो लोग कुछ सुधार देखते हैं, उन्हें प्रोत्साहन दें कि वे परमेश्वर का धन्यवाद करें और पूर्ण चंगाई की अपेक्षा करें।

गवाहियां विश्वास को बढ़ाती हैं। इसलिए यदि सम्भव हो तो, हम लोगों को प्रोत्साहन देते हैं कि वे आकर चंगाइयों की गवाही दें जो उसी समय हुई हैं और जिनकी जांच की जा सकती है। ऐसी परिस्थितियों में जहां पर व्यक्तिगत गवाहियां लेना सम्भव नहीं है, वहां हम लोगों को यह प्रोत्साहन देते हैं वे अपने हाथों को उठाकर या अन्य किसी रीति से बताएं कि वे चंगे हो गए हैं। यह सच है कि कुछ परिस्थितियां ऐसी हो सकती हैं जिन्हें केवल चिकित्सीय जांच या परीक्षण द्वारा ही प्रमाणित किया जा सकता है। ऐसे मामलों में, लोगों को प्रोत्साहन दें कि वे पहले डॉक्टरों के पास जाएं, अपनी जांच करा लें और बाद में गवाही दें।

विशाल सभा में सेवकाई करते समय सामान्य तौर पर अंगीकार न किए गए पाप, खुले द्वारों आदि जैसे व्यक्तिगत विषयों के साथ व्यवहार करना असम्भव होता है। इसे पवित्र आत्मा के हाथों में छोड़ दें कि वह अपनी इच्छा के अनुसार व्यक्ति के साथ व्यवहार करे। यदि पवित्र आत्मा कुछ पापों को या अतीत के कार्य को प्रगट करता है जिसके लिए पश्चाताप करने की और जिसका त्याग करने की ज़रूरत होती है, उन्हें पुकारें और ऐसे लोगों की ऐसे मामलों में प्रार्थना में अगुवाई करें। परंतु, ऐसा किसी विशिष्ट

व्यक्ति का अपमान न करते हुए और उसे दूसरों के सामने उजागर न करते हुए करें। हमारा लक्ष्य लोगों की उन्नति करना है, उन्हें नाश करना नहीं।

चंगाई की टीमें

लूका 10:1,9

1 और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा।
9 वहां के बीमारों को चंगा करो; और उनसे कहो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।

जब प्रभु यीशु ने उसके शिष्यों को बाहर भेजा, तब उसने उन्हें इस आज्ञा के साथ दो-दो करके बाहर भेजा कि परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो, बीमारों को चंगा करो, और दुष्टात्माओं को निकालो। इस कल्पना को हमारे दिनों में लागू करते हुए यह कहा जा सकता है कि हम जानते हैं कि टीम के रूप में चंगाई और छुटकारे की सेवा करना सामर्थ्यपूर्ण है। हम स्थानीय कलीसिया में आराधना के दौरान सेवा करने हेतु चंगाई टीमें रख सकते हैं या मॉल, सड़कों, स्कूल/कॉलेजों या सुसमाचार प्रचार के अन्य क्षेत्रों में बाहर जाने वाली चंगाई टीमें तैयार कर सकते हैं। चंगाई की टीमें अस्पतालों में भी जा सकती हैं या घरों को भेंट देकर बीमारों के लिए प्रार्थना कर सकती हैं। स्थानीय कलीसिया चंगाई की टीमों का आयोजन कर सकती हैं या समान मनसा रखने वाले, उत्साही लोग जो खुद को परमेश्वर के लिए उपलब्ध करते हैं, आपस में एक साथ मिलकर सहज ही टीम तैयार कर सकते हैं।

यहां पर चंगाई की टीम के रूप में सफलतापूर्वक कार्य करने हेतु कुछ मुख्य तत्व दिए गए हैं।

- मुख्य तौर पर, चंगाई टीमे दो या दो से अधिक लोगों से बनी होती हैं जिन्हें इस बात के लिए प्रशिक्षित किया जाता है कि चंगाई और छुटकारे की सेवा कैसे करें।
- वे हर बार सेवा करते समय एकता में और सहमति में चलते हैं।

- सेवा करते समय कोई प्रमुखता या महत्व की खोज नहीं करता।
- वे एक दूसरे को सहारा देते हैं और एक दूसरे को प्रोत्साहन देते हैं। वे विश्वास के तत्व को और उस जोखिम को टीम का प्रत्येक सदस्य सेवा के लिए बाहर निकलते समय उठाता है, और विश्वास में एक दूसरे को खामोशी से समर्थन देता है।
- परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले चंगाई के किसी भी कार्य या आश्चर्यकर्म के लिए कोई व्यक्तिगत श्रेय नहीं लेता। सारी महिमा परमेश्वर को दी जाती है।
- टीम के सदस्य अपनी कहानियों की और शिक्षा की (सफलताएं और गलतियां) एक दूसरे के साथ और अन्य चंगाई टीमों के साथ चर्चा कर सकते हैं, ताकि हर एक को लाभ प्राप्त हो और वे चंगाई और छुटकारे की सेवा करना है इस बात की शिक्षा में बढ़ें।
- टीम के सदस्य प्रार्थना, आराधना और संगति के लिए नियमित रूप से मिलते हैं जिससे मेल और परस्पर समझ का बोध होता है। इससे टीम के सदस्यों को एकदूसरे को समझने में सहायता मिलती है और जब वे एक साथ मिलकर सेवा करने बाहर जाते हैं तब वे एक साथ आगे चल सकते हैं।

लोगों को उनके विश्वास का उपयोग करना सिखाना

बाहर कदम बढ़ाकर अपने विश्वास का उपयोग करने हेतु लोगों को प्रोत्साहन देने के लिए, यहां पर कुछ सरल दिशा-निर्देश हैं :

- यह आत्मा के द्वारा करें। सुनिश्चित करें कि पवित्र आत्मा आपको उनसे यह कहने के लिए प्रेरित करता है। अन्यथा, सकारात्मक प्रोत्साहन लाएं ताकि उनके विश्वास का उपयोग करते समय जो करना उन्हें सहज लगता है, वही करें।
- धृष्टता न करें। उदाहरण के लिए - यदि देखनेवाले साधनों का उपयोग करने वाला यह कहता है कि वे अपने विश्वास पर चल रहे हैं और उनके देखनेवाले साधनों (चश्मा या कॉन्टैक्ट लेन्स) को छोड़ देते हैं, तो उसके कुछ गम्भीर परिणाम हो सकते हैं! दूसरी ओर, जब उनकी

आंखें चंगी होती हैं, तब चश्मा पहनना उनके लिए अत्यंत कष्टप्रद हो सकता है। उनके देखनेवाले साधनों को हटाने का यही सही समय है।

- उस क्षण की उत्तेजना के वश में होकर मूर्खतापूर्ण व्यवहार न करें। बुद्धि का उपयोग करें।
- डॉक्टर का स्थान न लें। चिकित्सीय सलाह न दें। लोगों को उनकी दवा या चिकित्सीय उपचार रोकने के लिए न कहें। उनके डॉक्टर की सलाह के आधार पर उन्हें ऐसा करने दें।

लोगों को सिखाना कि वे अपनी चंगाई कैसे बरकरार रखें

यदि व्यक्ति को किसी क्षेत्र में चंगाई का स्पर्श प्राप्त होता है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्हें कभी कोई बीमारी नहीं होगी या वह रोग फिर से नहीं होगा। लोगों को यह सिखाने की आवश्यकता है कि व्यवहारिक तरीके से और परमेश्वर में विश्वास के द्वारा हम अपनी चंगाई कैसे बरकरार रखें।

लोगों को यह सीखने की ज़रूरत है कि वचन पर कैसे मनन करें, अपनी चंगाई बनाए रखने के लिए और स्वास्थ्य में चलने के लिए परमेश्वर में अपने विश्वास को कैसे बढ़ाएं। लोगों को वचन बोलना सीखने की, विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ने की और चंगाई पाने और अपनी चंगाई बनाए रखना सीखने की ज़रूरत है। इसलिए, यदि सम्भव हुआ तो लोगों को यह करने हेतु सामग्री (पुस्तकें, प्रवचन, शिक्षाएं) दें।

इसके अलावा, कुछ मौलिक बातें हैं जो हम सभी कर सकते हैं, जैसे उचित खानपान, विश्राम और व्यायाम जो निरंतर स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं।

चंगाई की सेवा करने की व्यक्तिगत तैयारी

जबकि परमेश्वर चंगाईकर्ता है और उसकी सामर्थ लोगों को चंगा करती एवं छुड़ाती है, फिर भी लोगों को चंगाई की सामर्थ में सेवा प्रदान करते समय परमेश्वर के अच्छे सहकर्मी बनने हेतु हम कुछ बातें कर सकते हैं। यहां पर स्मरण दिलाने हेतु कुछ बातों को सूचीबद्ध किया गया हैः

वचन में बढ़ना

चंगाई, अभिषेक, आश्चर्यकर्म, छुटकारा, अधिकार से सम्बंधित वचन निरंतर मनन के द्वारा हमारे अंदर बहुतायत से दृढ़ हों। परमेश्वर में हमारा विश्वास मज़बूत होना चाहिए और विश्वास की जिस बात से बढ़ौत्तरी होती है वह है वचन के द्वारा। हमें बीमारी की कठिनाई से, हम जिस बीमारी या दुष्टात्मा के सताव का सामना करते हैं उससे डरना नहीं चाहिए।

अभिषेक में बढ़ना

हमें पवित्र आत्मा के प्रति गहरी सहभागिता और संवेदनशीलता स्थापित करना है। अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना इसका अविभाज्य अंग है। हम परमेश्वर के अन्य सेवकों के साथ संगति करने, उन्हें देखने, उनसे सीखने और प्राप्त करने के द्वारा भी अभिषेक में बढ़ते हैं। उसकी उपस्थिति और सामर्थ की अधिकाई के लिए इच्छा रखें। आत्मा के वरदानों के अधिक कार्य की इच्छा रखें।

आज्ञाकारिता, प्रार्थना, आराधना और उपवास के द्वारा परमेश्वर की निकटता में बढ़ना

आज्ञाकारिता के द्वारा, प्रार्थना, आराधना और उपवास में प्रभु के साथ एकांत में समय बिताने के द्वारा, हम प्रभु के साथ अपने रिश्ते में बढ़ते जाएं।

हृदय की शुद्धता बनाए रखना

हमें शुद्ध हृदय बनाए रखना है। हमें प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या, घमंड, और स्व के गलत इरादों से अपने हृदयों की रक्षा करना है। हमें ख्याति, धन और अन्य किसी भी बात से जो परमेश्वर के लिए प्रसन्नतादायक नहीं है, अपने हृदय की रक्षा करना है।

कदम बढ़ाने के द्वारा विश्वास में बढ़ना

पानी पर चलने का एक ही तरीका है नाव से बाहर कदम निकालना। उसने कहा है और हमें वचन दिया है आओ, अतः बाहर कदम बढ़ाने की बारी हमारी है। यह विश्वास का कदम है। हमें पिछले अनुभवों की असफलता

के भय पर भी जय पाना है। यदि कुछ न हुआ तो यह विचार अक्सर हमारे मनों में आता है। परंतु उसके स्थान पर हम यह कह सकते हैं यदि कुछ होता है तो। जब हमारे मन में संदेह आने लगता है, तब हम खुद को यह कहकर प्रोत्साहित करते हैं, मैं कुछ होने की अपेक्षा कर रहा हूं।

हमेशा परमेश्वर को सारा आदर दें

परमेश्वर हमारे हृदय को देखता है। क्या हम सचमुच उसकी स्तुति करते हैं और उसे सारा आदर देते हैं या हम कुछ महिमा अपने लिए बचा लेते हैं। हमें हर समय ऐसा हृदय रखना है जो होने वाली प्रत्येक बात के लिए उसे सारी महिमा, स्तुति, आदर और आराधना प्रदान करे।

कुछ गलतियों से बचें

झूठे वायदे न करें

सेवा करने वाले हम सभी उस स्थान में पहुंचना चाहते हैं जहां जिन लोगों की हम सेवा करते हैं, उनमें से प्रत्येक चंगा होता है। इस लक्ष्य का अनुसरण करते समय और उस लक्ष्य तक पहुंचने के उत्साह में हम ऐसे बयान देते हैं जो कुछ ज़रूरत से अधिक साहसपूर्ण होते हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि हम लोगों की भीड़ के सामने खड़े होते हैं और कहते हैं, "आज रात हर कोई चंगा होगा," कहने के लिए तो यह अच्छा बयान होगा, परंतु सच्ची परीक्षा सभा के अंत में है, जब हम इस बात का परीक्षण करते हैं कि क्या हर एक व्यक्ति चंगा हुआ है। यदि नहीं, तो कोई झूठ बोल रहा था! ज्यादा सही बयान यह कहना होगा कि "हर कोई आज रात चंगा हो सकता है," जो परमेश्वर के वचन के आधार पर वास्तविक और उचित बयान है। सिद्ध मानक की ओर बढ़ते समय, हम सावधान रहें कि हम क्या कहते हैं और हम सारे कामों को कैसे करते हैं। केवल वही कहें जो परमेश्वर ने कहा है।

गिरना या चंगाई पाना - अधिक महत्वपूर्ण क्या है?

हमारा ज़ोर लोगों को ज़मीन पर गिराने के बजाय उन्हें चंगा प्रदान करना है। दुख की बात यह है कि हमारे कुछ मसीही दायरों में, हम ऐसे कुछ सेवकों को देखते हैं कि उनकी प्रवृत्ति लोगों को धकेलने की होती है या

वे “भारी हाथ” रखकर लोगों को ज़बरन नीचे गिरा देते हैं। देखने वालों को यह भले ही अच्छा लगता हो कि मानो लोग “आत्मा में गिर रहे हैं” या “सामर्थ की वजह से गिर रहे हैं,” परंतु इस प्रथा से कोई लाभ नहीं है। हम लोगों को चंगाई प्रदान करने पर ध्यान दें, लोगों के सामने प्रदर्शन करने पर नहीं। पवित्र आत्मा की उपस्थिति से अभिभूत होकर यदि लोग नीचे गिरते हैं, तो ठीक है। परंतु सच्ची परीक्षा तब होती है जब वे ज़मीन से उठते हैं, उस समय क्या उन्होंने चंगाई और छुटकारा पाया है?

चंगाई और छुटकारे की सेवकाई के द्वारा जब हम लोगों की सेवा करने हेतु अपना हाथ बढ़ाते हैं, तब हम यीशु की सेवकाई का उदाहरण अपनाएं।

8
चंगाई की सेवा करने का एक सरल नमूना

इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया पांच चरण का नमूना मूल तौर पर जॉन विम्बर और विनयार्ड कलीसियाओं द्वारा तैयार किया गया था, और उसके बाद विश्वासियों को प्रार्थना करने हेतु और चंगाई की सेवा करने हेतु व्यापक तौर पर उपयोग किया गया है। चंगाई की सेवा करने का यही एकमात्र तरीका नहीं है, परंतु यह एक सरल नमूना है जिसे सिखाया गया है और प्रभावी रूप से उपयोग किया गया है जिसके द्वारा लोगों के जीवनों में सामर्थी फलों का लाभ हुआ है। इसका उपयोग कोई भी किसी भी समय कर सकता है - घर में, विश्वासियों की सभा में और सड़कों पर, बाज़ारों में, और कार्यस्थल पर! हमने इस पाच चरणों वाले नमूने का नीचे रूपांतरण किया है ताकि हर कोई बाहर निकलकर चंगाई की सेवा कर सके।

1. साक्षात्कारः क्या तकलीफ है? मैं किस बात के लिए प्रार्थना करूं?
2. निदानः वे इस दशा में क्यों हैं? मूल कारण।
3. पद्धति का चुनावः इस व्यक्ति की सहायता करने हेतु किस प्रकार की पद्धतियों का उपयोग करना है?
4. सेवकाईः प्रार्थना करना और देखना कि परमेश्वर क्या करता है।
5. सेवकाई पश्चात के सुझावः अपनी चंगाई बनाए रखने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए?

जब हम इस नमूने का अनुसरण करते हैं, तब हम इस बात को दोहराते हैं कि चंगाई यीशु मसीह के व्यक्तित्व में है, विशिष्ट प्रणाली में नहीं। चंगाई उसकी उपस्थिति में है, प्रक्रिया में नहीं। प्रणाली और प्रक्रिया केवल दिशा-निर्देश हैं जिससे हमें आरम्भ करने और यह सीखने में सहायता मिलती है कि उसके साथ सहकर्मी कैसे बनें। जब हम अक्सर चंगाई की सेवा करना

आरम्भ करते हैं, तब हम प्रणाली और प्रक्रिया से हटकर उसकी उपस्थिति और उसके आत्मा के मार्गदर्शन पर निर्भर होते हैं। हमें नीचे दिए गए कुछ चरणों को छोड़ना हो सकता है या प्रभु जैसे हमारी अगुवाई करता है उसके अनुसार, उन्हें हर बार अलग तरह से करना पड़ सकता है।

साक्षात्कारः क्या तकलीफ है?

इस साक्षात्कार का उद्देश्य इस प्रश्न का उत्तर देना है, 'क्या तकलीफ है?' या 'मैं किस बात के लिए प्रार्थना करूं?'

कुछ सुझाए गए मुख्य प्रश्न नीचे दिए गए हैं। कृपया यह ध्यान में रखें कि सभी प्रश्नों को पूछने के लिए हमारे पास समय नहीं हो सकता और हमें सभी प्रश्न पूछने की आवश्यकता नहीं है। उसी तरह, हमें चिकित्सीय इतिहास की सारी विस्तृत बातें जानने की आवश्यकता नहीं है। हम डॉक्टर नहीं हैं। उनकी समस्या के विषय में पूछने का हमारा एकमात्र उद्देश्य यह है कि हम जान सकें कि हम किस बात पर ध्यान दे रहे हैं और कौन-से परिणामों की खोज में हैं।

"आपका नाम क्या है?" यदि आप उस व्यक्ति को नहीं जानते, तो आरम्भ करने से पहले, खुद का परिचय कराएं और उसका नाम पता करें।

"आप किस बात के लिए प्रार्थना करवाना चाहते हैं?"

"आप इस हालत में कब से हैं?"

"क्या आप जानते हैं इसका कारण क्या है?"

"क्या आप डॉक्टर से मिले?..." डॉक्टर क्या कहता है?"

"क्या आप जानते हैं कि जब यह तकलीफ शुरू हुई तब आपके जीवन में क्या हो रहा था?"

"जिस समय यह तकलीफ शुरू हुई उस समय या उसके आरम्भ होने से कुछ महीने पहले, क्या आपको कोई सदमा लगा था?"

निदान : वे इस दशा में क्यों हैं?

यदि सम्भव हो तो, यह उस व्यक्ति की समस्या का मूल कारण जानने के लिए है। यह हमेशा आवश्यक नहीं होता, परंतु मूल कारण जानने में सहायक होता है, जिससे हम जान सकें कि हम किस बात के विरोध में प्रार्थना करें। यह इस बात का चुनाव करने में हमारी सहायता करता है कि उस व्यक्ति के प्रति सेवा करने हेतु हमें कौन से तरीके अपनाने की ज़रूरत है।

जब हम उस व्यक्ति की बात सुनते हैं हमें आत्मा की ओर अपना ध्यान लगाना है और उससे उसकी अंतर्दृष्टि और मार्गदर्शन के लिए बिनती करना है। पवित्र आत्मा हमें ज्ञान का वचन, दर्शन, चित्र, समस्या से सम्बंधित दृश्य, उस व्यक्ति के जीवन के दृश्य या अन्य अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है ताकि उस व्यक्ति की शारीरिक दशा का कारण समझने में हमारी सहायता को सके।

इन लोगों को ज़रूरत क्यों हो सकती है इसके कई कारण हैं :

(अ) स्वाभाविक कारण - रोग, दुर्घटना

(ब) पाप - उनके द्वारा किए गए या उनके प्रति किए गए

(क) भावनात्मक चोट जो शारीरिक और अन्य पीड़ा को उत्पन्न करती है

(ड) रिश्तों में समस्याएं - क्षमा का अभाव

(इ) अलौकिक - दुष्टात्मा से सम्बंधित

वे आपसे कुछ और कहते होंगे और परमेश्वर आपको कुछ और बता रहा है! इसलिए उस व्यक्ति की सुनते समय, आपकी आत्मा में परमेश्वर की सुनना अधिक महत्वपूर्ण है।

पद्धती का चुनावः किस प्रकार की पद्धतियों का उपयोग करना है?

उसके बाद हमें यह निर्णय लेना है कि उस व्यक्ति की हम किस प्रकार सेवा कर सकेंगे।

आपको उस समय जो अगुवाई होती है या जिस बात से आप सहज महसूस करते हैं, उसके साथ आगे बढ़ें। हमने पिछले अध्याय में चंगाई के लिए प्रार्थना करने के कई तरीकों के विषय में चर्चा की है। सेवकाई करने हेतु उनमें से किसी एक का या इन पद्धतियों में से कुछ को मिलाकर आप उपयोग कर सकते हैं।

- हाथों को रखना
- तेल से अभिषेक करना
- **निवेदन** - पवित्र आत्मा को निमंत्रण देना, चंगाई के लिए बिनती करना
- **मध्यस्थता की प्रार्थना** - अपनी भाषा में, आत्मा में
- **विश्वास की आज्ञा** - जैसे प्रभु मार्गदर्शन करता है। चंगाई की आज्ञा दें, और उसके बाद व्यक्ति को कुछ करने के लिए कहें, देखो, उठकर चलो, अपना आश्चर्यकर्म ले लो।
- **विश्वास का उच्चारण** - घर जाओ, बालक ठीक हो गया है।
- **बांधना और दुष्टात्माओं को डांटना** - जैसे आत्मा अगुवाई करता
- **क्षमा करना और पिछले घावों और दुखों को त्यागना** - व्यक्ति की प्रार्थना में अगुवाई करें कि वह उन लोगों को क्षमा करे जिन्होंने उसे चोट पहुंचाई है, या दूसरों को हानि पहुंचाने से पश्चाताप करें।

फिर से एक बार याद रखें, कि चंगाई पद्धति के कारण नहीं आती, परंतु व्यक्ति के कारण आती है।

उदाहरण के तौर पर, यहां पर ऐसी सेवकाई है जो कई बातों का संयोग है। मान लीजिए कि जॉन नाम का कोई व्यक्ति है, चोट लगने की वजह से उसकी पीठ में कई गम्भीर समस्या है। यहां पर प्रार्थना के साथ सेवा करने का एक तरीका है :

यदि सम्भव हो तो उसकी पीठ पर अपना हाथ रखें या किसी से कहें कि उस व्यक्ति की पीठ पर हाथ रखे। उसके बाद आप यह कहते हुए

प्रार्थना करें: *"यीशु के नाम में, मैं जॉन की पीठ को तकलीफ देने वाली निर्बलता की आत्मा को बांधता हूं और निकालता हूं। यीशु के नाम में मैं जॉन की पीठ को चंगा होने की आज्ञा देता हूं। मैं रीढ़ की हड्डी, डिस्क्स और नसों को चंगा होने की आज्ञा देता हूं, और आज्ञा देता हूं कि वे सही स्थान में चले जाएं। पवित्र आत्मा आइए, जॉन की पीठ में अपना चंगाई का गुण मुक्त कीजिए और उसे पूरी रीति से ठीक कीजिए, यीशु के नाम में।"*

सेवकाई : प्रार्थना करना और देखना कि परमेश्वर क्या करता है

सेवा करते समय हम सामान्य तौर पर अपनी आंखों को खोलकर रखेंगे ताकि देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है। थोड़ा-सा सुधार देखकर प्रोत्साहित हों और उस व्यक्ति को भी प्रोत्साहन दें। सम्भव है कि कुछ भौतिक संकेत हो सकते हैं कि कुछ हो रहा है। व्यक्ति को गरमाहट महसूस हो सकती है या वह दर्द को कम होते महसूस कर सकता है।

व्यक्ति से पूछें कि क्या उसे कुछ महसूस हो रहा है। क्या उसे कोई फर्क महसूस हो रहा है? उससे कहें कि वह जांचकर देखे कि क्या उसे कोई सुधार महसूस हो रहा है या ऐसा कुछ वे कर सकते हैं जो वे पहले नहीं कर सकते थे।

यदि आप एक प्रकार की प्रार्थना करते हैं और आदेश देते हैं और परिणाम प्राप्त होते हैं, परंतु पूर्ण चंगाई नहीं मिलती, तो सेवा शुरू रखें। उस व्यक्ति को समझाएं कि परमेश्वर उन्हें पूर्ण रूप से चंगा करना चाहता है। यदि आप एक प्रकार की प्रार्थना करते हैं और आदेश देते हैं और कुछ समय बाद परिणाम प्राप्त नहीं होते, तो दूसरा तरीका अपनाएं! दृढ़तापूर्वक बने रहें!

आप कब रुकते हैं?

जब ऐसा होता है तब प्रार्थना करना रोक दें:

- जब व्यक्ति पूर्ण रूप से चंगा हो जाता है।
- जब वह व्यक्ति आपको रोकना चाहता है। वह थक गया होगा या मात्र चाहता है कि आप रुक जाएं।

- पवित्र आत्मा आपको बताता है कि अब समय है कि आप रुक जाएं।
- आपको प्रार्थना करने का कोई तरीका नहीं दिया गया है, और आपको सफलता नहीं मिल रही है।

सेवकाई पश्चात के सुझावः अपनी चंगाई बनाए रखने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए?

यहां पर जैसा उचित हो उसके अनुसार हम उस व्यक्ति को प्रोत्साहन और निर्देश देते हैं।

यदि अवसर हो तो, यदि उस व्यक्ति का अब तक उद्धार नहीं हुआ है तो उस व्यक्ति के व्यक्तिगत उद्धार के विषय में उससे बातें करें। यदि सम्भव हो तो यीशु मसीह के लिए निर्णय लेने हेतु उनका मार्गदर्शन करें।

उन्हें अपनी चंगाई बरकरार रखने हेतु क्या करने की ज़रूरत है?

प्रभु यीशु ने उस लंगड़े व्यक्ति को जो चंगा हुआ जो बात कही उसे याद रखें, फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े (यूहन्ना 5:14)। लोगों को उनकी चंगाई बनाए रखने में सहायता करने हेतु और निर्देश देने की हमें आवश्यकता पड़ सकती है। उन्हें प्रोत्साहन दें कि वे परमेश्वर के साथ समय बिताएं, अपनी कलीसियाओं के साथ जुड़े रहें, या किसी छोटे समूह से जुड़ जाएं। यदि सम्भव हो, तो उन्हें अतिरिक्त सामुग्री दें (पुस्तकें, प्रवचनों की सी.डी. या वेबसाईट की कड़ियां) जहां पर वे उनके विश्वास में बढ़ सकते हैं।

यदि उन्होंने किसी गम्भीर रोग से चंगाई का अनुभव किया है जिसके लिए वे डॉक्टरों से इलाज करवा रहे थे, तो उन्हें प्रोत्साहन दें कि वे डॉक्टर के पास वापस जाएं। कभी यह सुझाव न दें कि वे अपनी औषधियां छोड़ दें, भले ही वे कितना ही चंगा क्यों न महसूस करें। यह निर्णय उनके डॉक्टरों की ओर से और उनकी ओर से आना चाहिए।

यदि वे चंगे नहीं होते हैं तो क्या?

उन्हें आश्वासन दें कि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है और उन्हें प्रोत्साहन दें कि वे विश्वास और प्रत्याशा में बने रहें। उन्हें आश्वासन दें कि परमेश्वर विश्वास में उनकी रक्षा करने से थकता नहीं। वह उन्हें प्रोत्साहन देता है कि वे उससे मांगते रहें (मत्ती 7:7)। उन्हें प्रोत्साहन दें कि वे अन्य समयों में प्रार्थना करते रहें और सेवकाई करते रहें।

उन्हें कोई दोष न लगाएं। किसी को 'विश्वास के अभाव' 'गुप्त पाप,' या अन्य अज्ञात बातों के लिए दोष न लगाएं।

हम चंगा नहीं कर सकते, केवल परमेश्वर चंगा कर सकता है। हम केवल उसके माध्यम हैं। यदि चंगाई नहीं होती, तो हमें उससे आग्रह करते रहना है और उसकी और खोज में लगे रहना है।

9

चंगाई और छुटकारे की सेवा प्रदान करने हेतु आत्मा के वरदान

आत्मा के वरदान उन पद्धतियों की नमूना सूचि है जिसमें पवित्र आत्मा व्यक्तिगत तौर पर हमारे द्वारा उसकी उपस्थिति और सामर्थ प्रगट करता है। यह उन पद्धतियों की पूर्ण सूचि हो ऐसा आवश्यक नहीं जिसमें पवित्र आत्मा कार्य करता है, परंतु यह एक प्रतिनिधिक सूचि है। पवित्र आत्मा परमेश्वर है, और जैसा वह चाहता है उसके अनुसार किसी भी रीति से वह खुद को प्रगट कर सकता है।

1 कुरिन्थियों 12:4-11

4 वरदान तो कोई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है।
5 और सेवाएं भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है।
6 और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।
7 किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।
8 क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें,
9 और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है।
10 फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख; और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना।
11 परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है।

1 कुरिन्थियों 12:31

तुम बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो! परन्तु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं।

1 कुरिन्थियों 14:1
प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।

1 कुरिथ्यियों 14:12
इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।

चंगाई और छुटकारे की सेवा में पवित्र आत्मा के वरदान महत्वपूर्ण साधन हैं। चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय पवित्र आत्मा के साथ मिलकर परिश्रम करते समय हमें इन वरदानों की इच्छा रखना चाहिए, उन्हें चमकाना है और उन्हें प्रगट होते हुए देखना है।

हम संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करते हैं कि किस प्रकार आत्मा के विभिन्न वरदान चंगाई और छुटकारा प्रदान करने के संदर्भ में काम करते हैं। नीचे दी गई टिप्पणियां निश्चित रूप से व्यापक नहीं हैं। पवित्र आत्मा के साथ हम जितना सहयोग करेंगे और कार्य करेंगे, उतना अधिक हम उन बातों के विषय में सीखेंगे जिनमें इन वरदानों का उपयोग किया जाता है।

ज्ञान का वचन

ज्ञान का वचन ईश्वरीय ज्ञान के एक अंश का अलौकिक दान है जो अतीत या वर्तमान से सम्बंधित बातों की सच्चाई प्रगट करता है। ज्ञान का वचन व्यक्ति की कुछ वर्तमान या भूतकाल की समस्याओं को पहचानने में सहायता कर सकता है। वह ऐसे व्यक्तियों के विषय में या परिस्थितियों के विषय में प्रगट कर सकता है जिसे परमेश्वर वर्तमान समय में चंगा कर रहा हो। इससे विश्वास में बढ़ौत्तरी हो सकती है, जिससे व्यक्ति यह जाने की परमेश्वर कार्य कर रहा है।

अलग-अलग तरीके जिसमें परमेश्वर चंगाई के लिए ज्ञान के वचन देता है

परमेश्वर अपने प्रकाशनों को भिन्न-भिन्न पद्धतियों से देता है, और यह बात चंगाई के लिए ज्ञान के वचनों के विषय में, उसी तरह अन्य प्रकार के

प्रकाशनों के विषय में सच है। कुछ अत्यंत सामान्य तरीके हैं जिनके द्वारा ज्ञान के वचन दिए जाते हैं, इनमें निम्नलिखित का समावेश है।

देखना: परमेश्वर हमें तस्वीरों और चित्रों के द्वारा कुछ बातें प्रगट करता है जो हमारी आत्मा के अंदर से निकलती हैं और हमारे चेतन मन में आती हैं। ये तस्वीरें 'स्थिर चित्र' हो सकते हैं या 'चल' चित्र हो सकते हैं जो बताते हैं कि क्या हो रहा है। कभी-कभी कई स्थिर चित्रों को एक साथ देखा जा सकता है। कभी-कभी हम नाम, अक्षर, या शब्दों को देख सकते हैं। हम शरीर के अंगों की तस्वीरें, शरीर के उन भागों या स्थानों को देख सकते हैं जहां पर लोग कुछ समस्या महसूस करते हों (उदाहरण पट्टी बंधा हुआ हाथ, लंगड़ा, आदि)। हमें यह पहचानने की ज़रूरत है कि हम क्या देख रहे हैं, यह समझने की आवश्यकता है कि परमेश्वर इन तस्वीरों के द्वारा क्या प्रगट कर रहा है और उसके बाद उन समस्याओं के नामों को पुकारें।

सुनना: परमेश्वर हमारे कानों का उपयोग करता है और हम पर अपना संदेश प्रगट करता है। यह संदेश हमारे सचेतन मन में शब्दों, वाक्यों, विचार, किसी बात के विषय में राय, अवधारणा, कल्पना या कई प्रकार की जानकारी के रूप में आता है। उदाहरण के तौर पर, किसी निश्चित प्रकार के रोग के चंगे होने के सम्बंध में हमारे मन में कोई विचार हो सकता है या लोग जो विशिष्ट परिस्थिति से चंगे होते हैं (उदाहरण, कार दुर्घटना)। परमेश्वर जो कुछ कह रहा है उसे हम पहचानते हैं और उसके बाद उनके नाम पुकारते हैं। कभी-कभी, आप बोलने या सेवा हेतु प्रार्थना करना आरम्भ करते हैं, तो जिन शब्दों को कहने का आपने सोचा भी नहीं है वे आपके मुंह से निकलते प्रतीत होते हैं। केवल उस बात को पहचानें कि परमेश्वर क्या कर रहा है, उन बातों को विश्वास से कहें।

महसूस करना: परमेश्वर हमें अपनी जानकारी देने हेतु आत्मिक ज्ञानेंद्रिय का उपयोग करता है। परमेश्वर हमारे अपने शरीर में संवेदना (बोध) उत्पन्न कर सकता है जो उस बात से समानता रखता है जो परमेश्वर कर रहा है या करना चाहता है। शायद दर्द का अहसास, संवेदनाहीनता,

झुनझुनाहट, गर्माहट महसूस होती है। हम इस बात को समझ लेते हैं और कहते हैं कि परमेश्वर लोगों को उनके शरीर के उस अंग की समस्याओं से चंगा कर रहा है। ध्यान में रखें कि यदि हमारे शरीर के उस अंग में पहले से कोई दर्द या संवेदना थी, तो हम उसके विषय में नहीं कहेंगे।

सेवकाई करने से पहले, या सेवकाई के समय के दौरान, परमेश्वर हमारे साथ बात कर सकता है और हमें ज्ञान के वचनों को दे सकता है। हमें अपने दिल को खोलकर रखना है और जो कुछ परमेश्वर ने प्रगट किया है उसे अपने साथ रखना है और सही समय पर उसका उपयोग करना है।

ये तीन सामान्य तरीके हैं जिनके द्वारा परमेश्वर हमसे बातें करता है: देखना, सुनना, महसूस करना। प्रेषण के ये तीन माध्यम आत्मा के अन्य वरदानों के उपयोग के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

और भी तरीके हैं जिनके द्वारा परमेश्वर बोल सकता है और ज्ञान के वचनों को दे सकता है। इनमें स्वप्न/दर्शन, या परिस्थितियां या अन्य लोगों के साथ मुलाकात आदि का समावेश हो सकता है जो इस बात के दर्शक हो सकते हैं कि परमेश्वर और कहीं तथा और क्या करना चाहता है। परमेश्वर जो कुछ कह रहा है उसे स्वीकार करने हेतु हमें अपने दिल को खोलकर रखना है।

ज्ञान के वचनों को कैसे दें

हम कैसे कहते हैं, क्या कहते हैं यह महत्वपूर्ण है। कभी-कभी हमने जो देखा है या महसूस किया है उसके विषय में हम पूर्णतया निश्चित नहीं होते। इस बात को हमें सरल, सौम्य और स्पष्ट शब्दों में बताने की कोशिश करना है।

- हम "प्रभु इस प्रकार कहता है" या "परमेश्वर ने मुझसे कहा" इस प्रकार के शब्दों का उपयोग करने से बचते हैं, जब तक कि हमें यह महसूस न हो कि व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करने हेतु यह आवश्यक है। अधिकतर मामलों में हम केवल यह कहते हैं, "क्या इस प्रकार की परिस्थिति में एक या उससे अधिक लोग हैं," या "क्या आपके शरीर में इस प्रकार की समस्या है?"

- जो कुछ भी हमने देखा है उसमें किसी बात को न जोड़ते हुए हम स्पष्ट और निश्चित रहने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि हम जो तस्वीर देख रहे हैं उसमें हमने दाहिने पांव के निचले हिस्से को स्पष्ट रूप से देखा है, तो हम कहते हैं, "क्या यहां पर ऐसे लोग हैं जिनके दाहिने पांव के निचले हिस्से में समस्याएं हैं।" परंतु जो जानकारी नहीं दिखाई गई उसे न जोड़ें, जैसे, टूटी हुई हड्डी, लचक, दर्द, आदि। केवल वही बताएं जो प्रगट किया गया था। दूसरी ओर, केवल उतना ही बताएं जितना प्रगट किया गया था, क्योंकि इसके द्वारा उस व्यक्ति के विश्वास को प्रोत्साहन मिल सकता है जिसे वह तकलीफ है।
- जो ज्ञान का वचन दिया गया है उसके लिए यदि लोग अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते, तो निराश न हो। कभी-कभी लोग डर के कारण या संकोच के कारण अपनी समस्या को कबूल नहीं करते। केवल सेवकाई में आगे बढ़ते रहें।

बुद्धि का वचन

बुद्धि का वचन दैवीय बुद्धि का एक अंश है जो अलौकिक रीति से विश्वासी को दिया गया है जो समस्या सुलझाने हेतु, या कौन सा मार्ग अपनाया जाना चाहिए यह जानने हेतु, या भविष्य में क्या होने वाला है यह जानने हेतु, या किसी अवधारणा या कल्पना की रचनात्मक, कलात्मक, वैज्ञानिक या बुद्धिमानीपूर्ण अभिव्यक्ति देने हेतु परमेश्वर के मन, उद्देश्य और इच्छा को प्रगट करती है। बुद्धि के वचन का वरदान उस बुद्धि को प्राप्त करने से भिन्न है जो अनुभव और शिक्षा के माध्यम से आती है।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय बुद्धि का वचन उस पद्धती को प्रगट कर सकता है जिसका उपयोग उस व्यक्ति को चंगाई देने हेतु करना है या कभी-कभी एक व्यवहारिक समाधान होता है जो उस व्यक्ति की चंगाई ले आएगा। उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर उस व्यक्ति की समस्या के वास्तविक कारण को प्रगट कर सकता है, उसके बाद हम उस समस्या को सम्बोधित कर सकते हैं और उस व्यक्ति को उस समस्या से मुक्त कर सकते हैं।

आत्माओं की परख

आत्माओं की परख, लोगों की आत्माओं के संसार में अलौकिक रीति से देखने की योग्यता है या आत्माओं को पहचानने हेतु आत्मिक संसार में देखने की योग्यता है, ताकि लोगों पर जिस बात का प्रभाव है उस कारण को पहचान सकें, परमेश्वर जो कर रहा है उसे देख सकें, शैतान जो योजना बना रहा है और कर रहा है उसे देख सकें। आत्माओं की परख आत्मिक परख से भिन्न है जो प्राप्त की हुई आत्मिक योग्यता है।

आत्माओं की परख के वरदान के द्वारा छुटकारे की और चंगाई की सेवा करते समय परमेश्वर प्रगट कर सकता है कि किस प्रकार की दुष्ट ात्माएं काम कर रही हैं, वे क्या कर रही हैं और उस व्यक्ति को चंगाई और छुटकारा प्रदान करने हेतु किस प्रकार प्रार्थना करना है।

चंगाइयों के वरदान

चंगाइयों के वरदान परमेश्वर के आत्मा का अलौकिक कार्य है जिसका परिणाम रोगी व्यक्ति की शारीरिक और भावनात्मक चंगाई में होता है। चंगाइयों के वरदान अक्सर आत्मा के अन्य वरदानों के साथ प्रगट किए जाते हैं, उदाहरण के तौर पर, ज्ञान के वचन के साथ। जैसे ही हम किसी विशिष्ट परिस्थिति के विषय में बोलते हैं, वह व्यक्ति उसकी चंगाई प्राप्त करता है। कभी-कभी भीड़ में कोई व्यक्ति दर्शक के रूप में आता है, उसे व्यक्तिगत तौर पर कुछ होने की अपेक्षा नहीं होती, और वह चंगाई प्राप्त करता है। यह चंगाई के वरदान की दूसरी अभिव्यक्ति है।

सामर्थ के काम

सामर्थ के कामों का वरदान प्रकृति के स्वाभाविक क्रम में, घटनाओं, मानव योग्यता में अलौकिक हस्तक्षेप है, जिसका परिणाम जिसे हम आश्चर्यकर्म कहते हैं, उसमें होता है। इनमें आश्चर्यजनक रूप से ज़रूरतों का पूरा होना, रचनात्मक चंगाइयां, प्रकृति पर विजय, अलौकिक घटनाएं, और अन्य कई बातें होती हैं। आश्चर्यकर्म का अंतिम परिणाम लोगों की ज़रूरत पूरी करना है, खोए हुए को प्रभु के पास लाना और परमेश्वर की महिमा करना है।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय, सामर्थ के कामों के वरदानों के द्वारा इस तरह की बातें होती हैं, जैसे शरीर का अदृश्य अंग वापस मिल जाता है, जिन अंगों को ऑपरेशन द्वारा हटाया गया है वे मिल जाते हैं, शरीर के अंगों की पुनर्रचना होती है, अंग रोपण अदृश्य हो जाते हैं, जिससे शरीर के ऐसे कार्य किए जाते हैं जिन्हें चिकित्सीय दृष्टि से समझाना मुश्किल है और अन्य कार्य जो स्वाभाविक नहीं हैं।

विश्वास का वरदान

विश्वास का वरदान विश्वासी के हृदय में विश्वास का अलौकिक दान है ताकि वह विशिष्ट परिस्थिति में या क्षण में आश्चर्यकर्म के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखे।

चंगाई या छुटकारे की सेवा करते समय, विश्वास का वरदान अलौकिक विश्वास की प्रेरणा उत्पन्न करता है जो ऐसी परिस्थितियों में चंगाई/छुटकारा देता है जहां हमें अपने आपमें ऐसे विश्वास की ज़रूरत न हुई होती। उदाहरण के तौर पर, व्यक्ति को व्हील चेयर से उठकर चलने के लिए कहने की जहां बात आती है, वहां हमसे मिलने वाले व्हील चेयर में बैठे हर एक व्यक्ति को ऐसा करने सामान्य तौर पर नहीं कहेंगे, पवित्र आत्मा इस प्रकार के विश्वास की हमारे हृदयों में प्रेरणा दे सकता है और हमें ऐसा करने के लिए अगुवाई कर सकता है। परिणाम हमेशा निश्चित है। व्यक्ति चंगा होता है। विश्वास का वरदान भी हमारे हृदयों में उस समय विशिष्ट रूप से प्रेरणा प्रदान करेगा जब परमेश्वर मृत व्यक्ति को वापस जीवित करने के लिए हमारी अगुवाई करे।

भविष्यद्वाणी

भविष्यद्वाणी का वरदान परमेश्वर का मनुष्य के द्वारा मनुष्य के साथ बातें करना है। यह परमेश्वर के द्वारा मात्र एक संदेश है जो व्यक्ति प्राप्त करके दूसरों तक पहुंचाता है।

चंगाई और छुटकारे की सेवा करते समय, भविष्यद्वाणी का उपयोग प्रोत्साहन देने, बल प्रदान करने और ऐसी सांत्वना देने के लिए किया जाता है जिससे विश्वास प्रेरित होता है। भविष्यद्वाणी के वचन से अवसाद, भावनात्मक बंधन आदि के दुष्टात्मा के गढ़ तोड़े जा सकते हैं।

याद रखें कि आत्मा के वरदान सामान्य तौर पर दूसरे वरदान के साथ गिफ्ट पैक के रूप में दिए जाते हैं। सेवा करते समय, एक विशिष्ट वरदान से अधिक वरदान एक साथ कार्य कर सकते हैं। इसलिए इन्हें विशिष्ट नियम के अंतर्गत सीमित करने के बजाए, जो कुछ पवित्र आत्मा हमें दे रहा है उसके साथ हम आगे बढ़ना सीखते हैं।

अभ्यास का समय

विकल्प 1

ऐसे एक या एक से अधिक लोगों को ढूंढ़ निकालें जो उनके शरीर में किसी विशिष्ट तकलीफ के लिए चंगाई पाने के इच्छुक हैं। इस अध्याय में जो कुछ सिखाया गया है उसके आधार पर, प्रत्येक व्यक्ति के साथ उन्हें सेवा प्रदान करने हेतु दो या तीन लोगों का छोटा समूह तैयार करें।

उसके बाद प्रश्न पूछें और जिस व्यक्ति ने और समूह ने सेवा प्राप्त की उन्हे सेवकाई के समय के विशय में संक्षिप्त पूछताछ करें।

(अ) लोगों ने सेवकाई के समय के दौरान क्या देखा?

(ब) जिस व्यक्ति के लिए प्रार्थना हो रही है उसने क्या अनुभव किया?

(क) क्या समस्या या तकलीफ पूर्ण रूप से दूर हो गई, कम हुई, या अब भी उसी स्तर पर है? (यह केवल उन्हीं परिस्थितियों में सम्भव है जहां बाहरी तौर पर जांच की जा सकती है। अन्य स्थितियों में चिकित्सीय जांच की आवश्यकता होगी, इसलिए यह जांच केवल बाद में की जा सकती है)।

(ड) क्या प्रार्थना समय के दौरान कुछ और महत्वपूर्ण हुआ?

विकल्प 2

समूह में ज्ञान के वचनों को बोलें, और फिर लोग उन लोगों के पास जाते हैं जिनके पास उनकी समस्या के लिए ज्ञान का वचन था और वे प्रार्थना/सेवकाई प्राप्त करते हैं।

10
दुष्टात्माओं की सामर्थ से छुटकारा प्रदान करना

शैतान और दुष्टात्माओं का मूल और स्वभाव

नीचे दी गई बातें दुष्टात्माओं के विषय पर विस्तृत चर्चा नहीं है, बल्कि एक अवलोकन है, जो हमें छुटकारे की सेवकाई के क्षेत्र में आरम्भ करने हेतु सुसज्जित करने के लिए पर्याप्त है।

यहां पर शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के सम्बंध में कुछ मूल सत्य बताए गए हैं। हम जानते हैं कि लूसीफर (जिसे बाद में शैतान कहा गया) एक समय स्वर्ग में प्रधान दूतों ("अभिषिक्त करूब") में से एक था, जब तक कि उसने परमेश्वर के विरोध में विद्रोह करने का फैसला नहीं कर लिया (यहेजकेल 28:12-19; यशायाह 14:12-15)। लूसीफर को स्वर्ग से बाहर फेंक दिया गया और वह अपने साथ दो तिहाई स्वर्गदूतों को ले गया (लूका 10:17, प्रकाशितवाक्य 12:4)। लूसीफर का उल्लेख अजगर, दुरात्मा, शैतान (प्रकाशितवाक्य 12:9), सर्प (2 कुरिन्थियों 11:3, प्रकाशितवाक्य 20:2) के रूप में किया गया है और अन्य उपाधियां हैं जो उन कामों का वर्णन करती हैं जो वह करता है।

यशायाह 14:12-15

12 हे भोर के चमकनेवाले तारे तू क्योंकर आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति
को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है?
13 तू मन में कहता तो था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण
से अधिक ऊंचा करूंगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर बिराजूंगा;
14 मैं मेघों से भी ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।
15 परन्तु तू अधोलोक में उस गड़हे की तह तक उतारा जाएगा।

शरीररहित आत्माएं

दुष्टात्माएं पतीत स्वर्गदूत हैं जिन्हें लूसीफर के साथ स्वर्ग से निकाल दिया गया और वह अपने साथ दो तिहाई स्वर्गदूतों को ले गया। ये शरीररहित

आत्माएं हैं जो शरीर, रहने का स्थान ढूंढ़ती हैं (मत्ती 12:43-45)। वे मानव शरीरों में रहना पसंद करती हैं, परंतु वे प्राणियों में वास करती भी दिखाई देती है (मरकुस 5:12,13 उत्पत्ति 3:1-3) और बेजान वस्तुओं को प्रभावित करती हैं (1 कुरिन्थियों 10:19-21, व्यवस्थाविवरण 7:25, 26)।

दुष्टात्माओं के वर्ग

इफिसियों 6:12

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

हम समझते हैं कि शैतान का राज्य संगठित है और वहां श्रेणियों के अनुसार रचना है जिसमें दुष्टात्माओं के विभिन्न स्तर हैं जिनके पास विभिन्न प्रमाणों में अधिकार और प्रभाव है। इन्हें हम प्रधानों, अधिकारियों, अंधकार के हाकिमों, दुष्टता की आत्मिक सेनाएं जो आकाश में रहती हैं, के रूप में जानते हैं।

- **अधिपति (हाकिम),** शैतान का उल्लेख अक्सर इस उपाधि से किया जाता है और वह अपने अंधकार के राज्य का प्रधान है। **उदाहरण:** आकाश के अधिकार का हाकिम (इफिसियों 2:2), इस संसार का अधिकारी (यूहन्ना 12:31, यूहन्ना 14:30, यूहन्ना 16:11)।
- प्रधानताओं का अर्थ प्रधान है, विशिष्ट तौर पर उन्हें दुष्टात्माओं के श्रेणी के शीर्ष स्थान में समझा जाता है।
- **अधिकारी** का अर्थ है प्रतिनिधित अधिकार, जो दूसरे स्तर का उल्लेख करता है जो उन लोगों से अधिकार प्राप्त करते हैं जिनके वे अधीन होते हैं।
- **हाकिम** का अर्थ है जगत के अधिकारी, जो इस संसार के विभिन्न क्षेत्र पर छाए हुए अंधकार पर नियंत्रण रखते हैं।
- **दुष्टता की सेनाओं** का अर्थ है दुष्टात्माएं, जो निचले स्तर की आत्माओं का उल्लेख करता है जो उन्हें दिए गए दिन प्रतिदिन के काम करते

हैं। विशिष्ट तौर पर, लोगों को चंगाई और छुटकारे की सेवा प्रदान करते समय हम इन्हीं का सामना करते हैं।

"आकाश के क्षेत्र" का आरम्भ वातावरण के क्षेत्र से होता है जो पृथ्वी को घेरे हुए है जिनमें दुष्टात्माएं कार्य करती हैं और दूसरा उच्च आकाशीय क्षेत्र, जहां हाकिम, अधिकारी और उच्च प्रधानताएं कार्य करती हैं।

विशिष्ट

हम देखते हैं कि दुष्टात्माएं जो कुछ करती हैं उनमें वे विशेषता प्राप्त होती हैं। उन्हें विशिष्ट तौर पर पहचाना जा सकता है या ऐसे नाम दिए जाते हैं जो उनके विशिष्ट कार्य या गतिविधि का उल्लेख करते हैं।

- खीष्ट विरोधी की आत्मा (1 यूहन्ना 4:3; 2 यूहन्ना 1:7)
- गुमराह करने वाली आत्माएं, दुष्टात्माओं की शिक्षाएं (1 तीमुथियुस 4:1)
- जलन की आत्मा (गिनती 5:29-31)
- परिचित आत्मा (लैव्यव्यवस्था 20:6, 27; 2 राजा 23:24)
- अन्धी आत्मा (मत्ती 12:22)
- गूंगी और बहरी आत्मा (मरकुस 9:25)
- निर्बलता की आत्मा (13:11)
- अशुद्ध आत्मा (मत्ती 12:43; मरकुस 1:23; 22 बार)
- अशुद्ध आत्मा (मरकुस 9:25; 22 बार)
- अनाकारिता की आत्मा (इफिसियों 2:2)
- भावी कहने वाली आत्मा (प्रेरितों के काम 16:16)
- झूठी आत्मा (1 राजा 22:22,23; 2 इतिहास 18:21, 22)
- भमता की आत्मा (यशायाह 19:14)
- उदासी की आत्मा (यशायाह 61:3)
- वेश्यापन की आत्मा (होशे 4:12; होशे 5:4)

- बंधन की आत्मा (रोमियों 8:15)
- भय की आत्मा (2 तीमुथियुस 1:7)
- भ्रम की आत्मा (1 यूहन्ना 4:6)

प्रादेशिक या क्षेत्रीय

हम यह भी सीखते हैं कि दुष्टात्माएं प्रादेशिक होती हैं। इसका अर्थ यह है कि उनमें से कुछ को विशिष्ट प्रदेश सौंपे गए हैं और जगत के उन प्रदेशों में वे नियंत्रण और प्रभाव रखते हैं। इसलिए उनके द्वारा प्रभावित जगत के विशिष्ट प्रान्तों के अनुसार उन्हें नाम दिया गया हैः फारस के राज्य का प्रधान (दानिय्येल 10:13) और यूनान का प्रधान (दानिय्येल 10:20)।

आत्मा के जगत का प्रभाव

स्वाभाविक संसार पर आत्मा के जगत का प्रभाव कई क्षेत्रों और कई स्तरों तक फैलता है। शिक्षा के उद्देश्यों से, इन्हें इस प्रकार श्रेणीबद्ध किया गया है :

(1) व्यक्ति

(2) परिस्थितियां और स्थितियां

(3) विश्व प्रणाली, उदाहरण, सरकार, शिक्षा, व्यवसाय, आदि

(4) भौगोलिक प्रान्त और प्रदेश

(5) सांस्कृतिक स्वरूप उदाहरण, संगीत, नृत्य, कला, आदि

(6) संगठन और संस्थाएं

(7) गतिविधियां उदाहरण, शराब, वेश्या व्यवसाय, दंगे-फसाद, आदि

(8) इमारतें, अवकाश, घर और वस्तुएं

व्यक्तियों पर प्रभाव

निम्नलिखित तालिका व्यक्तियों पर दुष्टात्माओं के प्रभाव के विभिन्न अंश और प्रत्येक स्तर पर दुष्टात्माओं के कार्य के विषय में समझाती है। फिर से यह तालिका शिक्षा के उद्देश्यों से तयार की गई है।

प्रभाव	दबाव	कैंजा	शक्ति-प्रदान
परीक्षा धोखा संत्रास दखल विरोध	बीमारी अवसाद बंधन मानसिक/ भावनात्मक/ आचरणात्मक गढ़	अंशकालीन (रुक-रुककर) पूर्णकालीन (पूरा पागल)	लोगों पर प्रभाव और नियंत्रण प्रगट होता है) प्रगट चिन्ह और चमत्कार

दुष्टात्माओं के उत्पीड़न के बढ़ते हुए स्तर(पूरा पागल)

प्रभावः सभी लोगों पर दुष्टात्माओं का प्रभाव हो सकता है। विश्वासियों के नाते हम सभों को परीक्षा का सामना करना पड़ता है; यदि हम सावधान न रहे, तो हम धोखे से उन बातों पर विश्वास करेंगे या वे काम करेंगे जो उचित नहीं हैं; हमें संत्रास का सामना करना पड़ सकता है; जो हमारा है उसमें गलत प्रवेश और परमेश्वर ने हमें जो करने के लिए बुलाया है उसे पूरा करने में शैतान की रुकावट या विरोध। ये खास तौर पर दुष्टात्माओं के कार्य होते हैं। परंतु हमें युद्ध के हथियार दिए गए हैं ताकि हम इन सारी बातों पर जय पा सकें और इनके विरोध में आगे बढ़ सकें। हम दुष्टात्मा के हर प्रभाव पर विजय के साथ जी सकते हैं। हम वैसे ही चल सकते हैं जैसे यीशु चला। उसने कहा, *"हमारा मैं अब से तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं"* (यूहन्ना 14:30)। शैतान हमें केवल उस अंश तक प्रभावित कर सकता है जिसमें वह हममें ऐसा कुछ पाता है जो उस बात से मेल रखता हो जो वह करना चाहता है। परंतु, यदि हम आत्मा के द्वारा हमारे शरीर के सारे पापमय कार्यों का अंत करते हैं, अपने मन का नवीनीकरण करते हैं और उसे वचन से शुद्ध रखते हैं, और आत्मा की अधीनता में अपने जीवनों को बिताते हैं, तो शैतान को हममें कुछ नहीं मिलेगा। हमें प्रभावित करने की उसकी योग्यता कम मिट गई है और रद्द हो गई है। जब वह आपके विरोध में अपने अग्नीमय तीरों को चलाता है, तो *"विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको"* (इफिसियों 6:16)।

दबावः दबाव वहां होता है जहां दुष्टात्मा गलत प्रवेश प्राप्त करती और व्यक्ति को किसी रीति से क्लेशित करती है, बीमारी के द्वारा, अवसाद, व्यक्ति को गुलाम बनाकर रखने वाले बंधनों के द्वारा, या किसी और गम्भीर मानसिक, भावनात्मक, आचारणात्मक गढ़ों के द्वारा जो व्यक्तियों को कैद करके रखते हैं। बीमारी को शैतान का दबाव या उत्पीड़न कहा जाता है (प्रेरितों के काम 10:38)।

कैंजा या दुष्टात्मा से पीड़ित होनाः यहां पर दुष्टात्माओं ने व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों में गलत तरीके से प्रवेश पाया है और इस कारण उस व्यक्ति के द्वारा शारीरिक रीति से खुद को व्यक्त कर पाने की योग्यता उन्होंने पाई है। वे बोलने के लिए उस व्यक्ति की आवाज़ का और चलने/फिरने/कार्य करने के लिए उस व्यक्ति के शरीर का उपयोग कर सकते हैं। यह 'अंश-कालीन' हो सकता है जहां व्यक्ति का दुष्टात्मा से पीड़ित होना बीच-बीच में प्रगट होता है, कभी-कभी व्यक्ति सामान्य होता है या यह "पूरे समय के लिए" भी हो सकता है जहां पर व्यक्ति पर हर समय नियंत्रण होता है और वह हमेशा दुष्टात्मा से पीड़ित दिखता है, जैसा कि पूर्ण रूप से पागल व्यक्ति में देखा जाता है।

शक्ति-प्रदानः दुष्टात्मा के उत्पीड़न के इस प्रमाण में, व्यक्ति अब सहभागी की भूमिका में है और दुष्टात्माओं की ताकतों का सहकर्मी है। दुष्टात्माएं अब उस व्यक्ति पर काबू पाती हैं कि विभिन्न कार्यों के द्वारा अन्य लोगों को प्रभावित करने हेतु और उन पर नियंत्रण करने हेतु उन्हें प्रेरित कर सके, जैसे जादूटोना, काला जादू, मंत्र फूंकना, और अन्य ओझा, और उसी तरह झूठे चिन्ह और चमत्कार करने हेतु लोगों को सामर्थ देना।

दबाव और कैंजा या दुष्टात्मा से पीड़ित होने में फर्क यह है कि दबाव में व्यक्ति विशिष्ट शारीरिक या भावनात्मक क्षेत्र में परेशान किया जाता है, जबकि उनकी अपनी बुद्धि और विवेक स्वस्थ होते हैं। दुष्टात्मा से पीड़ित होने पर, व्यक्ति की आंतरिक शक्तियां अब दुष्टात्माओं के नियंत्रण में होती हैं। दुष्टात्माओं से पीड़ित होने में या व्यक्ति पर उनका कैंजा होने में यह समझा जाता है दुष्टात्मा उससे ग्रसित व्यक्ति में वास करने लगी हैं।

विश्वासी दुष्टात्मा से ग्रसित नहीं हो सकता, क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर का आत्मा हमारी आत्मा में वास करता है। हम जीवित परमेश्वर का मंदिर हैं (1 कुरिन्थियों 3:16)। मसीह हमारे हृदयों में वास करता है (इफिसियों 3:17)।

विश्वासी दुष्टात्मा के दबाव को अनुभव कर सकता है। विश्वासी होने के नाते हमें आज्ञा दी गई है कि हम शैतान को जगह न दें (इफिसियों 4:27)। शैतान घुसपैठिया है और वह गलत तरीके से (गैरकानूनी) प्रवेश पाने की कोशिश करता है। शैतान चोरी करने, घात करने, और नाश करने आता है (यूहन्ना 10:10)। विश्वासी होने के नाते यदि हम जागृत न रहे और अपने हथियारों का उपयोग न करें जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं, तो शत्रु को जगह मिल जाएगी और वह हमारे जीवनों के एक या उससे अधिक क्षेत्रों में प्रवेश पाएगा।

प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ के द्वारा व्यक्ति को दुष्टात्मा के किसी भी प्रभाव से जो उनके जीवनों में प्रभाव रखता है, स्वतंत्र करना छुटकारा कहलाता है : दबाव, कैंजा या दुष्टात्मा से ग्रसित होना या शक्ति प्रदान। छुटकारे की सेवकाई के संदर्भ में, जब दुष्टात्माएं खुद को व्यक्त करती हैं या जब व्यक्ति मंत्र के प्रभाव में होता है, तब शैतान उस व्यक्ति के साथ या उस व्यक्ति के द्वारा जो कुछ करता है उसका उल्लेख करने हेतु हम "प्रगटन" (मेनिफेस्टेशन) शब्द का उपयोग करते हैं। उदाहरण के तौर पर, हो सकता है कि ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति दांत पीसता है, दुबककर बैठता है, बेहोश हो जाता है, दर्द महसूस कर सकता है। दुष्टात्मा से ग्रसित होने के मामलों में, हम देख सकते हैं कि शैतान उस व्यक्ति के माध्यम से बोलने के द्वारा या अजीब हरकतें करने के लिए व्यक्ति के शरीर का उपयोग करने के द्वारा खुद को प्रगट करता है, जैसे सांप के समान जमीन पर लोटना, लुढ़कना, या नृत्य जैसी विभिन्न हरकतें करना। ऐसा भी समय होता है जब बिना किसी प्रगटन (हरकत) के छुटकारा होता है। यह शांत, शीघ और आसान होता है। अन्य समयों में हर प्रकार के प्रगटनों के साथ संघर्ष होता है और उसके बाद व्यक्ति छुटकारा पाता है।

छुटकारे की सेवा करते समय, हम यह देख सकते हैं कि दबाव और दुष्टात्मा से ग्रसित होने के कुछ मामलों में "प्रगटन" (या हरकते) समान हो सकते हैं, परंतु इनके विषय में गलतफहमी नहीं की जानी चाहिए। उदाहरण के तौर पर, जिस व्यक्ति पर दुष्टात्मा का दबाव है और वह छुट कारा पा रहा है, वह छुटकारा पाते समय बिल्कुल वैसे ही दांत पीस सकता है, दुबक सकता है या जमीन पर बेहोश गिर सकता है, जैसे दुष्टात्मा से ग्रसित व्यक्ति छुटकारा पाते समय करता है। परंतु, दुष्टात्मा से पीड़ित होने के इन दोनों स्तरों को समान नहीं समझना चाहिए।

हमने ऊपर्युक्त बातों को इस उद्देश्य से प्रस्तुत किया है कि शत्रु किस प्रकार कार्य करता है यह समझा जा सके। हमारा लक्ष्य इन बातों का सिद्धांत बनाना या इनके सम्बंध में अधिक तकनीकी ज्ञान देना नहीं है, परंतु वास्तव में लोगों को यीशु मसीह के नाम में छुटकारा प्रदान करना है। हम शब्दों के सम्बंध में और अन्य तकनीकों के सम्बंध में विवाद करने में कम रूचि रखते हैं, परंतु परमेश्वर की सामर्थ से लोगों को छुटकारा देने हेतु उत्सुक हैं। दुष्टात्माएं कैसे कार्य करती हैं इसकी समझ प्रस्तुत करने हेतु यह हमारा लक्ष्य और उद्देश्य है।

आत्मिक जगत के साथ कार्य करना

कई तरीके हैं जिनके द्वारा लोग आत्मिक जगत को प्रवेश देते हैं, निमंत्रित करते हैं, जागृत करते हैं, और उनके साथ कार्य करते हैं। जब लोग आत्मिक जगत के साथ कार्य करते हैं, तब वे इन शक्तियों को हमारे प्राकृतिक जगत में प्रवेश पाने का अधिकार प्रदान करते हैं। कुछ महत्वपूर्ण तरीके हैं:

1) अभ्यास

2) अर्पण

3) बलिदान

4) रीति-रस्म और धार्मिक प्रथाएं।

अभ्यास (डिसिप्लीन्स)

जो अभ्यास आत्मिक जगत के साथ सहभाग करते हैं उनमें प्रार्थना, मंत्रोच्चारण, पूजा-अर्चना, मनन, और अन्य धार्मिक स्वरूपों जैसी बातों का समावेश है। गलत जीवनशैली (उदाहरण, अवैध यौन सम्बंध, वेश्यावृत्ती, वस्तुओं का गलत उपयोग) आदि बातें भी उस अभ्यास का एक स्वरूप हो सकती हैं जो दुष्टात्माओं को व्यक्ति के जीवन में प्रवेश दिलाती हैं।

अर्पण

व्यवस्थाविवरण 7:25,26

25 उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियां तुम आग में जला देना; जो चांदी वा सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच करके न ले लेना, नहीं तो तू उसके कारण फन्दे में फंसेगा; क्योंकि ऐसी वस्तुएं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं।
26 और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उस से घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुध्द वस्तु है।

हम खुद को आत्मिक क्षेत्र के जीवों के प्रति अर्पित कर सकते हैं। हम सांस्कृतिक स्वरूपों को (संगीत, नृत्य, कला, संचार माध्यम) जमीनों, इमारतों, वस्तुओं, गतिविधियों (उदाहरण, कारोबार, खेलकूद), संस्थानों (स्कूलों) और व्यवसायों को भी अर्पण कर सकते हैं।

जो कुछ अर्पण किया जाता है वह अभिव्यक्ति का माध्यम और जरिया बना जाता है। इसलिए यदि परमेश्वर को कुछ अर्पण किया गया है, तो परमेश्वर उसकी आत्मा के द्वारा, उसका उपयोग उसकी स्वयं की अभिव्यक्ति, उसकी सामर्थ और महिमा के लिए इस संसार में जरिया और माध्यम के रूप में करता है। उसी तरह जब दुष्टात्मा की शक्तियों को कोई वस्तु या व्यक्ति अर्पण की जाती है, तब दुष्टात्मा की शक्तियां उस व्यक्ति या वस्तु के प्रति या द्वारा जिसे अर्पण किया गया है अपना कार्य करना आरम्भ करती हैं।

हम शब्दों और क्रिया (आचरण, आज्ञापालन, अधीनता) के द्वारा अर्पण करते हैं। शब्द सामर्थी होते हैं। हमारे शब्द हमारे जीवनों को आत्मिक संसार के लिए खोल देते हैं।

हम वस्तुओं को जानबूझकर या कभी अनजाने में अर्पित करते हैं। जो अधिकार पद पर हैं उन्हें उन लोगों को जो उनके अधिकार के अंतर्गत हैं, अर्पण करने का अधिकार होता है, उदाहरण के तौर पर, माता-पिता अपने बच्चों को अर्पण कर सकते हैं। इस अर्पण को व्यक्ति के चुनाव से फिर रद्द किया जा सकता है, उदाहरण के तौर पर, बच्चों के बड़े हो जाने पर, वे उस अर्पण के विरोध में जाने का चुनाव कर सकते हैं।

बलिदान

1 कुरिन्थियों 10:19-21

19 फिर मैं क्या कहता हूं? क्या यह कि मूरत का बलिदान कुछ है, या मूरत कुछ है?
20 नहीं, वरन् यह कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं, वे परमेश्वर के लिए नहीं, परन्तु दुष्टात्माओं के लिए बलिदान करते हैं; और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हों।
21 तुम प्रभु के कटौरे, और दुष्टात्माओं के कटौरे, दोनों में से नहीं पी सकते! तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं की मेज दोनों के साझी नहीं हो सकते।

- भौतिक वस्तुओं के बलिदान, हमारे परिश्रम का फल, वस्तुएं आदि
- पशुओं के रक्तबलि जिनमें लहू बहाना शामिल है
- नरबलि
- नरबलि का सर्वोच्च स्वरूप है अपने पहिलौठे, वारिस का बलि चढ़ाना
- मोआब के राजा ने (2 राजा 3) अपने पहिलौठे पुत्र को नगर की दीवार पर बलि चढ़ाया था
- परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया और यह पूर्णतया सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ बलिदान है जो इस ब्रम्हांड ने कभी जाना हो!

रीति रस्म/धार्मिक प्रथाएं

विभिन्न धार्मिक विधियां और प्रथाएं वास्तव में विशिष्ट प्रकार की दुष्टात्मा की शक्तियों को जागृत करती हैं और उन्हें प्रवेश देती हैं।

विश्वासी का अधिकार

दुष्टात्मा से त्रस्त लोगों को छुटकारा प्रदान करने की तैयारी करते समय, हमारे लिए अंधकार की शक्तियों पर हमारे आत्मिक अधिकार के विषय में जानना और उस विषय में पूर्णतया विश्वास होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें हमारे आत्मिक अधिकार के प्रति पूर्ण भरोसा रखते हुए आगे बढ़ना है।

पृथ्वी पर हमारे अधिकार का आधार क्या है?

प्रभु यीशु ने क्रूस पर शैतान और उसके सारे दुष्टात्माओं पर विजय प्राप्त की और वह विजय कलीसिया को दी।

कुलुस्सियों 2:14,15

14 और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।

15 और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुल्लम-खुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई।

इब्रानियों 2:14,15

14 इसलिए जबकि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।

15 और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले।

प्रभु यीशु ने क्रूस पर दुष्ट की शक्तियों को निहत्था कर दिया, पूर्णतया लूट लिया और पूर्ण रूप से उनके बल से उन्हें वंचित कर दिया और उन पर विजय प्राप्त की। उसने शैतान का नाश कर दिया और उसे पूर्ण रूप से बेकार कर दिया। प्रभु यीशु ने यह खुद के लिए नहीं किया। यह उसने हमारे लिया किया, कलीसिया के लिए। क्रूस पर हमारे लिए प्राप्त उसकी विजय से हम कार्य करते हैं। यह सच है कि शैतान नहीं चाहता कि हम इस विजय के विषय में जानें और उसमें चलें। शैतान भयभीत करना और धोखा देना आदि युक्तियों के द्वारा झूठे बल का दिखावा करता है। विश्वासी होने के नाते, हम मसीह की विजय में दृढ़ खड़े रहते हैं और मसीह की जय को अमल में लाते हैं। जहां तक विश्वासी की बात है, शैतान पूर्णतया

हारा हुआ शत्रु है। शैतान केवल तब प्रवेश और अधिकार पा सकता है जब हम उसे उसकी अनुमति देते हैं।

आगे हमारे आत्मिक अधिकार को समझने में हमारी सहायता करने हेतु, कुछ विशिष्ट पहलुओं की ओर देखना उपयोगी होगा जिनके आधार पर हमारे पास अंधकार की शक्तियों पर आत्मिक अधिकार है। इन बातों को समझने से और इन सच्चाइयों को अपने हृदयों में पूर्ण रूप से स्थिर करने से हम शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के विरोध में निर्भयता और हियाव के साथ चल पाएंगे।

छुड़ाने वाला अधिकार

कुलुस्सियों 1:13,14

13 उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया,
14 जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

प्रकाशितवाक्य 12:11

और वे मेम्ने के लोहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली।

शैतान पर जो हमारा अधिकार है वह यीशु मसीह द्वारा बहाए गए लहू के कारण और उस छुटकारे के कारण है जो उसने कलवरी के क्रूस पर मोल लिया। मसीह में, हम शैतान की प्रभुता से छुड़ाए गए हैं। शैतान के पास हमारे जीवनों पर कोई अधिकार नहीं है, हम पर कोई दावा नहीं है, और हम पर कोई हक नहीं है। हम छुड़ाए गए हैं और उस राज्य में ग्रहण किए गए हैं जो अंधकार के राज्य से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। यह सत्य कि हम छुड़ाए गए हैं हमें तुरंत अंधकार की शक्तियों के ऊपर प्रभुता के स्थान में रखता है। प्रभु यीशु मसीह का लहू हमारे छुटकारे का दाम है और इसलिए हम हमारे छुटकारे की सामर्थ में चलते हैं और उस बात की घोषणा करते हैं जो यीशु मसीह के लहू ने हमारे लिए किया है। जैसा कि पवित्र शास्त्र का वचन कहता है, *"यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा ही कहें, जिन्हें उस ने द्रोही के हाथ से दाम देकर छुड़ा लिया है"* (भजन संहिता 107:2)।

विरासत के रूप में मिला अधिकार

कुलुस्सियों 1:12

और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में समभागी हों।

रोमियों 8:16,17

16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।
17 और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जबकि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं।

गलातियों 4:6,7

6 और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है।
7 इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

हम परमप्रधान परमेश्वर की संतान हैं। संतान होने के नाते, हम परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ संगी वारिस हैं। आत्मिक क्षेत्र हमें इसी रूप में पहचानता है। परमेश्वर के वारिस! यीशु मसीह के संगी वारिस! यह हमें बड़े पैमाने पर आत्मिक राजकीयता प्रदान करता है! जिस प्रकार राजकुमार जो सिंहासन और राज्य का वारिस होता है उसके पास राजकुमार का अधिकार होता है, उसी प्रकार हम विश्वासियों के पास परमेश्वर के वारिस और यीशु मसीह के संगी वारिस के रूप में दैवीय अधिकार है। हमने यह अधिकार परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण कार्य के परिणामस्वरूप पाया है जिसके द्वारा वह हमें अपने बेटे और बेटियां बनाता है। इस स्वर्गीय अधिकार के पीछे स्वर्ग का सिंहासन और परमेश्वर का राज्य है जिसके हम भागी हैं।

प्रतिनिधित अधिकार

लूका 10:19

देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार (यूनानी *'एक्सूसिया'*) **दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।**

लूका 10:19 में "अधिकार" के लिए दिया गया शब्द है *'एक्सूसिया'* जिसका अर्थ है "प्रतिनिधित अधिकार।" हमारे पास प्रतिनिधित अधिकार है जो यीशु के स्थान में कार्य करने हेतु, जो वह करना चाहता है वह करने हेतु,

उसकी इच्छा और उद्‌देश्य को पूरा करने हेतु दिया गया दैवीय अधिकार है। "यीशु के नाम में" कार्य करने का यही अर्थ है। जब हम उसके नाम का उपयोग करते हैं, तब हम हमारे प्रतिनिधित अधिकार का उपयोग करते हैं। जो कुछ उस नाम में निहित है वह हमारा है। यीशु ने कहा कि उसके नाम में हम दुष्टात्माओं को निकालेंगे" (मरकुस 16:17, 18)। यह अधिकार सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध है। प्रत्येक विश्वासी यीशु के नाम का उपयोग कर सकता है और दुष्टात्माओं पर अधिकार जता सकता है। कलीसिया होने के नाते, हमें "स्वर्ग के राज्य की कुंजियां" दी गई हैं (मत्ती 16:16-18)। कुंजियां अधिकार को दर्शाती हैं। इस अधिकार के साथ, हम अधोलोक की शक्तियों के विरोध में प्रस्थान करते हैं। हम पृथ्वी पर बांधते और खोलते हैं ताकि जो कुछ स्वर्ग में है वह यहां पृथ्वी पर दृढ़ हो।

स्थिति (पद) सम्बंधी अधिकार

इफिसियों 2:4-6

4 परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिससे उसने हमसे प्रेम किया,

5 जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है),

6 और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।

परमेश्वर ने हमें जिलाया है और हमें मसीह के साथ उसके दाहिने हाथ पर बैठाया है। हम इस विश्व के सर्वोच्च सिंहासन पर, पिता के दाहिने हाथ पर बैठने के लिए जिलाए गए हैं। हम मसीह के साथ बैठे हैं और इसके द्वारा शैतान और उसकी दुष्टात्माओं पर पूर्ण अधिकार के स्थान में हैं। हम मसीह में *"सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के"* (इफिसियों 1:20,21) ऊपर विराजमान हैं। जब हम पृथ्वी पर चलते हैं, तब हम स्वाभाविक क्षेत्र में सामान्य लोग हैं, परंतु आत्मिक क्षेत्र में हम बड़ा अधिकार पाए हुए लोग हैं। हमें इस आत्मिक अधिकार के स्थान से कार्य करना सीखना है।

हमारे आत्मिक अधिकार का उपयोग करना

हमारे व्यक्तिगत जीवन में, हमारे पारिवारिक जीवन में, हमारी नौकरी में, हमारे पैसों में, और हमारे जीवन के हर क्षेत्र में हम उस अधिकार का

उपयोग कर सकते हैं जो यीशु में हमारे पास है। जब शत्रु हमारे विरोध में आता है या/और पाप, बीमारी, निर्धनता, गड़बड़ी आदि के उसके दुष्ट कार्यों के साथ हमारे जीवन में प्रवेश करने की कोशिश करता है, तो हम हमारे आत्मिक अधिकार का उपयोग करके उसके कामों का विरोध कर सकते हैं। जब दुष्टात्मा के प्रयास हमारे परिवार में, हमारे बच्चों के जीवनों में या हमारे घराने के अन्य लोगों के जीवनों में दखल देने की कोशिश करते हैं तो हम उन प्रयासों को उसी तरह विफल कर सकते हैं। हम अपने आत्मिक अधिकार का उपयोग दूसरों की सहायता के लिए कर सकते हैं - मसीह के छुटकारे की सामर्थ को उनके जीवनों में लाने हेतु। परमेश्वर ने मसीह में हमें जो अधिकार दिया है उसे पहचानें। हम उसका उपयोग करें। उस पर अमल करें।

दुष्टात्मा की शक्तियों पर अधिकार

प्रत्येक विश्वासी को प्रभु यीशु के नाम के द्वारा शैतान और उसकी दुष्टात्माओं पर अधिकार दिया गया है। यीशु ने कहा, *"और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे"* (मरकुस 16:17अ)। जो अधिकार हमारे पास है, वह शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार है (लूका 10:19), यहां पर जिस शत्रु का उल्लेख किया गया वह शत्रु है शैतान। हमारे पास उन सारी बातों पर अधिकार है जो शत्रु कर सकता है। हमारे पास पूर्ण प्रभुता के साथ चलने का, *"सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का"* अधिकार है। दुष्टात्मा की शक्तियों को हमारे पांवों तले कुचलना है।

पृथ्वी मनुष्य को दी गई (भजन संहिता 115:16) थी। मनुष्य को पृथ्वी पर प्रभुता रखना था (उत्पत्ति 1:26-28)। दुष्टात्मा की प्रत्येक शक्ति जो हमारे संसार में घुसपैठ करती है या दखल देती है, वह परमेश्वर की मूल योजना का उल्लंघन करती है। विश्वासी होने के नाते हमें आत्मिक संसार की प्रत्येक दुष्ट शक्ति पर अधिकार दिया गया है जो पृथ्वी पर मनुष्य के लिए स्थापित परमेश्वर की योजना का उल्लंघन करती है। ये प्रधानताएं हों, या अधिकार, अंधकार के हाकिम या दुष्टात्माएं हों, जब ये हमारे क्षेत्र में प्रवेश करती हैं और प्रभाव डालती हैं, तो हमारे पास अधिकार है कि जो कुछ वे कर रहे हैं उन्हें पराजित करें। हमारे पास उन पर अधिकार है।

दुष्टात्मा के कामों पर अधिकार

1 यूहन्ना 3:8

जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे।

प्रेरितों के काम 10:38

कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया। वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।

शैतान और उसकी दुष्टात्माएं हमारी पृथ्वी के क्षेत्र में विभिन्न कार्य करती हैं। इन्हें शैतान के काम कहा जाता है। बीमारी, शरीर और मन के रोग कई मामलों में दुष्टात्माओं के कारण उत्पन्न होते हैं। कुछ परिस्थितियों का कारण दुष्टात्माएं होती हैं। ये परिस्थितियां, बाधाएं, गड़बड़ियां, उपद्रव होते हैं जो दुष्टात्माओं द्वारा प्रेरित होते हैं। दुष्टात्माएं प्राकृतिक तत्वों, भौतिक वस्तुओं और अन्य वस्तुओं को भी प्रभावित कर सकती हैं। सभी मामलों में, हम यहां पर उन सारे कामों को जो शैतान कर रहा है, नष्ट करने, रद्द करने, रोकने, और मिटाने के लिए हैं। हमें यह अधिकार दिया गया है।

दुष्टात्मा के प्रभावों पर अधिकार

व्यक्ति, लोग या परिस्थितियों में शैतान के कामों का प्रत्यक्ष रूप से सामना करने और उन्हें नष्ट करने के अलावा, हमारे पास शैतान की अन्य प्रकार की गतिविधियों और प्रभावों पर भी अधिकार है। इनमें निम्नलिखित बातों का समावेश होगाः

(अ) लोगों पर, व्यक्तियों पर या समुदायों पर दबाव, धोखा और आत्मिक अंधेपन के द्वारा आए दुष्टात्माओं के प्रभाव पर अधिकार।

(ब) समाज, नगरों, या राष्ट्रों में विश्व प्रणाली में दुष्टात्मा के प्रभाव पर अधिकार। हम हमारे आत्मिक अधिकार के उपयोग के द्वारा राजनीति, व्यवसाय, परिवार, संचार माध्यम, कला और मनोरंजन, और उन अन्य प्रणालियों पर जिनके विषय हम चिंतित हैं दुष्टात्मा के प्रभाव को रोक सकते हैं। मनुष्य के पतन के समय जो कुछ हुआ उसके कारण

शैतान विश्व प्रणालियों पर नियंत्रण रखता है, परंतु हमारे पास उस पर परमेश्वर द्वारा दिया गया अधिकार है। *"तब शैतान उसे ले गया और उसको पल भर में उसने जगत के सारे राज्य दिखाए। और उससे कहा, "मैं यह सब अधिकार, और इनका विभव आपको दूंगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है; और जिसे मैं चाहता हूं, उसी को दे देता हूं"* (लूका 4:5,6)। परमेश्वर के वचन की सामर्थ से और हमारे द्वारा मुक्त अधिकार से, हम शैतान के कार्य को रद्द कर सकते हैं, उदाहरण के तौर पर, देखें कि परमेश्वर ने यिर्मयाह से क्या कहा: *"तब यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुंह को छुआ; और यहोवा ने मुझ से कहा, देख, मैंने अपने वचन तेरे मुंह में डाल दिये हैं। सुन, मैंने आज के दिन तुझे जातियों और राज्यों पर अधिकारी ठहराया है; उन्हें गिराने और ढा देने के लिये, नाश करने और काट डालने के लिये, या उन्हें बनाने और रोपने के लिये"* (यिर्मयाह 1:9,10)।

उसी तरह जब कभी हम भौगोलिक क्षेत्रों (उदाहरण फिलिप्पी), इमारतों, वस्तुओं पर, और पुरावशेषों पर, भूतविद्या की अभिव्यक्ति पर (श्राप, जादूटोना, टोटका, काला जादू, आदि) और संस्थानों और संस्थाओं पर दुष्टात्मा के प्रभाव को देखते हैं, तब हम कलीसिया के रूप में उठकर दुष्टात्मा की इन गतिविधियों का सामना कर सकते हैं।

दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर अधिकार

हम झूठे संप्रदायों और शैतान द्वारा जिन्हें सामर्थ दी गई है (जिन्हें "शैतान के दूत" - 2 कुरिन्थियों 11:13-15) उनके माध्यम से दुष्टात्मा की गतिविधि देखते हैं। परमेश्वर के वचन के सत्य, आत्मा का अभिषेक और परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए अधिकार के साथ, हम उन लोगों को मुक्त कर सकते हैं जिन्हें झूठी शिक्षाओं के द्वारा कैद कर लिया गया है (1 तीमुथियुस 4:1-3; 2 तीमुथियुस 2:24-26)। पापोस में प्रेरित पौलुस जादूटोना करने वाले का सामना करता है, यह एक उदाहरण है जहां शैतान के दूत के द्वारा कार्यरत शैतान के कामों को पराजित करने हेतु परमेश्वर की सामर्थ और अधिकार का उपयोग किया गया (प्रेरितों के काम 13:6-12)। अन्य कुछ उदाहरणों में फिलिप्पुस द्वारा शिमोन जादूगर को जीत लेना (प्रेरितों के काम 8:9-13),

और फिलिप्पिया में भावी कहने वाली लड़की को पौलुस द्वारा ठीक किया जाना (प्रेरितों के काम 16:16-19) शामिल है।

छुटकारे की सेवा करने के तरीके

अब हम कुछ तरीके देखेंगे जिसमें हम दुष्टात्मा की शक्तियों पर अपने अधिकार का उपयोग करते हैं। ये पूर्ण सूची नहीं है, परंतु ये कुछ आम तरीके हैं जिनका उपयोग हम दुष्टात्मा के कार्यों का सामना करने और उन्हें पराजित करने, लोगों को छुटकारा प्रदान करने हेतु करेंगे। व्यवहार में, हम अन्य व्यवहारिक पहलुओं के साथ ही साथ इनका भी उपयोग करेंगे जिनकी चर्चा अगले अध्याय में की जाएगी।

डांटने या आज्ञा देने के द्वारा

लूका 4:33-36

33 आराधनालय में एक मनुष्य था, जिसमें अशुद्ध आत्मा थी।

34 वह ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा, "हे यीशु नासरी, हमें आपसे क्या काम? क्या आप हमें नाश करने आए हैं? मैं आपको जानता हूं कि आप कौन हैं? आप परमेश्वर के पवित्र जन हैं।"

35 यीशु ने उसे डांटकर कहा, "चुप रह, और उसमें से निकल जा।" तब दुष्टात्मा उसे बीच में पटककर बिना हानि पहुंचाए उसमें से निकल गई।

36 इस पर सबको अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें करके कहने लगे, "यह कैसा वचन है? क्योंकि वह अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं!"

प्रेरितों के काम 16:16-18

16 जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिसमें भावी कहनेवाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिए बहुत कुछ कमा लाती थी।

17 वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी कि ये मनुष्य परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।

18 वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस दुःखित हुआ, और मुंह फेरकर उस आत्मा से कहा, "मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं, कि उसमें से निकल जा।" और वह उसी क्षण निकल गई।

एक सामान्य तरीका जिसमें हम शैतान के कार्य का सामना करते हैं, वह है शैतान जो कुछ कर रहा है उसके विरोध में प्रभु यीशु मसीह के नाम में आज्ञा का वचन कहना या उसे धमकाना। ऊपर्युक्त दोनों उदाहरणों में, आज्ञा दिए जाने पर दुष्टात्माएं उस व्यक्ति से निकल गई थीं। ऐसी परिस्थितियां होंगी जब दुष्टात्मा "नाटक करेगी" और अलग-अलग हरकतें करेगी। दुष्टात्माएं बोल सकती हैं और ऐसी कुछ बातें बयान कर सकती हैं जो सही हों। वे व्यक्ति को नाटक करने, गिरने, चीखने आदि के लिए प्रेरित कर सकती हैं। परंतु, हमें ऐसे "प्रगटनों" से प्रभावित नहीं होना है, परंतु दृढ़ खड़े रहना है और यह मांग करना है कि यीशु मसीह के नाम में दी गई आज्ञाओं का दुष्टात्माएं पालन करें।

निकालने के द्वारा

मरकुस 16:17

और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे,

मत्ती 8:16

जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया;

मत्ती 12:28

परंतु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।

इसका सम्बंध दुष्टात्मा की शक्तियों को उनके निवासस्थान ने निकाल फेंकने से है। हम परमेश्वर द्वारा दिए गए अधिकार का उपयोग करते हैं या दुष्टात्मा या दुष्टात्माओं को विशिष्ट व्यक्ति को या स्थान को जिसमें या जहां वे वास कर रहे थे, छोड़ने पर विवश करते हैं। यह विशिष्ट तौर पर, यीशु मसीह के नाम में 'आज्ञा के शब्द' के साथ किया जाता है। हम इस प्रकार कुछ कहते हैं "यीशु के नाम में, मैं अशुद्धता की उस आत्मा को निकालता हूं।"

कभी-कभी परमेश्वर के आत्मा की उपस्थिति के कारण हमारे स्पर्श से या व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने मात्र से दुष्टात्माएं निकल जाती हैं। ऐसा समय होता है जब दृश्यमान "मैनिफेस्टेशन" (प्रगटन) या हरकतें दिखाई देगी और कभी ऐसा भी समय होगा जब कुछ नहीं दिखाई देगा। दोनों मामलों में, अंतिम परिणाम यह है कि व्यक्ति छुटकारा पाता है और छुटकारे की वजह से बदलाव अनुभव करता है। ध्यान दें, हम दुष्टात्मा/दुष्टात्माओं को पृथ्वी से नहीं निकाल रहे और न ही हम उन्हें नरक (यातना का स्थान - मत्ती 25:41) भेज रहे हैं। ऐसा नियुक्त समय पर होगा। यीशु ने कहा कि जब दुष्टात्मा व्यक्ति में से निकलती है, तो वह *"सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है"* (मत्ती 12:43)। इससे यह सूचित होता है कि व्यक्ति में से दुष्टात्मा के निकलने पर उसे नरक नहीं भेजा जाता।

बांधने और छोड़ने के द्वारा

मत्ती 12:29

"या कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल कैसे लूट सकता है जब तक कि पहले उस बलवन्त को न बान्ध ले? और तब वह उसका घर लूट लेगा।

मत्ती 16:18,19

18 और मैं तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
19 मैं तुझे स्वर्ग राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।

लूका 13:10-13,16

10 सब्त के दिन वह आराधनालय में उपदेश कर रहा था।
11 और देखो, एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी, और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी।
12 यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और कहा, हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से मुक्त हो गई।
13 तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।
16 और क्या उचित न था कि यह स्त्री जो अब्राहम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाए?

हमारे पास शैतान के किसी कार्य, प्रयास या रणनीति को "बांधने" का अधिकार है। शैतान के कार्य को "बांधने" का अर्थ मानो हम "उसके हाथों को बांध रहे हैं" और उस विशिष्ट कार्य के लिए उसे निष्काम कर दे रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि ऐसी कोई परिस्थिति होती जहां पर हम जानते कि किसी दम्पत्ति के वैवाहिक जीवन के विरोध में किसी निश्चित समय में शैतान का एक निश्चित हमला था, तो हम अपने अधिकार का उपयोग कर सकते और उस विशिष्ट परिस्थिति में शत्रु के कामों और प्रयासों को "बांध" सकते हैं। इससे पति और पत्नी को उनके वैवाहिक समस्याओं को सुलझाने का समय मिलेगा। फिर भी उन्हें अपने विवादों को सुलझाने का प्रयास करना होगा। परंतु क्या इसका अर्थ यह है कि शैतान को उनके वैवाहिक जीवन में स्थायी रूप से बांध दिया गया है और अब वे कभी उनके वैवाहिक जीवन में शैतान के आक्रमण का सामना नहीं करेंगे? हम उस विशिष्ट परिस्थिति में विशिष्ट समय पर शैतान के कामों या प्रयासों को तब तक के लिए बांधते हैं जब तक वे अपने आवश्यक हथियारों को लेकर शत्रु के लिए द्वार बंद रखते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वे दुष्टात्माएं स्थायी रूप से हमेशा हमेशा के लिए बांध दी गई हैं, और वे भविष्य में कभी शैतानी आक्रमण के लिए लौटकर नहीं आएंगी।

लूका 13 में, हम एक स्त्री के विषय में पढ़ते हैं *"जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करने वाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी और सीधी नहीं हो सकती थी।"* यीशु ने कहा कि *"शैतान ने उसे बांधा है।"* जब प्रभु यीशु ने उसे छुड़ाने के लिए अपने अधिकार का उपयोग किया, तब उसने उस स्त्री से कहा, *"तू अपनी निर्बलता से छूट गई।"* किसी को शैतान के कार्य से "छुड़ाने" का अर्थ है उसे किसी प्रकार के बंधन या कैद से छुड़ाना। हम उस व्यक्ति के जीवन में छुटकारा या स्वतंत्रता लाने हेतु अपने अधिकार का उपयोग करते हैं। हम *"बंधुओं को छुटकारे का सुसमाचार सुनाते हैं"* और *"कुचले हुओं को छुड़ाते हैं"* (लूका 4:18)। हम इस प्रकार आदेश देते हैं, "यीशु के नाम में, तुम इस बंधन से छूट गए" या हम कहते हैं, "हे शैतान, यीशु के नाम में मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि तू इस व्यक्ति को छोड़ दे और उसे—से स्वतंत्र होकर जाने दे।" हम विशिष्ट क्षेत्र को

सम्बोधित करते हैं जिसमें वह व्यक्ति बंधन, व्यसन, बीमारी, भय, अवसाद, या अन्य दबाव में हो सकता है।

नाश करने के द्वारा

इब्रानियों 2:14
इसलिए जबकि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।

1 यूहन्ना 3:8
परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे।

यशायाह 10:27
उस समय ऐसा होगा कि उसका बोझ तेरे कंधे पर से उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा, और अभिषेक के कारण वह जूआ तोड़ डाला जाएगा।

ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद इब्रानियों 2:14 में निकम्मा करना किया गया है उसका अर्थ है "पूर्णतया निरूपयोगी कर देना," "प्रभावरहित हो जाना," "शून्य कर देना," "खाली कर देना" है। 1 यूहन्ना 3:8 में दिया गया "नाश करना" यह शब्द एक भिन्न ग्रीक शब्द से आता है जिसका शाब्दिक अर्थ है "छुड़ाना," "तोड़ना," "भंग करना," "पिघलाना," "बुझा देना" है। प्रभु यीशु ने कलवरी के क्रूस पर उसके कार्य के द्वारा "शैतान का नाश किया।" आज, जब हम हमारे आत्मिक अधिकार का उपयोग करते हैं, तब हम परमेश्वर के लोग मसीह के छुटकारे के कार्य को अमल में लाने के द्वारा शैतान के कामों, कार्यों और योजनाओं को नाश करते हैं। यशायाह 10:27 हमें सिखाता है कि अभिषेक के कारण अन्याय करने वाले का जुआ तोड़ दिया जाएगा। हमारे आत्मिक अधिकार के उपयोग के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक का कार्य हमें लोगों के जीवनों पर शैतान के दमनकारी कार्य को नाश करने की योग्यता देता है। उदाहरण के तौर पर, जब हम सेवकाई करते हैं, तो हम कहेंगे, "यीशु के नाम में हम इस व्यक्ति के जीवन में अंधकार के हर कार्य को नाश करते हैं। हम प्रत्येक गढ़ को नाश करते

हैं। हम बंधन के प्रत्येक जुए को, हम प्रत्येक गुलाम बनाने वाली लत को नाश करते हैं और इस व्यक्ति को यीशु के सामर्थी नाम में स्वतंत्र करते हैं।"

हटाने के द्वारा

यशायाह 10:27
उस समय ऐसा होगा कि उसका बोझ तेरे कंधे पर से उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा, और अभिषेक के कारण वह जूआ तोड़ डाला जाएगा।

यशायाह 10:27 में दर्शाया गया है कि अभिषेक के द्वारा हम लोगों के जीवनों से बंधनों और अन्याय करने वाले के जुओं को हटा सकते हैं या दूर कर सकते हैं। अतः लोगों की सेवा करते समय हम कहेंगे, "यीशु के नाम में, मैं अवसाद के इस शैतानी दबाव को इस व्यक्ति के जीवन से हटाता हूं और उसे यीशु के नाम में मुक्त करता हूं।"

खुल द्वारों और प्रवेश बिन्दुओं को बंद करने के द्वारा

मत्ती 12:43-45
43 जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है, और पाती नहीं।
44 तब कहती है कि मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी, लौट जाऊंगी; और आकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है।
45 तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है। वे उसमें समाकर वहां वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।

उत्पत्ति 4:6,7
6 तब यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है?
7 यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जायेगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा।

दुष्टात्माएं व्यक्ति के जीवन में खुले द्वारों या प्रवेश बिन्दुओं को ढूंढ़ती हैं। उत्पत्ति 4, पाप का मानवीकरण किया गया है (जो शायद इस

उदाहरण में हत्या की दुष्टात्मा थी) जो कैन के जीवन में प्रवेश पाने का इंतजार कर रही थी, परंतु कैन को परमेश्वर की चेतावनी यह थी कि उसे उस पर प्रभुता करने की ज़रूरत है। कैन अपने भाई पर क्रोधित था, और यदि उस क्रोध को दूर नहीं किया जाता, तो वह द्वार पर खड़े पाप के लिए प्रवेश मार्ग बन जाता। खुला द्वार और प्रवेश बिन्दु दुष्टात्मा को व्यक्ति के जीवन में प्रवेश दिलाते हैं इसलिए इन्हें सम्बोधित करना जरूरी है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, इनमें से कुछ खुले द्वार उनके द्वारा किए गए अर्पणों (और/या बलिदानों) की वजह से होंगे। कुछ खुले द्वार व्यक्ति की जीवनशैली के कारण होंगे।

(अ) **अर्पण और बलिदानः** यदि व्यक्ति ने या पिछली पीढ़ियों ने दुष्टात्माओं को अर्पण या बलिदान चढ़ाए हैं, तो उन्होंने जानबूझकर या अनजाने में, दुष्टात्मा की शक्तियों को उनके परिवार या जीवनों में प्रवेश दिया है। इसलिए इन दुष्टात्माओं को वहां कार्य करने का "अधिकार" है। जो अर्पण किए गए हैं वे निमंत्रण हैं जिनके आधार पर दुष्टात्मा की गतिविधि हो रही है, इसलिए, यदि हम इसे सम्भावना समझते हैं, तो उस व्यक्ति (या व्यक्तियों) की सामान्य परित्याग की प्रार्थना में अगुवाई करना उत्तम होगा, उनके जीवन में उनके द्वारा या पुरखाओं द्वारा किए गए सारे समर्पणों को रद्द करें और तोड़ दें और केवल यीशु मसीह के प्रति निष्ठा का वचन लें। ऐसा करने पर, हमें यीशु मसीह के लहू की मुक्तिदायक सामर्थ में भरोसा रखने की ज़रूरत है। इस विषय में अधिक उत्तेजित होकर, उस व्यक्ति को उसके बचपन में की गई सारी बातों का पता लगाने की, उसके पारिवारिक इतिहास का पता लगाने की कोशिश न करें, उस हर प्रकार की आत्मा का नाम लेने की कोशिश न करें जिसने प्रवेश पाया होगा। ऐसा करना शैतान को आवश्यकता से अधिक महत्व देना होगा। हम यीशु को उसकी सेवकाई में ऐसा करते हुए नहीं देखते। याद रखें, चंगाई और छुट कारा किसी प्रक्रिया में नहीं है, परंतु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में है।

(ब) **गलत जीवनशैलीः** उदाहरण के लिए, यदि व्यक्ति यौन दृष्टि से अनैतिक जीवनशैली की आदतों में, अश्लील चित्र देखना, अवैध यौन सम्बंधों में

लिप्त है, तो सम्भव है कि कुछ समय बाद, दुष्टात्माएं वास्तव में उस व्यक्ति में वास करने लगेगी और अपने नियंत्रण का स्थान ("गढ़") स्थापित करेगी। इसलिए छुटकारे की सेवा करते समय, हमें न केवल अशुद्ध आत्माओं को निकालना है, बल्कि यह भी निश्चित करना है कि ये प्रवेश द्वार व्यक्ति द्वारा स्थायी रूप से बंद किए जाए, इस प्रकार की गलत जीवनशैली का उसे त्याग करना होगा।

पवित्र शास्त्र में, दुष्टात्मा के कार्यों का सामना करते समय, हम अन्य कई कार्य दर्शक क्रियाओं को देखते हैंः "सामना करें," "स्थान न दें," "के विरोध में खड़े रहें," "प्रतिकार करें," "के विरोध में मल्लयुद्ध करें," "सारे अग्निमय तीरों को बुझाएं," "जय पाएं/प्रबल हों," "ढा दें।" हमने इन्हें उपर्युक्त सूची में शामिल नहीं किया है, परंतु आवश्यक तौर पर ऊपर जो प्रस्तुत किया गया है उनमें ये अन्य क्रियाएं भी किसी रीति से शामिल हैं।

अगले अध्याय में, छुटकारे की सेवा प्रदान करते समय इन्हें व्यवहारिक तौर पर कैसे लागू करें इस विषय में और बातें बताई गई हैं।

छुटकारे की सेवा करते समय व्यक्तिगत तैयारी

छुटकारे की सेवा करते समय आवश्यक व्यक्तिगत तैयारी के कुछ मुख्य क्षेत्रों को हमने नीचे रेखांकित किया है। विशिष्ट तौर पर, प्रभु के साथ हमारे दिन प्रतिदिन के नियमित व्यवहार में हम इन सभी बातों में चलेंगे। कुछ विशेष छुटकारे की परिस्थितियां हो सकती है जहां पर हम अतिरिक्त समय लेकर इन क्षेत्रों में से एक या दो में खुद को तैयार करने हेतु ध्यान देंगे।

- **परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिताः** हम सुनिश्चित करते हैं कि हम परमेश्वर के प्रति अधीनता और आज्ञाकारिता में चल रहे हैं। जैसे पवित्र शास्त्र सिखाता है, *"इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा"* (याकूब 4:7)। सामान्य तौर पर, जिन क्षेत्रों में हम स्वयं बंधन में हैं उनमें हम किसी और को विजय प्रदान नहीं कर सकते।

- **विश्वासः** हम अपने विश्वास का स्तर ऊंचा रखते हैं। हमारा विश्वास वचन के द्वारा और पिता के साथ सहभागिता के द्वारा बढ़ता है। परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ में, हमें दिए गए अधिकार में, हम क्या कर सकते हैं इसके विषय में परमेश्वर ने जो कहा है उसमें, हमारा विश्वास दृढ़ होना चाहिए। हमें विश्वास के साथ दुष्टात्माओं पर अपने अधिकार का उपयोग करना है और यीशु ने कहा, *यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कहोगे कि 'यहां से सरक कर वहां चला जा', तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए असम्भव न होगी"* (मत्ती 17:20)।

- **आत्मा की तलवार का उपयोग करनाः** छुटकारे के समयों में हमें युद्ध के हथियार के रूप में परमेश्वर के वचन का उपयोग करने हेतु तैयार रहने की ज़रूरत है। हम व्यक्ति पर या जो कुछ शैतान करता है उसके विरोध में वचन बोलते हैं। ऐसा करने हेतु हमारे अंदर वचन जीवित होना चाहिए। हमें *"आत्मा की तलवार काजो परमेश्वर का वचन है"* (इफिसियों 6:17) उपयोग करने तैयार रहना है।

- **मध्यस्थीः** ऐसा समय होता है जब छुटकारे की सेवा करते समय लम्बे समय तक प्रार्थना और मध्यस्थी की आवश्यकता हो सकती है। हमारी विस्तृत प्रार्थना के द्वारा आत्मिक क्षेत्र में बातों पर प्रभाव पड़ता है। कई बार दानिय्येल के समान हमें भी इस बात की जानकारी नहीं होती कि आत्मिक संसार में क्या हो रहा है। आत्मिक क्षेत्र में घोर संग्राम चल रहा था, तब दानिय्येल ने 21 दिनों तक प्रार्थना की (दानिय्येल 10:3,11-13)। प्रभु यीशु ने पतरस के लिए प्रार्थना की ताकि उसके जीवन के विरोध में शैतान का जो कार्य था उसका सामना कर सके। प्रभु यीशु ने पतरस से कहा, *"शमौन! हे शमौन! देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेहूं के समान तुम्हें फटके। परन्तु मैंने तेरे लिए बिनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे; और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना"* (लूका 22:31,32)। मध्यस्थी उस व्यक्ति के जीवन को मज़बूत बनाती है जिसकी हम सेवा कर रहे हैं, उनके जीवन में और उनके जीवन की बातों को बदलकर उन्हें छुट

कारे का अनुभव प्राप्त करने में और विजय में चलने में, और छुटकारे पश्चात सेवकाई पाने में सहायता करती है।

- **स्तुतिः** छुटकारे की सेवा करते समय, ऐसे समय हो सकते हैं जब हम हमारे परमेश्वर की स्तुति और आराधना में लग जाते हैं और इससे व्यक्ति आज़ादी प्राप्त करता है। बाइबल हमें बताती है कि हमारे परमेश्वर की स्तुति शत्रु के विरोध में "हथियार" है। *"तू ने अपने बैरियों के कारण बच्चों और दूध पिउओं के द्वारा सामर्थ्य की नेव डाली है, ताकि तू शत्रु और पलटा लेनेवालों को रोक रखे।"* (भजन संहिता 8:3)। *"उनके कण्ठ से ईश्वर की प्रशंसा हो, और उनके हाथों में दोधारी तलवारें रहें, कि वे अन्यजातियों से पलटा ले सकें, और राज्य राज्य के लोगों को ताड़ना दें, और उनके राजाओं को सांकलो से, और उनके प्रतिष्ठित पुरुषों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ रखें, और उनको ठहराया हुआ दण्ड दें! उसके सब भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी। याह की स्तुति करो!"* (भजन संहिता 149:6-9)।

- **दृढ़ताः** व्यवहार में, जब तक हम इच्छित परिणाम नहीं देखते, तब तक हमें दृढ़ता के साथ आगे बढ़ने की योग्यता रखनी चाहिए। दुष्टात्माएं कुछ प्रतिकार कर सकती हैं और विश्वासी होने के नाते हमें खुद को थकाना नहीं है। हमें दृढ़ बने रहना है और उस विजय पर अमल करना है जो कल्वरी के क्रूस पर प्राप्त की गई है।

- **उपवासः** उपवास हमें बेहतर रीति से सेवकाई करने हेतु तैयार करता है। वह हमारे लक्ष्य को पैना बनाता है, और प्रार्थना, आराधना और परमेश्वर के वचन में मनन के साथ, हमारा विश्वास और आत्मिक जीवन मज़बूत होता है। तब हम इस बल के द्वारा सेवा करने हेतु योग्य बन जाते हैं। कई मामलों में, हम बिना उपवास के भी सेवा करेंगे क्योंकि हम हमेशा तैयारी की स्थिति में होते हैं। परंतु जब हम ज़रूरत महसूस करते हैं, तब हम उपवास और प्रार्थना का अतिरिक्त समय लेकर अतिरिक्त तैयारी करने में समय बिताते हैं (मत्ती 17:20,21)।

- **सामुहिक सामर्थः** जब हम समूह के रूप में एक होकर एक साथ काम करते हैं तब वहां सामर्थ प्रगट होती है। जब यीशु ने अपने शिष्यों को

बाहर भेजा, तब उसने उन्हें दो-दो करके भेजा। जब हम दो उसके नाम से निकलते हैं, तब प्रभु ने हम से प्रतिज्ञा की है कि वह हमारे साथ होगा। जब हममें से दो लोग यहां पर किसी बात के लिए आपस में सहमत होंगे, तब पिता हमारी ओर से कार्य करेगा (मत्ती 18:18-20)। ऐसा नहीं है कि जब हम अकेले होते हैं तब प्रभु अनुपस्थिति होता है। परंतु प्रभु चाहता है कि हम एकता की सामर्थ को समझें। एक साथ मिलकर हम अधिक बलवान होते हैं। अतः, छुटकारे की सेवा करते समय ऐसा समय होता है जब हम टीम के रूप में कार्य करते हैं। विशेषकर समाज, क्षेत्रों और अन्य विशाल कामों पर दुष्टात्माओं के प्रभाव का जब हम सामना करते हैं, तब हम अंधकार के कामों का सामना करने और उसे पराजित करने हेतु सामुहिक देह के रूप में कार्य करते हैं।

11
छुटकारे की सेवा प्रदान करने हेतु व्यवहारिक दिशा-निर्देश

दुष्टात्माओं को कैसे निकालें इसका कोई सूत्र, प्रणाली या प्रक्रिया नहीं है। कई तरह से यह हो सकता है।

मसीही विश्व में आम तौर पर उपयोग की जाने वाली आत्मिक युद्ध से सम्बंधित परिभाषिक शब्दावली है जिसे आज हम बुनियादी स्तर का युद्ध और सामरिक स्तर की युद्धकला कहते हैं। बुनियादी स्तर के युद्ध का सम्बंध व्यक्तिगत स्तर पर दुष्टात्माओं की शक्तियों पर जय पाने से, व्यक्तियों को स्वतंत्र करने हेतु अन्धकार के कामों को नष्ट करने से है। सामरिक स्तर की युद्धकला का सम्बंध किसी नगर, शहर, क्षेत्र या प्रान्त पर परमेश्वर की उपस्थिति स्थापित करने और दुष्टात्माओं की शक्तियों को पराजित करने से है। इस पुस्तक में हम केवल बुनियादी स्तर के युद्ध के विषय विचार कर रहे हैं।

दुष्टात्माओं को निकालना - यीशु ने यह कैसे किया और उसने हमें क्या सिखाया

मती 4:23,24

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिनमें दुष्टात्माएं थीं और मिर्गीवालों और लकवे के मारे हुओं को उसके पास लाए और उसने उन्हें चंगा किया।

सुसमाचार की पुस्तकों में ऐसी घटनाओं के विषय में लिखा गया है जहां पर यीशु ने कुछ लोगों को और बड़ी भीड़ को भी छुटकारा प्रदान किया।

- अशुद्ध आत्मा वाला मनुष्य (मरकुस 1:21-28; लूका 4:31-37)।
- गेरासेनियों का दुष्टात्मा से पीड़ित (मत्ती 8:28-34; मरकुस 5:1-17; लूका 8:26-39)।
- कनानी स्त्री की बेटी (मत्ती 15:21-28; मरकुस 7:24-30)।
- दुष्टात्मा से पीड़ित लड़का (मत्ती 17:14-18; मरकुस 9:14-27; लूका 9:38-43)।
- दुष्टात्मा से पीड़ित गूंगा मनुष्य (मत्ती 9:32-33)।
- दुष्टात्मा से पीड़ित अन्धा और गूंगा मनुष्य (मत्ती 12:22; लूका 11:14)।
- सैतान द्वारा बान्धी हुई स्त्री (लूका 13:10-13)।
- कइयों को सन्ध्या समय में छुड़ाना (मत्ती 8:16-17; मरकुस 1:32-34; लूका 4:40-41)।
- गलील से यात्रा करते समय कई दुष्टात्माओं को छुड़ाना (मरकुस 1:39)।
- कई चंगे हुए और छुड़ाए गए (मत्ती 4:23-24; मरकुस 3:10-12; लूका 6:17-19)।

इनमें से प्रत्येक घटना पर मनन करना और उसका अध्ययन करना अत्यंत उपयुक्त है ताकि हमारे हृदयों में विश्वास बढ़ सके और यह भी देख सकें कि यीशु ने छुटकारे की सेवा कैसे की।

यीशु बड़े अधिकार के साथ सेवा करता था। उसने इन दुष्टात्माओं को आज्ञा दी और वे तुरंत निकल गईं। कुछ अवसरों पर, दुष्टात्माएं बोल पड़ीं, परंतु यीशु हमेशा उन्हें खामोश रहने कहता था। वह हमेशा अशुद्ध आत्माओं से बात नहीं करता था। ऐसा उसने कुछ ही घटनाओं में किया जिनके विषय में लिखा गया है, यद्यपि यह सम्भव हो सकता है कि उसने ऐसा कई अन्य घटनाओं में किया होगा जिनके विषय में हमारे लिए लिखा नहीं गया है। उसने यह प्रगट किया कि वह परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता था (मत्ती 12:28)। इससे हम यह सीख सकते

हैं कि छुटकारे की सेवा करते समय हम विश्वास रखें और आत्मा की सामर्थ पर निर्भर रहें। जब दुष्टात्माओं की शक्ति से हमारा मुकाबला होता है, तब हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं और हमने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुममें है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है" (1 यूहन्ना 4:4)। उसने हमें यह भी सिखाया कि हम ऐसा अपने हृदयों में विश्वास को रखकर करें (मत्ती 17:20)।

छुटकारे के लिए सामान्य निर्देश

यहां पर व्यवहारिक अनुभव के आधार पर कुछ सामान्य निर्देश दिए गए हैं, ताकि उन्हें ध्यान में रखें। ऐसा बार-बार करते हुए हम निरंतर सीखते जा रहे हैं। उसी तरह, अन्य कई जो छुटकारे की सेवा कर रहे हैं उनके पास भी कई अनुभव हैं और हम एक दूसरे से सीख सकते हैं। इसलिए दूसरों को बताना, उनसे सुनना और उनसे सीखना हमेशा अच्छा होता है।

हमेशा प्रेम से प्रेरित होकर कार्य करें। खुद के लिए बड़ा नाम पाने के लिए, आपके द्वारा किए गए छुटकारे में एक और संख्या जोड़ने आदि गलत इरादों से प्रेरित होकर सेवकाई न करें। व्यक्ति के लिए सच्चा प्रेम रखें और कोशिश करें कि वह व्यक्ति छुटकारा प्राप्त करे।

जब कभी सम्भव हो, खुद को उपवास, प्रार्थना और वचन में मनन के द्वारा तैयार करें। तैयार रहें।

भरोसा रखें। साहस रखें। शैतान आपको डराकर आपके अंदर भय उत्पन्न न करने पाए। दुष्टात्माएं बोल सकती हैं और इस प्रकार की बातें कर सकती हैं कि तुम हमें नहीं निकाल सकते, हम कई हैं, हम नहीं जाएंगे क्योंकि हम इस व्यक्ति में 18 वर्षों से हैं आदि। इस प्रकार की बातें आपको डराने न पाएं। आपको परमेश्वर के वचन के साथ उत्तर देना है और हियाव के साथ कहना है, परमेश्वर का वचन कहता है कि प्रभु यीशु ने तुम सब को क्रूस पर पराजित किया है। यीशु ने उसके नाम में तुम सबको निकालने का अधिकार हमें दिया है।

हमें चीखने चिल्लाने की आवश्यकता नहीं है। हमें बोलते समय हिम्मत रखना और दृढ़तापूर्वक बोलना है, परंतु आवश्यकता नहीं कि ऊंची आवाज़ में बोलें। अधिकार हमारे हृदयों से बहता है और न ही हमारी आवाज़ के ऊंचे होने से। शैतान आवाज़ सुनकर डरता नहीं, परंतु वह अवश्य ही उन लोगों को पहचानता है जो अधिकार के साथ आते हैं।

अहंकार के साथ, ताना देकर, या दुष्टात्माओं को चुनौती देते हुए न बोलें। इससे उद्देश्य पूरा नहीं होता। उस व्यक्ति के छुड़ाए जाने पर ध्यान केन्द्रित करें।

क्या कहें/क्या न कहें

- मसीह की प्रभुता की और क्रूस पर उसके द्वारा किए गए कार्य की हिम्मत के साथ घोषणा करें।
- व्यक्ति पर हियाव के साथ परमेश्वर के वचन की घोषणा करें।
- प्रभु को महिमा देने वाले गीत गाएं और क्रूस पर उसके विजय की घोषणा करें।
- यीशु का लहू या हालेलुय्याह, हालेलुय्याह जैसे शब्दों को केवल बार-बार और जल्दी-जल्दी व्यर्थ ही न दोहराएं, मानो इनसे शैतान डर जाएगा।

हमें यथासम्भव उस व्यक्ति का सहयोग चाहिए। उस व्यक्ति में छुट कारा पाने की इच्छा होनी चाहिए। हम व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध छुड़ा नहीं सकते (जब तक कि वे पागलपन की स्थिति में न हों)। हमें ज़रूरत है कि उनमें स्वतंत्र होने की चाहत और इच्छा हो।

छुटकारे में हमारा लक्ष्य उस व्यक्ति को छुटकारा देना होता और साथ ही साथ उन द्वारों को, प्रवेश द्वारों को बंद करना होता हैं जिनके द्वारा दुष्टात्माओं ने प्रवेश किया है। इसलिए उस व्यक्ति की सहायता से, और पवित्र आत्मा के द्वारा इन बातों को पहचानना हमेशा उचित होता है और इन खुले द्वारों को और प्रवेश द्वारों को बंद करना होगा, बेहतर होगा कि ऐसा सेवकाई के समय के आरम्भ में किया जाए।

जहां तक सम्भव हो उन वस्तुओं को हटा दें जो द्वार खोलकर रखती हैं या दुष्टात्माओं की शक्तियों के प्रति वफादारी व्यक्त करती हैं। उदाहरण के तौर पर, तावीज, चेन, हार, अंगुठियां, धागे। इन चीजों को हटाना उस अर्पण, समर्पण, या जो मन्नत ली गई है उसे रद्द करने की अभिव्यक्ति है। कुछ मामलों में, पूर्ण रूप से हटाना सम्भव नहीं हो सकता, परंतु आगे बढ़कर किसी तरह सेवकाई करें। हमारी लड़ाई वस्तु के विरोध में नहीं है, परंतु उस वस्तु के पीछे छिपी दुष्टात्माओं की शक्तियों के विरोध में है।

सामान्य तौर पर, दुष्टात्माओं द्वारा की गई विनतियों को सुनने से इन्कार करें, उदाहरण के तौर पर, पानी, भोजन, मांस आदि के लिए। यह आपका ध्यान बंटाने के लिए आम युक्ति है। उदाहरण के तौर पर, आप ऐसे व्यक्ति को देख सकते हैं जो पूर्णतया शाकाहारी है और वह खाने के लिए मांस मांगता है। अर्थात उस व्यक्ति के द्वारा यह दुष्टात्मा बोल रहा है और यह बिनती कर रहा है। अपना ध्यान बंटने न दें। केवल सेवकाई करना जारी रखें।

आपको हमेशा उनके नाम पूछने की ज़रूरत नहीं है। दुष्टात्मा का नाम जानने का उद्देश्य यह जानने की कोशिश करना है कि इस दुष्टात्मा ने इस व्यक्ति में कैसे प्रवेश प्राप्त किया और इसलिए सम्बंधित द्वारों को बंद करें और दुष्टात्मा को किए गए सारे अर्पणों और समर्पणों को त्याग दें। यदि आपको नाम पूछने की और थोड़ी बातचीत करने की ज़रूरत महसूस होती है, तो ठीक है। परंतु याद रखें व्यक्ति के छुटकारे के लिए यह आवश्यक नहीं है।

पवित्र आत्मा पर निर्भर रहें कि वह आत्मा की परख के वरदान के द्वारा प्रगट करे कि उस व्यक्ति को किस प्रकार की दुष्टात्मा पीड़ित कर रही है, और उन्हें निकालने के लिए आपको क्या करने की ज़रूरत है। पवित्र आत्मा आप पर वे बातें भी प्रगट कर सकता है जो दुष्टात्मा से ग्रसित होने का कारण बन सकती हैं। आत्मा आपकी अगुवाई कर सकता है कि आप बोलें और किए गए विशिष्ट अर्पणों को रद्द करें या प्रवेश मार्गों को बंद करें। जैसे आत्मा अगुवाई करता है, वैसे ही करें।

भौतिक प्रगटन या हरकतें आपको परेशान न करने पाएं (चीखना, सांप की तरह रेंगना, बंदर के समान बर्ताव करना, उलटकर बोलना, रूप में परिवर्तन, मुंह से झाग निकलना।)

किसी को छुटकारा देने के लिए हमें हमेशा प्रगटन या मैनिफेस्टेशन की आवश्यकता नहीं है। व्यक्ति पर दुष्टात्मा का दबाव हो या वह दुष्टात्मा से ग्रसित हो, ऐसा समय भी होता है जब व्यक्ति बिना किसी प्रगटन के छुटकारा पा लेता है। हमारा लक्ष्य व्यक्ति को जल्द से जल्द और जितनी शांति से हो सके छुटकारा देना है। हम शैतान के मनोरंजन में दिलचस्पी नहीं रखते।

पवित्र आत्मा क्या कर रहा है और दुष्टात्मा की हरकत (प्रगटन) क्या है इसके बीच फर्क देखें। उदाहरण के तौर पर, जो व्यक्ति आग महसूस करता है और पूरे शरीर पर जलन महसूस करता है, वह उस पर परमेश्वर के आत्मा की आग को महसूस कर रहा होगा। इसे दुष्टात्मा का कार्य न समझें। यदि निश्चित न हो, तो रुककर देखें। पवित्र आत्मा हमारे आत्मा के साथ गवाही देगा, कि उसकी ओर से क्या है और उसकी ओर से क्या नहीं है।

व्यक्ति की ओर से क्या प्रतिक्रिया है और दुष्टात्मा का प्रगटन इनके बीच अंतर को पहचानें। जो लोग मसीही दायरे में रहे हैं वे हिल सकते हैं, झटके दे सकते हैं, गिर सकते हैं आदि, यह सेवकाई प्राप्त करते समय एक अनुकूलित प्रतिक्रिया होती है। जितनी बार वे प्रार्थना करते हैं, आराधना करते हैं, या सेवकाई प्राप्त करते हैं, उतनी बार वे ऐसा करते हैं। परंतु, दुष्टात्मा के प्रगटन के दौरान, व्यक्ति अपने वश में नहीं होता और उसे इस बात का एहसास नहीं होता कि क्या हो रहा है, वे क्या कह रहे हैं और कर रहे हैं।

दृढ़ रहें - दुष्टात्माएं हठीली होती हैं। जब तक इच्छित परिणाम प्राप्त न हो तब तक न छोड़ें।

अन्य विश्वासियों के साथ टीम के रूप में कार्य करें। यदि छुटकारे के लिए समय लगता है, तो अवकाश लें और दूसरों को यह काम करने

दें। टीम के रूप में सेवकाई करते समय यह अत्यंत महत्वपूर्ण होता है कि हम आपस में एकता बनाएं रखें और टीम के सभी सदस्य टीम के अगुवे के अधीन रहें। यदि टीम का एक व्यक्ति दैहिक आवेश में आकर बर्ताव करता है, दूसरों का ध्यान आकर्षित करता है, और टीम के अगुवे के साथ न चलते हुए क्रमबद्ध तरीके से कार्य नहीं करता, तो इससे सम्पूर्ण छुटकारे की सेवकाई निर्बल होती है।

छुटकारे पश्चात निगरानी अत्यंत महत्वपूर्ण है, अन्यथा व्यक्ति और बुरी स्थिति में पहुंच सकता है (मत्ती 12:43-45)।

बालजबूब शैतान के नामों में से एक है और उसका अर्थ है मक्खियों का स्वामी। दुष्टात्माएं मक्खियों के समान होती हैं। वे वहीं आती हैं जहां कचरा हो। दुष्टात्माओं की शक्तियों को आकर्षित करने वाले किसी भी कचरे को हटाने में उस व्यक्ति की सहायता करें।

छुटकारा: एक चरण वाली पद्धति

कई मामलों में "एक चरण वाली पद्धति" के द्वारा लोग छुटकारा प्राप्त करते हैं। हम दुष्टात्माओं को आज्ञा देते हैं कि वे निकल आएं और दुष्टात्माएं निकल जाती हैं और व्यक्ति छुटकारा पाता है। हमारे लिए पवित्र शास्त्र में लिखे गए उदाहरणों में हम यही देखते हैं। यह आदर्श है और कुछ ही समयों में होता है। कुछ नाट्यपूर्ण हरकतें हो सकती हैं या नहीं भी हो सकती। परंतु, परिणाम वही होता है जो हम चाहते हैं, व्यक्ति छुटकारा पाता है। व्यक्ति के छुटकारा पाते ही, हम यह सुनिश्चित करने हेतु छुटकारा पश्चात की निगरानी प्रदान करते हैं कि व्यक्ति सुरक्षित रहे, उसका छुटकारा बनाए रखे, और परमेश्वर में बढ़े ताकि वे बाकी जीवन भर स्वतंत्रतापूर्वक जी सकें।

छुटकारा: प्रक्रिया पद्धति

कुछ मामलों में, छुटकारे की सेवा करने में और बातें आती हैं और उसके लिए "प्रक्रिया पद्धति" की आवश्यकता होती है। काफी समय लगता है और उस व्यक्ति को छुटकारा प्रदान करने हेतु व्यक्तिगत तौर पर ध्यान दिया

जाता है। हमें परिस्थिति के आधार पर दोनों तरह से सेवा करने के लिए तैयार रहने की ज़रूरत है।

पॅब्लो बोटारी छुटकारे का मॉडल

वर्षों तक, पॅब्लो बोटारी अर्जेंटिना में कार्लोस एनाकोन्डिया की सुसमाचार सभाओं के मुक्ति शामियाने की देखरेख कर रहे थे। वहां पर वे कई हज़ारों के लिए छुटकारे की सेवकाई कर रहे थे और व्यक्तिगत तौर पर 30,000 से अधिक लोगों के छुटकारे में शामिल थे। उन्होंने छुटकारे के लिए यह दस चरणों वाला मॉडल तैयार किया जो अत्यंत प्रभावी है। (Pablo Bottari, Free In Christ; Creation House, 2000, ISBN 0884196577)। निम्नलिखित भाग इसी मॉडल से रूपांतरित किया गया है और छुटकारे की सेवा करने हेतु विश्वासियों को प्रशिक्षित करने के लिए उपयोगी है।

पूर्वधारणाएं

1) हम लोगों की सेवा कर रहे हैं, दुष्टात्मा की नहीं।
2) अधिकार केन्द्र है, संघर्ष करना नहीं।
3) परामर्श, सत्य प्रगट करना कुंजी है। सत्य को देखने में और सत्य में चलने में व्यक्ति की सहायता करना महत्वपूर्ण है।
4) प्रवेश बिन्दुओं, "खुले द्वारों" का पता करना और उन द्वारों को कैसे बंद करना है अत्यंत महत्वपूर्ण है।
5) नाट्यपूर्ण प्रगटनों का होना हमेशा ही आवश्यक नहीं होता। जितना शान्तिपूर्वक और जल्दी, उतना बेहतर है।

मॉडल के दस चरण

निम्नलिखित दस चरणों का एक सत्र में पालन किया जाता है जहां पर पासवान व्यक्ति को अच्छी तरह से नहीं जानता, जैसे कि सार्वजनिक सभा में, किसी परिवेश में, इन में से कुछ चरणों को टाला जा सकता है। उदाहरण के तौर पर, जहां पर पासवान या सेवक जानता है कि व्यक्ति विश्वासी

है और सचमुच छुटकारा पाना चाहता है, चरण 4 और 5 को छोड़ दिया जाएगा। सेवकाई के दौरान यदि कोई हरकत या प्रकटन नहीं होता, तो चरण 2 और सम्भवतः चरण 3 को छोड़ दिया जाएगा।

1) व्यक्ति को प्राथमिकता दें।
2) यदि आत्मा मैनिफेस्ट करता है, तो उसे यीशु के नाम में अधीनता में लाएं।
3) व्यक्ति के साथ वार्तालाप स्थापित करें और बनाए रखें।
4) व्यक्ति से पूछें कि वह किस समस्या से छुटकारा पाना चाहता है, और यह निश्चित करने की कोशिश करें कि वह सचमुच छुटकारा पाना चाहता है।
5) सुनिश्चित करें कि व्यक्ति यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता मानने के महत्व को समझता है।
6) मूल कारण/कारणों को और प्रवेश बिन्दुओं को पहचानने के लिए व्यक्ति से साक्षात्कार करें।
7) व्यक्ति की अगुवाई करें कि वह आत्माओं के प्रवेश के लिए इन द्वारों को बंद कर दे।
8) जब सारे दरवाज़े बंद हो जाएं, तो अशुद्ध आत्मा या आत्माओं को निकालें।
9) स्तुति और धन्यवाद की प्रार्थना में व्यक्ति की अगुवाई करें।
10) व्यक्ति की अगुवाई करें कि वह पवित्र आत्मा से बिनती करे कि वह उसे भर दे।

यह होने के बाद, सेवकाई पश्चात की सूचनाएं दें।

कृपया ध्यान में रखें कि छुड़ाने की सामर्थ प्रक्रिया में नहीं है, परंतु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में है। ये चरण केवल उपयुक्त मार्गदर्शक के रूप में हमारे लिए हैं, यह सीखने के लिए कि छुटकारे की सेवा करते समय परमेश्वर के साथ कैसे काम करें। हमारा लक्ष्य परमेश्वर पर है, और पवित्र

आत्मा की अगुवाई और मार्गदर्शन पर है। हम उस पर निर्भर रहते हैं और छुटकारा देने वाले हमारे चरणों या निर्देशों पर नहीं।

ये चरण एक मॉडल या नमूना, मार्गदर्शक हैं और सूत्र नहीं। ये लोगों की सेवा करने हेतु वास्तविक अनुभव पर आधारित सरल निर्देश हैं। यीशु ने या शिष्यों ने किसी सूत्र का उपयोग नहीं किया। सभी चरण सभी परिस्थितियों में लागू करना सम्भव नहीं होगा। उदाहरण के तौर पर, इनमें से कई चरण उस समय लागू नहीं होंगे जब व्यक्ति पूर्ण रूप से दुष्टात्मा से पीड़ित/ग्रसित हो और हर समय नियंत्रण से बाहर होता है। अधिक महत्वपूर्ण, हर समय पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें।

1) व्यक्ति को प्राथमिकता दें

- प्रेमी वृत्ति बनाए रखें, आक्रामक नहीं।
- दुष्टात्मा को निकालते समय दृढ़ता की आवश्यकता है, परंतु इस दौरान व्यक्ति की ज़रूरत होती है कि कोई उससे प्रेम करे और उसे स्वीकार करे।
- प्रोत्साहन देते रहें। आशा बढ़ाएं। इस व्यक्ति को यह समझाएं कि यीशु उन्हें आज़ादी दे सकता है।
- दुष्टात्मा की सामर्थ पर बल न दें; वह यीशु के नाम में आपके अधीन है।
- याद रखें कि व्यक्ति वर्षों से बंधन में हो सकता है, शायद उसके लिए कई बार प्रार्थनाएं हुई हैं जो पूर्णतया प्रभावी नहीं थीं।

2) यदि आत्मा मैनिफेस्ट करता है, तो उसे यीशु के नाम में अधीनता में लाएं

- आत्मा पर अधिकार लें।
- उससे कहें, यीशु के नाम में, अधीन हो, या यीशु के नाम में चुप हो जा! या इस प्रकार की आज्ञाएं। उत्तम होगा कि व्यक्ति यह जानें कि आप उनसे बात नहीं कर रहे, परंतु दुष्टात्मा से कर रहे हैं।

- जब तक दुष्टात्मा शांत नहीं हो जाती, तब तक ऐसी आज्ञाओं को दोहराते रहें।
- यदि इसमें समय लगता है तो अचम्भित न हों। दृढ़ बने रहें।
- शायद आपको दुष्टात्मा को कई बार आज्ञा देनी पड़े—अनेकों बार भी—कि वह अधीन हो। परंतु, वह अधीन होगा।
- जब आप दुष्टात्मा को खामोश करते हैं उस समय यदि अन्य लोग वहां इकट्ठा होते हैं, तो उनसे कहें कि वे उस व्यक्ति को स्पर्श न करें, बातें न करें या ऊंची आवाज़ में प्रार्थना न करें।
- आपका उद्देश्य आत्मा को उत्तेजित करते रहना नहीं है, परंतु उस आत्मा को शांत करना है ताकि आप उस व्यक्ति से बातें कर सकें।

3) व्यक्ति के साथ वार्तालाप स्थापित करें और बनाए रखें

- जो व्यक्ति सेवकाई प्राप्त कर रहा है उस व्यक्ति से आपको बात करने की योग्यता होनी चाहिए क्योंकि यदि आप छुटकारा प्रदान करने में सफलता चाहते हैं तो आपको उस व्यक्ति के सहयोग की आवश्यकता होगी।
- यदि आपको यकीन नहीं है कि वह व्यक्ति आपकी सुन सकता है, तो पूछें - भले ही उस व्यक्ति की आंखें बंद हों।
- वार्तालाप बनाए रखने के लिए सेवकाई के दौरान आत्मा को अतिरिक्त आज्ञाएं देनी होगी कि वह अधीन हो जाए।
- व्यक्ति अपना सिर नीचे करेगा, अपनी आंखें बंद करेगा, या उसकी आंखें भटक सकती हैं। उससे कहें कि वह सिर उठाए, अपनी आंखें खोले और आपकी ओर देखे। यदि व्यक्ति इन बातों को नहीं कर सकता, तो यहां दुष्टात्मा का कार्य हो सकता है और उसके बाद आप दुष्टात्मा को अधीन होने की आज्ञा दे सकते हैं।

4) व्यक्ति से पूछें कि वह किस समस्या से छुटकारा पाना चाहता है

- सेवकाई पा रहे व्यक्ति से पूछें कि वह किस बात से छुटकारा पाना चाहता है और सुनिश्चित करें कि वे सचमुच मुक्त होना चाहते हैं।

- यदि व्यक्ति अनिश्चित है, तो उसे पूछें कि जब आत्मा ने अपनी हरकत शुरू की तब वक्ता किस बात के लिए प्रार्थना कर रहा था। अन्य सहायक प्रारम्भिक प्रश्न हैं, क्या वह बिना सफलता के किसी आदत को तोड़ने की कोशिश कर रहा है, या कोई आचरण है जिसे वह असामान्य या अजीब समझता है।
- निजी सेवकाई में, व्यक्ति सम्भवतः जानता होगा कि वे बंधन क्या हैं जिनसे वह मुक्ति पाना चाहता है।
- इसमें एक या दो विशिष्ट बंधन शामिल हो सकते हैं, या इसमें व्यापक सेवकाई शामिल होगी - घर की पूर्ण रूप से सफाई। उस व्यक्ति ने यह जानकारी पहले ही उस व्यक्ति को बताई होगी जो सेवा करेगा।
- दुष्टात्मा के हरकत करने पर भी यदि व्यक्ति यह दर्शाता हो कि वह सेवकाई नहीं चाहता, तो उस निर्णय का पालन करें।
- यदि व्यक्ति आंशिक सेवकाई के बाद छोड़कर जाना चाहता है, तो उस व्यक्ति को जाने दें। आपका सामना ऐसी प्रवृत्तियों से होगा जो पूर्ण छुटकारे की इच्छा का अभाव दर्शाता हो।
- उस व्यक्ति को रोकने की कोशिश न करें या उसकी इच्छा के विरुद्ध सेवकाई न करें।

5) सुनिश्चित करें कि व्यक्ति यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता मानने के महत्व को समझता है

- सेवकाई पाने वाले को छुटकारा पाने के लिए पवित्र आत्मा की सहायता की ज़रूरत होगी।

यदि वह मसीही नहीं है, तो वह सम्भवतः वापस बंधन में लौट जाएगा, भले ही उसने छुटकारा पाया हो। यह उसे समझाया जाना चाहिए। उसे इस आशा से छुड़ाने की कोशिश करना बुद्धिमानी नहीं है कि वह छुटकारा पाने के परिणामस्वरूप विश्वासी बनेगा।

मती 12:43-45

43 जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है, और पाती नहीं।

44 तब कहती है कि मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी, लौट जाऊंगी; और आकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है।

45 तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है। वे उसमें समाकर वहां वास करती है, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।

- यदि आप उस व्यक्ति को मसीह के पास ला सकते हैं, तो लाएं। यदि नहीं ला सकते, तो उसके लिए प्रार्थना करें; उसे आशीष दें।

- उसके घावों की और चोटों की चंगाई के लिए प्रार्थना करें। आपके रवैये से वह जानने पाए कि आप आहत नहीं हुए हैं। प्रेम का बर्ताव करें। परंतु दुष्टात्माओं को न निकालें। समझाएं कि आप क्यों नहीं निकाल सकते - क्योंकि वह आज़ाद नहीं रह पाएगा। उसे प्रोत्साहन दें कि वह यीशु को अपना प्रभु बनाने हेतु कदम उठाए और उसके बाद छुटकारे के लिए लौटें।

6) मूल कारण/कारणों को और प्रवेश बिन्दुओं को पहचानने के लिए व्यक्ति से साक्षात्कार करें

- उस घटना या घटनाओं के विषय में, आचरण, या उस रिश्ते की परिस्थितियों के विषय में सौम्यता के साथ प्रश्न पूछें जो उसे इस बंधन में ले आईं।

- उद्‌देश्य उस बात को प्रकाश में लाना है जहां क्षमा की आवश्यकता है, और जहां चंगाई, पश्चाताप और बंधनों को तोड़ने की आवश्यकता है।

- सारे खुले द्वारों को ढूंढ़ें। यदि आरम्भ करने के लिए कोई स्पष्ट स्थान नहीं है, तो उसके माता-पिता के रिश्तों से आरम्भ करें, उसके बाद अन्य क्षेत्रों की ओर बढ़ें। पूर्ण जांच करें, जल्दबाजी न करें।

- दुष्टात्माओं को उत्तेजित न करें, उन्हें शांत रखें। जिनसे सामना हुआ उन दुष्टात्माओं की और उन क्षेत्रों की सूची तैयार करें जिसके लिए दूसरों से क्षमा पाने की या पश्चाताप करने की ज़रूरत है।
- यदि उस व्यक्ति को जीवन के किसी क्षेत्र में लगातार कठिनाई महसूस हो रही है, तो सोचें कि कहीं कोई शाप तो नहीं।
- कई विभिन्न आत्माओं के लिए भय प्रवेश बिन्दु होता है (और कई बीमारियों में समस्या)।

7) व्यक्ति की अगुवाई करें कि वह आत्माओं के प्रवेश के लिए इन द्वारों को बंद कर दे

- जिसने चोट पहुंचाई है या गलत आचरण की ओर प्रेरित किया है, उसे क्षमा करें।
- पश्चाताप करें और विशिष्ट पापों के लिए क्षमा मांगें।

  विशिष्ट बात कहना महत्वपूर्ण है, जैसे, "पिता, मुझे .... के लिए क्षमा कीजिए (नफरत, कटुता, मेरी देह को .... साथ बांटने के लिए, जन्मपत्री देखने के लिए, आदि)।"
- यीशु के नाम में सब प्रकार के पापों को त्यागें या इसमें सहभागी आत्माओं को त्यागें।
  - यह त्याग करना सुनाई दे और दृढ़तापूर्वक हो। परित्याग परमेश्वर से प्रार्थना नहीं है। यह दृष्टात्मा को बोला जाता है, जो शत्रु है। इसे शत्रु को आज्ञा के रूप में बोलना है, परमेश्वर को निवेदन के रूप में नहीं।
  - व्यक्ति के पाप के बिना जिन दुष्टात्माओं को प्रवेश दिया गया है उन्हें उसी तरह त्यागने की ज़रूरत है जिस तरह उन्हें जो गलत प्रवृत्तियों या अन्य दोषों के द्वारा आए हैं। (उदाहरण के तौर पर, यदि एक बालक अपने माता-पिता को लड़ते हुए देखता है मौखिक तौर पर या भौतिक रूप से, वह अपने अंदर गड़बड़ी, व्यग्रता, भय, असुरक्षा और अन्य प्रकार की आत्माओं को प्रवेश दे सकता है।)

- ◦ सभी आत्माओं को यीशु के नाम में घुड़कें। विवाह बाह्य यौन सम्बंध के मामले में, व्यक्ति को अवैध यौन रिश्तों के द्वारा आए सभी अशुद्ध और अनैतिक आत्माओं को त्यागना होगा।

- ◦ शैतान के साथ समझौते और मन्नतों को त्यागना होगा और श्रापों को तोड़ना होगा।

अ. यीशु के नाम में मैं .... और .... की आत्मा को घुड़कता हूं।

ब. यीशु के नाम में मैं उस शपथ या मन्नत को त्यागता हूं जो मैंने कभी/हमेशा .... करने/न करने के लिए की थी।

- सेवक को बंधन के जुए को और किसी भी आत्मा की सामर्थ को तोड़ना है।

ये द्वार को बंद करता है। आप या खोजी यह कर सकते हैं :

- ◦ यीशु के नाम में, मैं — की आत्मा/आत्माओं की सामर्थ को (व्यक्ति का नाम) पर से तोड़ता हूं ताकि जब उन्हें निकाल दिया जाए, तब वे कभी लौटकर नहीं आएंगी।

- ◦ यीशु के नाम में, मैं (व्यक्ति का नाम) पर से श्राप की सामर्थ को तोड़ देता हूं जो उस पर — (पिता के लापरवाह आलोचनात्मक शब्दों, मां के दुत्कार आदि) से आया।

8) जब सारे दरवाज़े बंद हो जाएं, तो अशुद्ध आत्मा या आत्माओं को निकालें

- सारे द्वार बंद होते ही दुष्टात्माएं जल्द ही और शांति के साथ चली जाएं।

- यदि वे तुरंत नहीं जाती हैं, तो वापस चरण 6 में जाएं। व्यक्ति को बताएं कि अन्य आत्माएं भी हो सकती हैं। फिर से साक्षात्कार लें।

- पवित्र आत्मा से बिनती करें कि वह आपको या खोजी को या टीम के सदस्य को दिखाए कि आगे वह क्या करना चाहता है।

9) स्तुति और धन्यवाद की प्रार्थना में व्यक्ति की अगुवाई करें

- उस व्यक्ति को प्रोत्साहन दें कि वह उसके छुटकारे के लिए यीशु की स्तुति और धन्यवाद करने में समय बिताएं।
- यदि व्यक्ति बोल नहीं सकता, या आत्माएं हरकत करती हैं, तो और द्वारों को बंद करने की ज़रूरत है।

10) व्यक्ति की अगुवाई करें कि वह पवित्र आत्मा से बिनती करे कि वह उसे भर दे

- पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें कि पहले जो स्थान दुष्टात्माओं द्वारा कैंजा किया हुआ था, उस प्रत्येक स्थान को भर दे।
- हम उस घर को खाली और स्वच्छ छोड़ना नहीं चाहते! पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने हेतु प्रार्थना में समय बिताएं! आप उन्हें ऐसी अवस्था में छोड़कर जाना चाहते हैं जहां पर वे यीशु के साथ प्रेम करें और उसके बल, सामर्थ और प्रेम में आनंद मनाएं!

सेवकाई पश्चात के सुझाव दें

- जीवनशैली के रूप में क्षमाशीलता का जीवन बिताना।
    - समझाएं कि क्षमा निर्णय है, भावना नहीं, और वह व्यक्ति को क्षमा कर सकता है, भले ही वह ऐसा महसूस न करे। वह क्षमा करने का चुनाव कर सकता है। उसका आत्मा उसकी भावनाओं पर अधिकार रख सकता है, और उसके अपने हित के लिए क्षमा करना महत्वपूर्ण है।
    - व्यक्ति को यह जानने की ज़रूरत है कि क्षमा की प्रक्रिया .... एक ही व्यक्ति को एक से अधिक बार (कभी-कभी कई बार) क्षमा करने की ज़रूरत .... सामान्य है और इस बात का चिन्ह नहीं कि छुटकारे की सेवकाई असफल रही।
- चोट खाने के बाद तुरंत चंगाई के लिए प्रभु से बिनती करना।

- उन्हें सिखाएं कि वे उत्तरदायी रहें, जैसे व्यक्ति की स्थानीय सहभागिता में उत्तरदायी समूह/जीवन समूह/होम ग्रूप के प्रति।
- कठोर आदतों को बदलने के लिए मार्ग सुझाएं। कुछ सम्भावनाएं हैंः
    - परमेश्वर की स्तुति करें, स्तुति के गीत गाएं या सुनें, भजनों को पढ़ें।
    - प्रार्थना
    - यीशु के नाम में परखने वाली आत्माओं पर अधिकार लें और उन्हें दूर भगाएं।
    - आज़ादी पाने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।
    - यदि वह फिर गिर जाता है, तो वह तुरंत पश्चाताप कर सकता है और फिर से द्वार को बंद कर सकता है।
    - यदि शैतान उस पर पापी होने का दोष लगाता है, तो वह कह सकता है : तुम सही हो, शैतान। देखो यीशु ने मुझे किस बात के लिए क्षमा की है!
    - वह खुद को इस बात का स्मरण दिलाने के तरीके ढूंढ़ सकता हैं कि यीशु उसका प्रभु है। वह उसे बता सकता है कि पहली प्राथमिकता यीशु को उसके जीवन के हर क्षेत्र में प्रभु बनाना होनी चाहिए।
    - प्रतिदिन पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए बिनती करें।
- भविष्य में उस पर आक्रमण करने या उसे प्रताड़ित करने की कोशिश करने वाली किसी भी आत्माओं पर अधिकार लें।
- अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करें।
- प्रतिदिन बाइबल पढ़ें, परमेश्वर के साथ निकटता का शांत समय बिताएं।
- वे बातें जिनकी प्रेरणा पवित्र आत्मा प्रकाश में चलने के सम्बंध में दे सकता है।

दुष्टात्मा से पूर्ण रूप से ग्रसित होने के मामलों में

दुष्टात्मा से पूर्ण रूप से ग्रसित होने के मामलों में, हम उस व्यक्ति की ओर से छुटकारे की प्रतिक्रिया के द्वारा सहयोग की अपेक्षा नहीं कर सकते। हमें अधिकार लेना है और बल के साथ सेवा करना है। उदाहरणः पागलपन (गेरासेनियो का दुष्टात्मा पीड़ित)।

व्यसनात्मक आचरणों और व्यक्तिगत बंधनों से छुटकारा प्रदान करने की सेवा

हो सकता है कि लोग दुष्टात्मा से ग्रसित न हों, परंतु उनके जीवनों के एक या दो क्षेत्रों में दुष्टात्मा के दबाव में हो सकते हैं, दुष्टात्माएं उन पर प्रबल होकर उन्हें कैद कर लेती हैं। यह व्यसनात्मक आदत (नशीले पदार्थ, शराब, चोरी, झूठ बोलना, व्यभिचार आदि), गलत प्रवृत्तियों जो बनी रहती हैं (लोभ, क्रोध, वासना) और व्यक्तिगत बंधनों (भय, असुरक्षा, आत्महत्या की प्रवृत्ति) के रूप में प्रगट हो सकती हैं। विश्वासियों पर भी दबाव हो सकता है।

इन सभी मामलों में सेवा प्रदान करने का हमारा तरीका वैसा ही है जिसकी हमने पॅब्लो बोटारी छुटकारे के मॉडल में छुटकारे के पश्चात सेवकाई के साथ चर्चा की है। यह महत्वपूर्ण है कि वह व्यक्ति परमेश्वर के सामने व्यक्तिगत पवित्रता, शुद्धता और समर्पण के जीवन में चले/उसे चेला बनाया जाए। उस व्यक्ति को सिखाएं कि वह मसीह में कौन है, ताकि वह निरंतर विजय का जीवन बिता सके और उन क्षेत्रों में परीक्षाओं पर जय पा सके।

12
भावनात्मक चंगाई और स्वास्थ्य प्रदान करना

जिस प्रकार लोग अपने शरीर में रोगी हो सकते हैं और उन्हें पीड़ा हो सकती है, उसी प्रकार लोग उनके भीतरी मनुष्यत्व में भी (अंतर्मन में) पीड़ित, घायल, बीमार और दर्द से भरे हो सकते हैं, अर्थात उनके प्राण में। प्राण से हमारा मतलब है मन, भावनाएं, इच्छा और व्यक्ति का व्यक्तित्व।

भावनात्मक समस्याएं, घाव और चोटें - कारण

लोग कई तरीकों से भावनात्मक समस्याओं के शिकार हो सकते हैं और उनके मन और भावनाओं में आहत, घायल और रोगी हो सकते हैं। हम नीचे कुछ ही उल्लेख करेंगेः

पारीवारिक वातावरण

लोग उनके घर के वातावरण में पाई जाने वाली परिस्थिति के आधार पर उनके छोटे से बड़े होते समय भावनात्मक रूप से आहत हो सकते हैं। दमनकारी/गाली-गलोज करने वाला पिता, दमनकारी मां, यदि माता-पिता सख्त अनुशासन रखते हैं, माता-पिता अपने क्रोध से अपनी बात मनवा लेते हैं, माता-पिता एकदूसरे के साथ हेराफेरी करते हैं, माता-पिता एकदूसरे पर शक करते हैं, माता-पिता द्वारा दुत्कारा जाना, घर में अन्य ज़रूरतों का पूरा न होना (उदाहरण, सराहना, मान्यता का अभाव) ये सारी बातें बढ़ती उम्र में बच्चे को प्रभावित कर सकती हैं। हममें से अधिकतर लोग लचीले होते हैं और कठिन परिस्थितियों पर जय पा सकते हैं, परंतु कुछ लोग ऐसा नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप, वे अपने साथ अपने प्रौढ़ जीवन में दर्द, पीड़ा और अन्य भावनात्मक समस्याओं को ले आते हैं।

निजी व्यक्तित्व एवं अपनाई गई आदतें

कभी-कभी, समय के साथ प्राप्त निजी व्यक्तित्व और अन्य अपनाई गई आदतें भी प्राण को प्रभावित करती हैं और किसी रीति से व्यक्ति को

आहत कर सकती हैं या चोट पहुंचा सकती हैं। यहां पर कुछ बातें हैं जहां समस्याएं सामान्य तौर पर देखी जाती हैं: अपने कार्य के प्रति बहुत अधिक लगन रखने वाला और काम ही उसका सबकुछ हो, अत्यंत जिद्दी, अत्यंत आत्म-केन्द्रीत, नैतिक रीति से लंपट, हीन आत्म-प्रतिष्ठा और आत्म-मूल्य रखने वाला, तेज़ स्वभाव, क्षमाहीनता और कड़वाहट, व्यक्तिगत पहचान का अभाव, व्यक्तिगत लत (जैसे शराब, नशीले पदार्थों का सेवन, अश्लील चित्र और साहित्य, आदि), आलस्य, आत्म-बल का अभाव, आसानी से अवसादग्रस्त होने वाला और चंचल स्वभाव का, अस्थिर, उद्देश्य के बोध का अभाव, अत्यंत प्रतिस्पर्धात्मक।

पिछले अनुभव

पिछले पीड़ादायक या सदमा देने वाले अनुभव लोगों को भावनात्मक रूप से घायल और आहत कर देते हैं। इन अनुभवों में शारीरिक या भावनात्मक दुर्व्यवहार, प्रिय व्यक्ति की अचानक मृत्यु, सदमा, रिश्तों में निराशा, त्रासदी के कारण परमेश्वर के साथ निराशा, अनैतिक यौन सम्बंध (संभोग), अनैतिक जीवनशैली (कई यौन साथी) आदि।

लोगों के साथ अनुचित भावनात्मक सम्बंध

जब लोगों को भावनात्मक लगाव हो जाता है तब उन्हें छोड़ना मुश्किल लगता है, इससे वे भावनात्मक रूप से अपाहिज रह जाते हैं और अंततः उनके अन्य सामान्य रिश्तों पर भी इसका असर पड़ता है जिन्हें निभाने की उनसे अपेक्षा की जाती है। भावनात्मक लगाव उनके पिछले रोमानी रिश्ते हो सकते हैं, माता-पिता के साथ, मित्रों के साथ, अन्य रिश्ते, कल्पित साथी और अन्य हो सकते हैं।

हमने यहां उन परिस्थितियों और घटनाओं का छोटा नमूना सूचीबद्ध किया है जो व्यक्ति को चोट और पीड़ा पहुंचा सकता है और उसे भावनात्मक रूप से घायल कर सकता है।

भावनात्मक चोट, पीड़ा और घाव हमारे आचरण, समझ, प्रतिक्रिया और लोगों और परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं। हम

लोगों के साथ कैसे बातचीत करते हैं और जो चुनाव हम करते हैं और जो निर्णय हम लेते हैं वे उन भावनात्मक चोट और पीड़ा से प्रभावित होते हैं।

उदाहरण :

- अयोग्यता के बोध के कारण लोगों से **दूर हो जाना**।
- **नाराज़गी/क्रोध -** क्रोधित, हर समय आहत महसूस करना। लोगों के प्रति नाराज़गी का परिणाम कार्यस्थल पर लोगों के साथ निरंतर संघर्ष में होता है।
- **अपर्याप्तता की भावना -** अपर्याप्तता के गहरे बोध के कारण किसी भी काम की ज़िम्मेदारी न लेना।
- **निम्न स्तर की आत्म-प्रतिष्ठा -** आसानी से प्रभावित होना, खुद को प्रेम करने/स्वीकार करने के लिए संघर्ष, खुद को क्षमा न कर पाना।
- **तिरस्कार की भावनाओं के कारण अत्याधिक प्रतिस्पर्धात्मक -**

  "मेरे पिता के साथ मेरा रिश्ता अच्छा नहीं है। वे कहते हैं कि मैं न्किम्मा हूं और मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा।" इससे मन में तिरस्कार का बोध उत्पन्न होता है। आप उसे कारोबार में सफलता, या अत्याधिक प्रतिस्पर्धात्मकता से छिपाने की कोशिश करते हैं। आपके आक्रामक स्वभाव का कारण असफलता के भय में है क्योंकि आपने अपना सारा जीवन कार्य सम्पादन के द्वारा अपने पिता की पसंदगी हासिल करने में बिता दिया।
- **नकारात्मक नियंत्रण -** दूसरों का नियंत्रण और चाल, जानबूझकर और कभी-कभी अनजाने में।
- प्रेम और स्वीकृति के लिए बेताब :

  अ) एक जवान स्त्री जो अपने पुरुष मित्र के साथ अवैध रिश्ते में जीवन बिताती है, इस पुरुष में पीने की समस्या है, वह नशीले पदार्थों का उपयोग करता है, अक्सर बेरोजगार रहता है, उसके

क्रोध पर काबू नहीं है, वह मौखिक और शारीरिक रूप से उसे प्रताड़ित करता है। फिर भी यह युवा स्त्री उससे विवाह करना चाहती है। वह अंदर से इतनी घायल थी कि उसने गंभीरता के साथ ऐसे व्यक्ति से विवाह करने का विचार किया जिसका अपना जीवन बर्बाद हो चुका था और वह उसे भी बर्बाद करना चाहता था। वह सम्भवतः ऐसे वातावरण में पली-बढ़ी जहां उसकी भावनात्मक ज़रूरतें पूरी नहीं हुई, वह प्रेम और स्वीकृति पाने के लिए अत्यधिक बेताब थी, उसमें आत्म-प्रतिष्ठा का अभाव था, और त्यागे जाने का भय था - अतः वह किसी भी रिश्ते से चिपके रहना चाहती थी भले ही उसे उसके द्वारा पीड़ा क्यों न हो।

ब) कार्यात्मक सीमाएं निर्धारित न कर पाना - दूसरों को भावनात्मक और कभी-कभी शारीरिक सीमाओं का उल्लंघन करने देना और इस प्रक्रिया में बार-बार चोट खाना।

- **घनिष्ठता में कठिनाई** - अपनी वास्तविकता, आपके हृदय को बांट न पाना।
- **मान्यता का व्यसन** - निरंतर लोगों की मान्यता की चाह।
- **घातक धोखा** - स्त्रियों के प्रति, पैसों के प्रति, ख्याति, पद, मान्यता के प्रति, प्राणिक स्नेह और लगाव का, असुरक्षा और नियंत्रण का; संत्रास और चालबाजी आदि का घातक धोखा।

आहत भावनाएं

यदि हम हमारे आंतरिक मनुष्यत्व में स्वस्थ न रहे जो जल्द ही हमारे प्रतिदिन के जीवन में समस्याएं उत्पन्न होगी जहां पर वास्तविक समाधान आंतरिक मनुष्यत्व को चंगाई प्रदान करना होगा। उदाहरण के लिए सोचें कि क्या होगा जब एक भावनात्मक रूप से आहत व्यक्ति अपनी चोट और घाव को अपने वैवाहिक जीवन में ले आता है। कभी-कभी, हम गलत सोचते

हैं कि विवाह हमारे भावनात्मक चोट और पीड़ा को चंगा कर देगा। परंतु, अधिकतर मामलों में जो घायल व्यक्ति वैवाहिक जीवन में प्रवेश करता है वह सामान्य तौर पर अपने जीवनसाथी के अत्याचार का शिकार बन जाता है या उसे अपने अत्याचार का शिकार बनाता है। इसलिए हमें अपनी भावनात्मक समस्याओं के विषय में अत्याधिक ईमानदार रहने की ज़रूरत है।

- चोट खाए हुए लोग दूसरों को चोट पहुंचाते हैं।
- जब हमारी भावनाएं उत्तेजित होती हैं, तो हम 'पागलों जैसे' काम करते हैं।

याकूब 1:20
क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता है।

क्रोध हत्या की ओर प्रेरित करता है।

उत्पत्ति 4:6
तब यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है?

- घायल भावनाएं हमें घायल पक्षी के समान निर्बल कर देती हैं, हम घायल हो जाते हैं और उठ नहीं पाते।

भावनात्मक समस्याओं और दुष्टात्मा से ग्रसित होने के बीच सम्बंध

सभी भावनात्मक समस्याएं दुष्टात्मा की ओर से नहीं होती

कुछ समस्याएं मात्र भावनात्मक/मनोवैज्ञानिक हो सकती हैं। कुछ समस्याओं का कारण वास्तविक शारीरिक दशाएं (रासायनिक असंतुलन) हो सकती हैं।

दुष्टात्माओं से ग्रसित होना भावनात्मक समस्याओं के रूप में प्रगट हो सकता है

- पागलपन (मरकुस 5:1-9)
- आत्महत्या की प्रवृत्तियां (मरकुस 9:17-26)

यदि भावनात्मक समस्याओं को दूर न किया जाए, तो वे दुष्टात्मा से ग्रसित होने का कारण बन सकती हैं

उदाहरण :

- **कैनः** ईर्ष्या, पाप द्वार पर खड़ा है जो अंततः हत्या की ओर ले गया (उत्पत्ति 4:5-7)।
- **पतिः** विश्वासघात, ईर्ष्या की आत्मा के लिए द्वार खोलता है (गिनती 5:14, 30)।
- **इसाएली लोगः** लोभ और मूर्तिपूजा अनैतिकता का कारण बनी और वेश्यापन की आत्मा की बंधुवाई में ले गई (होशे 4:12, होशे 5:4)।
- **शाऊलः** ईर्ष्या हत्या की आत्मा, आत्मिक जीवन में पिछड़ेपन और जादूटोने की ओर ले गई (1 शमूएल 18:10, 1 शमूएल 19:9)।
- **झूठे भविष्यद्वक्ताओं** ने झूठ बोलने वाली आत्मा के लिए द्वार खोल दिया (मीका 2:11)।
- **फरीसीः** पाखण्ड धोखा और झूठ का कारण बना (तुम अपने पिता शैतान से हो। यूहन्ना 8:44)।

दो प्राथमिक समस्याएं : धोखा और गलत भावनाएं

हमें भावनात्मक चंगाई और स्वास्थ्य की सेवा प्रदान करते समय दो मुख्य समस्याओं का सामना करने की ज़रूरत है।

1) हमें उस छल या धोखे को दूर करना है जिसने व्यक्ति के विचार पर कैंजा किया है और
2) हमें गलत भावनाओं से निपटना है जिन्हें उसने अपने मन में रखा है।

अक्सर, भावनात्मक चंगाई और स्वास्थ्य की सेवकाई को दुष्टात्माओं से छुटकारे की सेवा के साथ जोड़ना है क्योंकि धोखा और गलत भावनाओं को मन में रखना शैतान द्वारा प्रेरित हो सकते हैं।

अक्सर, भावनात्मक चंगाई और स्वास्थ्य की सेवकाई को दुष्टात्माओं से छुटकारे की सेवा के साथ जोड़ना है क्योंकि धोखा और गलत भावनाओं को मन में रखना शैतान द्वारा प्रेरित हो सकते हैं।

आत्मा को फिर मांगना : धोखे को तोड़ना

धोखा मात्र झूठ पर विश्वास करना है। यह खुद के विषय में, दूसरों के विषय में, जीवन की परिस्थितियों के विषय में या परमेश्वर के विषय में असत्य पर विश्वास करना है।

धोखा व्यक्ति को बंधन में रख सकता है जहां वे सत्य को ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं होते और कभी कभी असत्य पर विश्वास करना उन्हें आरामदायक लगता है। धोखे के साथ समस्या यह है कि व्यक्ति नहीं जानता कि वह वास्तव में झूठ पर विश्वास कर रहा है। झूठ सत्य प्रतीत होता है और उस पर विश्वास करना उचित जान पड़ता है।

जब हम झूठ पर विश्वास करते हैं, तब हमारे चुनाव, आचरण, निर्णय, प्रतिक्रियाएं सभी उस झूठ से जिस पर हम विश्वास करते हैं प्रभावित होते हैं।

जब हम झूठ पर विश्वास करते हैं, तब परिणाम अक्सर वही होते हैं मानो वे सच हों। व्यक्ति कुछ समय के लिए राहत, संतोष, अस्थायी आनंद महसूस करता है, जिससे वह यह विश्वास करने लगता है कि झूठ ही सही है।

हमें सत्य को समझने में और जिस असत्य पर वे अविश्वास कर रहे हैं उसे पहचानने में व्यक्ति की सहायता करने की ज़रूरत है।

आप झूठ को कैसे पहचानेंगे

- झूठ परमेश्वर के वचन के प्रगट सत्य का विरोध करता है।
- झूठ स्वतंत्रता का वादा करते समय वास्तव में इच्छा पर नियंत्रण करता है और उस व्यक्ति को निर्बल कर देता है। वह व्यक्ति आगे नहीं कहने के लिए स्वतंत्र नहीं होता। जब बंधन का बोध होता है, तब आप जानते हैं कि वहां पाप और छल है।

अक्सर लोग स्वयं उस झूठ से छुटकारा नहीं पा सकते। वे झूठ के कैदी बन जाते हैं और असहाय होते हैं। यहीं पर विश्वासी होने के नाते हमें धोखा या छल के विरोध में युद्ध लड़ने की ज़रूरत है। धोखे को तोड़ना तब होता है

1) जब हम वचन के सत्य को हमारे दिलो-दिमाग में प्रवेश करने की अनुमति देते हैं और

2) धोखा देने वाली आत्माएं जो उस झूठ को और अन्य गढ़ों को सशक्त बनाती हैं परमेश्वर के सामर्थ के द्वारा निकाल दी जाती हैं।

परमेश्वर ने हमें उपयोग करने के लिए और प्राण को वापस पाने के लिए हथियार दिए हैं।

2 तीमुथियुस 2:23-26
[23] परंतु मूर्खता, और अविद्या के विवादों से अलग रह, क्योंकि तू जानता है कि उनसे झगड़े होते हैं;
[24] और प्रभु के दास को झगड़ालू होना न चाहिए, पर सबके साथ कोमल और शिक्षा में निपुण, और सहनशील हो;
[25] और विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहचानें,
[26] और इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिए सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाए।

2 कुरिन्थियों 10:3-6
[3] क्योकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते।
[4] क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।
[5] इसलिए हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध मेंं उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह की आज्ञाकारी बना देते हैं।
[6] और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर एक प्रकार के आज्ञा न मानने का पलटा लें।

यूहन्ना 8:31-32,36

[31] तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उनकी प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे,

[32] और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

यशायाह 29:24

उस समय जिनका मन भटका हो वे बुद्धि प्राप्त करेंगे, और जो कुड़कुड़ाते हैं वे शिक्षा ग्रहण करेंगे।

आत्मा को फिर मांगना : गलत भावनाएं

व्यक्ति के मन में कई प्रकार की नकारात्मक भावनाएं हो सकती हैं, परंतु उनमें दो मुख्य (या सामान्य) हैंः

अ) क्षमाहीनता और

ब) वासना

क्षमाहीनताः परमेश्वर को क्षमा करना, खुद को क्षमा करना, दूसरों को क्षमा करना

दर्द, चोट और सदमा आदि की वजह से, क्षमाहीनता का गहरा बोध उत्पन्न हो सकता है। कभी-कभी हम होने वाली सारी गलत बातों के लिए परमेश्वर को ज़िम्मेदार मानते हैं और इनके लिए परमेश्वर को क्षमा नहीं कर पाते। हम शायद उन लोगों को क्षमा नहीं कर पाते जिन्होंने हमारे साथ गलत किया।

कभी-कभी हम निर्णय लेने में गलती, गलत चुनाव या जो कुछ हमने किया उसके लिए खुद को क्षमा नहीं कर पाते। क्षमाहीनता अन्य कई सम्बंधित नकारात्मक भावनाओं को जन्म देती है, जैसे नफरत, क्रोध, नाराज़गी और कड़वाहट। प्रभु यीशु ने अपनी शिक्षा में क्षमाहीनता की समस्या को सम्बोधित किया।

मती 6:12,14,15

[14] और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही आप भी हमारे अपराधों को क्षमा करें। इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।

15 और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।

हमें सिखाया गया है कि जब हम प्रार्थना में परमेश्वर से क्षमा मांगते हैं तो हम दूसरों को भी क्षमा करें। पापों की क्षमा के लिए कल्वरी के क्रूस पर पापों की क्षमा का दाम चुका दिया गया है, इसलिए व्यक्तिगत तौर पर हमारा क्षमा को स्वीकार करना और अनुभव करना हमारे क्षमा करने पर निर्भर है।

मती 18:21-35

21 तब पतरस ने पास आकर उससे कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई मेरे विरोध में अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं? क्या सात बार?
22 यीशु ने उससे कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार, बल्कि सात के सत्तर गुने तक।
23 इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने दासों से लेखा लेना चाहा।
24 जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके सामने लाया गया जिस पर दस हजार तोड़े का कर्ज था।
25 परंतु कर्ज चुकाने के लिए उसके पास कुछ न था, तब उसके स्वामी ने आज्ञा दी कि यह और इसकी पत्नी और लड़केबाले और जो कुछ इस का है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए।
26 तब उस दास ने उसके पांवों पर गिरकर कहा, 'हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ चुकता कर दूंगा।'
27 तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका कर्ज क्षमा किया।
28 परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उसको मिला, जिस पर उसका सौ दीनार कर्ज था। उसने उसे पकड़कर उसका गला दबोचा और कहा, 'जो कुछ तुझ पर कर्ज है भर दे।'
29 तब उसका संगी दास उसके पांवों पर गिरकर उससे बिनती करने लगा कि धीरज धर, मैं सब कुछ चुकता कर दूंगा।
30 उसने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया ताकि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वहीं रहे।
31 उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहुत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया।
32 तब उसके स्वामी ने उसको बुलाकर उससे कहा, 'हे दुष्ट दास! तू ने मुझसे बिनती की, और मैंने तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया।

[33] इसलिए जैसे मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था?'
[34] तब उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया ताकि जब तक वह सब कर्ज भर न दे, तब तक उनके हाथ में रहे।
[35] इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को हृदय से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुमसे भी वैसा ही करेगा।

लूका 6:36,37
[36] जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।
[37] दोष मत लगाओ, तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा; दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे; क्षमा करो, तो तुम्हारी भी क्षमा की जाएगी।

क्षमा के क्षेत्र में और दूसरों पर दया करने के मामले में प्रभु हमारे साथ उसी प्रकार व्यवहार करेगा जैसा हम इन मामलों में दूसरों के साथ करते हैं। यदि हम हमारे हृदयों में क्षमाहीनता रखते हैं, तो वह हमारे अपने जीवनों में क्षमाहीनता के बहाव को रोकता है। परमेश्वर की क्षमा न केवल पाप की शुद्धता है, बल्कि उसके फलस्वरूप आनंद, दोष और अपराधबोध से मुक्ति का एहसास, और उसके साथ पुनर्स्थापित रिश्ते की सामर्थ, और दुष्टात्माओं की शक्तियों के सामने हियाव प्राप्त होता है। जब हम दूसरों को क्षमा नहीं कर पाते, तब हम अपने स्वयं के जीवनों में परमेश्वर की क्षमा की परिपूर्णता को अनुभव नहीं कर पाते।

यूहन्ना 8:1-11
[1] परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।
[2] और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए, और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
[3] तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उसको बीच में खड़ी करके यीशु से कहा,
[4] हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई है।
[5] व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें; तो आप इस स्त्री के विषय में क्या कहते हैं?
[6] उन्होंने उसको परखने के लिए यह बात कही, ताकि उस पर दोष लगाने के लिए कोई बात पाएं, परन्तु यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा।
[7] जब वे उससे पूछते ही रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहा, कि तुममें जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।

8 और फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा।
9 परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं थी।
10 यीशु ने सीधे होकर उससे कहा,*"हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी?"*
11 उसने कहा, हे प्रभु, "किसी ने नहीं।" यीशु ने कहा, "मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना।"

कल्पना करें कि जब उसके सारे दोष लगाने वाले चले गए और यीशु ने उससे कहा, मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं दे*ता; जा, "और फिर पाप न करना, तो उसे कैसे महसूस हुआ होगा।"* उसकी प्रतिष्ठा, उसका मूल्य, उसका उद्देश्य, उसका आनंद, सभी उस क्षण में उसे वापस मिल गए जब क्षमा उसके जीवन में प्रवाहित हुई। यदि वह सचमुच समझ लेती कि उसे साथ क्या हुआ था, तो उसकी पुरानी जीवनशैली में लौटना उसके लिए अब इतना आकर्षक न होता।

जैसे परमेश्वर ने हमें क्षमा की वैसे ही हमें दूसरों को क्षमा करने हेतु बुलाया गया है। *"और एक दूसरे पर कृपालु, और करूणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। इसलिए प्रिय बालकों की नाईं परमेश्वर के सदृश्य बनो। और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुमसे प्रेम किया; और हमारे लिए अपने आपको सुखदायक सुगंध के लिए परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया"* (इफिसियों 4:32, इफिसियों 5:1-2)।

जिसने हमें चोट पहुंचाई है उसे क्षमा करने का अर्थ यह नहीं है कि हम ऐसा मानकर चलते हैं कि हमारे साथ कभी गलत किया ही नहीं गया। बल्कि, जो चोट हमें पहुंचाई गई है उसके दर्द को समझते और महसूस करते समय, हम नफरत, बदला, क्रोध, कटुता की सारी भावनाओं को छोड़ देने का चुनाव करते हैं। हम उस व्यक्ति के प्रति परमेश्वर के प्रेम को मुक्त करने का प्रयास करते हैं और उस रिश्ते के पुनर्स्थापन का प्रयास करते हैं। भले ही, यदि कुछ मामलों में, रिश्ते को पुनर्स्थापित करना सम्भव न हो, फिर भी हमारे हृदय शुद्ध हैं और हम अपने मन में किसी प्रकार की कटुता या क्रोध नहीं रखते।

लालसा या वासनाः अनियंत्रित चित्तवृत्ति से मुक्त होना

लालसा अनियंत्रित वासना है, किसी चीज़ को पाने या अनुभव करने की अनियंत्रित इच्छा।

1 यूहन्ना 2:16,17
16 क्योंकि जो कुछ संसार में है–अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड–वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।
17 और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, परंतु जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।

बाइबल लालसा के तीन क्षेत्रों के विषय में बताती है - शरीर की लालसा या अभिलाषा, आंखों की लालसा और जीविका का घमंड। शरीर की लालसा का सम्बंध उन बातों से है जो शरीर की भूख को सन्तुष्ट करती हैं, उदाहरण के तौर पर, यौन, भोजन, चैनविलास और अन्य उसी प्रकार की बातें। आंखों की लालसा का सम्बंध उन बातों से है जो लगाव या आसक्ति को सन्तुष्ट करती हैं, जहां पर देखने और महसूस करने से वही संतोष मिलता है जो उसे पाने और करने से मिलता है। इनमें अश्लील तस्वीरों, गंदे विचारों, अनैतिक कल्पना चित्रों, खुबसूरत स्त्री और पुरुषों के प्रति आकर्षण, और अन्य सम्बंधित बातों का समावेश है। जीविका के घमण्ड का सम्बंध खुद को महत्व देना, खुद को पर्याप्त समझना, केवल खुद ही पर निर्भर रहना आदि बातों से है। व्यक्ति यह सोचने लगता है कि वह कुछ भी कर सकता है और कुछ भी पा सकता है। यह व्यक्ति के पास होने वाला पैसा, अधिकार, ख्याति, पद, प्रभाव आदि बातों में घमण्ड और भरोसा है। व्यक्ति इन्हें और पाना चाहता है। यह और अधिकार पैसा या प्रभाव के लिए अनियंत्रित इच्छा है।

लालसा अक्सर अन्य लोगों के प्रति ईर्ष्या या जलन का कारण बनती है जिनके पास वे सारी बातें होती हैं जिन्हें आप पाना चाहते हैं। परंतु यह प्रत्येक प्रकार के दुष्टात्मा के कार्य के लिए द्वार खोल देता है। *"इसलिए कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है"* (याकूब 3:16)।

लालसा लोभ की ओर ले जा सकती है जिसका अर्थ है दूसरों के पास जो है उसे पाने की इच्छा रखना। लोभ मूर्तिपूजा है (इफिसियों 5:5)। कुछ पाने और अनुभव करने की इच्छा परमेश्वर और उसके राज्यों के मूल्यों से अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। वह परमेश्वर का स्थान ले लेती है और उसे पूजा जाता है।

1 पतरस 2:11
हे प्रियो, मैं तुमसे बिनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युध्द करती हैं, बचे रहो।

ये लालसाएं व्यक्ति के अपने प्राण को त्रस्त करती हैं। हमारी भावनाएं इन लालसाओं से जिनमें हम व्यस्त होते हैं, प्रभावित होती हैं।

रोमियों 6:16
क्या तुम नहीं जानते कि जिसकी आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों के समान सौंप देते हो उसी के दास हो; और जिसकी मानते हो, चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है?

लालसा या वासना गुलाम बनाती है जब तक कि हम उस बिन्दु तक पहुंच न जाएं जहां पर हम उससे स्वतंत्र नहीं हो पाते। हमारा दिल दिमाग और भावनाएं अब बंधन में आ जाती हैं।

भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए परमेश्वर का चंगाई का मरहमः क्रूस, वचन, आत्मा

हमारा परमेश्वर प्राण को चंगा करने वाला है। चोट या दर्द चाहे जो हो, वह प्राण के लिए चंगाई और स्वास्थ्य ले आता है। वह प्राण को सब प्रकार के छल और गलत भावनाओं से मुक्त करता है जिन्होंने उसे कैद कर लिया है। यहां पर कुछ वचन दिए गए हैं जो घायल प्राण के लिए हमें परमेश्वर की चंगाई का आश्वासन देते हैं।

भजन संहिता 23:3
वह मेरी जी में जी ले आता है।

यशायाह 61:1-3
[1] प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर हैं; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं; कि बंधुओं के लिये स्वतन्त्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूं;
[2] कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं; कि सब विलाप करनेवालों को शान्ति दूं
[3] और सिय्योन के विलाप करनेवालों के सिर पर की राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बान्ध दूं, कि उनका विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊं; जिस से वे धर्म के बांजवृक्ष और यहोवा के लगाए हुए कहलाएं और जिस से उसकी महिमा प्रगट हो।

1 थिस्सलुनीकियों 5:23,24
[23] शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।
[24] तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।

3 यूहन्ना 1:2
हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे, और भला चंगा रहे।

शारीरिक चंगाई की सेवा करने हेतु हमने जो चर्चा की है उसी के समान, परमेश्वर मसीह के क्रूस, वचन और उसके आत्मा के द्वारा प्राण को चंगाई और स्वास्थ्य प्रदान करता है।

मसीह का क्रूस

यशायाह 53:5
परन्तु हमारे पापों ने ही उसके साथ ऐसा किया,
जिसने उसके दिल को तारतार कर दिया और उसे कुचल दिया–*हमारे पापों ने!*
उसने खुद सजा ले ली, और इससे हम चंगे हो गए (इब्रानी *'शालोम'*)।
उसके घावों से हम चंगे हो गए।

क्रूस उन क्षेत्रों में स्वास्थ्य ले आता है जहां पाप ने हानि की है। क्रूस पर प्रभु यीशु ने हमारे सारे पापों को, हमारे सारे गलत कामों को उठा लिया। उसने न केवल हमारे पाप का दण्ड सह लिया, परंतु उस पाप का

परिणाम भी – ताकि हम न केवल क्षमा प्राप्त कर सकें, किंतु स्वस्थ भी हो जाएं। मसीह के क्रूस के द्वारा *"शालोम"* हमारा है, जिसका अर्थ है पूर्ण कल्याण, पूर्ण व्यक्तित्व का स्वास्थ्य। भावनात्मक चंगाई और स्वास्थ्य हमें क्रूस के द्वारा दिए गए हैं।

क्रूस परमेश्वर के बिनशर्त प्रेम का प्रात्यक्षिक है। उसका बिनशर्त प्रेम हमें सारे अपराध, दोष और लज्जा से मुक्त करता है।

परमेश्वर का वचन - सत्य

याकूब 1:21
इसलिए सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।

परमेश्वर का वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17)। *"तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है"* (119:130)। परमेश्वर के वचन का प्रवेश ज्योति, प्रबोधन ले आता है और अंधकार को दूर करता है। जब हम उसके वचन में बने रहते हैं, तब हम सत्य को जानते हैं और सत्य हमें स्वतंत्र करता है (यूहन्ना 8:31,32)। परमेश्वर के वचन के सत्य को अपनाने से वे झूठी बातें दूर होती हैं जिन्होंने हमें निर्बल किया है और उसका वचन हमें स्वस्थ कर देता है।

परमेश्वर का पवित्र आत्मा

केवल परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमारे आंतरिक मनुष्यत्व के उन क्षेत्रों और प्रदेशों में पहुंचता है जहां और कोई नहीं जा सकता और चंगाई एवं स्वास्थ्य ले आता है।

जैसा कि हम यशायाह 61:1-3 में पढ़ते हैं, अभिषेक टूटे हुए हृदय को चंगाई देता है, कैदियों को आज़ादी देता है, जो बंधुवाई में हैं उन्हें कैद से आज़ाद करता है; विलाप करने वालों को सांत्वना देता है, जो शोक करते हैं उन्हें तसल्ली देता है, उनके सिर पर की राख दूर करके उन्हें सुंदरता की पगड़ी बांधता है, विलाप दूर करके हर्ष का तेल, उदासी का आत्मा हट ाकर स्तुति का ओढ़ना पहनाता है।

मसीह के क्रूस, परमेश्वर के वचन और उसके आत्मा के द्वारा, हम पूर्ण स्वास्थ्य के स्थान में आ सकते हैं - भावनात्मक समस्याओं से चंगाई पा सकते हैं - भय, अपराध भावना, लज्जा, व्याकुलता, तिरस्कार, क्रोध, चोट, और दर्द। हमें स्वास्थ्य की ओर लाया गया है - ऐसा स्थान जहां लोग और परिस्थितियां हमारी भावनात्मक स्थिति पर दबाव नहीं डाल सकते।

यीशु मसीह के द्वारा भावनात्मक स्वास्थ्य हमारा है

जब हम लोगों की सेवा करते हैं, तब हमें उन्हें परमेश्वर के प्रेम का और चंगाई करने एवं स्वस्थ करने की परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का आश्वासन देने की ज़रूरत होती है। हमें लोगों को उनके अपराधबोध, लज्जा और अयोग्यता के बोध से मुक्ति पाने में सहायता करनी चाहिए।

- यीशु हमें पुनर्स्थापित करता है। यीशु हमें आज चंगा करता है!
- यीशु हमें स्वस्थ बनाने के लिए मर गया।
- यीशु हमें दिखाता है कि हम सभी बातों के लायक हैं।
- आप चाहे कैसे ही फंदे में फंसे क्यों न हो, वह आपको बाहर निकाल सकता है।
- आपका अंधकार कितना ही गहरा क्यों न हो, वह आपकी ज्योति बनेगा।
- आपका पीछे हट जाना कितना बड़ा ही क्यों न हो, वह आपको चंगा करेगा।
- वह हर परिस्थिति को बदल देता है।
- जो टूटे हुए, घायल और गहरी चोट खाए हुए हैं, ऐसों को और टूटे हुओं को वह चंगा करता है।
- जो दुख में हैं, खेदित हैं, उन्हें वह तसल्ली देता है। वह विलाप के बदले आनंद देता है।
- जो भावनात्मक रूप से बिखरे हुए हैं, उनके सिर से राख हटाकर वह सुंदर पगड़ी बांधता है।

- जो व्याकुल हैं, बोझिलपन से दबे हैं, उन्हें वह मुक्त करता है कि वे स्तुति करें।
- परमेश्वर हमें क्षमा करने की, चंगा करने की, आगे बढ़ने की सामर्थ देता है।

फिलिप्पियों 2:13
क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।

भावनात्मक चंगाई और स्वास्थ्य की सेवा करना

परमेश्वर कई भिन्न तरीकों से व्यक्ति को भावनात्मक चंगाई दे सकता है। उदाहरण के तौर पर, चंगाई आराधना के समय के दौरान आ सकती है, जहां परमेश्वर की उपस्थिति व्यक्ति को अतीत की चोटों और घावों से मुक्त करती है। चंगाई तब आ सकती है जब व्यक्ति व्यक्तिगत तौर पर प्रार्थना करता है, परमेश्वर को खोजता है, वचन में मनन करता है और परमेश्वर उसको उनके घावों से और पीड़ाओं से मुक्त करता है। व्यक्ति को दिया गया भविष्यद्वाणी का वचन चंगाई ला सकता है और स्वास्थ्य का कारण बन सकता है। मसीही परामर्शदाता जो वचन और आत्मा के साथ सेवा करता है उसके साथ बिताया गया समय भी भावनात्मक स्वास्थ्य ले आता है। जबकि हम इस बात को ध्यान में रखते हैं कि परमेश्वर कई भिन्न तरीकों से भावनात्मक चंगाई और स्वास्थ्य प्रदान करता है, हम यहां पर एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं जिसका उपयोग व्यक्ति के साथ कार्य करते समय किया जा सकता है।

यहां पर उस व्यक्ति को जिसके साथ आप कार्य कर रहे हैं, भावनात्मक चंगाई एवं स्वास्थ्य प्रदान करने हेतु कुछ सामान्य दिशा-निर्देश दिए गए हैं। हमारा लक्ष्य सरलता से कार्य करना और चंगाई और स्वास्थ्य के लिए प्रभु पर निर्भर रहना है। क्रूस की ओर देखें। उसके वचन को गले से लगाएं, पवित्र आत्मा के कार्य का स्वागत करें।

1. व्यक्ति की यह पहचानने में मदद करें कि उसके जीवन में समस्या है और उसे सहायता पाने के लिए तैयार रहना है। कभी-कभी लोग उनकी ज़रूरत को अंगीकार करते हुए आएंगे और सहायता की गुहार लगाएंगे। कुछ मामलों में, जैसा कि हमने बाह्य समस्या या परिस्थिति (उदाहरण, विवाह विच्छेद, रिश्तों का टूटना) की चर्चा की, अब हम उस मूल समस्या को सम्बोधित करने हेतु आगे बढ़ते हैं जो भावनात्मक समस्या हो सकती है। यह पहला चरण है और शायद सबसे महत्वपूर्ण चरण। हम में से अधिक लोग यह स्वीकार करना नहीं चाहते कि हमारे प्राण/मन/भावनाओं में समस्या है।

2. व्यक्ति की परमेश्वर के वचन के मानक और सत्य को स्वीकारने में सहायता करें। उस क्षेत्र के विषय में परमेश्वर का वचन क्या कहता है समझें। जब तक हम अपने विश्वास, प्रवृत्ति या आचरण को सामान्य मानकर स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक हम बदलेंगे नहीं। हमें यह देखने की ज़रूरत है कि एक उच्च मानक है, जीने का बेहतर तरीका है, जिसका वर्णन वचन में किया गया है।

3. व्यक्ति जिस झूठ पर, छलावे पर, गलत मानसिकताओं पर विश्वास कर रहा है उसके प्रभावों को त्यागने की और और इन क्षेत्रों से सम्बंधित परमेश्वर के वचन के सत्य को कबूल करने की ओर उसकी अगुवाई करें।

4. ऐसा करने हेतु व्यक्ति की अगुवाई करते समय आपको उनके जीवन के किसी दुष्टात्मा के प्रभाव के साथ व्यवहार करने की ज़रूरत पड़ सकती है। दुष्टात्माओं के प्रभाव को तोड़ने हेतु आपके आत्मिक अधिकार का उपयोग करें। इन क्षेत्रों को यीशु के लहू के मुक्तिदायक सामर्थ के अधीन लाएं।

5. किसी भी प्रकार की गलत भावनाओं को जिन्हें उन्होंने पाल रखा है कबूल करने, छोड़ देने और दुत्कारने हेतु उनकी अगुवाई करें, जैसे

क्षमाहीनता, नफरत, क्रोध, वासना। व्यक्ति को विशिष्ट तौर पर प्रार्थना में उन व्यक्तियों के नाम लेने की ज़रूरत पड़ सकती है जिन्हें वे क्षमा कर रहे हैं। उन्हें विशिष्ट लोगों या वस्तुओं के प्रति प्रार्थना में अपने अनैतिक लगाव को त्यागने की ज़रूरत पड़ सकती है। उस व्यक्ति की अगुवाई करें कि वह अपने दिलो-दिमाग, विचारों, भावनाओं, स्नेह और इच्छा को परमेश्वर के सामने समर्पित करें।

6. व्यक्ति की अगुवाई करें कि वह परमेश्वर के आत्मा के द्वारा परमेश्वर के चंगाई के कार्य का उसके जीवन के विशिष्ट क्षेत्र में स्वागत करे जहां पर उसने चोट खाई है, घायल हुआ है, पीड़ा में है आदि।

7. व्यक्ति को प्रोत्साहन दें कि वह निरंतर परमेश्वर के वचन से अपने मन का नवीनीकरण करे, परमेश्वर के वचन के सत्य को स्वीकार करे और उस वचन के अनुसार जीने का निर्णय ले। परमेश्वर के वचन को और परमेश्वर के मानक को सामान्य जानकर स्वीकार करें। व्यक्ति को सिखाएं कि हम मसीह में कौन हैं। हम मसीह में कौन हैं इसका सामर्थी प्रकाशन हमारे प्रतिदिन के जीवनों के सारे क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

8. व्यक्ति को प्रोत्साहन दें कि वह दिन प्रतिदन पूर्ण पुनर्स्थापन और स्वास्थ्य के मार्ग पर चले, और उस ओर अपनी यात्रा तय करे। अनैतिक लगाव, आचरण, मित्रता, और प्रभावों को त्यागें जिन्होंने उस व्यक्ति को चोट पहुंचाई हो या भावनात्मक बंधन में लाया हो। व्यक्ति को जो बातें नीचे की ओर ले जाती हैं उनसे सम्बंध तोड़ दें। कभी-कभी यह दुखदायक हो सकता है, परंतु प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि पाप के साथ व्यवहार करते समय सख्ती आवश्यक है। *''यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे;*

क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए" (मत्ती 5:29,30)।

एक अखण्ड यात्रा

भौतिक स्वास्थ्य को बनाए रखने या छुटकारे को बनाए रखने के समान, भावनात्मक स्वास्थ्य में चलना भी एक अखण्ड आजीवन प्रक्रिया है। यहां पर कुछ अनुशासन के नियमों का पालन करना है जो भावनात्मक स्वास्थ्य में चलना सुनिश्चित करेंगेः

- **मन का नवीनीकरण करना**–उस क्षेत्र में परमेश्वर के वचन से अपने दिलो-दिमाग को या मन को भर देना।
- **आत्मा का निरंतर कार्य**–पवित्र आत्मा की शरण में चलें। उसको बदलाव हेतु प्रतिदिन के आधार पर सहायता मांगें।
- **सकारात्मक घोषणा**–निरंतर परमेश्वर का वचन कहते जाएं। विश्वास की बात कहें। सकारात्मक बोलें। आशा की बात बोलें।
- **सकारात्मक प्रभाव की सामर्थ को चुनें**–हमें निर्बल करने वाली मित्रता त्याग दें। खुद को सही लोगों से घेर लें।
- **भावनात्मक कौशल और अनुशासन का विकास करें**–उदाहरण के तौर पर क्रोध पर काबू पाना, निश्चिंत रहना सीखना, तनाव पर काबू, नकारात्मक विचारों से सकारात्मक मानसिकता की ओर बढ़ना।
- **उन्नति का ध्यान रखना**–दूसरे व्यक्ति से (परामर्शदाता, आत्मिक गुरू) से कहें कि वह आपकी उन्नति का लगातार ध्यान रखे। यदि सम्भव हो तो खुद ऐसा करें।

भावनात्मक चंगाई एवं स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना

भजन संहिता 142:7
मुझ को बन्दीगृह से निकाल
कि मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूं!

रोमियों 10:13
क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।

नीचे नमूने के रूप में प्रार्थना दी गई है जिसका हम उपयोग कर सकते हैं।

- जान लें कि वहां समस्या है—*"प्रभु, मैं कबूल करता हूं कि मैं निम्नलिखित भावनात्मक समस्याओं, घावों, और पीड़ाओं से—संघर्ष कर रहा हूं।"*
- परमेश्वर के वचन के मानक और सत्य को जान लें—*"प्रभु, मैं जानता हूं कि आप नहीं चाहते कि मैं इन समस्याओं, घावों और पीड़ाओं को अपने साथ ले चलूं क्योंकि आपका वचन कहता है..."*
- अतीत के प्रभाव को त्याग दें और इन क्षेत्रों को यीशु मसीह के लहू के मुक्तिदायक प्रभाव के अधीन ले आएं—*"प्रभु, मैं किसी भी प्रकार की नकारात्मक भावनाओं, क्रोध, क्षमाहीनता को त्यागता हूं, जो उन लोगों के प्रति है जिन्होंने ने मुझे चोट पहुंचाई होगी (**यदि सम्भव हो, तो यहां उन लोगों के नामों का उल्लेख करें**)। प्रभु, मैं मेरे पापमय मार्गों और गलत विचारों को त्यागता हूं जो मुझे घाव और पीड़ा के इस स्थान में ले आए। मैं अपने शरीर, प्राण, और आत्मा को यीशु के लहू की शुद्ध करने वाली और मुक्तिदायक सामर्थ के अधीन लाता हूं। मैं उस स्वास्थ्य को प्राप्त करता हूं जो यीशु क्रूस पर उसके किए गए उस कार्य के द्वारा लाता है, जहां पर वह मेरे लिए मर गया। मैं मेरे मन पर किसी भी प्रकार की अशुद्ध, अनैतिक, दुष्टात्मा की शक्ति के प्रभाव को त्यागता हूं और आज के बाद मेरे जीवन में उन्हें प्रवेश की अनुमति नहीं देता।"*
- अपने मन, विचारों, स्वप्नों और भावनाओं को परमेश्वर के प्रति समर्पित करें—*"प्रभु, मैं मेरे सम्पूर्ण व्यक्तित्व, आत्मा, प्राण और शरीर को प्रभु यीशु मसीह के समक्ष समर्पित करता हूं। प्रभु, मुझमें राज कीजिए, आपकी सामर्थ में, मेरे सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर राज कीजिए। आपका राज्य मेरे पूर्ण व्यक्तित्व में स्थापित हो। आपकी धार्मिकता, शांति और आनंद से मुझे भर दें।"*

- पवित्र आत्मा की चंगाई के कार्य का उसके पवित्र आत्मा के द्वारा आपके जीवन में स्वागत करें—*"प्रिय पवित्र आत्मा, कृपा करके आकर आपकी उपस्थिति और चंगाई की सामर्थ से मुझे भर दीजिए। मेरे दिलो-दिमाग, भावनाओं और इच्छा को चंगा कीजिए। मुझे पुनर्स्थापित कीजिए और स्वस्थ बनाइये। मुझे आत्मा के फल से भर दीजिए—प्रेम, आनंद, मेल, दयालुता, दीनता, संयम, पवित्रता, विश्वास। मुझे प्रतिदिन बदलिये कि मैं यीशु के समान अधिकाधिक बनता जाऊं।"*
- परमेश्वर के वचन से अपने मन का नवीनीकरण करें—परमेश्वर के वचन के सत्य को अपनाएं और उसके वचन के अनुसार जीवन बिताने का निर्णय लें। परमेश्वर के वचन को और परमेश्वर के मानक को सामान्य जानकर स्वीकार करें।
- मसीह में पूर्णता खोजना—हम सभों की ज़रूरतें होती हैं, परंतु हमें मसीह में अपनी परिपूर्णता ढूंढ़ने की ज़रूरत है। *"प्रभु, मैं जानता हूं कि मेरे अंदर जन्म से ही सुरक्षा, आत्म-मूल्य और महत्व की ज़रूरत है। मैं उन ज़रूरतों की परिपूर्णता और संतुष्टि केवल मसीह में ढूंढ़ने का निर्णय लेता हूं। मैं यीशु में सुरक्षित हूं। मैं अपना मूल्य मसीह में पाता हूं। मैं परमेश्वर के लिए हर बात के लायक हूं। मैं मेरे जीवन के लिए आपकी इच्छा पूरी करने में और प्रभु आपके हृदय के लिए प्रसन्नता का कारण बनने में अपना महत्व खोजता हूं।"*
- *"मैं इन सारी बातों के लिए यीशु के सामर्थी नाम में प्रार्थना करता हूं। आमेन। आमेन।"*

अभ्यास का समय

एक या उससे अधिक लोगों को खोज निकालें जो उनके अतीत के किसी विशिष्ट क्षेत्र में भावनात्मक चंगाई प्राप्त करने के लिए तैयार हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के चारों ओर दो या तीन लोगों का छोटा समूह तैयार करें ताकि इस अध्याय में जो सिखाया गया है उसके आधार पर उनकी सेवा करें।

उसके बाद प्रश्न पूछें और जिसके लिए प्रार्थना की गई उसके साथ और पूरे समूह के साथ प्रार्थना समय बिताने के विषय में विचार विमर्श करें।

1) लोगों ने प्रार्थना समय के दौरान क्या देखा?

2) प्रभु ने प्रार्थना समय में यदि कुछ किया, तो क्या किया?

3) जिसके लिए प्रार्थना की गई उसे क्या सेवकाई के दौरान परमेश्वर की उपस्थिति और प्रेम का बोध हुआ?

4) जिसके लिए प्रार्थना की गई क्या उसने महसूस किया कि सेवकाई के दौरान प्रभु ने उसके साथ कुछ महत्वपूर्ण बात की?

5) उनके अतीत के इस क्षेत्र में क्या वे चंगाई और शांति का और गहरा बोध महसूस करते हैं?

6) क्या किसी बात से आपको आश्चर्य हुआ? यदि ऐसा है, तो क्या?

13
चंगाई और छुटकारा देने वाले समाज के रूप में स्थानीय कलीसिया

परमेश्वर के हृदय की सबसे महानतम इच्छाओं में से एक है उसके लोगों के मध्य वास करना। वह ऐसे लोगों को पाना चाहता है जिनके द्वारा उसकी महिमा पृथ्वी पर प्रगट होगी। स्थानीय कलीसिया को ऐसा समुदाय या समाज बनना है जिसके द्वारा उसकी महिमा प्रगट होगी। प्रत्येक स्थानीय कलीसिया को चंगाई और छुटकारा देने वाला समुदाय बनना है जो आस-पास के संसार को परमेश्वर की महिमा प्रगट करेगा।

समाज के रूप में परमेश्वर की उपस्थिति का आयोजन करना

विश्वासियों के एक स्थानीय समाज की कल्पना करें जिनके मध्य परमेश्वर वास करता है! कल्पना करें कि यदि हम उसे और उसकी उपस्थिति को हमारा मुख्य केंद्र बनाएं, तो हमारी स्थानीय कलीसियाएं कैसी होगी। ऐसे समाज की कल्पना करें जिसके विषय में कहा जा सकता है, परमेश्वर उनके मध्य है। चंगाई और छुटकारा, ईश्वरीय प्रयोजन और वह प्रत्येक चीज़ जिसकी हमें जीवन के लिए आवश्यकता है, उस प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अनुभव की जाएगी जो ऐसे समाज का अंग है। लोग ऐसे समाज का हिस्सा बनने के लिए भीड लगाएंगे जिनके मध्य परमेश्वर वास करता है।

भजन 132:13-18

13 क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को अपनाया है, और उसे अपने निवास के लिये चाहा है।
14 वह तो युग युग के लिये मेरा विश्रामस्थान है; यहीं मैं रहूंगा, क्योंकि मैंने इसको चाहा है।
15 मैं इसमें की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूंगा; और इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा।

[16] इसके याजकों को मैं उध्दार का वस्त्र पहनाऊंगा, और इसके भक्त लोग ऊंचे स्वर से जयजयकार करेंगे।
[17] वहां मैं दाऊद के लिए एक सींग उगाऊंगा; मैंने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रखा है।
[18] मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहिनाऊंगा, परन्तु उसी के सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा।

परमेश्वर चुनाव करता है कि वह कहां वास करने की इच्छा रखता है, वह अपनी उपस्थिति का वास कहां प्रगट करता है। कलीसिया इसलिए बनाई गई है ताकि वह आत्मिक सिय्योन बने—ऐसे लोग जिनके मध्य परमेश्वर निवास करता है (इब्रानियों 12:22-23)। यहां बताया गया है कि क्या होता है जब हम ऐसे लोग बनते हैं जो परमेश्वर की उपस्थिति का आयोजन करते हैं और ऐसे लोग होते हैं जिनके मध्य परमेश्वर वास करता है:

- वचन 15 *मैं इसमें की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूंगा; और इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा।*
  यहां अलौकिक प्रयोजन, समृद्धि और आशीष है।
- वचन 16 *इसके याजकों को मैं उद्धार का वस्त्र पहनाऊंगा, और इसके भक्त लोग ऊंचे स्वर में जयजयकार करेंगे।*
  यहां उद्धार है—क्षमा, चंगाई, छुटकारा, विजय, स्वास्थ्य, सम्पूर्ण कल्याण—और उद्धार का आनंद जिसका प्रतिध्वनि हमारे मध्य में निरंतर होता रहता है।
- वचन 17 *यहां मैं दाऊद का एक सींग उगाऊंगा; मैं अपने अभिषिक्त के लिए एक दीपक तैयार करूंगा।*

  निरंतर बल और प्रभुत्व ("सींग") बढ़ता रहता है। निरंतर प्रकाशन ("दीपक") होता है। उसके अभिषिक्त लोग होने के नाते, हम बल, प्रभुत्व और प्रकाशन में निरंतर वृद्धि देखते हैं।
- *वचन 18 मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहनाऊंगा। परंतु उसी के सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा।*

हम अपने शत्रुओं पर विजय पाते हैं और उसके लोग होने के नाते, बढ़ते जाते हैं, उन्नति पाते हैं और फलते-फूलते हैं।

प्रत्येक स्थानीय कलीसिया ऐसी ही बन सकती है। प्रत्येक स्थानीय कलीसिया ऐसे लोगों का समाज बन सकती है जिनके मध्य परमेश्वर निवास करता है जहां उसकी चंगाई, प्रयोजन, उद्धार, आनंद, बल, प्रभुत्व, प्रगटीकरण या प्रकाशन और विजय स्थापित होती है।

जब राजा सिंहासन पर विराजमान होता है, तब उसका राज्य प्रगट होता है

भजन 22:3

परन्तु हे तू जो इसाएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है।

जब परमेश्वर हमारे मध्य में सिंहासन पर विराजमान होता है, तब उसका राज्य प्रगट होता है। उसका राज्य ऐसा है जो अंधकार के कामों को पराजित करता है। जब उसका राज्य अग्रसर होता है, तब बीमारी और रोग और दुष्टात्मा का प्रत्येक कार्य नतमस्तक होता है।

स्थानीय कलीसियाई समाज के रूप में, हमें सारी गलत बातों के ईर्द-गिर्द, सुपर-स्टार पासबान के आस-पास, किसी डिनॉमिनेशन की विचारधारा के ईर्द-गिर्द, किसी सामाजिक या सांस्कृतिक समानता के ईर्द-गिर्द इकट्ठा होने से दूर हो जाना है और केवल राजा यीशु को सिहांसन पर विराजमान करने हेतु इकट्ठा होना है। जब सिर्फ उसी की स्तुति होगी, उसी की आराधना होगी और सिर्फ वही सिंहासन पर विराजमान होगा, तब उसका राज्य हमारे मध्य स्थापित होगा और उसका राज्य प्रगट होगा।

जब हम एक साथ इकट्ठा होते हैं, तब उसकी सामर्थ को वहां प्रगट होना ही है

1 कुरिन्थियों 5:4

कि जब तुम, और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ इकट्ठे हो, तो ... हमारे प्रभु यीशु के नाम से।

मत्ती 18:20

क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।

परमेश्वर का यह उद्देश्य था कि हम ऐसे लोग बनें जो उसके नाम में इकट्ठा हों और उसकी सामर्थ एवं उपस्थिति हमारी सभा पर छाया करे। आज हम उसके नाम में इकट्ठा होने का दावा करते हैं, परंतु 'सामर्थ' और उसकी उपस्थिति नदारद प्रतीत होती है या उस पर ध्यान भी नहीं जाता। हम जिस प्रकार कलीसिया चला रहे हैं उसे बदलने की ज़रूरत है ताकि हर बार हमारे इकट्ठा होने पर जो होता है, उसके लिए उसकी उपस्थिति एवं सामर्थ केन्द्रीय हो। हम उसकी वजह से इकट्ठा होते हैं और, उसकी उपस्थिति एवं सामर्थ को अनुभव करने और भेंट करने के लिए इकट्ठा होते हैं।

समाज के रूप में, महिमा, सामर्थ और अभिषेक की जिस मात्रा को हम वहन कर सकते हैं, वह इतनी अधिक है कि उसे हम में से कोई भी एक अकेले व्यक्तिगत रूप से उठा नहीं सकता। जब संगठित मंडली के रूप में हम परमेश्वर की महिमा से परिपूर्ण होते हैं, तब जो प्रभाव हम डालेंगे, वह कल्पनातीत होगा। इसकी कोई सीमा नहीं है।

परमेश्वर हमारे मध्य है

1 कुरिन्थियों 14:24-25

24 परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या अनपढ़ा मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे।

25 और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है।

जहां पवित्र आत्मा संचरन करता है और उसके वरदान और सामर्थ्य प्रगट होती है, वहां लोग पश्चाताप करेंगे, परमेश्वर की आराधना करेंगे और कहेंगे कि परमेश्वर सचमुच हमारे मध्य में है। हमारे पास ऐसी आराधनाएं और सभाएं कब होंगी जहां पर हम हमारी चतुराईपूर्ण प्रस्तुतियों और तकनीक के उपयोग से लोगों को प्रभावित करने की कोशिश नहीं करेंगे? बल्कि हम पवित्र आत्मा की सामर्थ पर निर्भर रहते हैं कि वह हमारे जीवनों को स्पर्श करे, पापियों को पश्चाताप करते हुए देखें, लोगों को चंगा होते और दुष्टात्माओं को निकलते हुए देखें। हमारे प्रभावशाली कार्यक्रम, मीडिया

प्रस्तुतियां और तकनीक का उपयोग यह हासिल नहीं कर सकते। केवल परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ कर सकती है। हमें विश्वासियों का ऐसा समुदाय बनना है जहां यदि कोई अविश्वासी या अज्ञान व्यक्ति आता है, तो वह परमेश्वर के आत्मा से ऐसा प्रभावित हो कि वह अपने मुंह के बल पर गिरकर परमेश्वर की आराधना करे और कहे कि परमेश्वर सचमुच हमारे मध्य में है!

जहां यीशु है वहां लोग आएंगे

मती 4:23-25

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिनमें दुष्टात्माएं थीं और मिर्गीवालों और लकवे के मारे हुओं को उसके पास लाए और उसने उन्हें चंगा किया।

25 और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली।

इब्रानियों 13:8

यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एकसा है।

पेरितों के काम 5:12-16

12 और प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, (और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।

13 परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उनमें जा मिले; तौभी लोग उनकी बड़ाई करते थे।

14 और विश्वास करनेवाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे);

15 यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए।

16 और यरूशलेम के आस पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे।

यीशु को हमारे मध्य यीशु रहने दें। उसे वही चंगाई करने वाला, छुटकारा देने वाला, और आश्चर्यकर्म करने वाला यीशु रहने दें!

जब यीशु सेवा करता था, तब उसने कोई तरक्की अभियान, जारी नहीं किया, कोई विज्ञापन एजन्सी नहीं बनाई, मास मीडिया प्रचार भी नहीं किया। फिर भी बड़ी भीड़ आई। वे इसलिए आए क्योंकि यीशु प्रचार कर रहा था, चंगाई दे रहा था, छुटकारा दे रहा था, चिन्ह और चमत्कार कर रहा था। वे सुनने के लिए आए और चंगा होने के लिए आए। वे इसलिए आए क्योंकि परमेश्वर की सामर्थ चंगाइयों और छुटकारे में प्रगट होती थी। वे स्वयं इस बात को अनुभव करने के लिए आए। वे अपने बीमारों को, दुखियों को, दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को ले आए और उन्हें वहां ले आए जहां यीशु था। वे अपने हृदय में विश्वास लेकर आए।

आज लोग उनसे भिन्न नहीं हैं। वे वहीं आएंगे जहां यह वही यीशु है। सवाल है, क्या आज कलीसियाओं में वही यीशु है? शायद है, परंतु हमने अधिकांश बातों में उसे दबाकर रखा है। यीशु को हमारे मध्य यीशु रहने दें। उसे वही चंगाई करने वाला, छुटकारा देने वाला, और आश्चर्यकर्म करने वाला यीशु रहने दें! प्रेरितों के कामों की पुस्तक की कलीसिया के पास यही यीशु था और भीड़ आई। जब यीशु हमारे मध्य में होगा, तब सचमुच हमें लोक प्रसिद्धी की या विज्ञापन की कोई ज़रूरत नहीं होगी। लोग वैसे ही आएंगे, जैसे बाइबल के दिनों में आते थे!

उसकी उपस्थिति और सामर्थ हर जगह ले जाना

प्रेरितों के काम 6:8

स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था।

स्थानीय कलीसिया का उद्‌देश्य कभी किसी डिनॉमिनेशन के आदर्श के अनुसार इकट्‌ठा होना नहीं था। उसका उद्‌देश्य ऐसा निवासस्थान होना था जहां प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ से शोभायमान था। प्रत्येक विश्वासी को चिन्ह और चमत्कारों में उसकी सामर्थ प्रगट करने

के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट करना है। स्तेफनुस के समान, सामान्य विश्वासी, जो भोजन बांटते हैं या अन्य साधारण काम करते हैं, उन्हें विश्वास और सामर्थ से परिपूर्ण रहना है, और बड़े चिन्ह और चमत्कार करना है। जब हमारे पास ऐसे लोगों से भरा हुआ स्थानीय कलीसियाई समाज होगा, तब हम संसार पर कैसा प्रभाव डालेंगे!

स्थानीय कलीसियाई समुदाय की कल्पना करें जहां विश्वासी उसकी उपस्थिति और सामर्थ हर स्थान में ले जाते हैं। वे उसकी उपस्थिति स्कूलों में, कॉलेजों में, बाज़ारों में, घरों में, पड़ोस में, मॉल में, रेस्तरां में, हवाई अड्डों पर, प्रति दिन लोग जहां कहीं जाते हैं, वहां ले जाते हैं।

और पाने के लिए आगे बढ़ना!

ऐसा पात्र या ज़रिया बनने के लिए, जिसे परमेश्वर उसकी सामर्थ को पृथ्वी पर प्रगट करने हेतु उपयोग कर सकता है, एक बड़ी कीमत अदा करना होगा। बहुत कम लोग यह मार्ग अपनाते हैं। परंतु, हमें इस मार्ग पर चलना है।

"चेले को उसके स्वामी से बढ़कर नहीं होना चाहिए, परंतु वह उसके स्वामी के समान होगा! परंतु यदि हम सामर्थ में उसके समान बनना चाहते हैं, तो हमें पवित्रता, समर्पण, दीनता, और तरस में भी उसके समान बनना होगा। हमें प्रार्थना में और पिता के साथ सहभागिता में भी उसके समान बनना होगा। हमें विश्वास में उसके समान बनना होगा। हमें उपवास करने में और खुद का इन्कार करने में भी उसके समान बनना होगा। यदि उसके द्वारा चुकाई गई कीमत को बिना अदा किए सेवक के लिए उसके समान बनना सम्भव होता, तो सेवक उसके प्रभु से श्रेष्ठ होता।" - सुसमाचार प्रचारक ए. ए. एलन (1911-70), प्रभु ने सामर्थी चंगाइयों और चमत्कारों को करने हेतु इनका उपयोग किया।

उसकी उपस्थिति को हमारी सामुहिक इच्छा बनाना!

भजन संहिता 63:1-2

1 हे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।

[2] इस प्रकार से मैंने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं।

हमें उसकी उपस्थिति को हमारी सामुहिक इच्छा बनाना है। जितनी बार हम इकट्ठा होते हैं, उतनी बार हमें उत्सुकता के साथ उसकी सामर्थ और महिमा को देखने की अपेक्षा करते हुए आना है - हमारी विशाल आराधना सभाओं में, हमारे छोटे घरेलू समूहों में या जब हम दो या तीन लोगों के रूप में इकट्ठा होते हैं, और जहां कहीं इकट्ठा होते हैं और जब कभी इकट्ठा होते हैं। हमें उसके लिए भूखा और प्यासा होना है। हमें उसकी, उसकी उपस्थिति की, सामर्थ और महिमा की लालसा करना है। हमें इच्छा रखना है कि परमेश्वर का आत्मा हमारे मध्य में और हमारे द्वारा उसकी सामर्थ को प्रगट करे ताकि जीवन बदल सकें, बीमार चंगे हो सकें, लोग छुटकारा पा सकें और परमेश्वर की महिमा हो!

14

यीशु के चंगाई और छुटकारे के आश्चर्यकर्म

व्यक्तिगत मनन और अध्ययन में सहायता के लिए हम यहां पर एक सरल तालिका प्रस्तुत करते हैं। हम पाते हैं कि बाइबल में दिए गए आश्चर्यकर्मों के विषय में हम जितना अधिक मनन करते हैं, उतना अधिक हमारे हृदयों में विश्वास बढ़ता जाता है ताकि परमेश्वर से अपेक्षा करें कि वह आज भी वैसे ही और उससे भी बड़े कामों को करे।

व्यक्तिगत चंगाइयां

आश्चर्यकर्म	यीशु ने किस प्रकार सेवा की
कोढ़ी (मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-42; लूका 5:12-14)	हाथों को रखना आज्ञा का वचन
सुबेदार का सेवक (मत्ती 8:5-13; लूका 7:1-10)	परमेश्वर में व्यक्तिगत विश्वास विश्वास की घोषणा
पतरस की पत्नी की मां (मत्ती 8:14-15; मरकुस 1:30-31; लूका 4:38-39)	हाथों को रखना आज्ञा का वचन
लकवा पीड़ित व्यक्ति को चार लोग ले आते हैं (मत्ती 9:2-8; मरकुस 2:3-12; लूका 5:17-26)	परमेश्वर में व्यक्तिगत विश्वास विश्वास से कार्य करना पश्चाताप और पापों को त्यागना
लहू बहने वाली स्त्री (मत्ती 9:20-22; मरकुस 5:24-34; लूका 8:42-48)	परमेश्वर में व्यक्तिगत विश्वास विश्वास से कार्य करना चंगाई का अभिषेक विश्वास की घोषणा
दो अन्धे व्यक्ति मत्ती 9:27-31)	परमेश्वर में व्यक्तिगत विश्वास हाथों को रखना विश्वास की घोषण

आश्चर्यकर्म	यीशु ने किस प्रकार सेवा की
सूखे हुए हाथ वाला व्यक्ति (मत्ती 12:9-14; मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11)	विश्वास से कार्य करना
अन्धा और गूंगा मनुष्य मत्ती 7:31-37)	हाथों को रखना अन्य असाधारण तरीके आज्ञा का वचन
बैतसैदा का अन्धा (मरकुस 8:22-26)	हाथों को रखना अन्य असाधारण तरीके
अन्धा बर्तिमय (मत्ती 20:29-34; मरकुस 10:46-52; लूका 18:35-43)	परमेश्वर में व्यक्तिगत विश्वास हाथों को रखना विश्वास की घोषणा
दस कोढ़ी (लूका 17:11-19)	विश्वास से कार्य करना विश्वास की घोषणा
सुबेदार का बेटा (यूहन्ना 4:46-53)	विश्वास की घोषणा
बैतसैदा की झील के पास का व्यक्ति (यूहन्ना 5:1-9)	विश्वास से कार्य करना
जन्म से अन्धा मनुष्य (यूहन्ना 9:1-7)	विश्वास से कार्य करना हाथों को रखना अन्य असाधारण तरीके
जलन्धर—सूजे हुए जोड़ों वाला व्यक्ति (लूका 14:1-4)	हाथों को रखना
मल्कस का कान (लूका 22:49-51)	हाथों को रखना

व्यक्तिगत छुटकारा

आश्चर्यकर्म	यीशु ने किस प्रकार सेवा की
अशुद्ध आत्मा से पीड़ित व्यक्ति (मरकुस 1:21-28; लूका 4:31-37)	डांट या आज्ञा देकर
गिरासेनियों का दुष्टात्मा पीड़ित (मत्ती 8:28-34; मरकुस 5:1-17; लूका 8:26-39)	डांट या आज्ञा देकर
कनानी स्त्री की बेटी (मत्ती 15:21-28; मरकुस 7:24-30)	विश्वास की घोषणा
दुष्टात्मा से पीड़ित लड़का (मत्ती 17:14-18; मरकुस 9:14-27; लूका 9:38-43)	निकालने के द्वारा
दुष्टात्मा से पीड़ित गूंगा मनुष्य (मत्ती 9:32-33)	निकालने के द्वारा
दुष्टात्मा से पीड़ित अन्धा और गूंगा मनुष्य (मत्ती 12:22; लूका 11:14)	निकालने के द्वारा
सैतान द्वारा बांधी गई स्त्री (लूका 13:10-13)	बांधने और खोल देने के द्वारा

सामुहिक चंगाइयां और छुटकारा

गौर करें, यहां लिखे गए अधिकतर उदाहरणों में, यीशु ने किस प्रकार सेवा की इसका विस्तृत वर्णन नहीं दिया गया है। इसलिए, केवल वही जो स्पष्ट है उसे यीशु ने किस प्रकार सेवा की के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है, अन्य कई बातें हो सकती हैं जो यीशु ने लोगों को चंगा करने और छुड़ाने हेतु की होगी।

आश्चर्यकर्म	यीशु ने किस प्रकार सेवा की
कई चंगे हुए और छुड़ाए गए मत्ती 4:23-25; मती 9:35)	प्रचार करता, सिखाता और चंगा करता फिरा
कइयों को सन्ध्या के समय छुड़ाया मत्ती 8:16-17; मरकुस 1:32-34; लूका 4:40-41)	आज्ञा के वचन के द्वारा निकालने के द्वारा
गलील से जाते समय उसने कई दुष्टात्माओं को निकाला (मरकुस 1:39)	निकालने के द्वारा
कई चंगे हुए और छुड़ाए गए मत्ती 12:15-16; मरकुस 3:10-12; लूका 6:17-19)	हाथों को रखना
कुछ बीमार लोग (मत्ती 13:58; मरकुस 6:5-6)	हाथों को रखना
कई जिन्होंने उसे छूआ (मत्ती 14:43-46; मरकुस 6:54-56)	हाथों को रखना
यूहन्ना के प्रति प्रतिक्रिया में सेवकाई की महत्वपूर्ण बातें (मत्ती 11:4-5; लूका 7:21-22)	
भीड़ (मत्ती 14:14; लूका 9:11; यूहन्ना 6:2)	
बड़ी भीड़ में गूंगे लोग चंगे होते हैं (मत्ती 15:30-31)	
यहूदा में बड़ी भीड़ (मत्ती 19:2)	
बड़ी भीड़ (लूका 5:15)	
कई आश्चर्यकर्मों के विषय में नहीं लिखा गया है (यूहन्ना 20:30-31; यूहन्ना 21:24-25)	

मृतक को जिलाना

आश्चर्यकर्म	यीशु ने किस प्रकार सेवा की
याईर की बेटी मत्ती 9:18; मरकुस 5:22; लूका 8:40)	विश्वास की घोषणा हाथों को रखना आज्ञा का वचन
विधवा का बेटा (लूका 7:11-17)	विश्वास की घोषणा हाथों को रखना आज्ञा का वचन
लाजर (यूहन्ना 11:1-44)	विश्वास की घोषणा हाथों को रखना आज्ञा का वचन

15

आप यह कर सकते हैं!

परमेश्वर कलीसिया को महिमा और सामर्थ के स्थान में पुनर्स्थापित करने हेतु कार्य कर रहा है। वह अपनी महिमामय कलीसिया के लिए वापस आ रहा है। महिमामय कलीसिया का अर्थ यह होगा कि ऐसी कलीसिया जो उससे बहुत श्रेष्ठ है जिससे हमने प्रेरितों के कामों की पुस्तक में आरम्भ किया था। यह ऐसी कलीसिया होगी जो और बड़ी महिमा में चलती है।

ऐसा होने के लिए, हर एक विश्वासी को उन्नति पाना है और परमेश्वर की महिमा प्रगट करने हेतु सिद्ध होना है। यह हर एक विश्वासी के लिए समय है—आपके लिए—कि बाहर जाकर चंगाई और छुटकारे की सेवा करे, परमेश्वर की महानता और करूणा को प्रगट करे, और परमेश्वर के राज्य में आत्माओं को लाए।

आप उसके हाथ हैं! आप उसके पांव हैं!

आप कलीसिया के अंग हैं, जो उसकी देह है। आप उसके हाथ और उसके पांव हैं। आपको वहीं जाना चाहिए जहां यीशु जाना चाहता है। आपको हाथ बढ़ाकर छूना है, प्रेम करना है, चंगा करना है, छुड़ाना है और कैदियों को मुक्त करना है! यदि प्रभु यीशु आज उपस्थित होता, तो वह यही करता। वह वहीं जाता जहां लोग हैं। वह उन्हें चंगा करता और छुड़ाता। वह आज शैतान के कार्य को नाश करता है, जैसे वह उस समय करता था। परंतु उसने यह आज आपके और मेरे द्वारा करने का संकल्प किया है!

यीशु के नाम में!

आपको नियुक्त किया गया है, अभिषेक किया गया है, और आदेश दिया गया है। उसने कहा, *"तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया है ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे*

कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे" (यूहन्ना 15:16)। आपको उसके नाम में प्रतिनिधि ठहराया गया है और अधिकार दिया गया है कि आप जाएं और प्रार्थना और सेवकाई में उसके नाम का उपयोग करें। यीशु के नाम में जाएं! उसके नाम में चमत्कार होते हैं, बीमार चंगे होते हैं और दुष्टात्माएं निकाली जाती हैं।

परमेश्वर तैयार है! कहीं भी! किसी भी समय!

यीशु ने कहा, *"मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं"* (यूहन्ना 5:17)। परमेश्वर ने काम करना नहीं छोड़ा है और इसलिए हमें भी काम करना है। परमेश्वर तैयार है! कहीं भी! किसी भी समय! परमेश्वर लोगों को चंगा करने और छुड़ाने के लिए तत्पर है। परमेश्वर घर में, स्कूल में, कॉलेज में, खेल के मैदान में, दफ्तर में, बोर्ड के कक्ष में, सरकारी इमारत में, शॉपिंग मॉल में काम कर रहा है—हर स्थान में! हम उसके साथ काम करें, हर स्थान में लोगों की सेवा करें।

गुमनाम, चेहराविहीन पीढ़ी जो यीशु को दर्शाती है

केवल एक ही है जो आश्चर्यकर्मों का कर्ता है। वह आप नहीं हैं। वह मैं नहीं हूं। कोई चंगाई करने वाला सुसमाचार प्रचारक नहीं। कोई प्रेरित या भविष्यद्वक्ता नहीं। केवल एक ही आश्चर्यकर्म करने वाला है और वह है यीशु! इसलिए हम अपनी ख्याति, अपना नाम, अपनी कीर्ति के विषय में चिंता न करें। हम एक चेहराविहीन, नामरहित पीढ़ी बने रहें। केवल यीशु को दिखने दें। हम उसी को दिखाएं—चंगाई करने और छुड़ाने की उसकी सामर्थ को! लोग यीशु के निकट भीड़ लगाकर आएं!

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रकट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकृत हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वाासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर** परिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौता के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारी वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों	**व्यवहार सम्बंधी विकार**
व्यक्तिगत समायोजन	**व्यक्तित्व विकार**
संबंधपरक चुनौतियां	**मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले	**तनाव / आघात**
कार्य संबंधित मुद्दे	**शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
परिवार / दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक	**आत्मिक समस्याएं**
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी	**ज़िंदगी की सीख**

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिएः

Website: chrysalislife.org
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 50200068829058
IFSC Code: HDFC0004367
Bank: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for

"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

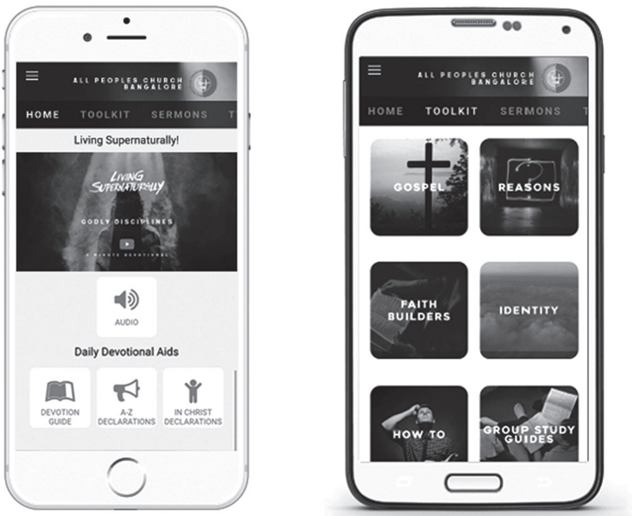

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत केबैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

एपीसी-बीसी में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक** (UTC+5:30) कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल apcbiblecollege.org/elearn.

के माध्यम से स्वयं की गति से सीखना ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी केलिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: apcbiblecollege.org

प्रभु यीशु पर विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसका उद्देश्य यह है कि वह उन कामों को करे जो उसने किए और उनसे भी बड़े कामों को (यूहन्ना १४:१२)। परमेश्वर मसीह की देह में सेवा कार्यो के साथ विशिष्ट व्यक्तियों को विशिष्ट वरदान, बुलाहट और अभिषेक देता है, साथ ही साथ प्रत्येक विश्वासी को चंगाइयां और छुटकारे की सेवा करने हेतु सामर्थ और अधिकार दिया जाता है। प्रभु अपने प्रत्येक बच्चे को, जवान हो या वृद्ध, उसके आत्मा की सामर्थ में, यीशु के नाम के अधिकार में, पिता के कामों को करते हुए देखना चाहता है, ताकि लोग जीवित यीशु को उनके जीवनों में जानें और अनुभव करें! यह पुस्तक आपको यीशु के नाम में चंगाई और छुटकारे की सेवा करने हेतु सुसज्जित करेगी!

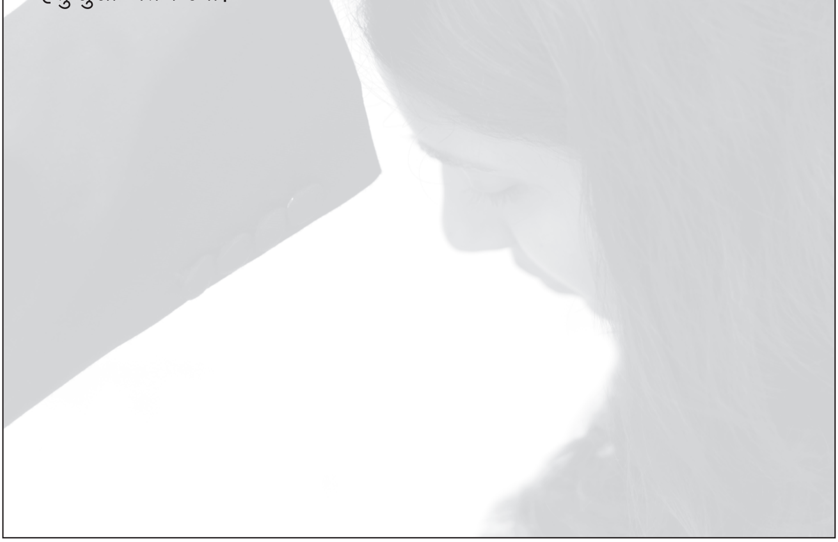

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org